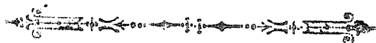
॥ श्री ॥

श्री गोपीजनवल्लभो विजयतेतराम्

श्रीआचार्यजी महाप्रभुनके सेवक

चौरासी वैष्णवनकी वार्ता.



अनुक्रमणिकासहित ।

यह पुस्तक

पुष्टिमार्गीय श्रीवल्लभ संप्रदायी वैष्णवनके

नित्य नैमित्तिक पठनार्थ

उसीको

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदासजीने

अपने "लक्ष्मीवेंकटेश्वर" छापखानेमें

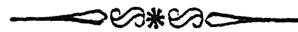
छापकर प्रसिद्ध किया ।

संवत् १९८५, शके १८५०.

कल्याण-मुंबई.

अथ चौरासीवैष्णवनके वार्ताकी

अनुक्रमणिका.



इति चौरासीवैष्णवनके वार्ताकी अनुक्रमणिका समाप्त.

पुस्तक मिलनेका ठिकाना.

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,

"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना,

कल्याण-मुंबई.

श्रीकृष्णायनमोनमः ।

श्रीगोपीजनवल्लभायनमोनमः ।

अथ श्रीआचार्यजीमहाप्रभूनके सेवक
चौरासी वैष्णवकी वार्ता लिख्यते ॥



अथ दामोदरदास हरसानीकी वार्ता ॥

एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभू पृथ्वीपरिक्रमाकौं पधारे हुते तब तहां दामोदरदास श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके साथ हैं सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप दामोदरदाससों अपने श्रीमुखसों दमला कहते और कहते जो यह माग तेरेलिये प्रगट कीनों है सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू सो पृथ्वीपरिक्रमा करते श्री गोकुल पधारे सो श्री गोकुलमें एक चोंतरा श्रीगोविंदघाट ऊपर हुतो तहां श्रीआचार्यजी महाप्रभू आय बिश्राम करते ताठोर ऊपर श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी बैठक है और श्रीद्वारकानाथजीको मन्दिर है तहां श्रीआचार्यजी महाप्रभू बैठे हुते ता समय श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको महाचिंता उपजी जो श्रीठाकुरजीने तो आज्ञा दीनी है जो तुम जीवनकों ब्रह्मसंबन्ध करावो तब

श्रीआचार्यजी महाप्रभू अपने मनमें बिचारें जो जीवतो दोषवंत है और श्रीपुरुषोत्तमजीतो गुण-निधान हैं तातें एसें केसें संबंध होय तातें चिंता उपजी सो अत्यंत आतुर भए तासमय श्रीठाकु-रजी आप तत्काल प्रगट होयकें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों पूंछें जो तुम चिंता आतुर क्यों हो तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप कहे जो जीवको स्वरूपतौ तुम जानतही हौ दोषवंत है सो तुमसों संबंध केसें होय तब श्रीठाकुरजी आप कहें जो तुम जीवनकों ब्रह्मसंबंध करावोगे तिनकौ हों अंगीकार करूंगो तुम जीवनकों नाम देउगे तिनके सकल दोष निवर्त होंयगे ये बातें श्रावणशुदि ११ के दिन अर्द्धरात्रिकों भईं प्रातकाल पवित्राद्वादशी हुती ताते पवित्रा सूतकौ करिराख्यो हुतो सो प-वित्रा श्रीपूरनपुरुषोत्तमजीकों पहरायो मिश्री भोग धरी ता समयके ये अक्षरहुते ताकों श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप सिद्धांतरहस्य ग्रथ कीये हैं ॥ ॥

सो श्लोक ॥ श्रावणस्यामले पक्षे एकादश्यां महानिशि ॥
साक्षाद्भगवताप्रोक्तमेतदक्षरमुच्यते ॥ १ ॥

ता समय श्रीआचार्यजी महाप्रभुनने पूंछो जो दमलातें कुछ सुन्या तब दामोदरदासने बीनती

कीनी जो महाराज श्रीठाकुरजीके बचन सुनतौसही परन्तु कुछ समझो नहीं तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कही जो मोको श्रीठाकुरजीनें आज्ञा कीनी है जो तुम जीवनकौं ब्रह्मसंबंध करावोगे तिनकौं हों अंगिकार करूंगो तिनके सकल दोष निवृत्त होंयगे ताते ब्रह्मसंबंध अवश्य करनो ॥ प्रसंग॥ १॥

बहुर श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने श्रीठाकुरजीके पास यह मांग्यो जो मेरे आगे दामोदरदासकी देह न छूटे और श्रीआचार्यजी महाप्रभू दामोदरदाससों कछू गोप्य न राखते और श्रीआचार्यजी महाप्रभू श्रीभागवत अहर्निस देखते कथा कहते और मार्गको सिद्धांत भगवतलीला रहस्य श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप दामोदरदासके हृदयमें स्थापन कीयो ॥ प्रसंग ॥ २ ॥

और एकसमय दामोदरदास और श्रीगुसाईंजी एकान्तमें बैठे हुते तब श्रीगुसाईंजीनें दामोदरदाससौं पूंछी जो तुम श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको कहाकरि जानतहौ तब दामोदरदासने कही जो हम तौ श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकौ जगदीश जो श्रीठाकुरजी तिनहूंते अधिककरि जानत हैं तब श्रीगुसांईंजी दामोदरदाससोंकहैं जो तुम ऐसे क्यों

कहत हौ जो श्रीठाकुरजीतें श्रीआचार्यजी बडे हैं
तब दामोदरदासनें कही जो महाराज दान बडौके
दाता बडौ काहूके पास धन बहुत होय तौ राज
कहाकरे जो देय ताको जानिये और श्रीआचार्यजी
महाप्रभूनकौ सर्वस्व धन श्रीठाकुरजी हैं सो हम
जीवनकी दान किये तातें हम श्रीआचार्यजी महा-
प्रभूनकौ सबते बडे करि जानत हैं ॥ प्रसंग ॥ ३॥

और एकसमय श्रीआचार्यजीमहाप्रभू तथा
श्रीगुसांईजी अपनी बेठकमें बैठे हुते पास द्वैचार
वैष्णव हँसिवे खेलवेके बेठे हुते आप उनसौं हंसते
खेलते मसखरी करते बहुत प्रसन्नतामें उनसों खेल-
वेकी वार्ता करतहुते ता समय दामोदरदास आये
ता समय श्रीगुसांईजीनें बहुत आदर सन्मान कियौ
पाछै दामोदरदास बैठे तब श्रीगुसांईजीसों दामो-
दरदासने कही जो महाराज अपनो मार्ग निश्चय-
ताको नाहीं यह मार्ग अत्यंत कष्ट आतुरताको है
तब श्रीगुसांईजीने कही जो तुम आछी बात
कहतहौ परिं हमकौ जब श्रीआचार्यजी महाप्रभू-
नकी कृपा होयगी तब कष्ट आतुरता होयगी यह
मार्गता श्रीआचार्यजी महाप्रभूनका कृपाते न होय
तब दामोदरदास साष्टांग दंडवत करिके बीनती

की जो हमको तो एकवार राजसों बीनती करनीहै
पाछें आप प्रभूहो भली जानोगे सो करोगे पर यह
मार्गतो या भांतिको है तब श्रीगुसांईजी बहुत
प्रसन्न भए और कहें जो हमको यह वार्ता श्रीआ-
चार्यजीद्वारा है और कहें जो तुम न कहौ तौ कौंन
कहे हम तुमको देखतहैं तब अतिप्रसन्न होतहैं
आप श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके सेवक जानिकें
दामोदरदासकी शिक्षा मानत भये ताते बडेसो-
बडे ॥ प्रसंग ॥ ४ ॥

और प्रथम श्रीआचार्यजीमहाप्रभू श्रीठाकुर-
जीके पास यह मांग्यो जो मेरे आगे दामोदरदा-
सकी देह न छूटे ताको हेतु यह जो श्रीआचार्यजी
महाप्रभू संन्यास ग्रहण करिवेको बिचार मनमें
करें तासमय श्रीगोपीनाथजी श्रीगुसांईजी यह
दोऊ भाई बालक हुते तातें मार्गको सिद्धांत वार्ता
श्रीआचार्यजी महाप्रभू संन्यास ग्रहणकीए तब
कितनेक दिना पीछे श्रीगुसांईजीने अक्काजीसौं
पूछौ सो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने मार्ग प्रगट
कीनोहै सौ उच्छवको कहा प्रकार है हमतो कछू
जानत नाहीं तब श्रीअक्काजीने कह्यौ जो मार्ग
तथा उच्छवको प्रकार सब दामोदरदाससौं कहेहै

सो तुम उनसों पूछौ तुमसौं दामोदरदास कहैगौ तब श्रीगुसांईजी दामोदरदासने बहुत सन्मानकरि भक्तिभावसों घरमें पधराये पाछैं उच्छवकौ प्रकार श्रीगुसांईजीनें पूछौ सो दामोदरदासने सब कह्यौ

॥ प्रसंग ॥ ५ ॥

और एक समय दामोदरदासके पिताकौ श्राद्ध दिनहुतौ वा दिन श्रीगुसांईजी दामोदरदासके घर पधारे और दामोदरदासकौं श्राद्धकरवायौ पाछै उत्थापनके समय दामोदरदास दर्शनकों आये तब श्रीगुसांईजीनें कही जो मोकों श्राद्धकरवायेकी दक्षिणादेउ तब दामोदरदास कहें जो दक्षिणामें एकबात कहूंगो सो सिद्धांतरहस्यके डेढ श्लोककौ व्याख्यान कहे यह ऐसी बात है तब श्रीगुसांईजी नें कँही जो आगे कहौं तब दामोदरदासने कही जो मैंने तौ इतनौही संकल्प कीयौहै तब श्रीगुसां ईजी चुपकररहे पाछें दामोदरदासने मार्गके प्रना लिका श्रीगुसांईजीके आगे कही श्रीभागवतकी सुबोधिनी श्रीआचार्यजी महा प्रभूनके ग्रन्थकी टीका और रहस्यवार्ता श्रीआचार्यजी महाप्रभूक- हेहैं सो सब कही ता पाछैं श्रीगुसांईजी दामोदर- दासको नमस्कार करन न देते याते जो श्रीगुसां-

ईजी अपने मनमें बिचारे जा श्रीआचार्यजी महा-
प्रभूनको स्वरूप दामोदरदासके हृदयविषें सदा-
सर्वदा बिराजमानहै तो इन पास दंडौत नमस्कार
न करावनी याते नमस्कार न करन देते पाछे
श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें दामोदरदासको दर्श-
नदीयो और आज्ञादी जा अबते तू श्रीगुसांईजीकौ
चरणोदक नित्यलीयोकर तब प्रातःकाल दामो-
दरदास श्रीगुसांईजीके पास आये और चरणोदक
मांग्यौ तब श्रीगुसांईजीने चरणोदककी नाहीं कीनी
तब दामोदरदासनें श्रीगुसांईजीसों कही जो मोको
श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी आज्ञा भई है और
दर्शन भए हैं और कह्यो जो तू श्रीगुसांईजीको
चरणोदक नित्य लीजियौ तब श्रीगुसांईजी न चर-
णोदक दियौ और दामोदर दासकौ श्रीआचार्यजी
महाप्रभू तीसरे दिन दर्शन देते मार्गकी रहस्य
वार्ता कहते ऐसी कृपा करते और कदाचित तीसरे
दिन दर्शन न हो तो तादिन दामोदरदासके पेटमें
पीडा होती अत्यंत कष्ट पावते पाछें जब दर्शन
होतौ तब तत्कालकष्ट निवर्तहो जातो ऐसे करत
कितने वर्षपर्य्यंत दामोदरदासकों श्रीगुसांईजीने
दर्शनदीनो तथा श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने द-

शर्न दीनो ऐसी कृपा करते जो बात होती सो दामोदरदास श्रीगुसांईजीके आगे कहते और मार्गके प्रकारकी वार्ता अहर्निश कहते जो दामोदरदासके हृदयमें श्रीआचार्यजीमहाप्रभू आप विराजमान हैं ताते दामोदरदासको दंडौत न करन देते और कहते जो दामोदरदासकी वार्ताको पार नाहीं ऐसे मार्गके टेकके कृपापात्रहैं ॥ प्रसंग ॥ ६ ॥

तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू दामोदरदासकौं पूंछें जो दामोदरदास तू श्रीगुसांईजीकौ कहाकरि जानतहो तब दामोदरदासने कही जो महाराज हमतो तुम्हारे पुत्रकरि जानतहैं तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने दामोदरदासकौं आज्ञा दीनी जो ऐसे तुममोकौं जानतहो तैसे इनकौ स्वरूप जानियो और श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने श्रृंगाररस मंडनग्रन्थ कीयोहै तामें लिखे हैं ताते ये दामोदरदास ऐसे कृपापात्र भगवदीय हैं ॥ प्रसंग ॥ ७ ॥

और प्रथम श्री आचार्यजी महाप्रभू दामोदरदाससों कह्यौ जो यह मार्ग तेरे लिये प्रगट कियौ है ताको हेत यह जो जहांलगि श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके मार्गकी स्थित है तहांतांई दामोदरदासकी स्थित गोप्य है पाछे दामोदरदासने

कह्यौ जा मैं श्रीठाकुरजीके बचनतो सुने पर कुछ समझ्यौ नाहीं ता समय श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कह्यौ जो आजहूं दशजन्मको अंतरायहै ताको हेतु यह जो जबलग श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके मार्गकी स्थित है तहांताई दामोदरदासके प्रागट्य फेर फेरहै मार्गके स्थंभ प्रथम यातें कहैं श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने दामोदरदासके हृदयमें भगवदलीला स्थापी संपूर्ण सृष्टिकौ सम्बोधन करिवेकौ ताको यह हेत जो जब लगि श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके मार्गकी स्थितहै तबलगि दामोदरदासकी हूँ स्थित है सो वे दामोदरदास ऐसे टेकके कृपापात्र भगवदीयहैं ताते इनकी वार्ताको पार नाहीं ताते इनकी वार्ता कहां ताईं लिखिये ॥ प्रसंग ॥ ८ ॥ वैष्णव ॥ १ ॥

॥ कृष्णदासमेघनछत्रीकी वार्ता ॥

एक समय श्री आचार्यजी महाप्रभूनने पृथ्वीपरिक्रमा करी तब कृष्णदासमेघन साथ है सो बद्रीनारायणके परली ओर किरनीनाम पर्वत है सो तहांते एक बडी शिलागिरी सो कृष्णदासने हाथसो थांभी तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू प्रसन्न भये तब कृष्णदाससों कह्यौ जो मांगि कहा मांगतहै तब

तीन वस्तु मांगी एकतो मुखरताको दोष जाय दूसरे मार्गको सिद्धांत समझों तीसरे मेरे गुरूके घर पधारो तामें दोय वस्तु दीनी गुरूके घर पधारवेकी नाहीं कीनी बहुर बद्रिकाश्रमते आगे पधारें जहां जीवकी गम्य नाहीं है तहां वेदव्यासजीको स्थान है तहां पधारे तब कृष्णदाससों कह्यौ जो तू ठाडौ रहियौ तब श्री आचार्यजी महाप्रभू आगें पधारे तब वेदव्यासजी साम्हे आये सो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको अपने धाममें ले आये पाछें वेदव्या सजीने श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों कह्यौ जो तुमने श्रीभागवतजीकी टीका कीनी है सो मोको सुनावो तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने जुगलगीतके अध्यायकौ एक श्लोक कह्यौ ॥

सो श्लोक—वामबाहुकृतवामकपोलोवल्गितरभ्रूधरार्पितवेणुं॥
कोमलांगुलिनिराश्रितमार्गगोप्यईरयतियत्रमुकुन्दः ॥ १ ॥

या श्लोकको व्याख्यान कह्यौ सो तीन दिनमें सम्पूर्णभयौ तब वेदव्यासजीने बीनती करी जो मैं या भागवतके व्याख्यानकी अब धारना कारि सकत नाहीं तातें अब क्षमा करौ पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने वेदव्यासजीसों कह्यौ जो तुम वेदांतके ऐसें सूत्र कहा कीये जो मायावादपर

अर्थ लाग्यौ तब व्यासजीने कह्यौ जो मैं कहा करूं मोको आज्ञाही ऐसी हुती जो ऐसे अर्थकरियों तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कही जो मैं ब्रह्म- वादपर अर्थ कियो है सो व्यासजीको सुनायो सो व्यासजी सुनकर बहुत प्रसन्न भये ता पाछे वेद- व्यासजीसों बिदा होयके तीसरे दिन पधारे तब कृष्णदाससों कह्यौ जो तू गयो नाहीं सो काहेते तब कृष्णदासने कही जो महाराज हौं कहां जाऊं मोकों तुम्हारे चरणारविन्द बिना और आश्रयनाहींहै तब यह सुनके श्रीआचार्यजी महा प्रभू बहुत प्रसन्न भये तब कह्यौ जो मांगि तब वेही तीन वस्तु मांगी एक तो मुखरताको दोष जाय दूसरे मार्गको सिद्धांत समझो तीसरे मेरे गुरुके घर पावधारौ सो तामें दोय वस्तु दीनी गुरुके घर पधारवेकी नाहीं कीनी ॥ प्रसंग ॥ १ ॥

बहुर एकसमय श्रीआचार्यजी महाप्रभू गंगा- सागर पधारे तहां श्रीआचार्यजी महाप्रभू पोढे- हुते तहां कृष्णदास पाव दाबत हुते तब श्रीआचा- र्यजी महाप्रभू मनमें बिचारू जो धानके मुरमुरा होय तो लीजियै तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू- नके अंतःकरनकी कृष्णदास मेघनने जानी इत-

नेम श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको निद्रा आई तब श्रीकृष्णदास उठिकें गंगासागर ऊपर आये तब देखें तौ पार एकदीया बरतहै ताकी अटकरतें पैरके गंगाजीपार आये तहां गांव है सो खेतमेंते गीले- धान कटवाये तहां गांवमें जायकें भरभूजाकौ टकाकी जगह चारटका देके मुरमुरा सिद्ध करवाये तब लेके आये तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके चरणारविन्द दाबके जगाये और मुरमुरा आगें राखै तब कह्यो राजआरोगो तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने पूछो जो तू कहांते लायो तब समा- चार कहै जो महाराज मैं पारते लायो तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू बहुत प्रसन्न भये तब कह्यौ जो मांगि तब वेही तीन वस्तु मांगी मुखरताको दोषजाय मागको सिद्धांत मेरे हृदयमें आवै तीसरे मेरे गुरुके घर पावधारौ तब श्रीआचार्यजी महा- प्रभूनने कह्यो जो जीव कहां मांगि जानें यास- मय जो मांगि तौ सोई देतौ जो कहतौ तौ श्रीठाकुर- जीको स्वरूप दिखाव तौ तहांते श्रीआचार्यजी महाप्रभू सोरों पधारे तब कृष्णदासने बीनती करिकें कह्यौ जो महाराज मेरे गुरू हैं सो बुलाय लाऊं तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कह्यौ जो तू

खेद पावैगौ पाछे कृष्ण दास अकेलौ गुरूके पास आयौ तब कृष्णदासकौ गुरूने देख्यौ तब कृष्णदाससों गुरूने कह्यौ जो अरे तैने और गुरू कीयौ तब कृष्णदासने कह्यौ जो मेनें तौ और गुरू नाहीं कीयौ मेरे गुरू तो तुमहीं हो पर तुम्हारी कृपाते मेने पूरणपुरुषोत्तम पाये हैं तब गुरुने कही जो पुरुषोत्तम क्यों जानियै तब गुरूके आगे अग्निकी अंगीठी धक धकाती हुती तामेंते कृष्णदासने दोऊ हाथकी अंजुली भरिके अंगार हाथमें लियै और कह्यौ जो श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी पूरणपुरुषोत्तम होय तो मेरे हाथ माति जरियौ और जो और भांति होयतो मेरे हाथ भस्म होय जइयों सो एक मुहूर्तलो अग्नि हाथमें राखी तब गुरुने भय खाई और कह्यौ जो अग्निडार देउ पाछें उन गुरुनने कृष्णदासके हाथमेंसों अपने हाथसो पकरिके अग्नि डरवाय दीनी तब कृष्ण दास उहांते खेद पायके उठि आयौ यह प्रसंग सब श्रीबल्लभाष्टककी टीकामें श्रीगोकुलनाथजीने बिस्तार करिके लिखाहै ॥ प्रसंग ॥ २ ॥

बहुर मार्ग हृदयारूढ भयौ पाछें कदाचित गोप्य वार्ता होय सो सबनके आगे कहै पाछ काहूवैष्ण-

वने श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों कह्यो जो कृष्ण-
दास सबनके आगे गोप्यवार्ता कहतहै तब श्रीआ-
चार्यजी महाप्रभूनने कृष्णदाससो कह्यो जो क्यों रे
तू सबनके आग गोप्यवार्ता कहतहै तब कृष्णदा-
सने कह्यौ जो महाराज आप उनहींसों पूछिये जो
मेने कहा कह्यौहै तब उन वैष्णवनसो श्रीआचार्यजी
महाप्रभूनने पूछो जो तुमसो कृष्णदासने कहा
वार्ता कहीहै तब वैष्णवननें कही जो महाराज
हमको तो सुधिरही नाहीं तब श्रीआचार्यजी महा-
प्रभू मुसिक्यायके चुपकारिरहे ॥ प्रसंग ॥ ३ ॥

और एकसमय श्रीठाकुरजीकी इच्छाते श्रीआ-
चार्यजी महाप्रभूसों कृष्णदासने प्रश्न पूछो जो
महाराज श्रीठाकुरजीको प्रियवस्तु कहाहै सो मो-
सों कहौ सो ताको प्रतिउत्तर श्रीआचार्यजी महा-
प्रभूकहैं जो श्रीठाकुरजी उत्तम वस्तुके भोगता हैं
परंतु गोर शब्देन वानी कहीयतु है गोरसअति
प्रियहै ताके भाव अनिर्वचनीय है और सबनते
भक्तिको स्नेह प्रभाव अतिप्रिय है ताते भक्तबत्सल
कहावतहैं तब कृष्णदासन फिर प्रश्न पूछौ जो महा
राज श्रीठाकुरजीको अप्रियवस्तु कहाहै तब श्री-
आचार्यजी महाप्रभूननें कह्यो जो श्रीठाकुरजीको

धूंआं समान अप्रिय वस्तु कछू नाहीं और तातें अप्रिय भक्तनके द्वेषी हैं फिर कृष्णदासनें प्रश्न पूछौ जो महाराज श्रीरघुनाथजी संपूर्ण सृष्टिको लेकें स्वधाममें पधारेहैं और राजा दशरथको स्वर्ग दीयो सो काहेते ताको प्रतिउत्तर श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यौ श्रीरघुनाथजी परमदयालहैं ताते स्वर्ग दीयो नातर दशरथको स्वर्गकी योग्यता न हुती यातें अपनो बचन सत्य करिवेकों बनवास पठादिये ऐसो कर्म कायो ॥ प्रसंग ॥ ४ ॥

और एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों कृष्णदासने प्रश्न पूछौ जो महाराज भक्त होयके श्रीठाकुरजीकी लीलाको भेद नाहीं जानत सो काहेते तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यौ जो एबिधिपूर्वक समर्पण जो कह्योहै सो नाहीं करत अनुभव क्यों जानें और भगवद्भक्तको संग करे तो श्रीठाकुरजीकी लीलाको भेदजाने सो तो आपको योग्यता मान काहूका संग नाहीं करत और कछू करतहै सो अन्तःकरन पूर्वक नाहीं करत है मोते श्रीठाकुरजीके स्वरूपको तथा लीलाको भेद नाहीं जानत उत्तमभक्तनको संगकर श्रीभागवत श्रीसुबोधिनी ग्रंथनको अहर्निश अवगाहनकरे तब भाग

वद्भाव उत्पन्न होय श्रीठाकुरजी भक्तनके हृदयविषैं सदैव रहते हैं तथा सेवाकरिकें बंधेहैं तहां एक अन्य मार्गी वैष्णव जाके हृदयमें श्रीठाकुरजी बिराज-तहैं ताको संग करनो तहां गजन धावन वैष्णवकौ दृष्टान्त दियेहैं जिनाजिन भावपूर्वक सेवा करी तिनके सकल निवर्तभये तातें लीलास्थ ब्रजभक्तनके भावको बिचार करना जे वैष्णव श्रीठाकुरजीको स्वरूप जानतहैं तिनको स्वरूप अलौकिक दृष्टिसों जानो जाय जो आज्ञा होय सो जानो जे वैष्णव श्रीठाकुरजीको जानतहैं सो जो कुछ कारज करत हैं और श्रीठाकुरजीसों बिरह भावताप करतहै अपनो स्वदोषभाव विचार करतहै अपनो स्वरूप जाने जो हौं कोनहों पहले कहा हुतो भगवत्संबंध कियेते कहाभयो अब मोकों कहा करतव्य रात्रादि वस ऐसो बिचार करत रहै तब अपनो स्वरूप जाने एप्रागट्य ब्रजभक्तनके अर्थ तथा एतन्मार्गीयके अर्थ तातें उत्तम संग होयतो एतन्मार्गके एठाकुर जाने और शास्त्रपुराण अनेकसिद्धांत इतिहासहैं तातें ब्रजराजके घर प्रगटे सो श्रीठाकुरजी न जाने जाय ए श्रीठाकुरजीको तबहीजाने तातें भगवद्भ-क्तको संग करनो सेवाको प्रकार एतन्मार्गी वैष्णव

जानतहैं तिनसों मिलि तिनको भाव पूछीकें सेवा करनी तब भगवद्भाव उत्पन्न होय श्रीठाकुरजीकी स्नेहयुक्ति सेवा करि जो श्रीठाकुरजी वाको सब जतावै ॥ प्रसंग ॥ ५ ॥

और एक समय श्रीआचार्जी महाप्रभू श्रीबद्रीनाथजीके मन्दिरमें पधारे तब वेदव्यासजी साथहैं तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें वेदव्यासजीसों पूछो जो भ्रमरगीतको अध्याय तामें उद्धवजीको ब्रजभक्तनके पास पठाए है ता प्रसंगमें श्लोक आधो घटतहै तब वेदव्यासजीने श्लोक आधो कह्यो ॥

श्लोक ॥ आत्मत्वाद्भक्तवत्सलात्सतवक्तात्स्वभावतः ॥

याकी टीका श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें पहलेही कीनी हैं सो सुनिके वेदव्यासजी बहुत प्रसन्न भये ता पाछे श्रीआचार्यजी महाप्रभू बद्रीनाथजीके मन्दिरमें पधारे ता दिन वामनद्वादशीको दिन हुतो सो ता दिन श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको बिचार मनमें व्रत करिवेको हुतो तब श्रीबद्रीनाथजीनें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों कह्यो जो मैंनें फलाहारको सर्वत्र योजन कीनो परि पाइयत नाहीं तातें तुम रसोई करि श्रीठाकुरजीको भोग धरि भोजन करौ श्रीठाकुरजीकी इच्छा ऐसी दीखत है इतनेमें श्रीकृ-

ष्णदासनें आयकें कह्यो जो महाराज यहां तो कछू पावत नाहीं पाछें ता दिनते वामनद्वादशीके दिन वृत्त न करते 'उत्सवांते च पारणं' एसो बचन है पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभू बद्रीनाथजीते बिदाभये तब कृष्णदास साथहींहै ॥ प्रसंग ॥ ६ ॥

प्रथम श्रीआचार्यजी महाप्रभू वेदव्यासजीके मंदिरमें पधारे तब कृष्णदाससों कह्यो जो तू ठाढो रहियो तब कृष्णदास ठाढे रहे पाछे आप तीसरे दिन पधारे तब कह्यौ जो तू गयो नाहीं सो काहेते तब कृष्णदासने कह्यौ जो महाराज तुम्हारी आज्ञा न मानों तौ सेवक काहेको? सेवकको आज्ञामें चलनो सो कृष्णदास ऐसे कृपापात्र भगवदीय प्रभूनकी आज्ञा मानते ताते श्रीआचार्यजी महाप्रभू कृष्णदासके ऊपर सदा प्रसन्न रहते पाछें मुखरताको दोष मनमें न लावते ऐसे आप उदारराय जीवनकी ओर न देखते दया राखते और अपनी ओरते दया राखी जीवनको अंगीकार करते जीवनकी ओरको विचार न करते कृष्णदास मार्ग तथा घरमें सदैव रहते सो वे कृष्णदास श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ताको पार नाहीं सो अब कहांताई लिखय ॥ प्रसंग ॥ ७ ॥

वैष्णव ॥ २ ॥

अथ दामोदरदास सम्बलवारे खत्री कन्नौजके वासीकी वार्ता।

सो दामोदरदासको एक पत्र तामेको पायौ और स्वप्नमें वासें कह्यौ जो जा पत्रको वांचे ताकी तू सरण जैयो सो वह पत्र काहूंसों बांच्यौ न जाय सो कितेक दिन पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभू कन्नौज पधारे तहां गांवके बाहिर आय उतरे और कृष्णदास मेघनको गांवमें पठायो और कह्यो जो सीधोसामग्री ले आउ परि काहूसों कहियो मती जो श्रीआचार्यजी महाप्रभू यहां पधारे हैं तब कृष्णदास गांवमें जाय सीधो सामग्री सब लीनो सो लेके जब चलन लागे तब दामोदर दास ताही समय राजद्वारसे आवत हुते सो मार्ग जात कृष्णदासको देख्यो तब दामोदरदास घोडातें उतरके कृष्णदासके पास आये और दण्डवत कीये पाछे पूछो जो तुम कहांते आये और श्रीआचार्यजी महाप्रभू पधारे हैं तब कृष्णदासने कह्यो जो आज्ञा नाहीं तब दामोदरदासने कह्यो जो यह श्रीआचार्यजी महाप्रभून बिना काहेको आवै सो जब कृष्णदास चले तब पाछें २ दामोदरदास आये और घोडा हो सो पठाय दीयौ सो

कृष्णदासकों दूरते आवत श्री आचार्यजी महाप्रभूननें देख्यो पाछे दामोदरदासकों देख्यो तब दामोदरदासने दण्डवत कीनी तब कृष्ण दाससों श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें पूछो जो तैनें यासों क्यों कहीं तब कृष्णदासने कह्यो जो महाराज मैनें तो इनसों नाहीं कही तब दामोदरदासने बीनती कीनी जो महाराज इन मोसों नाहीं कह्यो हुंतो इनके पाछें २ चल्यो आयो हूं और श्रीआचार्यजी महाप्रभू नाहींकी ऐसो याते कन्नौज पधारेंगे तब पावन करने हैं तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू मनमें विचारे जो आज्ञा भई है सो आपही होयगी ताके लिये नाहीं कही हुती पाछे श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें दामोदरदाससों पूछो जो पत्र लायो है तब दामोदरदासने बीनती कीनी जो महाराज पत्रको कहा काम है मोकों शरण लीजियै तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कही जो तोकों आज्ञा भई है जो यह पत्र बांचे ताकी तू शरण जइयो तातें तू पत्र लाउ तब पत्र मँगायो तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें पत्र बांच्यो पाछें वा पत्रको अभिप्राय दामोदरदाससों कहो दामोदरदासकों पाछें नाम सुनायो पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभू-

नको दामोदरदासने अपने घर पधराये पाछें दामोदरदास तथा दामोदरदासकी स्त्री दोउ जने स्नान करिकें श्रीआचार्यजी महाप्रभूकी शरण आये तब दामोदरदासको समर्पण करावायो और दामोदरदासकी स्त्रीकों प्रथम नाम सुनायो पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने समर्पण करवायो तब दामोदरदासने बीनती कीनी जो महाराज अब हमको कहा आज्ञाहै अब हम कहा करें तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें आज्ञा करी जो अब तुम सेवा करौ तब दामोदरदासने कही जो महाराज सेवा कौन भांते करे तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कही जो कहूं श्रीठाकुरजीको स्वरूप देखो सो एक दरजीके घरमें श्रीठाकुरजीको स्वरूप हुतो सो ताको दामोदरदास द्रव्य देकें लेआये पाछे सब घर पोतोपात्र सब बदलाये पाछे श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने वा स्वरूपको पंचामृतमें स्नान करवायो श्रीद्वारकानाथजी नाम धरचौ पाछें सिंहासन बैठाये तब दामोदरदासके मांथे सेवा पधरायकें पाछें भोग समर्प्यौ समयानुसार भोग सराय बीडा समर्पन लागे तब देखेंतो पान हरे हैं तब श्रीमहाप्रभूनने कह्यौ जो दामोदरदास हरे पान कबहूं नहीं समार्पिये उत्तम सामग्री

होय सो श्रीठाकुरजीको समर्पिये श्रीठाकुरजी तो उत्तम वस्तुके भोक्ता हैं पाछें स्त्री पुरुष भलीभांतिसों सेवा करन लागे तब श्रीद्वारकानाथजीकी सेवा भलीभांतिसों होन लागी और श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें आज्ञा दीनी जो उतर्यौ परकालौ होय सो श्रीठाकुरजीकूं कबहूं न समर्पिये वह काम न आवे सारे परकालेमेंते प्रथम श्रीठाकुरजीको लीजिये और उत्तम कोमल वस्त्र होय सो श्रीठाकुरजीके काम आवें पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें और आज्ञा दीनी जो उत्तम सामग्री होय सो श्रीठाकुरजीके लिये अपने घर लेआइयै श्रीठाकुरजीकी सामग्रीमेंते और ठौर खर्च न करियै तब दामोदरदास स्त्रीपुरुष दोऊजने भलीभांतिसों सेवा करने लागे और सामग्री उज्वल होती जो रूपानके कटोरानमें अपरस राखते सो ऐसी उज्वल कोई जानतो नाहीं जो यामें सामग्री है या भांतिसों सेवा करन लागे॥ प्रसंग ॥ १ ॥

और दामोदरदास श्रीठाकुरजीकों जल आप भरते सो एकदिन वाको सुसर दामोदरदासके घर आयकें दामोदरदाससों कहन लाग्यौ जो तुम जल भरि लावतहो सो हमको जातिमें लज्जा आवत है

तातें तुम जल मतिभरो लौंडीके हाथ जल भरावो तब दामोदरदासने एक घडातो आप लीयौ और एक घडा स्त्रीके हाथमें दियौ तब दोऊजने घडा लेके वाकी हाटके आगें होयके निकसे तब जल भरिकें घर आये पाछें दामोदरदासकौ सुसर आयौ सो आयके दामोदरदासके पावन परचौ और वीनती करिके कह्यौ जो में चूकौ अबते तुमही जल भरौ पारि स्त्री पास जल मति भरावो आज पाछें हम कछू न कहैंगे तब आपही जल भरन लागे जो चाहियै सो श्रीद्वारकानाथजी दामोदरदाससे मांग लेते बातें करते सेवा करिके श्रीठाकुरजीको ऐसे प्रसन्न किये तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू अपने श्रीमुखते कहैं जो जिननें राजा अंबरीष न देख्यौ होय सो दामोदरदासकों देखें राजा अंबरीष तो मर्य्यादामार्गीय हुते और यह पुष्टिमार्गीय है इनमें इतनी अधिकता है ॥ प्रसंग ॥ २ ॥

और एक दिन उष्णकालके दिन हुते तब श्रीद्वारकानाथजीको पौढाये आप दामोदरदास जायके चौवारेमें सोये सो वा दिन गरमी बहुत भयी तब श्रीद्वारकानाथजीने लौंडीको आज्ञा दीनी जो किवाड खोल मोकों गरमी बहुत लागत है

तब लोंडीने किवाड खोले तब श्रीद्वारकानाथजीनें लोंडीसों कह्यो जो पंखा करि तब लोंडीने पखा कियो सो घडी एकली पंखा कियो पाछे लोंडीसों कह्यो जो तू अब जायके सोय रहि तब लोंडी किवाड खुले छोडके सो रही तब सवारो भयो तब दामोदरदास देखे तो किवाड खुले पडे हैं तब पूंछो किवाड किन खोले तब लोंडीनें कही जो मोंको श्रीठाकुरजीनें किवाड खोलनेकी आज्ञा करी है तब किवाड खोले है तब दामोदरदास लोंडीते बहुत खीजे और कह्यो जो तेनें किवाड क्यों खोले जो मोकों श्रीठाकुरजीनें किवाड खोलनकी आज्ञा क्यों न करी आप क्यों न खोले और लोंडीसों क्यों कही पर प्रभू बडदयालु हैं ता विषय स्नेह होय ताही सों संभाषण करें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके अंगी-कारमें सब समान हैं लौकिकमें कोऊ ऊंच नीच कह-लेउ श्रीठाकुरजीतो स्नेहके बस हैं पाछें श्री ठाकुर-जीनें कह्यो जो मेंनें किवाड खुलाए हैं तब इन खोले हैं तूतो चोवारेमें जाय सोयो और मोकों भीतर सुवायो मोंकों गरमी बहुत लगी ताते खुलाये हैं तू लोंडीसों क्यों खीजत हैं यों कहिके बहुत खीजे तब दामोदरदासने कह्यो जो प्रसाद तब लेउ जब

मंदिर सम्हराऊं तब स्त्रीने कह्यो जो प्रसाद न लेउ तौ ऐसो क्यों बन यह तो पांच सात दिनको काम नाहीं प्रसाद लीयेबिना क्यों चले तब कह्यो जो प्रसाद तो नाहीं लेउ फलाहार करूंगो तब ऐसे करत करत मन्दिर सिद्धभयौ तब श्रीद्वारकानाथ-जीके मन्दिरमें पाठ बैठाये तब उत्सव कीयौ वैष्ण-वको प्रसाद लिवायौ ता पाछें आपने प्रसाद लियो॥ प्रसंग ॥ ३ ॥

और एक दिन दामोदरदास श्रीठाकुरजीको राजभोग समर्पिके सइयामंदिरमें समारनगये तब देखें तो दुलीचाऊपर बिल्लीने बिगार दियौ है तब दामोदरदासने कही जो श्रीठाकुरजी अपनी सैयाहू राखसकत नाहीं एसें कह्यौ तब श्रीठाकुजीने थार चौकी ऊपरसों लात मारिके डारदीनी और दामोद-रदाससों श्रीठाकुरजीने कह्यौ जो तू कैसो सेवक है सेवक होयकें या भांति कहत है ऐसे बहुत खीजे पाछें दामोदरदासनें बीनती कीनी मनुहार बहुत करी सामग्री सिद्ध करवायके श्रीठाकुरजीको भोग समर्प्यो तब श्रीठाकुरजी आरोगे पर तोहु मास दोयलों बोले नाहीं तब दामोदरदासनें बीनती बहुत कीनी तब फेर बोलन लागे ॥ प्रसंग ॥ ४ ॥

बहुर एक समय दामोदरदास हरसानी इनके पर पाउने आए सो दामोदरदास संबलवारेके घर पांच सात दिन रहे तब इनने भलीभांतिसो समाधान कीयौ पाछें दामोदरदास हरसानी इनसों बिदा होयकें अडेल आये तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें दामोदरदास सो कह्यौ जो दमला तू कहां उतरयौ है और कहां प्रसाद लीयो है तब दामोदरदास हरसानीने श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों बीनती कीनी जो महाराज कन्नोजमें दामोदरदास संबलवारेके घर उतरयोहौ पर अनसखडी महाप्रसाद लेतो सखडी न लेतौ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू दामोदरदाससंबलवारेके ऊपर अप्रसन्न भये और कह्यौ जो यह मेरौ अंतरंग सेवक याकों सखडी महाप्रसाद क्यों न लिवायौ सो यह बात श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके अंतःकरनकी दामोदरदास संबलवारेने घर बैठे जानी जो श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप अप्रसन्न भये मेरे ऊपर तब स्त्रीसों कह्यौ जो तू श्रीठाकुरजीकी सेवा नीकीभांतिसों करियौ और मैंतो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके चरन देखवेको अडेल जातहौं सो तब तहांते चले सो अडेल जाय पहुंचे तब श्रीआचा-

र्यजी महाप्रभूनके दर्शन करिकें साष्टांग दण्डवत
कीनी तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू पीठि दै बैठे तब
दामोदरदास संबलवारेने श्रीआचार्यजी महाप्रभू-
नसों बीनती कीनी जो महाराज मेरो अपराध
कहाहै और जीवतो अपराध करतही आयो है
परिअपराध जानियै तो भलौ है तब श्रीआचार्यजी
महाप्रभूनने कह्यो जो तेने दामोदरदास हरसा-
नीको अपने घर महाप्रसाद अनसखडी क्यों
लिवायो सखडी क्यों न लिवायो तब दामोदरदास
संबलवारेनें बीनती कीनी जो महाराज दामोदर-
दाससों आप पूछियै जो सखडी क्यों न लीनी तब
श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें दामोदरदासहरसानी
सों कह्यो जो तेनें सखडी महाप्रसाद क्यों न लीनो
तब दामोदरदासने कह्यो जो महाराज श्रीठाकुरजी
प्रातःकाल बालभोग आरोगते पाछें पकवान मिठाई
दूधपाक बहुत लेतो सो सखडीकी रुचि रहती
नाहीं ताते न लेतो तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें
कह्यो जो तूतो अपनी इच्छाते न लेतो परि मोकों तो
याके ऊपर बडी खुन्स भई हुती सो भक्तनके अंतः-
करनकी वृत्ति देखवेकों प्रभूनको प्रागट्य है काहेते
जो दामोदरदाससंबलवारेने अपने घर कन्नौजमें
श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके अन्तःकरनकी जानी

तो श्रीआचार्यजी महाप्रभू तो भक्तनके हृदयमें सदा स्थिति हैं तो भक्तनके हृदयकी बात क्यों न जाने परि भक्तनकी परीक्षार्थ यह प्रागट्यको प्रागट्य है पाछें दामोदरदास संबलवारेने बहुत सन्मान करिके श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें वाको अपने घरको पठायो तब दामोदरदास अपने घर कन्नौजमें आए तब दोऊ स्त्री पुरुष भली भांतिसों सेवा करन लागे ॥ प्रसंग ॥ ५ ॥

और सिंहनन्दनके वैष्णव श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके पास जाते सो सब कन्नौजमें दामोदरदासको मिलिकें जाते जो वैष्णव आवते तिन सबनको कन्नौजमें अपने घर आदर सन्मान करिकें उतारते सबनको महाप्रसाद लिवावते पाछें जब अडेल बिदा होते तब तिन वैष्णवप्रति एक एक मोहर एक एक श्रीफल श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी भेंट पठावते कहेते जो मेरी दंडोत खाली हाथन कैसे करेंगे ऐसे श्रीआचार्यजी महाप्रभू इनपर सदा प्रसन्न रहते ॥ प्रसंग ॥ ६ ॥

बहुर दामोदरदासको सुसर बहुत प्रसन्न हुतो तिननें सौ लौंडी बेटीके दायजेमें दीनी जो मेरी बेटी बैठी रहेगी काम काज सब लौंडी करेगी पारि

ऐसे न करती सेवासम्बन्धी कार्य सब आपु करती सो वह ऐसी भगवदीय ही प्रसंग ॥ ७ ॥

बहुर एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप दामोदरदासके घर पोढे हुते और दामोदरदास पांव दाबत हुतो तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें दामोदरदास सों पूछो जो दामोदरदास तेरे मनमें काहू बातको मनोरथ है तब दामोदरदासने कह्यौ जो महाराज मोकों तो काहु बातको मनोरथ आपके अनुग्रहते रह्यौ नाहीं तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यौ जो तू अपनी स्त्रीसों पूछ आऊ जो तोको काहू बातको मनोरथ है तब दामोदर दास जायकें अपनी स्त्रीसों पूछौ जो तेरे काहू बातको मनोरथ है तब स्त्रीने कह्यौ जो कोई बात को मनोरथ रह्यों नाहीं एक पुत्रको मनोरथ है एक पुत्र होय तौ भलौ तब यह बात दामोदरदा-सने जायकें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों कह्यौ जो महाराज स्त्रीको मनोरथ है जो एक पुत्र होय तो भली है तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप कहैं जो हां होयगो पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप तौ श्रीनाथजीद्वार पधारे पाछें जब वाकें समय भयौ तब स्त्री गर्भस्थित भइ पाछें वा वाखरमें

कितनेक दिनमें एक डाकौतिया आयौ तब वाकों सब साथकी स्त्री पूछन लागी तब तामेंते काहूने दामोदरदासकी स्त्रीसों कही जो अमुकी तूहू पूछि देखी जो कहा होयगो बेटा होयगो के बेटी होयगी पाछें वाकी लौंडीने जायके वा डाकौतियासों पूछी जो दामोदरदासकी स्त्रीके कहा होयगो बेटा होयगो के बेटी होयगी तब वा डाकौतियाने कही जो बेटा होयगो पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभू कितनेक दिनमें कन्नौजमें पधारे तब दामोदरदास चरण छूवन लागे तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यौ जो मोकों छूवे मति तोकों अनाश्रय भयौहै तब दामोदरदासने कह्यौ जो महाराज में तो कछू जानत नाहीं हौ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यौ जो तू अपनी स्त्रीसों पूछि आउ तब दामोदरदासनें स्त्रीसों पूछौ जो तेने कछू अनाश्रय कीनोहै सो स्त्रीने जो प्रकार भयौ हुतो सो सब कह्यौ सो बात श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों कहो तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कही जो याके पेटमें म्लेछ होयगो पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप तो अडेल पधारे पाछें यह बात दामोदरदासकी स्त्रीने सुनी तबते श्रीठाकुरजीके पात्रादिक सेवा

सम्बन्धी वस्तु स्पर्श न करती और कहती जो मेरे पेटमें म्लेच्छ है ताते श्रीठाकुरजीके पात्र तथा सामग्री कैसे छूऊं या भांतिसों कहती पाछें जब प्रसूतके दिन आए तब दामोदरदासकी स्त्रीनें अपनी महतारीसों कहवाय पठाई जो मेरे पुत्र होयगो सो होत मात्र तू अपने घर लेजैयो हम वाको मुख न देखेंगे जो हम वाको मुख देखेंगे तो हमारो धर्म नष्ट होयगो तातें हम वाको मुख न देखेंगे सो उपाय तू करियो पाछे वाकी महतारीने ऐसें ही कीयो प्रसूत मात्रहोत अपने घर लेगई पाछें धायको देके बडो कीयो ॥ प्रसंग ॥ ८ ॥ ॥

बहुर कितनेक दिन पाछें दामोदरदासकी देह छूटी तब वाकी स्त्रीने छिपाय राख्यो पाछें वा स्त्रीने एक वैष्णवसों कही जो तुम अडेलको एक नाव भाडे करि ल्यावो सो वह वैष्णव भाडे करि ल्यायो ता नावमें श्रीद्वारकानाथजी और घरमेंकी सामग्री तिनूका पर्यंत कछू घरमें राख्यो नाहीं घरमें जो हुतो सो सब नावमें भर्यो तब वा वैष्णवसों कह्यो जो यह नाव अडेलकों लेजाउ श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके मन्दिरमें पहुंचाय आवो सो वह वैष्णव नाव लेके चल्यो सो कोस तीस पर नाव गई ता

पाछें स्त्रीने प्रगट करी जो दामोदरदासकी देह छूटि गई है तब वैष्णव जुरि आये दामोदरदासको नमस्कार कीयौ पाछें दामोदरदासकौ बेटा तुरक भयौ हुतौ सो आयौ आयके घरमें देखे तो कछू नाहीं जलको भर्यौ करवा घरमें धर्यौ है सो देखिके मूंड पीट रह्यौ पाछें दामोदरदासकौ सुसर आयौ तिनने अपनी बेटीसों कह्यौ जो बेटी तुमने घरमें कछू राख्यौ नाहीं सो तू अब कहा खायगी तब वाने कही जो तुम देउगे सो मैं खाऊंगी क्षत्री लोगनके पासमें सगे सौंदरे कछू देत हैं एसी ग्यातीकी रीति है तब दामोदरदासकी स्त्रीने अन्न जलको त्याग कीयौ सो थोरेसे दिनमें वाकीहू देह छूटी तब कृत्य दोउनकौ साथही भयौ वह ऐसो भगवदीय ही सो यह बात कितनेक दिन पाछें काहू वैष्णवने श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके आगे आय कही तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कही इनकौं योंही चाहिये वे दोउ जने ऐसे भगवदीय हैं उनकी सराहना श्रीआचार्यजी महाप्रभू श्रीमुखते करते तातें इनकी वार्ता अनिर्वचनीय है इनकी वार्ता कहां तांई लिखियै प्रसंग ॥ ९ ॥ वै० ॥ ३ ॥

अथ पद्मनाभदासकन्नौजिया ब्राह्मण कन्नौजमें रहते तिनकी वार्ता ।

सो एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभू कन्नौज पधारे तब पद्मनाभदास श्रीआचार्यजी महाप्रभू-नके दर्शनको आए तब पद्मनाभदासने श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके श्रीमुखते भगवद्वार्ताको प्रसंग सुन्यो तब जानी जो एतो साक्षात् ईश्वर हैं एसे श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके दर्शन भये प्रथम पद्मनाभदास व्यास आसन बैठते सो कन्नौजमें अपने घर कथा कहते उंचे आसन बैठते श्रोता बहुत कथा सुनिवेकों आवते काहुको घर जानो न पडतो वृत घरबैठे चली आवती या भांतिसों रहते सो पद्मनाभदास श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके श्रीमुखतेभगवत् प्रसंग सुन्यो तबते जानों जो ए साक्षात् पूरन पुरुषोत्तम हैं सो पूरन पुरुषोत्तम जानिके पद्मनाभदास श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी शरण आये नाम पायेपाछें समर्पण करवायो तब उत्थापनके समय श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें पोथी खोली तहां दामोदरदास संबलवारेके घर बैठे हुते ता समय पद्मनाभदास अपने घर ते आये श्रीआचार्यजी

महाप्रभूनको दंडवत् करिके बैठे तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने पोथी खोली और श्लोक निबंधनको कह्यो–

श्लोक ॥ पठनीयंप्रयत्नेनसर्वहेतुविवर्जितम् ॥ वृत्यर्थंनैवयुंजीत प्राणैःकण्ठगतैरपि ॥ तदभावेतथैवस्यात्तथानिर्वाहमाचरेत् ॥

यह श्लोक पढे सो पद्मनाभदासनें सुन्यौ पाछें दशमस्कन्धकी कथा कही सो सुनी तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू कथा कहि रहे तब पद्मनाभदासनें जलकी अञ्जली भरिके संकल्प कियो जो अबते कथा कहिवे कौ वृत न करूंग ऐसे श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके आगे संकल्प कीयौ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें श्रीमुखते कह्यो जो श्रीभागवत वृत्तार्थ न कहनौ और तो तुम्हारीवृत हैं तुम ब्राह्मण हौ और पुराण महाभारत तो इत्यादिक कहनौ तब पद्मनाभदासने कह्यौ जो महाराज हमने अबतौ संकल्प कीयौ सोतो कीयौ यातें कछू न कहनों तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू कहें जो तुम गृहस्थ हौ सो कौन भांति निर्वाह करोगे तब पद्मनाभदासने कह्यौ जो महाराज भिक्षा मांगिके निर्वाह करूंगो पाछें एक जिजमानके घर वृत्तथ गए तिन तब बहुत आदर सन्मान कीयौ तब पद्मनाभदासके

मनमें बहुत ग्लानि आई जो कबहूं पहले तो भिक्षा-
वृत्य करी नाहीं और अब वैष्णव भये ताकौं तो यह
भिक्षाहू उचित नाहीं तब फेर संकल्प कीयौ जो
अबतो भिक्षा कबहूं न करूंगो तब फेर श्रीआचा-
र्यजी महाप्रभूनने कह्यौ जो अब निर्वाह कौन भांति
करोगे तब पद्मनाभदासने कही जो अब वैष्णव-
कृत्य करि निर्वाह करूंगो पाछें कौडी बेचते लकडी
ले आवते पर और बात न बिचारी या भांति देहादि
निर्वाह कीनो ऐसे टेकके कृपापात्र भगवदीय हैं ॥
प्रसंग ॥ १ ॥

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभू प्रयागमें पधारे हैं
तब पद्मनाभदास साथ हैं रात्री पहर एक गई ही
तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने पद्मनाभदाससों
कही जो श्रीअक्काजीकों पारते पधराय लावो सो
सुनतही पद्मनाभदास उठि चले तब पांच सात
वैष्णव तहां बैठे हुते सो कहन लागे जो यह ब्राह्मण
बावरो भयो है या वेर कहां जायगो नाव सब बंधी
है घटवार सब घरगये हैं ताते यह बिरियां जाइवेकी
नहीं पारि याकोंतो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी
आज्ञा है ताको बिस्वास जो यह काम अधिक
अवश्य होयगो सो घाट ऊपर आये तब इत उत

देखन लागे इतनेमें देखेंतो अकस्मात एक लरिका वर्ष दसको एक डौंगी लेकर आयौ सो वानें पद्मनाभदासकौं पूछौ जो तू पार जायगो तब पद्मनाभदासने कह्यौ हां हां जाऊंगो तब उन पार उतार दीनो पाछें फेर पूछौ जो तू फेर आवेगो तब पद्मनाभदासने कह्यौ जो घडी दोय पाछें आउंगो तब लरिकानें कह्यौ जो डौंगी राखत हों तू वेगी आईयो पाछें अडेलमें जायके श्रीअक्काजीको पधराय लाये तब वाही डौंगीमें बैठार पार उतारे तब फिर देखेतो वहां डौंगीहु नाहीं और लरिकाहुनाहीं पाछें श्रीअक्काजीको पधरायकें घर आये पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें पद्मनाभदासकों आज्ञा दीनी जो जाउ सोय रहो जब जहां वैष्णव सोये हुते तहां आये तब वैष्णव सब पूछन लागे जो तुम कहा करि आये तब पद्मनाभदासने सब समाचार कहे तब वैष्णवननें कह्यौ जो तेनें श्रीठाकुरजीको श्रम बहुत करवायो पाछें वैष्णवननें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों पूछौ जो महाराज पद्मनाभदासनें श्रीठाकुरजीको श्रम बहुत करवायो तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यौ जो यह जो भयो है कछु सो मेरी इच्छातें भयो है ताते तुम पद्मनाभदाससों कछु मति कहो ॥ प्रसंग ॥ २ ॥

बहुर एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभू श्रीगोकुलते अडेलको जात हुते तब एक व्यौपारी कछु वस्तु लेके साथमें चल्यो और श्रीआचार्यजी महाप्रभू कन्नौजके बीच पधारे तब व्यौपारी पीछें रह्यो ताके ऊपर चोर आय पडे सो वस्तु सब लूट लीनी और श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप तो दामोदरदास संबलवारेके घर पधारे सो वहां उतरे रसोई कारि श्रीठाकुरजीकों भोग समर्प्यो इतनेमें वहु व्यौपारी रोवत पीटत आयो तब पूछो जो श्रीआचार्यजी महाप्रभू कहा करत हैं तब पद्मनाभदासनें कह्यो जो भोजन करत होयंगे तब वा व्यौपारीने कह्यो जो हमारो माल सब लुटि गयो है और श्रीआचार्यजी महाप्रभू भोजन करत हैं तब पद्मनाभदासने अपने मनमें विचार्यो जो श्रीआचार्यजी महाप्रभू सुनेंगे तो भोजन न करेंगे घडी दोयकी अवार होयगी तातें पद्मनाभदास वा व्यौपारीकी बांह पकरिके एक साहकी दुकानपर लेगये ता साहने पद्मनाभदासको बहुत आदरसनमान कीयो तब वाने कह्यो जो आज्ञा करो कैसे पधारे हो तब पद्मनाभदासने वा साहसों कह्यो जो या व्यौपारीकों इतनो द्रव्य दियो चाहियो या द्रव्यको

पाछें स्त्रीने प्रगट करी जो दामोदरदासकी देह छूटि गई है तब वैष्णव जुरि आये दामोदरदासको नमस्कार कीयौ पाछें दामोदरदासकौ बेटा तुरक भयौ हुतौ सो आयौ आयके घरमें देखे तो कछू नाहीं जलको भर्यौ करवा घरमें धर्यौ है सो देखिके मूंड पीट रह्यौ पाछें दामोदरदासकौ सुसर आयौ तिनने अपनी बेटीसों कह्यौ जो बेटी तुमने घरमें कछू राख्यौ नाहीं सो तू अब कहा खायगी तब वाने कही जो तुम देउगे सो मैं खाऊंगी क्षत्री लोगनके पासमें सगे सौंदरे कछू देत हैं एसी ग्यातीकी रीति है तब दामोदरदासकी स्त्रीने अन्न जलको त्याग कीयौ सो थोरेसे दिनमें वाकीहू देह छूटी तब कृत्य दोउनकौ साथही भयौ वह ऐसो भगवदीय ही सो यह बात कितनेक दिन पाछें काहू वैष्णवने श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके आगे आय कही तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कही इनकौं योंही चाहिये वे दोउ जने ऐसे भगवदीय हैं उनकी सराहना श्रीआचार्यजी महाप्रभू श्रीमुखते करते तातें इनकी वार्ता अनिर्वचनीय है इनकी वार्ता कहां तांई लिखियै प्रसंग ॥ ९ ॥ वै० ॥ ३ ॥

अथ पद्मनाभदासकन्नौजिया ब्राह्मण कन्नौजमें रहते तिनकी वार्ता।

सो एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभू कन्नौज पधारे तब पद्मनाभदास श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके दर्शनको आए तब पद्मनाभदासने श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके श्रीमुखते भगवद्वार्ताको प्रसंग सुन्यो तब जानी जो एतो साक्षात् ईश्वर हैं एसे श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके दर्शन भये प्रथम पद्मनाभदास व्यास आसन बैठते सो कन्नौजमें अपने घर कथा कहते उंचे आसन बैठते श्रोता बहुत कथा सुनिवेकों आवते काहुको घर जानो न पडतो वृत घरबैठे चली आवती या भांतिसों रहते सो पद्मनाभदास श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके श्रीमुखतेभगवत् प्रसंग सुन्यो तबते जानों जो ए साक्षात् पूरन पुरुषोत्तम हैं सो पूरन पुरुषोत्तम जानिके पद्मनाभदास श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी शरण आये नाम पायोपाछें समर्पण करवायो तब उत्थापनके समय श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें पोथी खोली तहां दामोदरदास संबलवारेके घर बैठे हुते ता समय पद्मनाभदास अपने घर ते आये श्रीआचार्यजी

महाप्रभूनकों दंडवत् करिके बैठे तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने पोथी खोली और श्लोक निबंधनको कह्यो–

श्लोक ॥ पठनीयंप्रयत्नेनसर्वहेतुविवर्जितम् ॥ वृत्यर्थेनैवयुंजीत प्राणैःकण्ठगतैरपि ॥ तदभावेतथैवस्यात्तथानिर्वाहमाचरेत् ॥

यह श्लोक पढे सो पद्मनाभदासनें सुन्यौ पाछें दशमस्कन्धकी कथा कही सो सुनी तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू कथा कहि रहे तब पद्मनाभदासनें जलकी अञ्जली भरिके संकल्प कियो जो अबते कथा कहिवे कों वृत न करूंग ऐसे श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके आगे संकल्प कीयो तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें श्रीमुखते कह्यो जो श्रीभागवत वृत्तार्थ न कहनौ और तो तुम्हारीवृत हैं तुम ब्राह्मण हो और पुराण महाभारत तो इत्यादिक कहनौ तब पद्मनाभदासने कह्यौ जो महाराज हमने अबतौ संकल्प कीयौ सोतो कीयौ यातें कछू न कहनों तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू कहैं जो तुम गृहस्थ हो सो कौन भांति निर्वाह करोगे तब पद्मनाभदासने कह्यौ जो महाराज भिक्षा मांगिके निर्वाह करूंगो पाछें एक जिजमानके घर वृत्तथ गए तिन तब बहुत आदर सन्मान कीयौ तब पद्मनाभदासके

मनमें बहुत ग्लानि आई जो कबहूं पहले तो भिक्षा-
वृत्य करी नाहीं और अब वैष्णव भये ताकौ तो यह
भिक्षाहू उचित नाहीं तब फेर संकल्प कीयो जो
अबतो भिक्षा कबहूं न करूंगो तब फेर श्रीआचा-
र्यजी महाप्रभूनने कह्यौ जो अब निर्वाह कौन भांति
करोगे तब पद्मनाभदासने कही जो अब वैष्णव-
कृत्य करि निर्वाह करूंगो पाछें कौडी बेचते लकडी
ले आवते पर और बात न बिचारी या भांति देहादि
निर्वाह कीनो ऐसे टेकके कृपापात्र भगवदीय है ॥
प्रसंग ॥ १ ॥

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभू प्रयागमें पधारे हैं
तब पद्मनाभदास साथ है रात्री पहर एक गई ही
तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने पद्मनाभदाससों
कही जो श्रीअक्काजीकों पारते पधराय लावो सो
सुनतही पद्मनाभदास उठि चले तब पांच सात
वैष्णव तहां बैठे हुते सो कहन लागे जो यह ब्राह्मण
बावरो भयो है या वेर कहां जायगो नाव सब बंधी
है घटवार सब घरगये हैं ताते यह बिरियां जाइवेकी
नहीं पारि याकोंतो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी
आज्ञा है ताको बिस्वास जो यह काम अधिक
अवश्य होयगो सो घाट ऊपर आये तब इत उत

पाछें स्त्रीने प्रगट करी जो दामोदरदासकी देह छूटि गई है तब वैष्णव जुरि आये दामोदरदासको नमस्कार कीयौ पाछें दामोदरदासकौ बेटा तुरक भयौ हुतौ सो आयौ आयके घरमें देखे तो कछू नाहीं जलको भर्यौ करवा घरमें धर्यौ है सो देखिके मूंड पीट रह्यौ पाछें दामोदरदासकौ सुसर आयौ तिनने अपनी बेटीसों कह्यौ जो बेटी तुमने घरमें कछू राख्यौ नाहीं सो तू अब कहा खायगी तब वाने कही जो तुम देउगे सो मैं खाऊंगी क्षत्री लोगनके पासमें सगे सौदरे कछू देत हैं एसी ग्यातीकी रीति है तब दामोदरदासकी स्त्रीने अन्न जलको त्याग कीयौ सो थोरेसे दिनमें वाकीहू देह छूटी तब कृत्य दोउनको साथही भयौ वह ऐसो भगवदीय ही सो यह बात कितनेक दिन पाछें काहू वैष्णवने श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके आगे आय कही तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कही इनकौं योंही चाहिये वे दोउ जने ऐसे भगवदीय हैं उनकी सराहना श्रीआचार्यजी महाप्रभू श्रीमुखते करते तातें इनकी वार्ता अनिर्वचनीय है इनकी वार्ता कहां तांई लिखियै प्रसंग ॥ ९ ॥ वै० ॥ ३ ॥

अथ पद्मनाभदासकन्नौजिया ब्राह्मण कन्नौजमें रहते तिनकी वार्ता ।

सो एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभू कन्नौज पधारे तब पद्मनाभदास श्रीआचार्यजी महाप्रभू-नके दर्शनको आए तब पद्मनाभदासने श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके श्रीमुखते भगवद्वार्ताको प्रसंग सुन्यो तब जानी जो एतो साक्षात् ईश्वर हैं एसे श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके दर्शन भये प्रथम पद्मनाभदास व्यास आसन बैठते सो कन्नौजमें अपने घर कथा कहते उंचे आसन बैठते श्रोता बहुत कथा सुनिवेकों आवते काहुको घर जानो न पडतौ वृत घरबैठे चली आवती या भांतिसों रहते सो पद्मनाभदास श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके श्रीमुखतेभगवत् प्रसंग सुन्यौ तबते जानों जो ए साक्षात् पूरन पुरुषोत्तम हैं सो पूरन पुरुषोत्तम जानिके पद्मनाभदास श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी शरण आये नाम पायौपाछें समर्पण करवायौ तब उत्थापनके समय श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें पोथी खोली तहां दामोदरदास संबलवारेके घर बैठे हुते ता समय पद्मनाभदास अपने घर ते आये श्रीआचार्यजी

महाप्रभूनकों दंडवत् करिके बैठे तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने पोथी खोली और श्लोक निबंधनको कह्यो–

श्लोक ॥ पठनीयंप्रयत्नेनसर्वहेतुविवर्जितम् ॥ वृत्यर्थैनैवयुंजीत प्राणैःकण्ठगतैरपि ॥ तदभावेतथैवस्यात्तथानिर्वाहमाचरेत् ॥

यह श्लोक पढे सो पद्मनाभदासनें सुन्यौ पाछें दशमस्कन्धकी कथा कही सो सुनी तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू कथा कहि रहे तब पद्मनाभदासनें जलकी अञ्जली भरिके संकल्प कियौ जो अबते कथा कहिवे कौ वृत न करूंगे ऐसे श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके आगे संकल्प कीयौ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें श्रीमुखते कह्यो जो श्रीभागवत वृत्तार्थ न कहनौ और तो तुम्हारीवृत हैं तुम ब्राह्मण हौ और पुराण महाभारत तो इत्यादिक कहनौ तब पद्मनाभदासने कह्यौ जो महाराज हमने अबतौ संकल्प कीयौ सोतो कीयौ यातें कछू न कहनों तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू कहें जो तुम गृहस्थ हौ सो कौन भांति निर्वाह करोगे तब पद्मनाभदासने कह्यौ जो महाराज भिक्षा मांगिके निर्वाह करूंगो पाछें एक जिजमानके घर वृत्तथ गए तिन तब बहुत आदर सन्मान कीयौ तब पद्मनाभदासके

मनमें बहुत ग्लानि आई जो कबहूं पहले तो भिक्षा-
वृत्य करी नाहीं और अब वैष्णव भये ताकौ तो यह
भिक्षाहू उचित नाहीं तब फेर संकल्प कीयौ जो
अबतो भिक्षा कबहूं न करूंगो तब फेर श्रीआचा-
र्यजी महाप्रभूनने कह्यौ जो अब निर्वाह कौन भांति
करोगे तब पद्मनाभदासने कही जो अब वैष्णव-
कृत्य करि निर्वाह करूंगो पाछें कौडी बेचते लकडी
ले आवते पर और बात न बिचारी या भांति देहादि
निर्वाह कीनो ऐसे टेकके कृपापात्र भगवदीय है ॥
प्रसंग ॥ १ ॥

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभू प्रयागमें पधारे हैं
तब पद्मनाभदास साथ है रात्री पहर एक गई ही
तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने पद्मनाभदाससों
कही जो श्रीअक्काजीकों पारते पधराय लावो सो
सुनतही पद्मनाभदास उठि चले तब पांच सात
वैष्णव तहां बैठे हुते सो कहन लागे जो यह ब्राह्मण
बावरो भयो है या वेर कहां जायगो नाव सब बंधी
है घटवार सब घरगये हैं ताते यह बिरियां जाइवेकी
नहीं परि याकोंतो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी
आज्ञा है ताको बिस्वास जो यह काम अधिक
अवश्य होयगो सो घाट ऊपर आये तब इत उत

देखन लागे इतनेमें देखेंतो अकस्मात एक लरिका वर्ष दसको एक डोंगी लेकर आयौ सो वानें पद्मनाभदासकों पूछों जो तू पार जायगो तब पद्मनाभदासने कह्यौ हां हां जाऊंगो तब उन पार उतार दीनो पाछें फेर पूछो जो तू फेर आवेगो तब पद्मनाभदासने कह्यौ जो घडी दोय पाछें आउंगो तब लरिकानें कह्यौ जो डोंगी राखत हों तू वेगी आईयो पाछें अडेलमें जायके श्रीअक्काजीको पधराय लाये तब वाही डोंगीमें बैठार पार उतारे तब फिर देखेतो वहां डोंगीहु नाहीं और लरिकाहुनाहीं पाछें श्रीअक्काजीको पधरायकें घर आये पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें पद्मनाभदासकों आज्ञा दीनी जो जाउ सोय रहो जब जहां वैष्णव सोये हुते तहां आये तब वैष्णव सब पूछन लागे जो तुम कहा करि आये तब पद्मनाभदासने सब समाचार कहे तब वैष्णवननें कह्यौ जो तेनें श्रीठाकुरजीको श्रम बहुत करवायौ पाछें वैष्णवननें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों पूछौ जो महाराज पद्मनाभदासनें श्रीठाकुरजीको श्रम बहुत करवायौ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यौ जो यह जो भयो है कछु सो मेरी इच्छातें भयो है ताते तुम पद्मनाभदाससों कछु मति कहो ॥ प्रसंग ॥ २ ॥

बहुर एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभू श्रीगोकुलते अडेलको जात हुते तब एक ब्यौपारी कछु वस्तु लेके साथमें चल्यो और श्रीआचार्यजी महाप्रभू कन्नौजके बीच पधारे तब ब्यौपारी पीछें रह्यौ ताके ऊपर चोर आय पडे सो वस्तु सब लूट लीनी और श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप तौ दामोदरदास संबलवारेके घर पधारे सो वहां उतरे रसोई कारि श्रीठाकुरजीकों भोग समर्प्यों इतनेमें वहु ब्यौपारी रोवत पीटत आयो तब पूछौ जो श्रीआचार्यजी महाप्रभू कहा करत हैं तब पद्मनाभदासनें कह्यौ जो भोजन करत होयंगे तब वा ब्यौपारीने कह्यौ जो हमारो माल सब लुटि गयो है और श्रीआचार्यजी महाप्रभू भोजन करत हैं तब पद्मनाभदासने अपने मनमें विचार्यौ जो श्रीआचार्यजी महाप्रभू सुनेंगे तो भोजन न करेंगे घडी दोयकी अवार होयगी तातें पद्मनाभदास वा ब्यौपारीकी बांह पकरिके एक साहकी दुकानपर लेगये ता साहने पद्मनाभदासको बहुत आदरसनमान कीयो तब वाने कह्यौ जो आज्ञा करो कैसे पधारे हो तब पद्मनाभदासने वा साहसों कह्यौ जो या ब्यौपारीकों इतनो द्रव्य दियो चाहियो या द्रव्यको

खत पत्र व्याज हम लिख देयंगे तब साहने कह्यौ जो पद्मनाभदासजी तुमको जितनों द्रव्य चाहियै तितनों लेउ खत पत्रकी कहा बात है तब पद्मनाभदासने कह्यौ जो पहले तो खत पत्र लिखोंगो पीछें द्रव्य लेउंगो बिना खत लिखे तो लेउंगो नाहीं तब साहने कही जो तुम्हारी इच्छा पाछें पद्मनाभदासने खत लिख दीनों तब साहने वा व्यौपारीको द्रव्य दीयो तब वह व्यौपारी तो अपनो द्रव्य लेके अपने घर गयौ तब पद्मनाभदास अपने घर आये तब पद्मनाभदाससों श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें पूछौ जो पद्मनाभदास तू कहां गयौ हौ तब पद्मनाभदासनें कह्यौ जो महाराज एक काम गयौ हौ सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप तो साक्षात् ईश्वर सो तत्काल जानि गये तब पद्मनाभदाससों श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यौ जो हम वा व्यौपारीको संग तौ लीनों न हतौ जो वाकों माल देनों वह पीछे रह्यौ हम कहा करे परि तेने बहुत बुरी करी सो ऋण काढिकें पैसा दीनों तब पद्मनाभदासने कही जो महाराज सो तो सांच परि वह व्यौपारी पुकार तो तौ राज भोजनमें दोय घडीकी अवार होती तो मेरो जन्म सब वृथा जातौ और ऋण

मोकलि देउंगो यह कितनीक बात है तब श्रीआ-
चार्यजी महाप्रभूननें कह्यौ जो तेने धर्म गहने लिख
दीनो सो काहेते तब पद्मनाभदासनें कह्यौ जो
महाराज ऐसौ गाढौ लिख दीयो जो बिना दिये न
जाय पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभू तौ अडेल
पधारे पाछें पद्मनाभदास एक राजा हुतौ ताके पास
गये तब पद्मनाभदासको वा राजाने बहुत आदर
सनमान कीयौ पाछें राजाने कह्यौ जो मोको कृपा
करिकें कछु सुनावो तब पद्मनाभदासने कह्यौ जो
राजा श्रीभागवत तौ नाहीं सुनाऊं कहौ तौ महा-
भारत सुनाऊ सो राजानें कह्यौ जो महाभारतही
सुनावौ सो महाभारतही कहन लागे सो जब युद्धको
प्रसंग आयौ तब सबनके हथियार छुडाय धरे तब
आगें कहन लागे सो कथा कहतमें कोई वीररस
ऐसौ उपज्यौ सो आपसमें सब लात मुक्कीनसों
लरन लागे पाछें कितेक दिनमें महाभारत सम्पूरण
भयौ तब राजा बहुत दक्षिणा देन लाग्यौ तब पद्म-
नाभदासनें कह्यौ जो इतनो तौ मैं नाहीं लेउंगो मेरे
मांथे ऋाणे है तितनों लेउंगो पाछें वा साहको मूल-
ब्याज देनों हुतो तितनों लीनो बाकीको फेर दीनों
पाछें साहकौ द्रव्य देके खत फारि डारो॥प्रसंग॥ ३॥

और पद्मनाभदासकें एक बेटी कुमारी हुती ताकेनिमित्त एक वर श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको सेवक चाहित हुतौ सो बैष्णवन सों पूछन लागे तब बैष्णननें कह्यौ जो एक बर श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकौ सेवक है पारि सनोडिया ब्राह्मण है सों पद्मनाभदासको लौकिक त्यागमें बिबहारकी सुधि रही नाहिं वैष्णवनने कह्यौ जो भलो वैष्णव है सो याको बेटी दीजियौ तब पद्मनाभदासने कह्यौ जो भलो सो पद्मनाभदासने वा वैष्णवको तिलक कीयौ विवाह सही करिके अपने घर आये तब तुलसा बडी बेटी हुती तासों कह्यौ जो अपनी बेटीकी विवाह अमुके वैष्णव सों सही कर आयो हूं तब तुलसाने कही जो वह तौ सनोडिया ब्राह्मण है और आपुन कनौजिया ब्राह्मण हैं सो ऐसे कैसे होय तब पद्मनाभदासने कही जो अब तो भई सो भई तब तुलसाने कह्यौ जो सगाई फेरो तब पद्मनाभदासने कही जो सगाई कैसें फेरी जाय पाछे पद्मनाभदासने कही छुरी लावौ मेरो अंगूठा काटौ तब तुलसाने कह्यौ जो अंगूठा कैसे काटयौ जाय तब पद्मनाभदासने कह्यौ जो सगाई कैसे फेरी जाय जो अंगूठा काटे तो सगाई फेरी जाय पाछें

पद्मनाभदासनें विवाह कर दीनो जातके सब झक-
मार रहै वैष्णवके कहैको बिस्वास तात सगाई
नफेरी ॥ प्रसंग ॥ ४ ॥

और एक क्षत्राणि पद्मनाभदासके घर नित्य
आवती तब एक दिन तुलसाने कह्यौ जो क्षत्राणि
जो तू नित्य क्यों आवत है तब वा क्षत्राणीने कही
जे पद्मनाभदास बडे भगवदीय है और महापुरुष
है और मेरे संतती नाहीं होत है ताते आवत हौ
ताते तुम पद्मनाभदाससों मेरी बीनती करौ तब
पद्मनाभदाससों एक दिन तुलसाने कह्यौ जो पद्म-
नाभदास एक क्षत्राणीके संतति नाहीं होत है ताके-
लिये तुमसों बीनती करत हौ तब पद्मनाभदासने
कह्यौ जो तुलसा जल लाउ तब तुलसाने जल लायकें
आगें धरौ तब जल लेकै अंगूठाको चरणोदक
करिकें पद्मनाभनादासने वा क्षत्राणीकौ चरणोदक
दियौ और कह्यौ जो जा तेरे पुत्र हो यगौ ताकौ
तू मथुरादास नाम धरियौ पाछें वाके पुत्र भयौ
॥ प्रसंग ॥ ५ ॥

और एक समय बडे रामदासजी अपने सेव्य
ठाकुरजीकौ पद्मनाभदासके घर पधरायके आप
श्रीनाथजीकी सेवा करन लागे श्रीनाथजीके भीत-

रिया भये तब पद्मनाभदास श्रीठाकुरजीकी सेवा करन लागे सो कितेक दिवस पाछें मुगलकी फोज आई ताने गांव लूटयौ सो श्रीठाकुरजीको मुगल लेगयौ तब पद्मनाभदास वा मुगलके पीछे सात दिनलौं रहे जल पान न करयो तब वा मुगल सों वाकी मुगलानीने कह्यौ जो यह ब्राह्मण जल पान हूं नाहीं करत याको सात दिन भये हैं अन्न जल छोडे सो जो यह ब्राह्मण मरेगो तो तेरे माथे हत्या चढेगी तौ तेरौ संग छोड देउंगी नातर देव याके तेरे पास है सो तुम देव याके देउ तब वा मुगलनें पद्मनाभदा-सको श्रीठाकुरजी दीये सो लेके पद्मनाभदास अति आनन्द पायकें अपने घर आये पाछें आय स्नान करि श्रीठाकुरजीको पंचामृतसों स्नान कराये अंग वस्त्र करि शृंगार कियौ रसोई करि भोग समर्प्यौ पाछें समयानुसार भोग उसराय अनोसार करि पाछें महाप्रसाद आपु लीनौ और जा दिन ते वा कन्नौजमें श्रीठाकुरजी मुगलके हाथ परे सो तादिन रामदासनें हूं यह बात जानी सो ता दिन ते बडे राम-दासने हूं सात दिनतांई महाप्रसाद लीनों नाहीं परि श्रीनाथजीकी सेवा सावधानीसों करत रहे यह बात पद्मनाभदासनें घर बैठे जानी जो रामदासहूं या

बातके ऊपर बहुत दुख पायौ सात दिनलौ जलपान हूं नाहीं लीयौ यह जानि पद्मनाभदास श्रीनाथजीके दर्शन तथा रामदासजीकों मिलिवेको श्रीनाथजी-द्वार आये तब श्रीनाथजीके दर्शन कीयौ पाछें रामदासजीसों मिले तब रामदासजीने पद्मनाभदा-ससों कह्यौ जो तुमने बहुत दुख पायौ तब पद्मना-भदासनें कह्यौ जो हुंतौ दुख पायौ सो तौ न्याव है परि तुम मेरे माथे सेवा पधराय आये और तुमनें सात दिनलो महाप्रसाद नाहीं लीयौ सो काहेते तब रामदासनें कह्यौ जो तुम कहत हौ सो तो सांच है परि मेंहूं तौ बहुत दिनलों सेवा कीनी है तातें इतनों तो संबन्ध चाहियै पाछें कितनेक दिनलों उहां रहिकें पद्मनाभदास श्रीनाथजीसों तथा राम-दासजीसों बिदा होयकें अपने घर आए पाछें सेवा करन लागे ॥ प्रसंग ॥ ६ ॥

और एक समय पद्मनाभदास अपने सेव्य श्रीठा-कुरजी श्रीमथुरानाथजी तथा अपनो कुटुंब लेकर अडेल आय रहै परन्तु द्रव्यकौ संकोच बहुत हुतो तातें श्रीठाकुरजीकों भोग समर्पते सो छोला तौलके समर्पते सो छोला आछी रीति सो बीनके पहिले दिन भिजोय राखते दूसरे दिन नीकी भांतिसों तलिके

परोसते एक मुट्ठी भरिकें कहैं जो यह दारि एक मुठ्ठी भरिकें धरें और कहै जो यह रोटी है या भांति जितने साल न होय तितनेनको नाम लेके एक २ मुठ्ठी समर्पते या भांतिसों नित्य करते सो श्रीठाकुरजी सोई आरोगते पाछें एक वैष्णवनें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके आगे कह्यौ जो महाराज पद्मनाभदास श्रीठाकुरजीकों या भांति समर्पत हैं सो एक दिन श्रीआचार्यजी महाप्रभू भोग समर्पिबेकी विरियां आप पद्मनाभदासके घर पधारे सो जैसे नित्य भोग समर्पते तैसेहीं पद्मनाभदासने भोग समर्प्यौ हो सो जब भोग उसरायो तब पद्मनाभदासनें कह्यौ जो महाराज यह खीरहै यह भातहै यह दारिहै यह साक है यह सिखरनहै यह रोटी है यह बराहै ऐसें कहिकें सब सामग्रीनके नाम लेकै छौलानकी ढेरी बताई तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको हृदय भरि आयौ और कह्यौ जो द्रव्यकौ संकोच है ताके लिये ऐसे करतहै पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभू आपतो घरको पधारे तब श्रीअक्काजीसे कह्यौ जो पद्मनाभदासके घर नित रसोईकी सामग्री पठावति रहियौ तब दूसरे दिन श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें पद्मनाभदासके घर सीधो सामग्री पठायौ तब पद्मनाभदासने

तुलसासों कह्यौ जो इहांते प्रभू काढन हार भये हैं
तब पद्मनाभदासने दिन द्वै चारिकौ सामान करि
पाछें अपने सेव्य श्रीठाकुरजी श्रीमथुरानाथजीसों
कही जो महाराजकौ मन होय तो श्रीआचार्यजी
महाप्रभूनके पास पधराय आऊं तहां सकल सा-
मग्री सिद्ध है तब श्रीमथुरानाथजीने कह्यौ जो
मोकों तेरोहो कीयौ भावत है ताते तेरे यहां बहुत
प्रसन्नहों तू कछू संकोच मति करै ऐसे श्रीमथुरा-
नाथजी आप कहै तब पद्मनाभदासनें नाव भाडे
कीनी तामें श्रीठाकुरजी पधराये और सब कुटुम्ब
नावमें बैठायकें आप श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों
बिदा होन गये और सीधो सामग्री दिन द्वै चारकौ
आयौ हतौ सो भंडारीकों फेर देके आप श्रीआ-
चार्यजी महाप्रभूनके पास बिदा होयकें दर्शन क-
रिके दंडौत करिकें कह्यौ जो महाराज हम तो
चलत हैं तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने पूछौ जो
श्रीमथुरानाथजी कहां है तब पद्मनाभदासने कह्यौ
जो महाराज श्रीठाकुरजी तो नावमें बिराजत हैं
श्रीठाकुरजीकों नावमें पधरायकें हौं महाराजके
पास दर्शन करिवेको तथा बिदा होयवेको आयौ
हूं तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने पद्मनाभदासको

बिदा कियो पाछें भंडारीने श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों आयकें कह्यौ जो महाराज पद्मनाभदासके घर सीधो सामग्री दिन द्वै चारकी पठाई हुती सो पद्मनाभदास फेर दे गएहैं तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कह्यौ जो सीधो सामग्री पठाई तातें पद्मनाभदास गयो नातर न जातो यह बात आप श्रीमुखते कही सो पद्मनाभदासकी वार्ता श्रीगोकुलनाथजी श्रीसर्वोत्तमकी टीकामें लिखे हैं सो पद्मनाभदाससों बिरला कोटिस्वपि दुर्लभ हैं सो वे पद्मनाभदास श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके सेवक ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं तातें इनकी वार्ताकौ पार नाहीं पद्मनाभदासकी ऐसी २ कितनीक वार्ता हैं ॥ प्रसंग ॥ ७ ॥ वैष्णव ॥ ४ ॥

पद्मनाभदासकी बेटी तुलसाकी वार्ता।

सो एक समय एक वैष्णव श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकौ सेवक तुलसाके घर आयौ सो श्रीठाकुरजीको दर्शन कीयौ तब राजभोग समप्यौं हौ तब तुलसाने वा वैष्णव सों कह्यौ जो उठो स्नान करो महाप्रसाद लेउ तब वा वैष्णवने कह्यौ जो हुं तो घर जायकें महाप्रसाद लेउंगो तब स्नान करूंगो तब तुलसा चुपव्है रहा पाछें वह वैष्णव उठिकें अपने

घर गयौ तब तुलसाके मनमें बहुत खेद भयौ जो देखौ मेरे घर ते वैष्णव भूखौ गयौ बहुरि मनमें आई जो ग्याति व्यवहारके लियै सखडी न लीनी होगी पर भलौ सकारे पूरी करी महाप्रसाद लिवा-उगी पाछें मेदा छानि सिद्ध करवाई तब सोई पाछें रात्रिको मथुरानाथजी पद्मनाभदासके सेव्य ठाकु-रजी तिनने स्वप्नमें तुलसासों जतायौ जो सकारें वा वैष्णवको सखडी महाप्रसाद लिवाइयौ वह वै-ष्णव अपने घर प्रासाद नाहीं लेइगो पाछें वा वै-ष्णव स्वप्नमें कही जो सकारे तू सखडी महाप्रसाद तुलसाके घर लीजियौ पाछै प्रातःकाल स्नान करि तुलसाने पूरी करी श्रीठाकुरजीकौ जगाय सेवा करन लागी इतनेमें वह वैष्णव आयौ श्रीठाकुरजी-के दर्शन करि बैठे रह्यौ तब तुलसा भोग समर्पिकें बाहर आइ तब वा वैष्णवसों कह्यौ जो भलौ तब वा वैष्णवनें स्नान करि तिलक मुद्रा करिकें स्मरन की-यौ इतनेमें राजभोग सन्यो तब वा वैष्णवने दर्शन कीयौ पाछें तुलसाने श्रीठाकुरजीकौ अनोसरि करि तुलसा बाहर आई तब पूरी बूरो सधानों वा वैष्ण-वके आगें राख्यौ और कह्यौ जो महाप्रसाद लेउ तब वा वैष्णवने कह्यौ जो यहतौ नाहा लेउंगो हूंतो

सखडी महाप्रसाद लेउंगो तब तुलसाने कह्यौ जो कछू संकोच मति करौ यहतौ जाति व्यवहारहै तब वा वैष्णवने कह्यौ जो सो तो सांच पहिले तौ ऐसे- ही मनमें आई हुती परि अबतो आज्ञा भई है पाछें वा वैष्णवने सखडी महाप्रसाद लीयौ तब दोउजने परस्पर प्रसन्न भये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥

बहुर एकदिन तुलसाके घर श्रीगुसांईजी पधारे तब तुलसाने भली भांतिसें सेवा कीनी तातें श्रीगु- सांईजी बहुत प्रसन्न भये और एकदिन श्रीगुसांई- जी भोजन करिके पोढेहुते तब तुलसाने भगवद्वार्ता करी अति प्रसन्नतामें श्रीगुसांईजी कही जो पद्मना- भदासकी संतति ऐसीही चाहियै पाछें श्रीगुसांई- जीने तुलसासों पूछौ जो श्रीठाकुरजी सानुभावता जतावत हैं तब तुलसाने कह्यौ जो महाराज अबतौ पेटभरि खाइयत है और नींदभरी सोइयत है और श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके पंथनको पाठ करियतहै तब श्रीगुसांईजी बहुत प्रसन्न भये वह तुलसा ऐसी भगवदीय हुती तातें श्रीठाकुरजी अति सहिनसके तातें वा तुलसाके ऊपर श्रीगुसांईजी बहुत प्रसन्न रहते तातें इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये॥प्रसंग॥ ॥ २ ॥ वैष्णव ॥ ५ ॥

अथ पद्मनाभदासको बेटा ताकी बहू पार्वतीकी वार्ता ।

सो पार्वती श्रीठाकुरजीकी सेवा नीकी भांति करती और पुरुषोत्तम दास महरा इनको नीकी भांतिसों जानतो जब कन्नौज जातो तब पार्वतीके घर उतरतौ तब कितनेक दिन पाछें पार्वतीके हाथ पाँव श्वेत व्हैगये तबते श्रीठाकुरजीकी रसोई करत तथा स्परस करत बहुत २ ग्लानि आवती तब पुरुषोत्तमदास महराकों पार्वतीनें पत्र लिख्यौ तामें लिख्यौ सो मेरी बीनती श्रीगुसांईजीसों कहियौ मेरी देहको यह प्रकार भयोहै तातें मोकों सेवा करत पाक करत बडी ग्लानि आवत है सो मैं कहाकरूं सो पुरुषोत्तमदास महराने पार्वतीको लिख्यौ पत्र श्रीगुसांईजीको बांच सुनायौ और बीनती कीनी भेंटकी मोहर ही सो आगे राखी पाछें श्रीगुसांईजीने पुरुषोत्तम महराको आज्ञा दीनी जो दिन द्वैचारिमें कहूंगौ पाछे दिन द्वैचारि बीते तब श्रीगुसांईजीने पुरुषोत्तमदास महराको आज्ञा दीनी जो पार्वतीको पत्र लिख तामें लिखियौ जो तू श्रीठाकुरजीकी सेवा नीकीभांतिसों

करियौ काहू बातकी ग्लानि मतिलाइयो श्रीठा-
कुरजी तेरो रोग सब आपहीते दूर करेंगे तब
पुरुषोत्तम महराने पार्वतीको पत्र लिख्यौ तामें श्री-
गुसांईजीने श्रीमुखते बचन कहे सो लिख पठाये
सो वह पत्र पार्वतीपै पहुंचौ सो पत्र बांचके श्रीगु-
सांईजीकी आज्ञाते सेवा प्रसन्नतासो करन लागी
कछू ग्लानि मनमें नहीं लावती पाछें महीना तीन
चारिमें हाथ पांव नीके भए तब पार्वती बहुत प्रसन्न
भई सो प्रसन्नतासों सेवा करनलागी बहुर श्रीगुसां-
ईजीको पत्र लिख्यौ भेंट पठाई और कह्यौ जो महा-
राजके प्रतापते नीकी भईहों सो पत्र बांचिके श्रीगु-
सांईजी बहुत प्रसन्नभये सो वह पार्वती बडी कृपा-
पात्र भगवदीय हुती प्रभूनके पर मानचलती ताते
श्रीगुसांईजी इनके ऊपर सदा प्रसन्न रहते यह वार्ता
सब पद्मनाभदासके कुटुम्बकी भई ताते पद्मना-
भदास बडे भगवदीय है ताते इनकी वार्ता कहां तांई
लिखियै प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ६ ॥

अथ पद्मनाभदासकौ नाती पार्वतीको बेटा रघुनाथदासकी वार्ता ।

सो रघुनाथदास बनारसमें बहुत शास्त्र पढिके

श्रीगोकुल आयौ तब श्रीगुसांईजी दंडोत कीनी सो गुसांईजी बडेनकी कानिते इनके ऊपर कृपा करते कथा कहते सो रघुनाथदास सुनते सो एकदिन परमानन्द सौनीने इनसों पूछौ जो रघुनाथदास तुम तौ बहुत शास्त्र पढे हौ पंडित हौ आज श्रीगु-सांईजीने कहा कथा कही हुती सो कहौ तब रघु-नाथदासने परमानन्द सौनी सौं कह्यौ जो तुम तौ सांच पूछत हौ पारि हूंतो कछू समझत नाहीं तब यह बात परमानंद सौनीने श्रीगुसांईजीके आगे कही जो महाराज रघुनाथदास तौ कछू समझत नाहीं पाछें श्रीगुसांईजीने रघुनाथदासको ग्रन्थ दोय चार पढाय और मार्गकी प्रनालिका कही पाछें रघुनाथदास समझन लाग्यौ बडौ पंडित भयौ सो कितनेक दिन पाछें अपने घर कन्नौजमें आयौ तब मातासों कही जो हूंतो नियारो होयगौ श्रीठाकुर-जीकी सेवा करूंगो तब माताने कही जो भलेई तू सेवा करि पाछें न्यारो भयौ वाकी माता जलभर लावती पार्वती पात्र माँजती श्रीठाकुरजीकी सेवा नीकी भांतिसों करती परचारगी सब करती जब राजभोग सरतौ तब अपने घर अकेली लीटी करि श्रीठाकुरजीको भोग समर्पि वा भोग सराय आप

प्रसाद लेती या भांतिसों करती ऐसे करत दिन पां-
च साति बीती तब अपने सेव्य श्रीठाकुरजीने क-
ह्यौ जो अरी पार्वती मेरोगरो खरखरात है अकेली
लीटीनते ताते तू दारितौ करयौ तब पार्वतीने कह्यौ
जो महाराज तुमतौ दारिभात सालनसो आरोगत-
हो तब श्रीठाकुरजीने कह्यौ जो मेतो तेरो कीयौ
आरोगतहो पाछें दारभात सब सालन करन लागी
ताते पार्वती बडी कृपापात्र भगवदीय हुती यह वा-
र्ता सब पद्मनाभदासके परिवारकी भई ताते वे पद्म-
नाभदास श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे कृपापात्र
भगवदीय हैं सो इनकी वार्ता ऐसी २ कितनी कहैं
ताते अब कहां तांई लिखिये॥ प्रसंग ॥ १ वैष्णव॥ ७॥

अथ रजो क्षत्राणी अडेलमें रहती ताकी वार्ता ।

सो वा रजो क्षत्राणी नित्य पकवान सामग्री
करि श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके लिये ले आवती
सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू आरोगते वाको नित्य
नेम हुतो सो एक दिन लक्ष्मन भट्टजीकौ श्राद्धदिन
आयौ सो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने ब्राह्मण भोज-
नको बुलाए हुते तहां घृत थोरोसो चहियत हुतौ

तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें एक वैष्णवसों कही जो रजो केसें घृत लेआउ तब वा वैष्णवने रजोसों कही जो रजो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने घृत मंगायौ है तब रजोने वा वैष्णवसों कह्यौ जो घृत काहेको चाहियत है तब वा वैष्णवनें कह्यौ जो आज श्रीलक्ष्मन भट्टजीको श्राद्धदिन है सो ब्राह्मण भोजनको बुलाए गये हैं सो थोरो घृत रसोईमें घट्यौ है तातें मंगायौ है तब रजोने कह्यौ जो मेरे तौ घृत नाहीं है तब वह वैष्णव फिर आयौ आयके श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों कह्यौ जो महाराज रजोके घृत नाहीं है तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कह्यौ जो तू फेरिजा और खीजके कहियौ जो श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें घृत मंगायौ है तब वह वैष्णव फिर गयौ और रजोसों कह्यौ जो श्रीआचार्यजी महाप्रभू खीजत हैं तबहू रजोने घृत नाहीं दियौ तब वह वैष्णव फिर आयौ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों कह्यौ जो महाराज रजो घृत नाहीं देत तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कह्यौ जो अबके फेरि जा और कहियौ जो श्रीआचार्यजी महाप्रभू खीजत हैं तातें घृत देउ तबहूं नाहीं दियौ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूसों कह्यौ जो महाराज रजो

घृत नाहीं देत तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें और ठौरते काम चलायौ तब रात्रीकों रजो पकवान लेके आई तब रजोको देखिकें श्रीआचार्यजी महाप्रभू पीठदे बैठे तब रजोने कही जो महाराज मेरो अपराध कहा है तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यौ जो तेरे घृत न हुतौ तौ सामग्री कहांते करलाई तब रजोने कह्यौ जो हूं लक्षमन भट्टकी लोंडीतो नाहीं मेरे घृत न हुतौ ताते न दीनों ताते तुम्हारे घृत हुतो सो क्यों न दीनो तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यौ जो मैं श्रीठाकुरजीको घृत क्यों करके देउ तब रजोने कही जो में श्रीठाकुरजीको घृत क्यों करके देउ तब आप बोले नाहीं तब रजोने सामग्री आगे राखी और कही जोराज आरोगो तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यौ जो आज श्राद्धदिन है ताते दूसरी वार लेनो नाहीं तब रजोने कही जो महाराज तुम्हारे घरको होय जो मति लेउ यह तौ लीयौ चाहिये तब रजोके आग्रहते श्रीआचार्यजी महाप्रभूनें आरोगी रजो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी ऐसी कृपापात्र भगवदीयही ताते इन रजोकी वार्ता कहांताईं लिखिये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ८ ॥

अथ पुरुषोत्तमदासक्षत्री बनारसमें रहते तिनकी वार्ता ।

सो सेठ पुरुषोत्तमदासकों श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी आज्ञा हुती जो तुम पास कोई नाम लेन आवै ताको तुम नाम दीजियौ तातें सेठ पुरुषोत्तमदास नाम देते और अपने घर श्रीमदनमोहनजीकी सेवा करते परि कबहूं बिश्वेश्वरनाथ महादेवजीके दर्शनकों नजाते ऐसे बहुत दिन बीते तब एकदिन विश्वेश्वरनाथ महादेवजीनें सेठ पुरुषोत्तमदाससों कह्यो जो सेठजी तुम हमसों गांवको नातोतो राखौ कबहूं हमकौ प्रसाद तौ दियौ करौ ऐसे स्वप्नमें कही तब सवारे सेठ पुरुषोत्तमदास उठि सेवासों पहुंचके बाहर आये तब वस्त्रपहरकें बीडा दोय प्रसादी लेके डवरा प्रसादको लेके विश्वेश्वरनाथ महादेवजीके दर्शनकों चले तब गांवके लोग आश्चर्य भए जो सेठ पुरुषोत्तमदास कबहूं दर्शनको न आवते सो आज क्यों आये सो सब लोग साथ आए सो सेठ पुरुषोत्तम दासने देवालयमें जायके विश्वेश्वरनाथ महादेवजीके आगे बीडा दोय धरि प्रसादको डवरा धरि श्रीकृष्ण स्मरन कहिकें उठि चले तब बडे२ पंडित

ब्राह्मण हुते तिनने सेठ पुरुषोत्तमदाससों कह्यौ जो सेठ पुरुषोत्तमदास दंडोत नमस्कार कछू न कीनों श्रीकृष्णस्मरण कहिके उठिचल सो तो तुमको उचित नाहीं तब सेठ पुरुषोत्तमदासने उन ब्राह्मणनसों कह्यौ जो तुम महादेवजीकों पूछि लीजियो तुमसों महादेवजी कहेंगे पाछे उन ब्राह्मणनमें एक महादेवजीको बड़ो कृपापात्र भगवदीय हुतौ तासों महादेवजीने स्वप्नमें कह्यौ जो हमने इनसों महाप्रसाद मांग्यो हो सो देन आये हैं हमारो इनको व्यौहार ज़ै श्रीकृष्णको है ताते तुम इनसो कछू मति कहौ पाछे सेठ पुरुषोत्तमदास बडे उत्सवको प्रसाद कबहूं २ लेजाते तब एकदिन महादेवजीने कालभैरवसों कह्यौ जो सेठ पुरुषोत्तमदास वैष्णवनके घरते अवेरो सबेरो आवतहै ताते तू इनके घरकौ चौकी पहरा नित्य देत रहियौ सो कालभैरव नित्य इनके घरको चौकी पहरा देतौ सो एक दिन सेठ पुरुषोत्तमदास वैष्णवनके घरते अवारे आवत हैं सो सेठ पुरुषोत्तमदास घरके द्वार आये तब फिरके देखें तो कालभैरव एक ठौर ठाढौ है तब सेठ पुरुषोत्तमदासने वासों पूछौ जो तू कौन है तब वह बोलो जो हूं कालभैरवहों मोको महादेवजीने

आज्ञा दीनी है ताते तुम्हारे घरकी चोकी पहरा देतहों तब सेठ पुरुषोत्तमदास खिरकी देकें भीतर गए ॥ प्रसंग ॥ १ ॥

बहुर एक दक्षिणदेशको ब्राह्मण सैवी हुतो सो बडो पंडित महादेवजीकौ कृपापात्र हुतौ सो वा ब्राह्मणको महादेवजीकौ साक्षात् दर्शन होतो सो वह ब्राह्मण नित्य प्रति महादेवजीके दर्शन करतौ तब जलपान करतौ ऐसो महादेवजीको भक्त हुतौ सो एक समैं जन्माष्टमीको उत्सव आयौ सो विश्वेश्वर नाथ महादेवजी सेठ पुरुषोत्तमदासके घर गये जन्माष्टमीको उत्सव देखनकों सो वा ब्राह्मणने जन्माष्टमीके उत्सवके दिना दर्शन न पायो और नवमीके दिना दुपहरलों जब सेठ पुरुषोत्तमदासके घरते महादेवजी बिदा होयकें आये तब वा ब्राह्मणनें महादेवजीको दर्शन पायौ तब वा ब्राह्मणनें महादेवजीसों पूछो जो कालि और आज हम दर्शन दुपहरलों नाहीं पायो सो काहेते तब वा ब्राह्मणसों महादेवजीने कह्यौ जो हम कालि सेठ पुरुषोत्तमदासके घर उत्सव देखन गए हे सो अबही सेठ पुरुषोत्तमदासके घरते बिदा होयके आवतहों तब वा ब्राह्मणने कही जो सेठ पुरुषोत्तमदास कौन हैं ति-

नके घर तुम उत्सव देखनकौ जातहौ तब महादे-
वजीने कह्यौ जो बडे भगवद्भक्त हैं तब वा ब्राह्मण-
णने कही जो मोहूंकौ भगवद्भक्त करो तब महादेव-
जीनें कह्यौ जो सेठ पुरुषोत्तमदासके पास तू जायके
नाम ले आउ तब वा ब्राह्मणने कही जो तुमही मोकों
नाम देउ तब महादेवजीने कही जो मेतो तोकों
नाम देउंगो सही परि मेरो दियौ नाम तोको फले-
गो नाहीं ताते तू सेठ पुरुषोत्तमदासके पास नाम-
लै आउ वे तोकों नाम देयंगे तब वह ब्राह्मण सेठ
पुरुषोत्तदासके पास नाम लेनगयौ सो आयके भी-
तर खबर करवाई जोएक ब्राह्मण आयो है तब सेठ
पुरुषोत्तमदासने कही जो बैठारो माथोखाली करन
आयौ होयगो तब सेठ पुरुषोत्तमदास सेवासो
पहुँचिकें बाहर आये तब वा ब्राह्मणने दंडौत कीनी
तब सेठ पुरुषोत्तमदासने कही जो ऐसो अनुचित
क्यों करतहो हम क्षत्री तुम ब्राह्मण ऐसे यों न घटे
है तब वा ब्राह्मणने सेठ पुरुषोत्तमदाससों कही
जो हमको नाम देउ तब सेठ पुरुषोत्तमदासने
कह्यौ जो हूं तो नाम नाहीं देउंगों बहुरि ब्राह्मणने
बहुत आग्रह कीनों परि पुरुषोत्तमदासनें नाम न
दीनों तब वह ब्राह्मण महादेवजीके पासआयौ तब

कह्यौ जो सेठ पुरुषोत्तमदास नाम नाही देत तब महादेवजीने कह्यौ जो त फेरिजा हमारो नामली जियौ जो मोंको श्रीमहादेवजीने पठायौ है तब वह ब्राह्मण फेरि सेठ पुरुषोत्तमदासके पास आयौ और कह्यौ जो मोकों महादेवजीने पठायौ है ताते मोकों नामदेउ तब सेठ पुरुषोत्तमदासने वा ब्राह्मणकों नाम दीयौ नाम सुनायके हाथ जोरिकें श्रीकृष्ण-स्मरन कह्यौ तब वा ब्राह्मणने कह्यौ जो अब मोकों प्रनाम क्यों करत हौ तब सेठ पुरुषोत्तमदासने कह्यौ जो अब तुम भगवद्भक्तभये मेरे तुम बंद-नीयहौ तुम्हारे और हमारे बंदनीय श्रीआचार्यजी महाप्रभू हैं मेंतौ श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी कृपाते नाम देतेहौ पाछे वह ब्राह्मण श्रीआचार्यजी महाप्र-भूनके पास अडेल आयौ तब श्रीआचार्यजी महा-प्रभूनके पास नामसमर्पण करवायौ पाछें कितनेक दिन रहके श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ग्रन्थ पढे

॥ प्रसंग ॥ २ ॥

बहुरि एक समय सेठ पुरुषोत्तमदास बैठे बैठे मंदिर वस्त्र करते हुते इतनेहीमें गोपाल दास बेटा श्रीठाकुरजीको सेन भोग सरायवेकों मन्दिरमें न्हा-यके आयो तब देखेंतो सेठ पुरुषोत्तमदास बैठे बैठे

मन्दिर वस्त्र करत हैं तब गोपालदासके मनमें आई
जो अबतो सेठजी वृद्ध भए हैं ताते मैं सेवामें तत्पर
होउतौ आछौं तब यह बात गोपालदासके मनकी
सेठ पुरुषोत्तमदासने जानी तब कह्यौ जो बेटा
आगें आउ तब गोपालदास जायकें देखैतौ वर्ष
वीस तथा पच्चीसकें बैठे हैं तब पुरुषोत्तमदासने
कह्यौ जो बेटा यह भगवदीयनकी मनमें न लावनी
भगवदीय सदा तरुन हैं पारि अवस्था होय ताको
मान दीयौ चाहिये ॥ प्रसंग ॥ ३ ॥

बहुरि एक समय सेठ पुरुषोत्तमदास झाड खं-
डमें मदार मधुसूदन ठाकुर हैं सो पर्वत ऊपर म-
न्दिर है पवर्तको नाम मंदार पर्वत है ता ऊपरते
मनुष्य गिरे तो चोट न लगे और अपने सब पाप
कहि कामना करि गिरेतौ देह छूटे पाप दूर होय
और जो कामना करि होय सो दूसरे जन्ममें सिद्ध
हो वह ऐसो स्थल है तहां एक समय श्रीआचार्यजी
महाप्रभू पधारे हुते तहां सेठ पुरुषोत्तमदास और
एक ब्राह्मण श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको सेवक सो
दोउजने मंदार मधुसूदनजीके दर्शनकों पर्वत ऊपर
चढे सों उहां जायके मधुसूदनजीके दर्शन कीनों
पाछें रात्रि परिगई तातें उहांहीं सोय रहै पाछें

रात्रिकों एक सिद्ध आयौ वह जातिको ब्राह्मण हुतौ वा सेठ पुरुषोत्तमदासके साथके ब्राह्मणसों पूछौ जो तुम कोन हौं तब वह बोल्यौ हम वैष्णव हैं श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके सेवक हैं तब वा सिद्ध ब्राह्मणने कह्यौ जो मेरे पास एक मणि है सो तुम लेजाउ तौ लेउ तब वा वैष्णवने कह्यौ जो यह मणि कौन काम आवत है तब सिद्ध ब्राह्मणने कही जो यह मणि ऐसी है जो माँगे सो देत है तब वा ब्राह्मणनें कही जो मैंतो विरक्तहौं में मणि लेकें कहा करूं पारि मेरे साथ एक क्षत्री है सो वह गृहस्थ है सो वह सोवत है जो वाकों देउ तो जगाऊं तब वा सिद्ध ब्राह्मणने कहा जो जगावो तब वा वैष्णवनें सेठ पुरुषोत्तमदासकौं जगायो और कही जो यह ब्राह्मण मणि देत है सो तुम लेउ तब सेठ पुरुषोत्तमदासने कही जो यह मणि कौन काम आवत है तब वा मणिको प्रभाव कह्यौ तब सेठ पुरुषोत्तमदासने कह्यौ जो यह मणि हमारे कामकी नाहीं ताते हूंतो न लेउंगो तब सिद्ध ब्राह्मण फिर गयौ तब सेठ पुरुषोत्तमदासके संग ब्राह्मण हुतौ ताने सेठ पुरुषोत्तमदाससों कह्यौ जो तमतो गृहस्थ हो बहुत कुटुम्बी हो तुम्हारे माथे सवा है तुमने

मणि क्यों न लीनी तुमको तो मणि लेनो उचित हो तब सेठ पुरुषोत्तमदासने कह्यौ जो अरे ब्राह्मण बावरे में श्रीठाकुरजीको तथा श्रीआचार्यजी महाप्रनकौ आश्रय छोडिके कहा मणिको आश्रय करूं तेने मणि क्यों नलीनी तब वानें कह्यौ जो मैंतौ बिरक्तहों मैं मणि लेके कहा करूं मोकों जगदीस सेर चून देयगौ तब सेठ पुरुषोत्तमदासनें वा वैष्णवसों कह्यौ जो तोकों जगदीस सेरचून देयगौ तो मोंको कहा जगदीस दशसेर चून नदेयगो जगदीसकें काहु बातकी न्यूनता है ऐसे कहिकें दोऊ जनेनने वो मणि नलीनी वे सेठ पुरुषोत्तमदास श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हैं ॥ प्रसंग ॥ ४ ॥

बहुरि एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभू सेठ पुरुषोत्तमदासके घर पधारे तब दामोदरदास हरिसानी श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके साथ हैं सो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने सेठ पुरुषोत्तमदासके सेव्य श्रीठाकुरजी मदन मोहनजीकौ पंचामृत स्नान करवायौ और आप पाक कारि श्रीठाकुरजीको भोग समर्प्यौ भोग सराय अनोसर कारि श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें आप भोजन कीयो तब

दामोदरदास हरिसानीनें श्रीआचार्यजी महाप्रभू-
नसों पूछ्यौ जो राज यह कहा तब श्रीआचार्यजी
महाप्रभूननें कह्यौ जो यह मेरी आज्ञातें नाम देत
है तथापि मोको याकी इतनी मर्यादा राखी चाहिये
सो वे सेठ पुरुषोत्तमदास श्रीआचार्यजी महाप्रभू-
नके ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय है ताते इनकी
वार्ताको पार नाहीं सो अब कहां तांइ लिखिये ॥
प्रसंग ॥ ५ ॥ वैष्णव ॥ ९ ॥

पुरुषोत्तमदासकी बेटी रुक्मनीकी वार्ता।

सो एक समय श्रीगुसांईजी कासीमें पधारे हुते
तब तहां सूर्य ग्रहण आयौ तब श्रीगुसांईजी मनि-
कर्णिकाके स्नानको पधारे तब रुक्मनीहू श्रीमदन
मोहनजीको स्नान करायकें आप मनिकर्णिका
स्नानको गई श्रीगुसांईजी पधारे जानकें तब श्रीगु-
सांईजीसों वैष्णवननें कह्यौ जो महाराज सेठ पुरुषो-
त्तमदासकी बेटी रुक्मनी आई है तब श्रीगुसां-
ईजीने कह्यौ जा रुक्मनी आगें आउ तब अपने
पास बुलाय लीनी तब श्रीगुसांईजीनें पूछो जो तू
कितनेदिन पाछें गंगास्नानको आई है तब रुक्म-
नीन कह्यौ जा महाराज चौबीस वर्ष पर्य्यंत पाछें
आईहों तब यह सुनिकें श्रीगुसांईजीको हृदौ भारि-

आयौ और कह्यौ जो ऐसी भगवदीय जिनको एक क्षणहूं अवकाश नाहीं है जो गंगास्नानको आवै श्रीगुसांईजी बहुत प्रसन्न भय और रुक्मनीको देखिके श्रीगुसांईजी कहते जो याके श्रीठाकुरजी आरिण कब होयंगे ॥ प्रसंग ॥ १ ॥

बहुरि क्षत्रीलोग सब कार्तिकमासमें गंगास्नान करते तब रुक्मनीने सेठ पुरुषोत्तमदाससों कह्यौ जो तुम आज्ञा करो तौ मैंहू कार्तिकस्नान करूं तब सेठ पुरुषोत्तमदासने कह्यौ जो भलेंई स्नान करि जो चाहिये सो लीजिये तब रुक्मनीने कह्यौ जो खांड घृत दिवाय देउ मैदा तौ घरमें है तब सेठ पुरुषोत्तमदासने खांड घृत दिवाय दियौ तब रुक्मनी पहर रात्रि पिछली रहै जब उठै सो नौतन सामग्री करिकें समय समय राजभोगलों श्रीमदनमोहनजीको समर्पि फिर उत्थापनसों सामग्री करे सो सेन भोगलों समर्पि ऐसे कार्तिक मासमें करै और बैशाखमें शीतल सामग्री करै श्रीठाकुरजीको आरोगावै सो प्रसाद वैष्णवनको लिवावै या भांतिसों करै सो एक दिन सेठ पुरुषोत्तमदासने रुक्मनीसों कही जो रुक्मनी स्नान कब करत है ताकों जात कबहूं देखियत नाही तू कार्तिक कोन वेर न्हातिहै

तब रुक्मनीनैं कह्यौ जो मोको स्नान सों कहा काम है मैंतो या भांतिसों करतहों तब यह सुनिकें सेठ पुरुषोत्तमदास बहुत प्रसन्न भए श्रीगुसांईजी आप श्रीमुखते सराहना करते रुक्मनी ऐसी कृपापात्र भगवदीय हीं ॥ प्रसंग ॥ २ ॥

बहुरि कितनेक दिनमें रुक्मनीकी देह आसक्ति भई तब रुक्मनीनें कह्यौ जो अब यह देह छूटैतो भलौ है श्रीठाकुरजीकी सेवा न होय आवे तो यहै देह कौन कामकी है तब कितेक दिन पाछें रुक्मनीकी देह छूटी सो एक वैष्णवने श्रीगुसांईजीसों कही जो महाराज रुक्मनीने गंगा पाई तब श्रीगुसांईजी श्रीमुखते कहे जो ऐसे मति कहों जो रुक्मनीने गंगा पाइ ऐसें कहों रुक्मनी गंगाने पाई वह रुक्मनी श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी ऐसी कृपापात्र भगदीय हीं ताते इनकी वार्ता अनिर्वचनीयहै सो कहाताइ लिखियै ॥ प्रसंग ॥ ३ ॥ वैष्णव ॥ १० ॥

अथ पुरुषोत्तमदासकौ बेटा गोपालदासकी वार्ता।

सो गोपालदाससों श्रीमदनमोहनजी सानुभाव हूते जो चाहियै सो मांगि लेते ऐसे सदैव कृपा करत बहुरि गोपालदास कीर्तन बहुत करते और गो-

पालदासकी देह आसक्ति भयी तब भगवद नामको उच्चारण करते तब श्रीमदनमोहनजी आप हुकारी देते ऐसी कृपा करते श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ग्रन्थ सुबोधिनीजी श्रीभागवत निबंध और रहस्य ग्रंथसो सब पाठ करते भागवत लीलामें मग्न रहते सदैव लीलाको बिचार करते ऐसे करिकें सर्व काल व्यतीत कीयौ पाछें देह छूटी तब श्रीगुसांईजीनें सुनी जो गोपालदासकी देह छूटी है तब आप श्रीमुखते कही जो गोपालदासकी सराहना करी सो वे गोपालदास ऐसे भगवदीय हैं सो यह वार्ता सब सेठ पुरुषोत्तमदासके परिवारकी भई ताते इनकी वार्ता कौ पार नाहीं सो अब कहांताई लिखियै ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ११ ॥

अथ रामदास सारस्वत ब्राह्मण ताकी वार्ता ।

सो वे रामदास श्रीठाकुरजीकी सेवा नीकी भांतिसों करते अपरसमें जल भरते बीडाहू अपरसमें राखते या प्रकारसों करते सो रामदासके पास द्रव्य बहुत हुतौ सो कितेक दिन पाछें वह द्रव्य खरच भयौ थोरोसो द्रव्य आय रह्यौ तब मनमें विचारी

जो कछू आवत होय तो भलो है तब ता दिनते वह द्रव्य तातीनको व्याजू दीनों तब व्याज बहुत आमन लाग्यौ लोभके लिये तातीनकौ व्योपार कीयौ (पूरबदेशमें फटे वस्त्र बुनत हैं तिनसों ताती कहत है) तब रामदासजीके सेव्य श्रीठाकुरजी श्रीनवनीतप्रियाजीने कह्यौ रामदास तूतौ हमकौ तातीनपर राखत है तब रामदासजी यह बात सुनिके चौंकि उठे और कह्यौ जो महाराज मोसौं चूक परी तब रामदासजी तातीनपर गए और कह्यौ जो मेरो द्रव्य देउ तब उन ताती-ननें रामदासजीसों पूछौ जो यह कारन कहा है सो द्रव्य मांगत हौ तब रामदासजीनें कह्यौ जो में कहा-करूं मोकोतो लरिका संग काम पर्यो है ताते लरिकाको मन राख्यौ चाहियै तब तातीनने कह्यौ जो हम द्रव्य इक ठोरो करत है तब कितेक दिन पाछें उन तातीनने द्रव्य दीयौ सो द्रव्य लेकें घर आए फेर वेसेही सेवा करन लागे सो सब द्रव्य निवर्‍यो तब बनियानकी दूकानते उचापति करन लागे तब ऋणि बहुत होगयो तब उचापति बनि-याकी दूकानते दूरकीनी और बनियाकी दूकानते उचापति करन लागे पारि वा बनियाकी हाट आगे

होयकें निकसते नाहीं और गेल होयकें जाते तब
एक दिन बनियाने रामदाससों कही जो भलौ तुम
मेरी दूकानके आगे होयके नाहीं निकसत हौ और
उचापति नाही करत तौ मेरो लेखो करिके मेरो पैसा
चुकाय देउ तगादो बहुत करडौ कीयौ तब श्रीठा-
कुरजी रामदासजीको स्वरूप धरिकें बनियाकी हाट
ऊपर गए और श्रीमुखते कही जो लेखौ लाउ पैसा
चुकाय देउ तब वा बनियाने वही देखि लेखौ करिके
पैसा चुकाय दीनों रुपैया एकसो अधिक दीये श्रीठा
कुरजी आप श्रीहस्तसों लिखि आये पारि यह बात
रामदासजीने न जानी तब एक दिन रामदासजीको
बुलायवे वैष्णव आए तब उन वैष्णवनके पाछें २
रामदासजी गए सो रामदासजी वा बनियाकी दूका-
नके आगें होयके निकसे तब आनाकानी देके नि-
कसे इतनेमें वा बनियाने कही जो रामदासजी तुम
मेरी हाटते उचापति नाहीं करत सो तौ मेरो अ-
भाग्य है पारि तुमारो मोपै अधिक द्रव्य है सो तो
उठाय लेउ तब रामदासजीने कह्यौ जो उहांते फिर
आवत हौं तब रामदासने मनमें बिचारौ जो मेंतौ
याकौ कछू दीयो नाहीं और यह कहत है जो तु-
म्हारौ अधिक द्रव्य है सो तो उठाय लेउ यह का-

रन कहा है पारि जानियत है जो यह श्रीठाकुरजी
औरते काम भयौ है पाछे रामदासजी वैष्णवनके
घरते आये तब वा बनियाकी हाटपै जायकें लेखो
मांगो जो लेख्यौ लाउ तब वा बनियाने कह्यौ जो
कहालेखौ देखौगे तब वा बनियाने वही दिखाई तब
वा वहीमें रामदासजीने श्रीठाकुरजीके हस्ताक्षर
देखे तब चुप कारि रहे तब घर आय रामदासजीने
स्त्रीसों कही जो हूंतो घरमें नाहीं रहूंगो चाकरी क-
रूंगौ तब सिपाहगीरीको बिचार कीयौ तब घोडा
मोल लीयौ सब हथियार बांधन लागे तब जल और
बीडा अपसरमें लेत है सो अपरस छूटी बिना अप-
रसमें लैन लागे सो कितेक दिन पाछें रामदासजी
अडेल आयै सो हथियार बांधेही जायकें श्रीआ-
चार्यजी महाप्रभूनके दर्शन कीने दंडवत कीनी तब
श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें श्रीमुखतें धन्य २कह्यौ
जो रामदास तू धन्य है तब और वैष्णव पास बैठे हैं
सो कहन लागे जो महाराज अब याकों धन्य क्यों
कहत हौ अब तौ यह अपरसतासों नाहीं रहत है
सिपाहीनमें चाकरी करत है तब श्रीआचार्यजी
महाप्रभूननें कही जो यह धन्य याते है श्रीठाकुर-
जीकौ श्रम नाहीं करवावत याकी बराबर कोऊ

धीरजवंत नाहीं श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप ता समय गंगास्नानको पधारे तब मार्गमें एक खाड देख्यौ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यौ जो यह खाड अजहू भरयौ नाहीं सो इतनो कहतही वैष्णव सब खाडभर न लागे तब रामदासजीहू एक टोकरा लेकै खाड भरन लागे तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू स्नान कारिके पधारे तब तांई खाड भर दीनों तब रामदासजीको देखिकें श्रीमहाप्रभूजी बहुत प्रसन्न भए ॥ प्रसंग ॥ १ ॥

और रामदासजीकें कछू संतत न हुती तब स्त्री-ने रामदासजीसों कह्यौ जो तुम और बिवाह करौ तौ तुम्हारें बालक होय तब रामदासजीने कह्यौ जो हमको तौ बालककी इच्छा नाहीं तब स्त्रीने कह्यौ जो मोंको तौ बालककी इच्छा है तब रामदासजीने कह्यौ जो तोको बालककी इच्छा है तब तौ हमारे श्रीनवनीतप्रियाजीकी बालभावसों सेवा कारि जैसे बालककूं खवाइयै प्याइयै खिलाइयै हित करियै तैसे तुम श्रीनवनीतप्रियाजीको लडावो तब तेरे बालक होयगो तब रामदासजीकी स्त्रीने श्रीनवनीत-प्रियाजीकी बालभावसों सेवा कारि सो या प्रकारसों सेवा कारि जो बालक भयौ है सो वे रामदासजी

श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ताको पार नाहीं सो इनकी वार्ता अब कहांताई लिखियै॥ प्रसंग॥२॥ वैष्णव॥ १२

गदाधरदास सारस्वत ब्राह्मण कंडामें रहते तिनकी वार्ता।

सो गदाधरदासके मांथे श्रीमदनमोहनजीकी सेवा हुती सो श्रीठाकुरजी बडे गौर हुते सो नित्यप्रति जैसो उनके जिजमान केसे आवतौ तैसो श्रीठाकुरजीको समर्पते सो एक दिन जिजमानकेसे कछू आयौ नाहीं तब जलही छानके समर्प्यों पारि मनमें बहुत खेद भयौ छातीमें अग्निसी उठी ऐसे करत रात्रि परगई तब एक जिजमान द्वारेपर आय पुकारचौ और कही जो किवाड खोलौ तब गदाधरदासने किवाड खोले तब वा जिजमाननें एक बागो और चार रुपैया और कछू सामग्री गदाधरदासको दीये और कह्यौ जो आज मेरे पिताको श्राद्धदिन हुतौ ताकी यह दक्षिणा लेउ तब गदाधरदासने लीनी सो बागो सामग्री घरमें धरके आप बाजारमें गये सो एक हलवाई मिठाई आछी करत हुतो ताकी हाटपै गए तब जायकें वा हलवाईसों पूछौ जो तेरे मिठाई आछी है तब हलवाईनें कही जो मि-

ठाइं जलेबी अबही कीनी है यामेंते बेची नाहीं तब जलेबी तुलाय मोल देके घर आए तब गदाधरदास आयकें स्नान करि श्रीठाकुरजीको भोग समर्प्यों समयानुसार भोग सराय अनोसर करके पाछें वैष्णवनको बुलाय महाप्रसाद सबनको लिवायौ सो अति अलौकिक स्वाद भयो ऐसो जो कछू कह्यौ न जाय सो सब महाप्रसाद वैष्णवनकौ लिवायौ और आप भूखेही सोय रहै पाछें सवारे उठि सीधौ सामग्री लाए तब स्नान करि रसोई करी श्रीठाकुरजी सेवा शृंगार करि श्रीठाकुरजीको भोगसमर्प्यों भोग सराय वैष्णव फेर बुलाए जब वैष्णव प्रसाद लेवेको आयके बैठे तब पूछन लागे जो रात्रिको महाप्रसाद हमने लीनो सो बहुत स्वाद भयो सो क्यों करि समर्प्यों तब गदाधरदासने सब प्रकार कह्यौ तब सब वैष्णव बहुत प्रसन्न भये और कह्यौ जो गदाधरदासनें सत्य कह्यौ ॥ प्रसंग ॥ १ ॥

बहुरि एक समय गदाधरदासनें सब वैष्णव महा प्रसादको बुलाए हुते पारि साक साजन कछू न हुतौ तब गदाधरदासनें कही जो ऐसो कोउ वैष्णव है सो साक ले आवै तब तिनमें एक वैष्णव वेणीदासको भाई माधोदाससों बडो विषयी हुतौ तातें

वेश्या घरमें राखी हुती तिनने कह्यो जो में ले आऊंगो गदाधरदासने कह्यौ जो भले लेआवो तब माधोदास गयो सो बथुआकी भाजी ले आयौ सो माधोदासने नीकी भांतिसों दीनी रसोईमें पाछें रसोई सिद्धि भई तब श्रीठाकुरजीको भोग समर्प्यों पाछें भोग सराय अनोसर करके वैष्णवनको महाप्रसाद लेन बैठाये पारि वह भाजी अतिस्वाद भई तब गदाधरदासने माधोदासको आशीर्वाद दियौ जो तू हरिभक्त दृढ होयगो पाछें गदाधरदासके आशीर्वादते माधोदास भलो वैष्णव भयौ सो वे गदाधरदास श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके एसें कृपापात्र भगवदीय हुते ताते इनकी वार्ताको पार नाहीं ताते इनकी वार्ता अब कहांताई लिखिये ॥ प्रसंग ॥ २ ॥ वैष्णव ॥ १३ ॥

अथ वेणीदास माधोदास दोऊ भाई तिनकी वार्ता।

सो बडेभाई वेणीदास छोटेभाई माधोदास सो माधोदास वही जो गदाधरदासके घर बथुवाकी भाजी लेआयौ हो सो माधोदास बडो विषयी हुतौ ताने घरमें वेश्या राखी हुती तातें सब वैष्णव माधो-

दासकी निन्दा करते सो बात श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने सुनी जो माधोदास बडौ विषयी भयौ है घरमें वेश्या राखी है सो एक दिन श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें माधोदाससों पूछौ जो क्यों रे माधोदास तेने घरमें वेश्या राखी है तब माधोदासने श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों कह्यौ जो महाराज मेरो मन आसक्त भयो है तासों राखी है तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप चुप कर रहै सो तीन वेर आपने माधोदाससों पूछौ तब तीनों बेर माधोदासने योंही कह्यौ जो महाराज मेरो मन वासों आसक्ति भयो है तासों राखी है तब वैष्णवननें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों कही जो महाराज अबलोंतो आपकी कानिही परि अब तो तुम्हारे आगे कह्यौ तासों तुमने तौ कछू नकही तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने उन वैष्णवनसों कही जो वाकौ मन वासों आसक्त भयौ है सो श्रीठाकुरजीकों फेरते कितनी वार लागेगी और गदाधरदासनें वाकों आशीर्वाद दीयौ है जो तोकों दृढभक्ति होयगी सो यह माधोदास है तब कितेक दिन पाछें माधोदासकी बुद्धि श्रीठाकुरजीने फेरी तबतो वाने वेश्या दूर कीनी पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी कृपाते माधोदास भलो वैष्णव भयौ ॥ प्रसंग ॥ १ ॥

बहुर कितेक दिन पाछें एक माला मोतीनकी बहुत सुन्दर बहुत मोलकी बिकवेकों आई सो देखकें माधोदासने बडे भाई वेणीदाससों कह्यौ जो यह माला श्रीठाकुरजीके कंठ लायक है तब बडेभाई वेणीदासने कही जो यह मालाकी कहाहै हमारेपास जो है सो सब श्रीनवनीतप्रियाजीकी है ऐसें कहिकें बात टार दीनी तब माधोदासने कही जो अपने घरमें है सो सब ठाकुरजीको है तौ माला क्यों न लेउ तब बडेभाई वेणीदासने कही जो हम गृहस्थ है हमको विवाहकाज सब करनो है ऐसे क्योंबने तब छोटेभाई माधोदासने कही जो हूंतौ न्यारो होउंगो सोन्यारो भयो द्रव्य सब बांट लीनों सो द्रव्यकी वस्तु लेकें दक्षिण गयो तब वस्तु सब बेंची तब व्यवहार करके द्रव्य बहुत उपज्यो तब एक माला मोतीनकी पहिले मोलसे उतमोत्तम लीनी सोमाला लैके घरकों चले सो आवत वाटमें एक बडी नदी आई तब नावमें बैठे तब नवनीतप्रियाजी लाल छडी हाथमें लेकर आये और कह्यौ जो नाव डुबाऊं तब माधोदासने कह्यौ जो निजेछातः करि ष्यति तब श्रीठाकुरजीने कही जो तू क्यों गयो हो तब माधोदासने कही जो महाराज मैं माला लेन गयौ हौ तब श्रीनवनीतप्रियाजीने कही जो हमारे

क्या माला नहुती हमारे माला बहुतेरी हैं तब माधो-
दासने कह्यो जो तुम्हारे माला बहुतेरी हैं पारि सेव-
ककोंतो उपाय करनो तब नाव डूबतेते रही जितने
मनुष्य नावमें बैठे हुते ते सब हलेकल करन लागे
और माधोदासको मन प्रसन्न हुतो तब सबनके
मनमें आई जो ए बडे महापुरुष हैं पाछें माधोदास
उहांते घर आये तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको
दंडवत कीनी और हाथमें माला दीनी तब श्रीआ-
चार्यजी महाप्रभूनने कही जो नाव डूबते ते कैसे
रही तब माधोदासने सब समाचार कहे तब और
वैष्णव पास बैठे हुते तिननें श्रीआचार्यजी महाप्र-
भूनसों कही जो वही माधोदास है जो श्रीमहाप्र-
भूनकी कृपातें श्रीठाकुरजीनें माधोदासको मन
फेर्यो और भगवद्भाव उत्पन्न भयो अन्याऊपर
आसक्तिता हुतो सो श्रीठाकुरजीके ऊपर भई सो
माधोदास ऐसे भगवदीय हैं ताते इन वेणीदास
माधोदासकी वार्ताको पार नाहीं सो इनकी वार्ता
कहांताईं लिखिये ॥ प्रसंग ॥ २ ॥ वैष्णव ॥ १४ ॥

अथ हरि बंशपाठकसारस्वत ब्राह्मण बनारसमें रहते तिनकी वार्ता।

सो वे हरिवंशपाठक पटनामें गये हैं सो वहांके

हाकिम सों बहुत मिलाप हुतो सो वह हाकिम अपने मनमें कहै जो ए मेरे पास कछू माँगै तो मैं इनको देउं परि कछू माँगै नहीं यों करत डोल उत्सवके दिन द्वै रहे तब अपने सेव्य ठाकुरजी हुते तिनने स्वप्नमें जताइ जो तू मोकों डोल न झुलावेगो तब हरिबंशपाठकनें मनमें बिचारचौ जो अब कहा करूं तब हरिबंशपाठकहाकिम पास गयेसो जायकें कही जो आपके पास कछू मांगन आयौ हूं सो मोकों दीयौ चाहिये तब राजाने कही जो कहा चाहिये तब हरिबंशपाठकने कह्यौ जो मोको दिन द्वैमें बनारस पहुंचनो है तब हाकिमने कह्यौ जो भलो तब हाकिमन घोडा और मनुष्य साथ दीये पेंडेमें डाक चोकी बनाई ऐसे करत अपने घर आये पाछे आप मन्दिरमें आयकें डोल सिद्धि कीयो डोलकी सामग्री सब सिद्धि करकें पाछें ठाकुरजीको डोलमें बैठाये बहुत सुख भयौ सो थोरे दिन पाछै फिर पटना गये तब हाकिमनें कह्यौ जो तुमको ऐसी कहा जलदी हुती तब हरिबंशपाठकने कही जो कछू काम हुतो परि मनकी बात कछू न कही सो वे हरिबंशपाठक श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके

ऐसे कृपापात्र भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ता अनिर्वचनीय है सो कहांताईं लिखिये॥ प्रसंग १॥ वै० १५॥

अथ गोविन्ददासभल्ला ताकीवार्ता।

सो गोविंददास भल्लाकी गाठिमें द्रव्य बहुत हुतो सो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके सेवक भये तब गोविंददासने श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों पूछी जो महाराज मेरी गांठिमें द्रव्य है सो मैं कहा करूं तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कह्यौ जो श्रीठाकुरजीकी सेवा करि तब गोविंददासने कह्यौ जो महाराज सेवा कैसे करूं स्त्री अनुकूल नाहीं तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यौ जो तू स्त्रीको त्याग करि तब गोविंददासने स्त्रीको त्याग कीयौ पाछें कही जो महाराज द्रव्यकौ कहा करूं तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कह्यौ जो अब द्रव्यको चार बिभाग करि तब गोविंददासने द्रव्यके चार बाट कीये तब फेरि कह्यौ जो महाराज कहा आज्ञा है तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कह्यौ जो १ विभाग तो श्रीनाथजीको समर्पि और एक विभाग अपनी स्त्रीको दै और १ विभाग सेवाकेलिये तू राखि तब गोविंददासने कही जो महाराज कछू आप अंगीकार करिये तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यौ जो भलौ एक

विभाग हमें दै तब सब विभाग जहाँके तहां दैके अपने बाटको द्रव्य लेकै आपु महाबन आय रहै सो महाप्रसाद वैष्णवनको लिवावते वैष्णव न मिलेतो गायनको खवावते तामेंते आप रंचकहू न लेते आप न्यारी लीटी करि भोग समर्पिके लेते ऐसी भांतिसों सेवा करते सो सब द्रव्य निबट्यौ तब श्रीगोवर्द्धननाथजीकी सेवामें आय रहे तब श्रीगोवर्द्धननाथजीकी परिचारगी करते रसोईकी टहल सब करते दोऊवारके पात्र मांजते और रात्रिडेढ तथा सवापहर पाछली रहती तब उठते सो गागरि तहांते लेके चलते सो मथुरामें विश्रांत घाटपै स्नान करिकें श्रीयमुनाजलकी गागरि भरिकें चलते सो राजभोग पहिले आय पहुंचते बहूरा पात्र मांजि रसोई पोति अपनी सब सेवासों पहूंचकें नीचे आवते पाछि तिलक पोंछि माला उतार गांठि बांधकें आसपासके गामनते कोरी भिक्षा मांगि लावते सो सेर चार पांचको आहार करते सो आहार माफिक जुरतौ तब आवते तब आप पीस रोटी करि श्रीनाथजीकी ध्वजाके सन्मुख दिखाय तामें चरणोदक मिलाय प्रसाद लेते ऐसे निर्वाह करते तब ऐसी भांति करत बहुत दिन बीते पारि यह बात श्रीनाथ-

जीको न भावे तब श्रीनाथजीने श्रीआचार्यजी महा-
प्रभूनसों कही जो तुम्हारो एक सेवक मोकों बहुत
दुःख देत है तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू अडेलते
चले सो आगरेमें आए तब तहांके वैष्णवसों श्रीआ-
चार्यजी महाप्रभूनने पूछी जो श्रीठाकुरजी किन-
रुठाए हैं तब उन वैष्णवनने कही जो महाराज हमतौ
कछू जानत नाहीं तब वहांते श्रीआचार्यजी महा-
प्रभू मथुरा पधारे तब मथुराके वैष्णवनसों श्रीआ-
चार्यजी महाप्रभूनने पूछौ जो श्रीठाकुरजी किन रु-
ठाए हैं तब वहांके वैष्णवननें कह्यौ जो महाराज हम
तौ कछू समझत नाहीं तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू
उहांते श्रीजीद्वार पधारे तब श्रीनाथजीके दोऊ क-
पोल हाथनसों छुईके कह्यौ जो बाबा अनमने कैसेहौ
तब कही जो तुम्हारो सेवक मोकों बहुत खिजावत
है तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें सब सेवकनसों
पूछौ जो तुम कहा कहा सेवा करतहो और कहा
प्रसाद लेतहो तब सबनने अपनी २ सेवा कही और
प्रसाद लेवेको प्रकार कह्यौ पाछें गोविंददाससों
पूछौ जो तू कहा सेवा करतह तब जो सेवा करत
हुतो सो सब कही और प्रसाद लेवेको प्रकार कह्यौ
सो सब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने सुनी तब अपने

मनमें जानी जो इन रुठाये हैं तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने गोविंददास भल्लासों कही जो तुम श्रीठाकुरजीकी रसोईमें प्रसाद लेउ तब गोविंददासने कह्यौ देव ऐसे कैसे लेउ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कह्यौ जो तू हमारी रसोईमें प्रसादले तब गोविंददासने कह्यौ गुरू ऐसे कैसे लेउ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कह्यौ जो तू सेवा मति करै तब गोविंददासक्षत्री अहंकारसों सेवा छोडिके मथुरा गए सो केसोरायजीकी सेवाको इजारौ पठानके पासते लीयौ तब सेवा करन लाग्यौ सो एक वार श्रीकेसोरायजीकी सिज्या निवारते बनाइ सो सिज्या बहुत अद्भुत भई तब श्रीकेसोरायजी वा सिज्याके ऊपर पोढन लागे तब तैसीही निवार वा गामके हाकिमनें बनवाई परि वह निवार वैसी न भई तब वा कारीगरनें कही जो वह निवार तो श्रीठाकुरजीकी है तब हाकिमनें कही जो वह निवार में देखूंगो पाछें हाकिम श्रीठाकुरजीके दिवालेमें जायके सिज्या उपर चढि बैठ्यौ सो गोविंददासनें सुनी तब गोविंददासने आयके गुप्तीलेकें हाकिमको गारीदीनी जो तू कौन है जो हमारे श्रीठाकुरजीकी सिज्या ऊपर बैठ्यौहै ऐसे वा

हाकिमको ठौर मार्यौ तब हाकिमके मनुष्यनने गोविंददासको ठौर मार्यौ सो यह बात श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके आगे काहू वैष्णवने जाय कही और कह्यौ जो ऐसी गति वैष्णवकों क्यों बूझिये तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यौ जो याके परलोकमें तौ कछू हानि नाहीं परि इनने मेरी आज्ञा न मानी तासों याकी देह या भांतिसों छूटी है यह गोविंददास पहिले जन्ममें श्रीनंदरायजीको भैंसा हुतौ याने माटी पानी बहुत ढोयो सो वे गोविंदास भल्ला श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ताको पार नाहीं सो कहांताई लिखिये ॥ प्र० ॥ १ ॥ वै० ॥ १६ ॥

अथ अम्माक्षत्राणी जो कडामें रहती तिनकी वार्ता ।

सो अम्माके दोय बेटा हुते सो दोऊ परम वैष्णव हुते आप वैष्णव हुती और वाके लरिका वासों अम्मा कहते और श्रीठाकुरजीकी सेवा नीकीभांतिसों करती सो वाके सेव्य श्रीठाकुरजी श्रीबालकृष्णजी वासों अम्मा कहते सो कितेक दिनपाछें एकबेटा वाको मरगयो तब श्रीठाकुरजीकी रसोई

करि श्रीठाकुरजीको भोग समर्प्यों समयानुसार भोग सराय पाछें रोवन लागी तब अम्माको रोवत देखिकें श्रीठाकुरजी खेद पावन लगे श्रीठाकुरजी कहै अम्मा तू रोवे मति परि वह रोवतते रहै नाहीं ऐसे करत वाको दूसरोहू बेटा मरगयो तबतो बहुत रोवन लागी तब श्रीठाकुरजी वाकों रोवतेसों राखे और कहै अम्मा तू मतिरोवे तब अम्मा रोवतते रहै नाहीं तब श्रीठाकुरजीने श्रीगुसांईजीसों कह्यौ जो अम्मा रोवति है सो में बहुत खेद पावतहौं तब श्रीगुसांईजी अम्माके घर पधारे और कह्यौ जो अम्मा तू मतिरोवे श्रीठाकुरजी खेदपावत हैं तब रोवतते रही और अम्मा सेवाको सबसाज करिकें पाछें स्नान करिकें पाछें मंदिरमें जायकें दोऊ हाथ-नसों सोधों लगायकें श्रीठाकुरजीके लगावै या भांतिसों सेवा आछी तरह करती ॥ प्रसंग ॥ १ ॥

बहुर एक दिन दूधको कटोरा श्रीठाकुरजीके आगे भरिराख्योहुतो ता समय श्रीगुसांईजी अ-म्माके घर पधारे मंदिरको टेरा सरकायके दर्शन करनलागे तब श्रीगुसांईजी देखेंतो ठाकुरजी दूध पीते हैं तब श्रीगुसांईजी देखिकें पाछें फिर आये तब अम्माने कही जो बाबा पाछें क्यों फिर आये

तब श्रीगुसांईजीने कह्यौ जो श्रीठाकुरजी दूध पीव-
तहैं तब अम्माने कही जो श्रीठाकुरजी तो लरिका
हैं तुमकहा जानत नाहीं तब श्रीगुसांईजी दर्शन
करिकें पाछें फिरे और अम्मासों श्रीगुसांईजीनें
कह्यौ जो यह दूध हमारे घर पठाय दीजियो तब
अम्माने कह्यौ जोराज आपही तो आरोगनवारे
भावै तौ इहां आरोगौ भावै उहां आरोगौ पाछें
श्रीगुसांईजी आपतौ घर पधारे तब अम्मानें वह
दूध श्रीगुसांईजीके घर पठाय दीयौ सो अम्मासों
श्रीठाकुरजी ऐसे सानुभाव हुते प्रत्यक्ष वारता
करते जो वस्तु चाहिये सो मांगिलेते सो अम्मा
श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी ऐसी कृपापात्र भगव-
दीय ही ताते इनकी वार्ताको पार नाहीं सो अब
कहांताई लिखिये ॥ प्रसंग ॥ २ ॥ वैष्णव ॥ १७ ॥

अथ गज्जनधावनक्षत्रीआगरेके वासी तिनकी वार्ता।

सो गज्जन धावन श्रीनवनीतप्रियाजीकी सेवा
नीकी भांतिसों करते श्रीठाकुरजी सानुभाव हुते
गज्जनके साथ श्रीनवनीत प्रियाजी खेलते गज्जनको
कबहूं गाय करते कबहूं बछरा करते तब गायको

मुख अपने पीताम्बरसों पोंछते तब वछरा करते तब
पकर राखते चलन न देते और जब घोरा करते तब
पीठ उपर असवारी करते जब हाथी करते तब
ग्रीवा ऊपर असवारी करते ऐसे करत गज्जनके घुटरु
घिस गये ऐसी कृपा नवनीतप्रियाजी गज्जन धाव-
नके ऊपर एसी करते भोगसामग्री जो चाहिये सो
मांगलेते ऐसी कितनीक वार्ता है सो कहां तांई लि-
खियै और एकदिन श्रीनवनीतप्रियाजीने गज्जन
धावनसों कही जो मोकों श्रीगुसांईजी श्रीआचा-
र्यजी महाप्रभूनके घर पधराय तासमय श्रीआचा-
र्यजी महाप्रभू गोकुलमें हुते तहां गज्जन आयके
श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों कह्यौ जो महाराज
श्रीनवनीतप्रियाजीकी ऐसी आज्ञा भई है जो मोकूं
श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके पास पधराय तब
श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कही जो भलो पधराय
तब गज्जनधावननें श्रीनवनीतप्रियाजी श्रीआचा-
र्यजी महाप्रभूनके मंदिरमें पधराये तब श्रीआ-
चार्यजी महाप्रभूनने जैसौ प्रस्ताव बन्यौ तैसे पध-
राय भोग समर्प्यौं पाछें रात्रिको आप बहुत सोधों
लगायके श्रीनवनीतप्रियाजीको अपनी सिज्या
ऊपर लै पोढे दूसरे दिन नई सिज्या करवाई ता ऊ-

पर पोढे पारि वह सिज्या छोटी भई तब श्रीनवनीत-
प्रियाजीने कह्यौ जो हूंतौ या सिज्या ऊपर न पोढूंगो
तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कही जो ऐसे कैसे
बने तब श्रीनवनीतप्रियाजीने कह्यौ जो कछू बाधक
नाहीं है तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने आप सोंधो
लगायके पासही ले पोढे पाछें दूसरे दिन सिज्या
बडी करवाई तापर पोढाए तब पोढे तापाछें थोडेसे
दिन रहिकें श्रीआचार्यजी महाप्रभू श्रीगोकुलते
अडेलकों पधारे तब गज्जनहू साथ गयौ गज्जनधा-
वनबिना श्रीनवनीतप्रियाजी एक क्षणहूं न रहते ऐसे
ही नवनीतप्रिया बिना गज्जन एक क्षण न रहते तब
एक दिन श्रीनवनीतप्रियाजीके लिये श्रीअक्काजीने
गज्जनधावनको पान लेने पठायौ कह्यौ जो पान ले
आवो तब गज्जन ऐसेतो कहि न सक्यो जो श्रीनव-
नीतप्रियाजी मोसों हिले हैं सो में कैसें जाऊं ताते
अनबोल्यौ पान लेनको उठि चल्यौ सो थोरीसी
दूरगयौ इतनेमें ज्वर चढिआयौ सो उहांहीं पडि
रह्यौ और इहां श्रीअक्काजीनें श्रीनवनीतप्रियाको
भोग समर्प्यों तब अक्काजीसों नवनीतप्रियाजीने
कह्यौ जो गज्जनको बुलावो मेरो गज्जन आवैगो तब
भोजन करूंगो तब श्रीअक्काजीने मनुष्य दोय

बुलावनकों पठाये तब वे मनुष्य देखें तो गज्जन थोरीसी दूरपै परयौ है ज्वर चढि रह्यो है मनुष्य तहांते बुलाय लाये तब गज्जन आप स्नान करि मंदिरमें गयौ तब तत्काल ज्वर उतर गयौ तब गज्जनने श्रीनवनीतप्रियासों कह्यौ जो बाबा भोजन क्यों नाहीं करत अब भोजन करौ तब भोजन श्रीनवनीतप्रियाजीने कीयौ गज्जनधावनसों श्रीनवनीतप्रियाजी ऐसे सानुभाव हुते श्रीनवनीतप्रियाजीते एक क्षण न्यारौ भयौ जो तत्काल ज्वर चढि आयौ और जब निकट आयौ तब तत्काल ज्वर उतर गयौ ताते गज्जनधावन श्रीनवनीतप्रियाजीके सदा पास रहते सो वे गज्जनधावन श्रीआचार्यजी महा प्रभूनके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हैं ताते इनकी वर्ताको पार नाहीं सो कहांताईं लिखिये प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ १८ ॥

अथ नारायणदास ब्रह्मचारी सारस्वत-ब्राह्मण महावनमें रहते तिनकी वार्ता।

सो नारायणदासके सेव्य श्रीठाकुरजी श्रीगोकुल चन्द्रमाजी सो नारायणदास श्रीगोकुल चन्द्रमाजीकी नीकीभांतिसों सेवा करते और गायनकों

घास खवावते सो धोय पौंछिकें खवावते ताको ता-
त्पर्य यह जो श्रीठाकुरजी दूध अरोगत हैं जो मति
दूधमें रजआवै ऐसे करते और श्रीआचार्यजी महा-
प्रभू जब श्रीगोकुल पधारते तब नित्य प्रातःकाल
श्रीगोकुलमें महावन पधारते श्रीगोकुल चन्द्रमा-
जीकी सेवा करिवेको सो सेवा करि भोग सम र्पिकें
पाछें श्रीगोकुल पधारते और नारायणदास जहां
हाथपांव धोवेको बरहेमें जाते जा ठोरते माटी खो-
दते ता ठौर द्रव्य निकसतौ ताऊ पर माटी डारि
उठि आवते परि द्रव्यको स्पर्श न करते सो नारा
यण ऐसे त्यागी हुते सो नारायण दास एकदिन
सोवत हुतौ तहां खाटके आसपास द्रव्यके ढेर भये
हुते तब नारायणदास देखे तौ खाटके आसपास
द्रव्यके ढेर भये हैं तब नारायणदासनें भतीजीसों
कही जो बेटी बेगि उठि घरमें बिगार बहुत भयौ
है बुहारिकें कूरौ सब बाहर डारि आउ तब नाराय-
णदास तौ बरहेमें देह कृतको गये पाछें भतीजीने
सोई कीयौ सब बुहारके कूडेकी नांई सब बुहार
दीनौ जगै सब लीपडारी पाछे नारायणदास स्नान-
करि मन्दिरमें गयै तब सेवा सिंगार सब करिकें
श्रीठाकुरजीके साम्हे देखे सो श्रीठाकुरजीनें नारा-

यणदासको अति सुन्दर दर्शन दीनों तब अति-
प्रसन्न श्रीठाकुरजीको देखके नारायणदासने कह्यौ
जो महाराज यह घटा काहेको उनहीहै न जाने
कहां वरसेगी पाछें आपही कह्यौ जो यह घटा
श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकौं सरवस्व है वहां बर-
सेगी पाछें नारायणदास श्रीगोकुल चन्द्रमाजीकों
राजभोग समर्पिकें बाहर आय बैठे तब हृदौ भरि
आयौ जो श्रीठाकुरजी कौन भांतिसों आरोगत हैं
ऐसो विचार मनमें लाए तब भतीजीने कही जो श्री-
आचार्यजी महाप्रभूनके सेवक जहां भोग समर्पित
हैं सो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी कानिते अरो-
गत है सो तुमतौ श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके सेवक
परम कृपापात्र भगवदीय हों ताते तुम्हारो समर्प्यौं
क्यों न आरोगेंगे तुम सन्देह क्यों करत हौ तब
नारायणदासनें कह्यौ जो बेटी आरोगें जब जानियें
तब कोई वैष्णव अपने घर आय अचानक महा-
प्रसाद लेय तब जानियें जो श्रीठाकुरजी अरोगे
होयगे वैष्णव ऊपर नारायण दासको ऐसो भाव
हुतौ ॥ प्रसंग ॥ १ ॥

बहुरि एकदिन नारायणदास श्रीगोकुल चन्द्र-
माजीको शृंगार करि रसोईमें गये तहां शृंगार

भोगको सिद्ध करके सरायवेंकों थार धर्‌यौ इतनेमें एक वैष्णवनें नारायणदासके पास आयकें बधाई दीनी जो श्रीआचार्यजी महाप्रभू गोकुलते पधारत हैं सो नारायणदास सुनतही ताती खीरको डवरामें मेलि श्रीठाकुरजीको भोग समर्पि उतावले श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके दर्शनको आये तब आयके श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके दर्शन करके दंडवत कीनी सो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके चरणारविन्द ऊपर माथो मेलि रहे तब नारायणदासको माथौ पकरि आप श्रीहस्तसों उठायो और पूछौ जो श्रीगोकुल चन्द्रमाजीके यहां कहा समय है तब नारायणदासने कही जो महाराज अबही सिंगारभोग समर्पिके आयौ हूं सो सुनिके श्रीआचार्यजी महाप्रभू तत्काल पधारे तब जातही स्नान करिकें मन्दिरमें हाथ धोय आचमनकी झारी हाथमें लेके भोग सरायवेको मन्दिरमें पधारे तब भीतर जायके देखेतो श्रीगोकुलचन्द्रमाजीके श्रीहस्त खीरमें भरे हैं और श्रीहस्तकमल खेंचिरहे हैं तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें श्रीगोकुलचन्द्रमाजीसों कही जो महाराज श्रीहस्तको क्यों खेंचि रहेहौ तब श्रीगोकुलचन्द्रमाजीने कही जो तुमको आये

जानिके मोकों नारायणदास तांती खीर समार्पिकें तुमारे पास गयो सो खीर मेरे हातसो ताती लागी सो मेंने थोरीसी चाटकें हाथ झटके सो सब मन्दिरमें छींट लागी हैं और मेरे हाथ और ओष्ट राते भये हैं सो श्रीगोकुलचंद्रमाजीके हाथ और ओष्ट अजहूं लाल हैं पाछे श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें खीर पंखासों सीरीकरि भोग समार्पिके बाहर आये तब नारायणदाससों खीजे और कह्यौ जो तेंने श्रीठाकुरजीको ताती खीर समार्पि तब नारायणदासनें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों बीनती कीनी जो में राजको पधारे जानि उतावलो राजपास आयौ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कही जो आज पाछें ऐसौ काम मति करियौ पाछें समय भयौ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने भोग सरायौ तब श्रीगोकुलचंद्रमाजीने श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके दोऊ श्रीहस्त पकरिकें कह्यौ जो तुम खीर महाप्रसाद लेउ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यौ जो महाराज जातिव्यवहार की कठिन है तब श्रीगोकुलचंद्रमाजीने कह्यौ जो यह मेरी आज्ञा है तातैं तुम कछू विचार मति करौ खीरको महाप्रसाद लेउ तब श्रीगोकुलचन्द्रमाजीने खीरको महाप्रसाद हो

सो अपने आगेंही श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको लिवायौ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने लीनो तादिनते अनसखडीमें होत हैं नारायणदाससों श्रीगोकुलचंद्रमाजी ऐसी भांति सेवा करवावते वे नारायणदास ऐसे भगवदीय हैं तातें श्रीगोकुल-चंद्रमाजी ऐसी कृपा करते ॥ प्रसंग ॥ २ ॥

बहुरि कितनेकदिन पाछें नारायणदासकी देह थकी सो बहुत आशक्ति भइ तब एकदिन श्रीगो-लचन्द्रमाजीने नारायणदाससों कह्यौ जो नारायण-दास तू कछू मांगि तब नारायणदासने कही जो महाराज हूं यह मांगत हूं जो तुम श्रीगुसांईजीके घर पधार सेवा करवावौ नारायणदासके मनमें यह जो श्रीठाकुरजी और कहूं सुख न मानेगे सेवा आछी भांतिसों न होयगी सो नारायणदासने अंत-समें श्रीठाकुरजीके पास यह मांग्यौ पाछें कितनेक दिनमें नारायणदासकी देह छूटी तब श्रीगोकुल-चंद्रमाजीने कितेक दिनताईं कृष्णदासस्वामिके पास सेवा करवाई पाछें श्रीगुसांईजीके घर मथुरामें पधारे सो श्रीगुसांईजीने श्रीरघुनाथजीके माथे पधराय दीयै सो वे नारायणदास ब्रह्मचारी श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हैं तातें इनकी

वार्ता। कहांतांई लिखिये प्रसंग ॥ ३ ॥ वैष्णव॥ १९॥

अथ एक क्षत्राणी महावनमें रहती तिनकी वार्ता।

सो एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभू पृथ्वीपरिक्रमा करत २ महावन पधारे सो वा क्षत्राणीकों चारों स्वरूप प्राप्त भए हैं सो चारों स्वरूप श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके आगें आनिराखें सो तिन चारों स्वरूपनके नाम एक तौ श्रीनवनीतप्रियाजी और एक श्रीगोकुलचंद्रमाजी और एक श्रीललितत्रिभंगीजी और एक श्रीलाडलेजी ये चारों स्वरूप श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने चार वैष्णवनके माथे पधराय दीए सो या भांति श्रीगोकुलचंद्रमाजीतो नारायणदास ब्रह्मचारीके माथ पधराये और श्रीलाडलेजी जीयदास क्षत्रीके माथ पधरायै और श्रीललितत्रिभंगीजी देवा क्षत्रीके माथे पधरायै और श्रीनवनीतप्रियाजी गज्जनधावनके माथे पधरायै या भांति चारों स्वरूप चार वैष्णवनके माथे पधराय दीयै तब चारों वैष्णवनसों श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्या जो यह मेरे सर्वस्व है सो स्वरूप तुम्हारे माथे पधरायै हैं सो इनकी सेवा नीकी भांतिसों

करियौं और तुमसो जब सेवा न होय आवै तब हमारे घर पधराय जैयौ पाछें नवनीतप्रियाजीनेतो कछूकदिन गज्जनधावनके माथे सेवा करवाई पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके घर पधराये सो सबतो गज्जनधावनकी वार्तामें लिख्यो है और श्रीगोकुल-चंद्रमाजीने कितेक दिनतांई नारायणदास ब्रह्मचा-रीके माथे सेवा करवाई पाछे कृष्णदासस्वामीकेपास सेवा करवाई पाछें श्रीगुसांईजीके घर पधारे पाछें श्रीगुसांईजीनें श्रीरघुनाथदासजीके माथे पधराये सो प्रकार नारायणदास ब्रह्मचारीकी वार्तामें लि-ख्यौ है और श्रीलाडलेजीको प्रकार सब जीयदास-जीकी वार्तामें लिख्यौ है सो अब श्रीआचार्यजीके कुलमें बिराजत हैं सो ललित त्रिभंगीजी अंत-र्ध्यान भए सो प्रकार देवाक्षत्री कपूरकी वार्तामें लिख्यौ है सो वह क्षत्राणी श्रीआचार्यजी महा-प्रभूनकी ऐसी कृपापात्र भगवदीय ही ताकी वार्ता कहांतांई लिखिये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ २० ॥

जीयदासक्षत्री सूरातिनकी वार्ता।

सो जीयदासके माथे श्रीआचार्यजी महाप्रभू-नने श्रीलाडिलेजीकी सेवा दीनी सो जीयदासके

पास श्रीलाडिलेजीने चार पहर सेवा करवाई सो-
जीयदासके चार बेटा हुते तिनमें पुरुषोत्तमदास
छबीलदास इन दोऊ भाईनने कोई एक दिन सेवा
कीनी पाछें दोऊ भाईनके संतति न भई तब इनके
पाछें इनके मामा कृष्णदास चौपडा हुते तिनके
मांथे श्रीलाडलेजी पधारे सो कितेक दिनताई कृष्ण-
दास चौपाडोंसो सेवा करवाई सो भली भांतिसों
सेवा कीनी सो एकसमय महामारी आई सो कृष्ण-
दासके घरके सब कुटुम्बकी देह छूटी तब कृष्णदास
अकेले रहै तब कृष्णदासके मित्र हरजी तथा मथु-
रामल्ल क्षत्री हुते सो कृष्णदास तहां आय रहै सो
कितेक दिनतांइ कृष्णदास और हरजी दोऊ मिलकें
सेवा कीनी पाछें कृष्णदासकी देह छूटी तब हरजी
भाईनें डेढ वर्षलों सेवा कीनी पाछें श्रीगुसांईजीके
घर पधारे सो श्रीलाडलेजी अब बिराजत हैं सो वे
जीयदास श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे परम
कृपापात्र भगवदीय हैं सो इनकी वार्ताको पार
नाहीं सो कहांताईं लिखियै ॥ प्रसंग ॥१॥ वै०२१॥

अथ देवाक्षत्रीकपूर तिनकी वार्ता ।

सो देवाकपूरके माथे श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने
श्रीललित त्रिभंगीजीकी सेवा पधराय दीनी सो

देवाकपूरकी जबलों देह रही तबलों सेवा कीनी तापाछें देवाकपूरकी स्त्रीकी देह छूटी ताको संस्कारकर आये तापाछे मन्दिर उघारके देखेंतो श्रीठाकुरजी नाहीं और सामग्री सब धरी है एक श्रीठाकुरजी नाहीं हैं सो जाने कहां अन्तरध्यान भए यातें यों जानी परी जो देवाकपूरके चार बेटा हुते पर उनके पास सेवा न करवाई श्रीठाकुरजीतौ स्नेहके वश हैं सो भगवदिच्छा ऐसी ही भई ताते देवाकपूर तथा देवाकपूरकीस्त्री श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी ऐसे कृपापात्र भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ता कहांताईं लिखियै ॥ प्रसंग ॥१॥ वैष्णव २२॥

अथ दिनकरदाससेठ तिनकी वार्ता।

सो दिनकरदासकों कथाके ऊपर बहुत रुचि हुती सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप अडेलमें कथा कहते तहां दिनकरदास नित्य सुनते सो एक दिन दिनकरदास रसोई करत हुते सो आटयौ सान्यौ हुतो ऊपरा बराय दीने है लीटी कारि राखी हुती इतनेमें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके सेवक जलघरिया जो श्रीठाकुरजीको जल भारिवेकों आयो तब दिनकरदासने पूछौ जो श्रीआचार्यजी महाप्रभू कहा करत हैं तब वा जलघरियानें कह्यौ जो

पोथी खोली है अब कथा कहैंगे तब दिनकरदासने
काचीही अंगाकरी लीनी सेकी नाहीं बेगि उठि वस्त्र
पहरकें आयौ आयकें कथा सुनी श्रीआचार्यजी
महाप्रभू कथा कह रहे हैं तब वा जलघरियाने
श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों कह्यौ जो महाराज
दिनकरदासने काची अंगा करी लीनी सेकीहुं नाहीं
तब दिनकरदाससों श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने
कही जो तू काची अंगा करी क्यों खाय आयो है
तब दिनकरदासने कही जो महाराज अंगा करी तौ
नित्य लेउंगो पारि यह अमृतकथा कब सुनूंगो तब
श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यौ जो अबते तू
रसोई कारि श्रीठाकुरजीको भोग समर्पि प्रसाद लेय
पहुँचके जब आवैगो तब पोथी खोलूंगो तेरे आए
विना कथा न कहैंगे आजते हमारी कथाको श्रोता
तू तातें तू निश्चंत होयकें आइयौ तब तादिनते
दिनकरदास बेगिही रसोई कारि भोग समर्पि प्रसाद
लेके जब कथाके समय आवते तब श्रीआचार्यजी
महाप्रभू पोथी खोलते सो वे दिनकरदास सेठ
श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे कृपापात्र भगव-
दीय है सो इनकी वार्ताको पार नाहीं ताते अब
कहांताईं लिखिये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ २३ ॥

अथ मुकन्ददास कायस्थ तिनकी वार्ता।

सो मुकन्ददास आप कबि हुते सो कवित्त करते सो कबित्त बहुत कीये हैं श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके तथा श्रीगुसांईजीके तथा श्रीठाकुरजीके बहुत कवित्त कीयै है और मुकन्दसागर एक ग्रन्थ कीयौ सो एक समय मुकन्ददास उज्जैनके कारकुन होयके आए तब तहांके पंडित सब आयमिले तब पंडितननें मुकन्ददाससों कह्यौ जो तुम हमारे पास श्रीभागवत सुनोंतो सुनावें तब मुकन्ददासने कह्यौ जो तुम हमारौ भागवत जानत हो तब उन पंडितनने कह्यौ तुमारौ कहा भागवत न्यारौ है तब मुकन्ददासनें एक श्लोककौ व्याख्यान कीयौ पाछें महीनालौं सुनायौ पारि आपकाहू पास कथा न सुनी कोई पंडित कदाचित व्याख्यान करतौ ताकों बहुत भांति दूषण देकें आवते जो काहेते सुबोधिनीमें बहुत प्रवेश हो मुकन्ददासकी श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके चरणकमल पर दृढता हुती ताते सुबोधिनी स्फुर्दरूप हुती ऐसे करत करत कितनेक दिनमें उज्जैनमें मुकन्ददासकी देह छूटी तब काहू वैष्णवनें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके आगे आय कही जो महाराज मुकन्ददासने अवंतिका पाई तब श्रीआ-

चार्यजी महाप्रभूननें कही जोऐसे मति कहौ ताते ऐसे कह्यौ जो मुकन्ददासकों अवंतिकानेंपाये सो वे मुकन्ददास श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ताकौ पार नाहीं सो कहांताई लिखिये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ २४ ॥

अथ प्रभूदास जलोटा क्षत्री सीहनन्दकेवासी तिनकी वार्ता ।

सो प्रभूदासके सेव्य ठाकुर श्रीमदनमोहनजी सो राजनगर सिकन्दरपुरमें बैठे हैं सो जब श्रीआचार्यजी महाप्रभू मथुरा पधारे तब प्रभूदास साथ हैं तब एक दिन श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप संध्यावन्दन करिकें स्नान करत हुते विश्रांतके ऊपर तहां दोचार वैष्णव और बैठे हैं तब तहां रूप सनातन कृष्णचैतन्यके सेवकनें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों पूछौ जो यह वैष्णव कौनहै तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यौ जो ये हमारे सेवक हैं तब रूपसनातनने कह्यौ जो ऐसे दुर्लभ क्यों रहत है तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यौ जो मैं इनको बहुत बरजे जो तुम या मार्गमें मति:परौ पारि इन मेरो

कह्यौ न मान्यौ ताको फल यह भोगत हैं पारि रूप-
सनातन कछू समझे नाहीं तब श्रीआचार्यजी महा-
प्रभूनके दर्शन करिकें रूप सनातनतो गए पाछें
कितनेकदिनमें एक वैष्णव रूपसनातनके साथको
श्रीजगन्नाथजीके दर्शनको गयौ तहां कृष्णचैतन्य
मिले तब कृष्णचैतन्यने वा वैष्णवसों श्रीआचा-
र्यजी महाप्रभूनके कुशल समाचार पूछे और कह्यौ
जो नीके है कहां मिले हुते कहा करत पाये हुते तब
वा वैष्णवने कृष्णचैतन्यसों कह्यौ जो श्रीआचा-
र्यजी महाप्रभू मथुरा पधारे हुते और विश्रांतऊपर
मिले हुते बहुत नीके हैं और श्रीआचार्यजी महाप्र-
भूनके दर्शनको रूपसनातनहूं गए हुते विश्रांतऊ-
परसो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों रूपसनातनने
और वैष्णवनकी बात पूछी जो ये ऐसे दुर्लभ क्यौं
रहत हैं तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कही प्रभू-
दासकी बात कही जो म इनकौ बहुत बरजे पारि इन
मेरो कह्यौ न मान्यो ताको फल ये भोगत हैं सो यह
बात सुनिके कृष्णचैतन्यको मूर्च्छा आइ सो एक
मुहूर्तलो मूर्च्छा रही पाछें सावधान भये तब फेरि
पूछौ जो तुमने कहा बात कही तब वा वैष्णवनें
फेरि कह्यौ जो श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यौ

जो यामार्गमें मति परौ तब कृष्णचैतन्यको फेरि मूर्च्छा आई सो दोय मुहूर्तलों रही पाछें फेरि सावधान भए ऐसे तीनवार पूछौ सो तीनोंवार मूर्छा आई चौथीवार फेरि वा वैष्णवसों पूछी जो कहा कही तब वाने कृष्ण चैतन्यसों कही जो अब मोपै कही न जाय जो यह बात ऐसी है जो केवल बिरही होय सो जाने रूपसनातन कहा जाने ॥ प्रसंग ॥ १ ॥

और एकसमय प्रभूदासनें वेगी रसोई करी सो दारतौ काचीरही और अंगाकरी जरगई तब प्रभूदासके मनमें आई जो ऐसी सामग्री श्रीठाकुरजीकूं कहा समर्पूं सो चरणोदक मेलिकें प्रसाद लीयो और श्रीठाकुरजी तो बाट देखतही रहे जो प्रभूदास भोग समर्पैगो और मैं आरोगूंगो और प्रभूदासनें तो बिगरी सामग्री जानिके न समर्पी तब श्रीठाकुरजीने श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों कही जो आज मोको प्रभूदासने भोग समर्प्यो नाहीं मेने बाट देखी जो अब मोको प्रभूदास भोग समर्पैगो और में आरोगूंगो पारि प्रभूदासने भोग नाहीं समर्प्यो तब उत्थापनके समय प्रभूदास दर्शनको आये तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने प्रभूदाससों कह्यौ जो

आज तेने श्रीठाकुरजीके बिना समर्पि प्रसाद लीयौ तब प्रभूदासनें सांची बात कही जो महाराज दारतौ काची रही और अंगाकरी जरगई ताते ऐसी सामग्री जानि भोग समप्यों नाहीं चरणोदक मेलि प्रसाद लीयो तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यौ जो ऐसी रसोई क्यों करी श्रीठाकुरजीने तो बडी वारलों बाट देखी जो प्रभूदास भोग समर्पेंगो और मैं आरोगूंगो ताते तेने ऐसी रसोई क्यों करी सावधान हैके क्यों न करी पाछें सावधान हैकें रसोई करन लागे ॥ प्रसंग ॥ २ ॥

और एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभू व्रजमें पधारे हुते तब प्रभूदास साथ है तब एक दिन श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें व्रजमें श्रीगोवर्द्धनके निकट स्थल भोग धरायो पाछें भोग सरायौ तब प्रभूदाससों श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यौ जो प्रसाद लेउ तब प्रभूदासने कह्यौ जो मेने स्नान नाहीं कीनों तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें प्रभूदाससों कही जो तू देखि तब श्लोक करिकें दिखायौ ॥

श्लोक–वृक्षेवृक्षेवेणुधारीपत्रेपत्रे चतुर्भुजः ।
यत्र वृन्दावनं तत्र लक्ष्यालक्ष्यकथा कुतः ॥ १ ॥
जलादिभी रजः पुण्यं रजसोऽपि जलं वरम् ।
यत्र वृंदावनं तत्र स्नानास्नानकथा कुतः ॥ २ ॥

यह श्लोक पढिकें प्रभूदासको दिखायौ ब्रजकौ स्वरूप वृक्षवृक्षविषें बेणुधारी पत्रपत्रविषै चतुर्भुज देखे या भांतिकों प्रभूदासको दर्शन करवायो ऐसो सादृश्य ब्रजको स्वरूप दिखायौ पाछें प्रभूदासनें प्रसाद लीयौ दंडवत करिकें प्रभूदासके ऊपर श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी ऐसी कृपा हुती सो आपते कृपा करिकें ब्रजको स्वरूप दिखायौ॥ प्रसंग ॥ ३ ॥

और एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप मन्दिरमें हुते तब ऐसी मनमें आई जो श्रीठाकुर-जीको भोग समर्पिये सो दहीको भोग समर्पिये ता समय प्रभूदास बाहर हुते सो प्रभूदासने श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके अंतःकरनकी जानी तब प्रभूदास बाहिर गये तब गावमें जायकें एक अहीरी मिली तासों पूछौ जो तेरे दही है तब वा अहीरीने कह्यौ जो हां दही है तब प्रभूदासनें कह्यौ जो लाउ तब अहीरी दही ले आई तब प्रभूदासने कह्यौ याको मोलि काहि तब वा अहीरीने कहीजो तू मोकों कहा देयगो तब प्रभूदासने कह्यौ जो तू माँगेगी सो देउंगो तब वा अहीरीने कही जो एक टका तो दे और कहा मुक्ति देयगो तब प्रभूदासने कही जो यह तो टका

ले और तोकों मुक्ति दीनी तब वा अहीरीने कही जो तू मोको लिखदे जो मुक्तिदीनी तब प्रभूदासने लिख दीनी और दही लेके घर आए सो दही भीतर दीयौ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने वह दही भोग समर्प्यौं सो श्रीठाकुरजी आरोगे सो वह दही अति स्वादभयौ पाछें श्रीगुसांईजी जब सांझके समय दर्शनकों आये तब यह बात श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों कही जो महाराज प्रभूदासनें दहीके ऊपर मुक्ति दीनी सो लिखि आये तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूजीने प्रभूदाससों पूछी जो प्रभूदास वह दही अति स्वाद भयो हुतौ सो तेने वाकों मोल कहा दीयो हुतौ तब प्रभूदासने कह्यौ जो महाराज वा अहीरीने एक टका और मुक्ति मांगी सो एकटका और मुक्तिदीनी तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कह्यौ जो तेने कछू न दीनों तब प्रभूदासने कही जो महाराज हूं कहा करूं जो मोपे मांग्यौ हुतौ सो दीनो जो भक्ति मांगती तो भक्ति देतौ पाछें वा अहीरीकी सखीने कह्यौ जो तोकोतो ठग लीनी तब वा अहीरीने सखीसों कह्यौ जो तू कहा जाने ए बडे भगवद्भक्त हैं इनको बचन सत्य है तब कितनेक दिनमें वा अहीरीकी देह छूटी तब यम दूत

आए इतनेमें विष्णुदूतहूं आए सो आपुसमें झगरन लागे तब यमदूतन सो विष्णुदूतनने कही जो याको तो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके सेवक प्रभूदासने मुक्ति दीनी है सो कागद याकी साडीकी खूंटते बंध्यो है सो यह बात वा अहीरीके सगे सहोदरनने सुनी पारि आंखि न देखे पाछें वा अहीरीको विष्णुदूत ले जाने लगे तब वा अहीरीने विष्णुदूतनसो कह्यौ जो मेरी सखीको दर्शन देउ वाकों अविस्वास है पाछे विष्णुदूतनने वाको दर्शन दीनों तब वह कहन लागी जो मोहूको लेजाउ तब विष्णुदूतनने कह्यौ जो हमारे हाथ कहा है हम तो आज्ञाकारी हैं ताते तू प्रभूदाससों कहि तब वह सखी प्रभूदासके पास आई तब प्रभूदासने वाको श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके पास नाम दिवायौ तब वाहूको कार्य भयौ पाछें विष्णुदूत वा अहीरीको लेगये तब वाकी मुक्ति भई पाछें वा अहीरीके सगे कुटुम्बने वाकी साडीके खूंटते कागद खोलिके देख्यो तब बांचिके रोवनते रहे सो प्रभूदासको श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी कृपाते ऐसी सामर्थ हुती सो वे प्रभूदास बडे भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ता कहांतांई लिखिये ॥ प्रसंग ॥ ४ ॥ वैष्णव ॥ २९ ॥

अथ प्रभूदासभाट सीहनन्दके तिनकी वार्ता।

सो वे प्रभूदास भाट श्रीठाकुरजीकी सेवा नीकी भाँतिसों करते सो बहुत दिन सेवा करत बीतें पाछें वृद्धभयौ तब बहुत आशक्ति भये तब जानि यह देह दिन चार पांचमैं छूटेगी तब सावधानता छूटी असावधान भए तब सगरे मिलके प्रभूदासको प्रथोदक तीर्थ है तहां लेगये जब प्रथोदक आयौ तब सावधान भए आंखि खोलकें देखे तो प्रथोदक तीर्थ है तब प्रभूदासने कह्यौ जो मोकों इहां क्यों लाये हौ तब सगरे जननने कह्यौ जो यह प्रथोद्क तीर्थ है तुम्हारी अंत अवस्था देखिके लाये हैं तब प्रभूदासने कही जो मोकों प्रथोदकसे कहा काम है में तो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको सेवक हूं मोकों प्रथोदक कहा कृतार्थ करेगो मोकों वरस १ लों इहां राखोगे तोऊ मेरी देह यहां न छूटेगी मोकों सीहनन्द ले चलौ जब अपने श्रीठाकुरजीके चरण देखूंगो तब देह छूटेगी तब दिन पांच सातलों राखे पारि दिन २ प्रभूदासको शरीर नीको भयौ सावधान भए तब फिर सीहन-

न्दले गये तब अपने सेव्य श्रीठाकुरजीको देखे दर्शन करिके दंडवत कीनी तब प्रभूदासने श्रीठाकुरजीसों कह्यो जो श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें तुमको मेरे माथे पधराए हैं और येतो बावरे लोग तुम्हारो आश्रय छुडायकें मोकों तीर्थ आगे लेगये परि श्रीआचार्यजी महाप्रभू ऐसी क्यों करे जो मेरी देह तीर्थपे छूटे पाछें श्रीठाकुरजीकी सेवा सिंगार करिकें बेगि २ भोग समर्प्यों भोग सराय अनोसर कीयो पाछे सबनते कह्यो जो तुम बेगि बेगि प्रसाद लेउ ता पाछें मेरी देह छूटेगी तब सब प्रसाद ले चुके तब सबनसों प्रभूदासने जै श्रीकृष्ण कह्यो और प्रभूदासने तत्काल देह छोडी पाछें सीहनंदमें एक कीरतचौधरी हुतो सो प्रभूदासकी निन्दा करन लाग्यौ और कह्यौ जो प्रभूदास प्रथादिकते उलटो फिर आयौ और सीहनन्दमें देह छोडी ऐसी निन्दा करतौ सो एक दिन रात्रिकों सोयो हुतो तहां कोऊ चारि जने हाथमें मुगदर लेके आये सो कीरतचौधरीको बहुत मार्यौ तब कीरत चौधरीनें कह्यौ जो तुम मोकों क्यों मारत हौ तब उनने कह्यौ जो प्रभूदासकी निन्दा तू क्यौं करत है तब कीरतचौधरीने कह्यौ जो अब मैं निन्दा

न करूंगौ और बहुत मनुहार करी तब उन कह्यौ जो तू फेरि निन्दा करेगो तौ तोको याही भांतिसो मारेंगे तब कीरत चोधरीने कह्यौ जा आवते निन्दा न करूंगो भक्ति करूंगो पाछें स्तुति करन लागे तब प्रभूदासकी बात चले तब कीरतचौधरी कहै जो वे बडे महापुरुष हैं तब और लोग कहन लागे जो पहले तौ तुम प्रभूदासकी निन्दा करत हुते और अब स्तुति क्यों करत हौ तब सबनकों कीरतचौधरीने अपने देहकी व्यवस्था दिखाई और कह्यौ जो रात्रिकों कोऊ चारिजने आयके मार मार हाड चूरन कीयौ ताते भगवदीयकी निन्दा सर्वथा न करनी और जो करे तो या लोकमें यही हाल होय और परलोकमें अघोर नरकमें जाय सो वे प्रभूदास भाट श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हैं तातें इनकी वार्ता कहांतांई लिखिये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ २६ ॥

अथ पुरुषोत्तमदास आगरेमें राजघाट ऊपर रहतहुते तिनकी वार्ता।

सो एक समय श्रीगुसाईंजी आगरे पधारे हुते तब पुरुषोत्तमदासके घर उतरे तब पुरुषोत्तमदा-

सकी स्त्री छिप रही तब पुरुषोत्तमदाससों श्रीगु-
सांईजीने पूछौ जो तेरी स्त्री कहां गई है तब पुरुषो-
त्तमदासने कही जो जनेउ टूटी होयगी पाछें श्रीगु-
सांईजी बेगिबेगि रसोई करि दार भात साक चार
पांच करे तब रोटी बेलिवेकी बेरि पुरुषोत्तमदासकी
स्त्री आई तब श्रीगुसांईजीने पूछौ जो अबलों तू
कहां ही तब पुरुषोत्तमदासकी स्त्रीने कह्यौ जो राज
कछु काम करत हुती पाछें पुरुषोत्तमदासकी स्त्रीने
रोटी बेलि २ दीनी तब रसोई सिद्धभई तब श्रीगु-
सांईजीने श्रीठाकुरजीकों भोग समर्प्यौ पाछें सम-
यानुसार भोग सराय पाछें वही थार कटोरा पडगी
सब उन पात्रनमें श्रीगुसांईजीसों कही जो भोजन
करियै तब श्रीगुसांईजीने कही जो यहतौ श्रीठा-
कुरजीके पात्र हैं इनमें भोजन कैसें करें ताते हम
इन पात्रनमें भोजन न करेंगे तब पुरुषोत्तमदास
तथा उसकी स्त्रीने कह्यौ जो महाराजकी कृपाते
कछू द्रव्य निवट्यौ नाहीं और पात्र नये मंगावेंगे
आप इनमें भोजनकरियै तब श्रीगुसांईजीभोजन
करनको बैठे तब पुरुषोत्तमदासकी स्त्री श्रीगुसांई-
जीके पास बैठके पंखा करन लगी और कह्यौ जो
महाराज और सामग्री आरोगो तब श्रीगुसांईजीने

कह्यौ जो मोकूं रुचेगी सो मैं आरोगूंगो तब पुरुषो-
त्तमदासनें कह्यौ जो महाराज श्रीनन्दरायजीके
घर कैसे आरोगतहो ऐसें कहिके स्त्रीपुरुष दोऊजने
श्रीगुसांईजीकों बहुत सामग्री लिवाय सो तिनकें
संकोचके लिये श्रीगुसांईजी कहे जो तुम कहोगे
सो करेंगे तब भोजन कीये पाछे अपने सेव्य श्रीठा-
कुरजीकी सैयाऊपर बिछोना बिछाय श्रीगुसांई-
जीको पोढाये पुरुषोत्तमदास चरणसेवा करन लागे
स्त्री पंखा करनलागी पाछें घडीएक रहिकें श्रीगुसां
ईंजीने दोउनसों कह्यौ जो अब तुम जायकें महा-
प्रसाद लेउ तब उन कह्यौ जो महाराज महाप्रसाद
तो नित्य लेत है परि तुम्हारी सेवा कब करेंगे सो वे
स्त्रीपुरुष दोऊजने श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे
कृपापात्र भगवदीयहैं ताते इनकी वार्ता अब कहां
तांई लिखिये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ २७ ॥

अथ त्रिपुरदासकायस्थशेरगढके वासीहुते तिनकी वार्ता।

सो त्रिपुरदासको श्रीआचार्यजी महाप्रभूनऊपर
तथा श्रीगोवर्द्धननाथजीके विषे बहुत ममत हुतो
जहां बैठते जहां ठाढे होते तहां श्रीनाथजीको पीठ

न देके बैठते पीठ देके ठाडे न होते सो त्रिपुरदास एक तुरककी चाकरी करते परगना बहुत कमायो जो कछू बस्तु आवती सो पाहिले श्रीनाथजीको पहुंचावते और सालनसाक पहुंचावते ऐसे सदा-सर्वदा करते सो एकादिन वा तुरकने त्रिपुरदासकों बन्दीखानेमें दिये और कह्यौ जो तेने मेरो द्रव्य बहुत खायौ है सो जब वह तुरक सोयौ तब कोऊ चारजने हाथमे मुगदर लेकें आए सो आयकें वा तुरकको खाटते औंधौ पटकि बहुत मार्यौ तब वा तुरकने कह्यौ जो तुम मोकों क्यों मारतहौ तब उनने कह्यौ जो तेने त्रिपुरदासकों बन्दीखानेमें क्यों दियौहै तब वह तुरक बहुतबिल बिलानों हाहाक-रिके नाक भूमिमें घिसकें उनसों कहा जो मोकों तुम मारोमति मैं अबही त्रिपुरदासकों छोडत हों तब उन कह्यो जो त्रिपुरदासकों न छोडेगो तो हम याही भांतिसों नित्य मारेंगे ऐसे कह्यो तब वे तो गये तब वा तुरकने आयकें अपने लोगनसों कह्यौ जो त्रिपुरदासको बन्दीखानेमेंते अबही छोडदेउ तब मनुष्य त्रिपुरदासकों छोडन गये तब त्रिपुर-दासने उनसों कह्या जो अब तो रात्रि बहुत गई है ताते सबेरे छोडियों तब वे मनुष्य फिर आये और

वा तुरकसों कह्यौ जो साहिब त्रिपुरदास कहत हैं जो अब तौ रात्रि बहुत गई है सवारे छोडियो तब वा तुरकनें अपने मनुष्यनसों कह्यौ जो तुम अबही त्रिपुरदासकों छोडलावो तब वे मनुष्य वेगही जायके त्रिपुरदासकों छोड लाए तब वा तुरकने त्रिपुरदाससों कह्यौ जो तुम आपने घर जाउ तब त्रिपुरदासने कह्यौ जो अबतौ रात्रि बहुत गई है सवारे जाउंगो तब वा तुरकने त्रिपुरदाससों कह्यो जो तू कहा काऊकों जीव लेयगो ताते तू अबही इतनी बेर अपने घर जाउ तब त्रिपुरदास अपने घर आये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥

बहुर कितनेक दिन पाछें त्रिपुरदास वाही तुरकके साथ अटकगये पाछें एकदिन रसोईयाने त्रिपुरदाससों कह्यौ जो चरणोदक महाप्रसाद निवटयौ है रंचकहू नाहीं तब त्रिपुरदासनें रसोईयासो कह्यौ जो पांडे तेने हमसों पहिले क्योंन कह्यौ हम चरणोदक महाप्रसाद मंगाय देते अब कहा करियै तब रसोईया चुपकर रह्यौ तब सवारे उठिकें त्रिपुरदास वा तुरकके दरबार जान लगे तब कह्यौ जो पांडे रसोई करि श्रीठाकुरजीको भोग समर्पि प्रसाद लीजियो मेरी वाट मति देखियौ मेरौ आवनो न

बनेगो और मनमें यह निश्चै कीयौ जो जबलों यह देह चलेगी तबलों काम काज करूंगो और देह जब चलेगी तब पड रहूंगो परि चरणोदक महाप्रसाद लीयै बिना जल पान न करूंगो यह निरधार अपने मनमें कीयौ तब तुरकके दरबार गये तब रसोई-याने स्नानकरि रसोई करन लागो तब आधी रसोई भई इतनेमें एक लरिका वर्षदसको तीनथैली लायौ सो एक थैलीमें तौ चरणामृत और एक थैलीमें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको चरणामृत और एक थैलीमें श्रीनाथजीको महाप्रसाद सो वे तीनो थैली रसोईयाको दीनो और कह्यौ जो यह तीनो थैली त्रिपुरदासने पठाई है सो थैली देकें वह लरिका तुरं-तही चल्यौ गयौ पाछें रसोई सिद्ध भई तब श्रीठा-कुरजीको भोग समर्प्यौ पाछें समयानुसार भोग सरायो तब रसोईयानें त्रिपुरदासको बुलायवेको मनुष्य पठायो परि त्रिपुरदास आये नहीं तब दोय तीनवार मनुष्य बुलावेको पठायो तब त्रिपुरदासने रसोईयासों कह्यौ जो पांडे तुम मोकों काहेकों बुलावत हौ में तौ चरणामृत महाप्रसाद लीयेंविना जलपान न करूंगौ तब रसोईयाने त्रिपुरदाससों कह्यौ जो चरणामृत महाप्रसादकी थैली तौ तुम-

नेंही पठाई है एक लरिका वर्ष दसकौ हुतौ सो तीन थैली देगयौ है तब त्रिपुरदासने कह्यौ जो वह लरिका कहां है मोकों दिखाय तब रसोईयानें कह्यौ जो वह लरिका तौ तुरंतही थैली देकै चल्यौ गयो तब त्रिपुरदासनें जान्यौ जोये श्रीठाकुरजीके काम हैं तब आपको धिक्कारकरन लाग्यौ जो मैं ऐसौ हट क्यों कीयौ जो श्रीठाकुरजीकौ श्रम करनों पड्यो सो आप धिक्कार बहुत करन लाग्यौ जो मैंने श्रीठाकुरजीकौ श्रम बहुत करवायौ पाछें स्नान करि चरणामृत महाप्रसाद लीयौ पाछें समर्प्यों महाप्रसाद लीयौ ॥ प्रसंग ॥ २ ॥

बहुरि कितनेक दिनमें त्रिपुरदासकी चाकरी छूटी सो शीतकालके दिन आये तब श्रीनाथजीको कवाय पठावै तौ कहांते पठावै इतनों समों घरमें नाहीं त्रिपुरदासकी कवाय हरवर्ष जाती सो श्रीनाथजी आप अंगीकार करते तब त्रिपुरदासनें कह्यौ जो अब कहा करियै तब एक द्वाति पीतरकी हुती सो बेची ताके दामनकी गजी मंगाई सो रंगाई ताकी कवाय बनवायकें श्रीनाथजीको पठाई सो रंगी देखिकें भंडारीनें भंडारमें डार दीनी तब कितनेक दिनमें श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीद्वार पधारे सो

जब श्रीनाथजीको शृंगार करन लागे तब श्रीगुसां-
जीसों श्रीनाथजीनें कह्यौ जो मोकों शीत बहुत
लागत है तब श्रीगुसांईजीने कह्यौ जो दूसरीअंगीठी
लावौ तब दूसरी अंगीठी लाए तोहू कही जो मोको
शीत बहुत लागत है तब श्रीगुसांईजीने गद्दलउढायो
तबहू श्रीनाथजीने कह्यौ जो मोकों शीत लागत है
तब श्रीगुसांईजीने तीसरी अंगीठी मंगाई तबहू कही
जो मोकों शीत लागत है तब श्रीगुसांईजीने भंडा-
रीको बुलायौ और वासों पूछौ जो कोन कोन
वैष्णवनकी कवाय आईहुती तब जाजा वैष्णवकी
आईहुती ताता वैष्णवकौ नाम लीयौ तब श्रीगुसां-
ईजीने कही जो त्रिपुरदासको कवाय नाहीं आई
तब भंडारीने कह्यौ जो त्रिपुरदासकी एक रंगीन
कवाय आई है सो भंडारमें पडी है तब श्रीगुसां-
ईजीने कह्यौ जा रंगीन कवाय ले आवो तब भंडारी
वह रंगीन कवाय ले आयौ तब श्रीगुसांईजी देखे
तौ मेली मरगजीसी हो रही है तब वाकों झार
पोंछिके तत्काल दरजी बुलायके फरगुल सिद्ध
करवाई तब वह फरगुल श्रीनाथजीकौ उढाई तब
श्रीनाथजीने कह्यौ जो अब मेरो शीत निवर्त भयो
ऐसे श्रीनाथजी भक्तिके पक्षपात जो भक्तिभावकी

वस्तुको या भांति अंगीकार करै सो वे त्रिपुरदास श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे कृपापात्र भगवदीय है तातें इनकी वार्ता कहांतांई लिखिये ॥ प्रसंग ॥ ३ ॥ वैष्णव ॥ २८ ॥

अथ पूरनमल्लक्षत्री तिनकी वार्ता ।

सो पूरनमल्लकी गांठिमें द्रव्य बहुत हुतौ सो पूरनमल्लकों श्रीनाथजीकी आज्ञा भई हुती जो तू मेरो मन्दिर समराउ तब पूरनमल्ल श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके पास आयौ और आयके कह्यौ महाराज मोकों श्रीनाथजीकी आज्ञा ऐसीभई है जो तू मेरो मन्दिर समराउ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कह्यौ जो मन्दिर बेग समरावो तब पूरनमल्लने श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों नाम पायौ पाछें मन्दिर उठावन लाग्यौ सो द्रव्यहुतौ सो सब नींव खोदवेमें लग्यौ जब सब द्रव्य निवट्यो पाछें पूरनमल्ल पूरब चाकरीको गयै तब राजसी लोगनने श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों पूछे जो महाराज आज्ञा देउतौ हम मंदिर समरावे तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें श्रीनाथजीसों पूछौ जो महाराज ये राजसी लोग मंदिर समरावन कहत है सो समरावें तब श्रीनाथजीनें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों

कह्यौ जो पूरनमल्ल आवेगौ तब मन्दिर समरावेगौ तब राजसी लोगनसों श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें नाहीं कीनी तब वे फिरगये तब कितेक दिनमें पूरनमल्ल पूरबते बहुत द्रव्य कमायके लायौ तब पूरनमल्लने कितनेक दिनमें मन्दिर समरायके सिद्ध करवायौ पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने आछौ मुहूर्त देखिके श्रीनाथजीके मंदिरमें पाट बैठाये तब पूरनमल्लने बहुत द्रव्य खरचौ॥प्रसंग १॥

बहुरि श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीद्वार पधारे तब पूरनमल्ल श्रीनाथजीके दर्शनकौं आयौ सो अति आनन्दसों दर्शन कीयौ तब श्रीगुसांईजीनें कह्यौ जो पूरनमल्ल तेरे मनमें और कछू मनोरथहै सो राखैमति तब पूरनमल्लनें श्रीगुसांईजीसों कह्यौ जो महाराज मेरे मनमें एक मनोरथरह्यौ है जो अति सुन्दर अति सुगन्धकौ अरगजा अपने हाथनसों मैं समरपूं तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा दीनी जो जा समर्पि तब पूरनमल्लनें अत्युत्तम सुगन्धिकौ अरगजाकरिकें श्रीनाथजीकौ समर्प्यौ तब पूरनमल्लनें अपने मनमें अति आनन्द पायौ ता पाछें पूरनमल्ल श्रीनाथजीके पासते श्रीगुसांईजीके पास आयौ तब श्रीगुसांईजी पूरनमल्लके ऊपर बहुत प्रसन्न

भयै तब श्रीगुसांईजी आप पौढेहै सो उपरना पूरनमल्लकौ उढायौ तब पूरनमल्लनें अति आनन्द पायौ पाछें श्रीगुसांईजीनें श्रीनाथजीकौ पंचामृतसौं स्नान करवायौ पाछे अंगवस्त्र करिकें सेवा शृंगार करिकें रसोई करि भोग समर्प्यौ समयानुसार भोग सरायकें पाछें श्रीगुसांईजीनें श्रीनाथजीकौ प्रसादी गहल पूरनमल्लकौ उढायौ पाछें प्रतिवर्ष प्रसादी बहल श्रीगुसांईजी पूरनमल्लकौ देत सो वे पूरनमल्ल श्रीगुसांईजीके तथा श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय है ताते इनकी वार्ता कहांताई लिखियै ॥ प्रसंग ॥ २ ॥ वैष्णव ॥ २९ ॥

अथ यादवेन्द्रदास कुम्हार तिनकी वार्ता।

सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू तथा श्रीगुसांईजी जब परदेशकों पधारते तब यादवेन्द्रदास इनके साथ सामग्री लेकै चलते हडवाई कनात बिनाबांसकी छोटी रावटी तथा एक दिनको सीधौ सामग्री इतनों बोझ लेके संग चलते और रसोईकी चाकरी सब करते रात्रिकौ पहरौ देते॥ प्रसंग ॥ १ ॥

बहुरि श्रीगुसांईजी गोकुलमें हुते तब रात्र पहर एक गई हुती तब श्रीगुसांईजीने कह्यौ जो या विरियां मंदिरकी नीव खोदीजाय तौ मंदिर भलौ दृढ होय अब भलौ मुहूर्त है ऐसें कहिकें श्रीगुसांईजी तौ पोढे पाछे यादवेन्द्रदासनें एक पहरमें नींव खोदि सिद्धि करराखी सो जब पीछली रात्रिकौ श्रीगुसांईजी पोढके उठे तब देखें तौ माटीनके ढेर पडेहैं तब पूछौ जो यह माटी कैसी है तब वैष्णवननें कह्यौ जो महाराज यादवेन्द्र दासने खोदीहै तब श्रीगुसांईजीने यादवेन्द्र दाससों पूछौ जो यह नीव तेने खोदीहै तब यादवेन्द्रदासने कह्यौ जो महाराज रात्रिकों वावेर आपने आज्ञा करी हुती ताहींवेर खोदी है सो नीव ऐसी बडी खोदी जो महीना एकलों राजमजदूर दशपन्द्रह लगे तोहू भरी न जाय सो ऐसी सामर्थ्य यादवेन्द्रदासमें हुती ॥ प्रसंग ॥ २ ॥

और यादवेन्द्रदासने श्रीनाथजीद्वारकौ कूआ अपनेही हाथनसों खोद्यौ सो माटी निकसी ताकी ईंट पकाई अपने हाथनही कूआ चिन्यो पारि जल खारो निकस्यौ तब यादवेन्द्रदास सोरोंगयौ श्रीगंगाजीमेंते जल लेकें अंजुली भरि २ के डारे और

कहै जो वा कूआको जल आपसों करो ऐसे कहिके तर्पण कीयौ ऐसे करत जब जान्यौ जो जल मीठौ भयौ तब श्रीगंगाजीमेते निकस्यौ पाछें श्रीनाथ-जीद्वार आये तब वा कूंआको जल श्रीनाथजीकौ अंगीकार करवायौ सो यादवेन्द्रदास श्रीआचा-र्यजी महाप्रभूनके परम कृपापात्र भगवदीयहैं ताते इनकी वार्ता कहांताई लिखियें ॥ प्रसंग ॥ ३ ॥ वैष्णव ॥ ३० ॥

अथ गुसांईदास सारस्वत ब्राह्मण तिनकी वार्ता।

सो एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको श्रीठाकुरजीको स्वरूप प्राप्ति भयो सो स्वरूप गुसांईदासके माथे सेवाको पधराय दीयै और कही जो इनकी सेवा तू नीकी भांतिसों करियौ सो गुसांईदास सेवा नीकी भांतिसों करन लागे सो गुसांईदाससों श्रीठाकुरजी सानुभाव भए बोलन लागे पाछें कितक दिनमें एक वैष्णवसो गुसांईदा-सनें कही जो तुम इहां रहौ तौ हमको सहायता होय हम तुम मिलिके सेवा करें पारि वह वैष्णव हौं न करै पाछें एक दिन श्रीठाकुरजीनें गुसांई-दास सों कह्यौ जो तू मोकों वा वैष्णवके माथे

पधराय पाछें वा वैष्णवसों गुसांईदासनें कह्यौ जो महाराज श्रीठाकुरजीकी आज्ञा तौ ऐसी भईहै जो तू मोकों वा वैष्णवके मांथे पधराय तातें भगवदिच्छा ऐसीही दीसतहै तब वा वैष्णवनें गुसांईदाससों कही जो तुम कहा करोगे तब गुसांईदासने कह्यौ जो हूंतौ बद्रिकाश्रम जाऊंगौ उहां मेरी देह छूटेगी तब वा वैष्णवने गुसांईदाससों कह्यौ जो श्रीठाकुरजीकी गति नाहीं जानी जातहै जो तुम्हारी देह उहां न छूटै और तुम इहां फिर आवो तो मैं श्रीठाकुरजीको देउंगो नाहीं तब गुसांईदासनें कह्यौ जो श्रीठाकुरजी ऐसी तौ न करेंगे और कदाचित करेंगे तो तुम्हारे द्वार पोरिया रहूंगौ श्रीठाकुरजीके दर्शन कर्यौकरूंगौ तब वा वैष्णवनें श्रीठाकुरजी पधराये सो नीकीभांतिसों सेवा करन लाग्यौ पाछें गुसांईदासतों बद्रिकाश्रम गये सो बद्रिकाश्रममें उहां गुसांईदासकी देह छूटी पाछें वा वैष्णवने गुसांईदासकी देह छूटीकी खबर पाई तब वह वैष्णव सुख सों सेवा करन लाग्यो तब वह वैष्णव श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी कृपाते भलौ वैष्णव भयौ सो वे गुसांईदास श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ता कहांतांई लिखिये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ३१ ॥

अथ माधोदासभट्टकाश्मीरकेवासी तिनकी वार्ता।

सो माधोभट्ट प्रथम केशव भट्टके सेवक हुते सो केशवभट्ट श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके पास आये सो बहुतादिन रहै सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू कथा कहते सो केशवभट्ट सुनते सो माधोभट्ट श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके सेवकनमें जाय बैठते तब भगवद्वार्ता कहते सो प्रथम प्रसंग चलै तब माधोभट्टसों केशवभट्टनें कह्यौ जो तू मेरो संग छोडिके उहांके सेवकनमें क्यों जातहै वहां जायके हांसी ठठौरी करतहै तब माधोभट्टने केशवभट्टसों कह्यौ जो मोकों तुम्हारो संग तथा तुम्हारी कथाते उहांकी हांसी आछी लागत है ताते हौं जातहौं तब केशवभट्टनें जान्यौ जो अब यह हमारे कामकौ ना है अब हमारे कामते गयौ पाछें केशवभट्टने श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों कही जो मैंने श्रीभागवत तुम पासते सुन्यौ परि मोकों कछू बोध न भयौ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यौ जो तुम मेरी बराबर बैठिके सुन्यौ और ज्ञातिकौ भाव राख्यौ ताते बोध न भयौ और माधोभट्टकी भाग-

वतकी स्फुरति भई यह दैवीसृष्टीकौ प्रकार जाननौ तब श्रीभागवतकी कथा सम्पूर्ण भई तब केशवभट्टनें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों कही जो कछू गुरुदक्षिणा लेउ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यौ जो हम कछू लेत नाहीं तब केशवभट्टने कह्यौ जो में तुमको एक सेवक समर्पितहों सो माधोभट्टजी आचार्यजी महाप्रभूनकों सोंपें पाछें केशवभट्ट श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके पासते बिदा होयकें अपने देशकों गयौ पाछें माधोभट्टने श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकेपास नाम पायो पाछें समर्पण करवायो ॥ प्रसंग ॥ १ ॥

और जा गाममें माधौ भट्ट रहत हुतौ ता गाममें एक बडौ ग्रहस्थ रहत हुतौ ताके एक बेटा हुतौ सो मरगयौ तब वह गृहस्थ बहुत रोवन लाग्यौ विलाप करन लाग्यौ और कहन लाग्यौ जो कोऊ जाकों जिवावेगौ तौ मेंहू जीउंगौ नाहीं तौ मेंहूं मरूंगौ ऐसे कहिकें बहुत शोक करे तब एक वैष्णव पेडेमें जात हुतौ तब वा गृहस्थको विलाप करतौ देखिकें वाने कह्यौ जो या गाममें माधौसारिकें भगवदीय रहतहैं वे बडे भगवदीय महापुरुष हैं तिनके पास तू जा वें कृपा करेंगे तब तेरो लरिका जीवेगौ तब वह गृहस्थ माधौभट्टके पास आयौ

और बहुत विलाप करन लाग्यौ और माधौभट्टसों कह्यौ जो यह लरिका मेरो जीवेगौ तौ मेंहू जीऊंगौ नातर मेंहूं मरूंगौ या भांतिसों बहुत विलाप करे और रोवे तब वा गृहस्थ देखिकें माधौभट्टकों दया आइ तब मनमें बिचार करने लागे जो याकौ बेटा जीवेतौ आछौ है यह गृहस्थ भलो है यह बहुत विलाप करत है बहुत दुख पावत है यह विचारके माधौभट्टके मनमें बहुत खेद भयो और कह्यौ जो याको दुःख दूर होय तौ भलो है पाछें माधौभट्ट मन्दिरमें जायके श्रीठाकुरजीसों बीनती कीनी एक श्लोक करिके श्रीठाकुरजीके आगें कह्यौ ॥

सोश्लोक–दयालोस्ते समर्थस्य दुःखायैव दयालुता ॥
विश्वोद्धरणदक्षस्य सा तवैकस्य शोभते ॥ १ ॥

यह श्लोक श्रीठाकुरजीने सुनिके कह्यौ जो यह कितनीक बात है जो तुमको दया आई तौ वासों कहौ जो जा तेरो बेटा जीवेगौ पाछें माधौदास श्रीठाकुरजीको बढायकें बाहर आये तब वा गृहस्थसों कह्यौ जो जा तेरो बेटा जीवेगौ परि वा गृहस्थकों विश्वास न परे मनमें बिचारे जो हूं घर जाउंगो और जो कदाचित न जीयौ होय तौ कहा करूं मुखते तौ कछू कह्यौ न जाय परि मनमें

विश्वास परे नाहीं इतनेमें घरके लोग दौरिकें आय वासों कह्यौ जो तेरो बेटा जीयौ है ताकी बधाई देउ तब वह गृहस्थ माधौभट्टको दंडवत करिकें अपने घर आयौ पाछें बधैयाको बधाई दीनी और बहुत हर्षित भयौ पाछें माधौभट्टनें अपनें मनमें बिचार कीयौ जो बहुत अनुचित कीयौ अब यह लोग याही भांतिसों नित्य दुःख देयगे याते अब या गाममें रहिवेको काम नाहीं ऐसो बिचारकें रात्रि जब आधी गई तब श्रीठाकुरजीकों जगाय संपुटमें पधरायकें तुरतही गाम छोडिकें चले सो अडेलमें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके पास आय रहे दया आये ते स्थल छूटो श्रीठाकुरजीको आधी रात्रिके समय भाजनो परो ताते भगवदीयको जो काम करनौं सो विचारके करनो बिना बिचारे सर्वथा नहीं करनौ ॥ प्रसंग ॥ २ ॥

और श्रीआचार्यजी महाप्रभू श्रीभागवतकी सुबोधिनी कहते सो माधौभट्ट बेगि २ लिखत जाते और जा ठौर न समझपरे ताठौर लेखिनी छोडिके बैठि रहते तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू माधौभट्टकों समझायके अर्थ कहते जब माधौभट्ट समझकें आगे लिखते और श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके आगे

माधौभट्ट या भांतिसों बैठते सो पावदीसें ऐसी सावधानीसों रहते ॥ प्रसंग ॥ ३ ॥

और एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभू परदेसकों पधारे तब माधौभट्ट साथ हैं तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू पेडेमें एक गाममें उतरे तब रात्रि पहेर डेढ गई हुती तब माधौभट्ट उठिके लघुबाधाको गाममें आए तहां चोरननें तीर चलायौ सो माधौभट्टकें लाग्यौ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको नाम लेत माधौभट्टनें देह छोडी तब इतनेमें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके साथके वैष्णव आय गये तब देखेंतो माधौभट्टकी देह छूटीहै तब वैष्णवनके मनमें सन्देह भयौ जो माधौभट्ट सरिके वैष्णवकी ऐसी गति क्यों बूझिये तब साथके वैष्णवनने श्रीआचार्यजी महाप्रभूसों पूछौ जो महाराज यह बात कैसें होय जो माधोभट्टसरिके वैष्णवकी ऐसी गति क्यों बूझीये तब श्रीआचायजी महाप्रभूननें उन वैष्णवनसों कह्यौ जो माधौभट्टने तौ श्रीठाकुरजीके चरणाविंन्द चांपे सो इनको कछू कर्तव्यता रही नाहीं यह बडा भगवदीय हो पर इनसों एक भगवदपराध पऱ्यौ है तब वैष्णवननें पूछी जो महाराज ऐसो कहा अपराध पऱ्या हो तब श्रीआचार्यजी

महाप्रभूननें कह्यौ जो यह पाहिले अपने सेव्य श्रीठाकुरजीको सेया ऊपर फूल बिछावत हौं सो एक दिन बिना जाने फूलनमें सुई रह गई सो माधाभट्टने नाहीं कीनी सा वा सुईको श्रीठाकुरजीके अंगमें स्पर्श भयौ सो ता अपराधते ऐसें भयो परि याकी देह सावधानता सो छूटी है भगवन्नाम लेत छूटी ताते यह श्रीनाथजीके पासहै मेरी कानते श्रीनाथजी बुरी गति कबहू न करेंगे अपने पासही राखेंगे यह श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें अपने श्रीमुखसों कह्यौ ताते वैष्णवनकों श्रीठाकुरजी सेवा नीका भांतिसों करनी बहुत सावधानी सो वे माधौदासभट्ट श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे कृपापात्र भगवदीय है ताते इनकी वाता कहांताई लिखियै ॥ प्रसंग ॥ ४ ॥ वैष्णव ॥ ३२ ॥

अथ गोपालदास तिनकी वार्ता ।

सो गोपालदासने मार्ग चलन वारेनकों अपने घरके पास विश्रामके लिये अस्थल करि राख्यो हुतो जा मागमें विश्राम करे ताको हेत यह जो कोई भगवद्भक्त आय रहै तासों भगवद्वार्ता करें ताकारन अस्थल करि राख्यौ हुतो सा वहां एक समय पद्मरावल उज्जैनके वासी सो द्वारका आवते

है सो रात्रिको वा गांममें आय रहेसो गोपालदास सेवासों पहुंचिकें पद्मरावलके पास आये और पद्मरावलसों पूछो जो तुम कहांते आएहो तब पद्मरावलने कह्यो जो हम श्रीद्वारिकाते आए हैं तब गोपालदासनें श्रीरणछोडजीके कुशल समाचार पूछे तब उहांके समाचार पद्मरावलने गोपालदाससों कहे पाछें पद्मरावलकी जो बालपनेते अवस्था हुती सो बात चली जो पद्मरावल द्वारिकामें बहुत रहते श्रीरणछोडजीके दर्शन बहुत करते सो जब खरची निवडती तब अपने घर आवते सो पद्मरावलके जिजमान मावजी पटेल आजन कुनबी गांवके देसाई हुते सो पद्मरावल द्वारिकाजीते आवते तब मावजी पटेल खरची देते सो लेके जब पद्मरावल द्वारिकाजीको जाते ऐसें वर्ष दिनमें तीन वार जाते पद्मरावलको श्रीरणछोडजीके विषै बहुत आसक्ति हुती सो श्रीरणछोडजीकी वार्ता पद्मरावलनें गोपालदासके आगे कहीं तब गोपालदासने अपने मनमें कही जो ऐसी इनको श्रीरणछोडजीके दर्शनमें आसक्ति है तैसी इनको श्रीमहाप्रभूनके विषै आसक्ति होय तो इनको कार्य्य होय ताते इनसों कछू कहिये तब गोपालदासनें पद्मरावलसों पूछो जो तुमसों

कबहू श्रीरणछोडजी बोलत हैं कछू कहत हैं कछू मांगत हैं तब पद्मरावलने कह्यौ जो मोसों तो कबहू कछू कहत नाहीं तब पद्मरावलने गोपालदाससों पूछो जो कहा श्रीरणछोडजी कहूसों बोलतहैं तब गोपालदासने कह्यौ जो हां २ बोलत हैं तब श्री आचार्यजी महाप्रभूनकी वार्ता कही जो तुमने एते दिन श्रीरणछोडजी सेए हैं सो श्रीरणछोडजी प्रगट भए हैं तब पद्मरावलने पूछौ जो वे कहां हैं तब गोपालदासने कही जो वे अडेलमें हैं तब पद्मरावलने कही जो ऐसो दर्शन श्री श्रीरणछोडजी देत हैं तैसो दर्शन श्रीआचार्यजी महाप्रभू देयंगे तब गोपालदासने कही जो हां २ देयंगे तब पद्मरावलके मनमें विश्वास आयौ जो यह बात सत्य ताही दिनते पद्मरावलको आतुरता भई जो कबमें जाऊं और कब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके दर्शन पाऊ सो रात्रकों वहांही रहे तो पाछें सवारे गोपालदाससों बिदा होयके तहांते चलौ सो मार्गमें बिचार करत जाय जोमें कबजाऊं और कब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके दर्शन पाऊं ऐसे बिचार करत घर अपने उज्जैनमें आए पारि चित उदासमें रह्यौ पाछें मावजीपटेलसे मिले तब मावजीपटेलने पूछौ जो गुरुजी अबके

तुम्हारो मन प्रसन्न देखियत नाहीं सो काहेते तब पद्मरावलने गोपालदाससो सुनी हुती सो बात कही जो श्रीरणछोडजी अडेलमें प्रगट भये सो मेरो मनोरथ दर्शन करवेकौ है सो जानों हो कब जाऊंगो तब मावजीपटेलने कह्यौ जो तुम रणछोडजीके दर्शनको जातहो सो मोहूको अपने साथ लेचलो तब पद्मरावलनें कह्यौ जो तुम राजसी लोग हो तुम्हारे साथ बहुत मनुष्य होयंगे और यह दर्शन तो एकान्त स्थलको है ताते यह बात तो मोकों भावत नाहीं तब मावजीपटेलनें कह्यौ जो हूंतो सर्वथा तुम्हारे संग अकेलोही चलूंगो तब पद्मरावलनें कह्यौ जो भलौ तब यह समाचर अपनी स्त्रीसों कहे और कह्यौ जोमें तो पद्मरावलके संग अडेल दर्शनको जात हों तब स्त्रीनें कह्यौ जो वहां कहाहै तब मावजीपटेलनें कह्यौ जो वहां श्रीवल्लभाचार्यजी प्रगट भये हैं सो साक्षात् श्रीरणछोडजी प्रगट भये हैं और जैसो दर्शन श्रीरणछोडजी देत हैं तैसो दर्शन श्रीआचार्यजी महाप्रभू देत हैं सो यह बात सुनिकें मावजी पटेलकी स्त्रीके मनमें बहुत उत्साह भयौ और कह्यौ जो आपके संगमें हूंचलूंगी तब मावजी-पटेलनें कह्यौ जो मेतो पावन चलूंगो तू कैसें चलेगी

तब स्त्रीने कही जो मेहूं पावन चलूंगी मेरे कछू
लरिका तो है नाहीं तब फेरि मावजीपटेलने कह्यौ
तौ हम तुम दोऊजने चले तौ घर कौनके भरोसें
रहेगो स्त्रीनें कह्यौ जो मेरो घरतें कछू प्रयोजन
नाहीं है हौं सर्वथा तुम्हारे साथ चलूंगी तब माव-
जीपटेलने अपने मनमें बिचारचो जो याको बहुत
आतुरता भई दर्शनको बहुत मनोरथ है तब कह्यौ
जो भलो तू हूं चल तब मावजीपटेलनें अपनो घर
काहू भले मनुष्यके हवाले कर दीनों तब पद्मरावल
मावजीपटेल तथा उसकी स्त्री बिरजो ये तीनों चले
सो जब प्रयाग पहुंचे तब अडेलकौ दर्शन भयौ
तब बहुत आतुरता भई जो श्रीआचार्यजी होयकें
चल्यौ जैये ता समय श्रीआचार्यजी महाप्रभू श्रीय-
मुनाजी ऊपर पधारे हुते सो सन्ध्यावन्दन करत हुते
तहां सेवक दोय चार साथ हुते तब इन तीनोंनको
श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको दर्शन भयौ तब तौ
बहुतही आतुरता भई ता समय श्रीआचार्यजी
महाप्रभूननें इनकों देख्यो तब श्रीआचार्यजी महा-
प्रभूननें सेवकनसों कह्यौ जो यह नाव पार लेजाउ
पद्मरावल श्रीरणछोडजीके सेवक आये हैं सो इन
तीनोंनको नावमें बैठारिकें बेगि ले आउ सो नाव

लेकें वैष्णव पारआए तब उन वैष्णवननें कह्यौ जो पद्मरावल तीनों जनें होंय सों आवौ श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें नाव पठाइ है तब पद्मरावल और मावजी पटेल तथा उनकी स्त्री बिरजो इन तीनों जनेको नावमें बैठायकें ले आये तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकों दर्शन भयौ सो जैसो गोपालदासने कह्यौ हुतौ तैसोई दर्शन भयो सो दर्शन करिकें मनमें बहुत प्रसन्न भये पाछें पद्मरावलने श्रीआ-चार्यजी महाप्रभू पास नाम पायौ सो नाम पायकें उठे तब पद्मरावलनें बीनती करिकें कह्यौ जो महा-राज अंगीकार करिये तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू-ननें प्रसन्न होयकें कह्यौ जो तू कहा कहत है तब पद्मरावलनें कह्यौ जो मोकों गोपालदासनें कह्यो है तासों निवेदन करिवाईये और पद्मरावलनें बीनती करिकें कह्यौ जो महाराज मावजीपटेल और मावजी पटेलकी स्त्री बिरजो ये दोऊजने आपकी शरण आये हैं सो इनको नाम निवेदन करवाईये तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कृपा करके नाम समर्पण करवायौ पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप भीतर पधारे तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें पद्मरावलसों कह्यौ जा तुम महाप्रसाद इहांई

लीजियौ तब पद्मरावलनें बीनती करिकें कह्यौ जो महाराज मोकों तुमनें श्रीरणछोडजीको दर्शन दीनों है सो स्वरूप आप कृपा करिके आरोगोगे तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको दर्शन भोजन करतमें पद्मरावलको श्रीरणछोडजीको दर्शन भयौ सो साक्षात् रणछोडजी भोजन करत हैं तब पद्मरावलकों दृढ विश्वास भयौ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप भोजन करिके बिराजै तब महाप्रसादकी पातर पद्मरावलको कृपा करके दीनी पाछें पद्मरावलनें बीनती कीनी जो महाराज मोकों कहा आज्ञा है तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें आज्ञा दीनी जो तुम श्रीठाकुरजीकी सेवा करौ तब पद्मरावलनें कह्यौ जो जैसो मेरो मन महाराजके स्वरूपमें लग्यौ है तैसो मन सेवामें लगे तौ सेवा करूं तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यौ जो तुम श्रीठाकुरजीकी सेवा तौ करौ जो तुम्हारौ मनोरथ श्रीठाकुरजी सब पूरन करेंगे तब पद्मरावल श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों बिदा होयके अपनें देशको गये तब पद्मरावल अपने देशमें जायके श्रीठाकुरजीकी सेवा करन लागे तब अपने सेव्य श्रीठाकुरजीकी सैया बनवाई सो सैया छोटी भई तब श्रीठाकुरजीनें कह्यौ

जो या सैयापै मोपै सोयो जाय नाहीं पाछें पद्मरावलनें दूसरी सैया बडी करवाई ताके ऊपर श्रीठाकुरजी पौढन लागे और श्रीठाकुरजी सानुभाव जनावन लागे और एक समय पद्मरावलकी स्त्रीने श्रीठाकुरजीकों भोग समर्प्यों तामें ताती खीर समर्पी तब श्रीठाकुरजीने खीरमें श्रीहस्त मेलो तब खीर बहुत ताती लागी सो श्रीठाकुरजीनें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों कह्यौ और श्रीहस्त कमल दिखायौ सो लाल पारि गयौ तब पद्मरावल श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके पास बैठे हुते तब पद्मरावलसों श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यौ जो तेरी स्त्रीनें श्रीठाकुरजीकों ताती खीर समर्पी सो श्रीठाकुरजीको ताती खीर न समर्पीयै तब पद्मरावलने श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों कह्यौ जो श्रीठाकुरजीने एक मुहूर्तलों सीरी क्यों न होने दीनी तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यौ जो श्रीठाकुरजीतौ बालक हैं श्रीठाकुरजीकों भोग धरें पाछें विलंब न सहि-सकें यातें जो भोग धरियै सो बहुत ताती न धरियै सो पद्मरावलकों श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें ऐसी आज्ञा दीनी आज्ञा देकें श्रीठाकुरजीको ऐसौ अनुभव जतायौ पाछें पद्मरावल अपने घर आये तब

यह बात अपनी स्त्रीसों कही पाछें पद्मरावल बहुत सावधानीसों सेवा करन लागे श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी कृपाते श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावन लागे जो चाहियै सो मांगिलेते अपनी सब बात कहते सो वे पद्मरावल गोपालदासके संगते ऐसे भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ता कहांताई लिखिये प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ३३ ॥

अथ पद्मरावल साचौरा ब्राह्मण उज्जैनकेबासी तिनकी वार्ता ।

सो पद्मरावल अडेलमें आयके श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके सेवक भए सो गोपालदास बांसवाडाके तिनकी वार्तामें लिख्यौ है बिस्तार करिकें पाछें अपने देसको चलन लागे तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों बीनती कीनी जो महाराज हौं तौ अति मूर्ख हौं जड हौं कछू जानत नाहीं और मेरी जातिके ब्राह्मण महाकर्मजड हैं स्मार्त हैं सो मोकों दुख देत हैं तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें अपने चरणारबिंदको चन्दन और चरणामृत दीनो और कह्यौ जो तोकों सब सिद्धांत स्फुरेगो सो चरणामृत लीनों सो उतनेहीमें सब सिद्धांत स्फुर्द भयौ पाछे

देश उज्जैनमें आए पाछें बडे २ ब्राह्मण प्रति वृति पूछन लागे तब जितनेनने पूछौ तिनकूं प्रति उत्तर दैके सब बिदा कियै सो पद्मरावलकों श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी कृपाते ऐसी विद्या स्फुर्द भई जो बडे २ पंडित जीतकें बिदा कीयै वे पंडित प्रति उत्तर दे नसकै ॥ प्रसंग ॥ १ ॥

और पद्मरावल द्वारिका श्रीरणछोडजीके दर्शनकों चले तब श्रीरणछोडजीनें स्वप्नमें कह्यौ जो राजनगरमें एक सेवक हमारो है ताके घर तू जैयौ और पाक उहांई करियो तब पद्मरावलनें कह्यौ जो महाराज में तौ जानत नाहीं और बिना बुलाए में कोनके घर जाऊं तब श्रीरणछोडजीनें कह्यौ जो वह तोकों आपही बुलावनकों आवैगो पाछें श्रीरणछोडजीनें अपने सेवकनसों कह्यौ जो पद्मरावल इहां आवैगे सो उनकी सेवा तू नीकी भांतिसों करियौ और अपने घर पधराय पद्मरावलकों रसोई भली भांतिसों करवाइयो तब वा सेवकनें श्रीरणछोडजी सों कह्यो जो महाराज में उनकू कैसे जानूंगो तब श्रीरणछोडजीनें कह्यौ जो वेतौ प्रसिद्ध हैं तू आपही ते जानेंगो तब कितनेक दिनमें पद्मरावल उहां आए सो वा गांमके बाहिर उतरे सो पद्मरा-

वलके साथ बिद्यार्थी एक हुतौ तासों पद्मरावलने
कह्यौ जो तू गाममें जायकें कोरी भिक्षा मांग लाउ
तब वह बिद्यार्थी गांममें गयौ सो चार पांच
ठौरतें कोरी भिक्षा मांग लायौ तब पद्मरावलने वा
बिद्यार्थीसों कह्यौ जो तू अन्न जाजा कैसे लायौ
है ताता कैसें उलटौ फेरि आउं तब वह विद्यार्थी
जाजाकौ अन्न लायौ हौ सो ताकौ फेरन लाग्यौ
तब एकने कह्यौ जो तुम ले गये हैं अब फेरन
क्यौं आए हौ तब वा विद्यार्थीनें कह्यौ जो मैं
कहा करूं हमारे बडे गुरू हैं तिनकी आज्ञा मानी
चाहियै तब वा विद्यार्थीसों कह्यौ जो तुम्हारे गुरूकौ
नाम कहा है तब वा विद्यार्थीने कह्यौ जो मेरे गुरू-
कौ नाम पद्मरावल है तब वह श्रीरणछोडजीकौ
सेवक विद्यार्थीके साथ चलो आयो सो आयके
पद्मरावलसों कह्यौ जो मेरे घर पधारौ तब पद्मरा-
वलसों कह्यौ जो हूंतौ काहुके घर जात नाहीं तब
वानें कह्यो जो मोकों श्रीरणछोडजीने आज्ञा दीनी
है जो तू पद्मरावलकों अपने घर पधराइयो सो रसोई
भली भांतिसों करवाइयो तब पद्मरावलको अपने
घर पधराय रसोई भली भांतिसों करवाई सो पद्म-
रावलनें रसोई करि श्रीठाकुरजीकों भोग समर्प्यो

पाछें प्रसाद लीयौ और रात्रिकों उहांहीं सोय रहे तब सवारे पद्मरावल चलन लागे तब श्रीरणछोडजीकौ सेवक राखन लाग्यौ तब पद्मरावल रहे नाहीं ॥ प्रसंग ॥ २ ॥

बहुर एक दिन आटौ बहुत मिल्यो और घृत थोरौ मिल्यो तब जितनी रोटी वा घृतमें चुपडी गई सो तो ऊपर धरी और कोरी हुती सो नीचे राखी तब श्रीठाकुरजीको भोग समर्प्यो और कह्यौ जो महाराज बिनु चुपरि रोटी तो रहन दीजियो और चुपरी रोटी आरोगियो तब श्रीठाकुरजीनें तो सबही रोटी आरोगी पाछें पद्मरावलसों कह्यो जो तेनें मेरे आगें काहेकूं धरी मेरे आगें जो तू धरेगो सो आरोगूंगो पाछें महाप्रसाद लैनको बैठे तब रोटी बहुत अद्भुत स्वाद भयो तब पद्मरावलनें कितनीक रोटी बची सो साथ बांधिलीनी सो नित्य जब पाक करि भोग समरपे पाछै प्रसाद लैनको बैठते तब रोटीमेते एक टूक मेलिलेते तब महाप्रसाद लेते पाछें कितनेक दिनमें द्वारका जाय पहुंचे तब श्रीरणछोडजीको दर्शन कियो दिन पांच सात रहिकें श्रीरणछोडजीसों बिदा होयके चलै तब मार्गमें गोपालदास वांसवाडाके घर आये तब रात्रिकों उहांही

रहै तब पद्मरावलनें गोपालदाससों कह्यौ जो तुम्हारी कृपाते मोकों श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको दर्शन भयौ और तुम्हारी कृपाते मोपै श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कृपा करी सो पद्मरावल श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ता कहांतांई लिखिये ॥ प्रसंग ॥३॥ वैष्णव॥३४॥

अथ पुरुषोत्तमजोसी साचौरा ब्राह्मण तिनकी वार्ता।

सो एक समय पुरुषोत्तम जोसी बनारसकौ चले सो मार्गमें उज्जैन आयौ सो उज्जैन आयके पूछौ जो पद्मरावलके बेटा कहां रहत हैं सो पद्मरावलके बेटाचारि हुते सो तीन बेटा तौ इकठौरे हुते और बडे बेटा कृष्णभट्टसों न्यारे हुते सो पुरुषोत्तम जोसी जहां पद्मरावलके तीनों बेटा इकठौरे हुते तिनके घर गये तिनने पुरुषोत्तमजोसीको थोरोसो अन्न दियौ सो कछु भूख रहै तब मनमें कह्यौ जो पद्मरावलके बेटा ऐसे क्यों बूझिये वे तौ सूधे ब्राह्मण हैं पाछें कृष्णभट्टनें सुनी जो पुरुषोत्तम जोसी आये हैं तब कृष्णभट्टनें पुरुषोत्तम जोसीकों अपनें घर पधराय तब भली भांतिसों प्रसाद लिवायौ तब पुरुषोत्तम जोसी बहुत प्रसन्न भये दिन

चार राखै तब पुरुषोत्तम जोसी चलन लागे तब कृष्ण भट्टहूसाथ चलै सो मजल जाय उतरे तब रात्रिको जब कृष्णभट्ट सोये तब पुरुषोत्तमजोसीने अपनी स्त्रीसों पूछो जो कृष्ण भट्ट सोये तब स्त्रीने कही जो हाँ सोये तब पुरुषोत्तमजोसीनें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी वार्ता कही पाछें कृष्णभट्टनें मनमें बिचार्‍यो जो पुरुषोत्तम जोसीनें मेरे आगे श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी वार्ता नहीं कही पारि हों अब कछू चर्चा वार्ता चलाऊं सो जब श्रीगोकुल मजल पांच सात रह्यो तब कृष्णभट्टनें प्रसंग चलायो सो पुरुषोत्तमजोसी घोडापै हुते सो वे तौ बिहूल भए तब कृष्णभट्टनें पुरुषोत्तम जोसीकी स्त्रीसों कह्यौ जो एक ओरते तुम थामें रह्यो और एक ओर ते मैं थामत हों तब कृष्ण भट्टनें वार्ता चलाई सो भगवद्वातामें पुरुषोत्तमजोसी तौ बिहूल भये सो घोडेऊपर रह्यो न जाय तब दोऊ जनें आस पास थामें जाय ऐसे करत मजल आय उतरे तब घोडा ऊपरते उतारन लागे तब पुरुषोत्तम जोसीनें कह्यौ जो मोकों तुम क्यौं उतारत हौ तब कृष्णभट्टनें कह्यौ जो मजलको मुकाम आय पहुंची है ताते उतारत हैं पारि पुरुषोत्तमजोसीको मजल

आयवेकी खबर नाहीं भगवद्वार्तामें रसाविष्ट भये सम्पूर्ण दिवस भयौ परि प्रसाद लेवेहुकी कछू सुधि रही नाहीं ऐसे करत कितनेक दिनमें श्रीगोकुल आय पहुंचे तब पुरुषोत्तमजोसीने श्रीगुसांईजीको दर्शन कीनो और श्रीगुसांईजीसों पूछौ जो महाराज कृष्णभट्टके ऊपर ऐसों कृपा काहेतें भई है तब श्रीगुसांईजीने कह्यौ जो याको चाचा हरिबंसजीको संग है ताते ऐसो भयो तब पुरुषोत्तमजोसीको गर्व निवृत भयो और अति प्रसन्न भये और कृष्णभट्टसों आप वार्ता पूछन लागे पाछे कितनेक दिन रहिके श्रीगुसांईजीसों बिदा होयके चले सो उज्जैन आये मार्गमें भगवद्वार्ता करत चले आये और दोऊजनें अति प्रसन्न भये सो वे पुरुषोत्तम जोसी श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ता कहांताई लिखिये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ३५ ॥

अथ जगन्नाथ जोसी तिनकी वार्ता ।

सो जगन्नाथ जोसीनें श्रीठाकुरजीको वागो पहराय सब सिंगार करिकें राजभोगको थार आगे आन राख्यौ तब जगन्नाथजोसीके मनमें आई जो श्रीठाकुरजी वागे पहरेही अरोगत हैं ताते थार छूइ

जायगो तब श्रीठाकुरजीनें जगन्नाथ जोसीके मनकी
जानी तब थारमें लात मारिकें डार दीनों तब जग-
न्नाथजोसीनें और पाक बेगि बेगि करिकें थार परो-
सि श्रीठाकुरजीके आगें आन राख्यौ तब श्रीठा-
कुरजीके मनमें आई जो वेसेंहि फोरि लात मारकें
डारदीनों तब फेरि दूसरी वेर पाक करिकें श्रीठा-
कुरजीके आगें आनि राख्यो तबहू श्रीठाकुरजीनें
लात मारकें डारि दीनों तब तीसरीवार पाक करन
लागे तब जगन्नाथ जोसी बहुत श्रमित भये पाछें
नीचौ माथौ करिकें विचार करन लागे जो कौन अप-
राधते श्रीठाकुरजी आरोगत नाहीं थार डार देत हैं
पाछें बहुत बीनती कीनी तब श्रीठाकुरजीने यह
बात जताई जो तू थार छूइवेते डरपतहैं तौ तू हमारे
आगें काहेकूं आनि राखत है इतनों बचन श्रीठा-
कुरजीकों सुनिकें जगन्नाथजोसी चौंकउठे तब
नाक भूमिमें घिस बहुत मनहार करिकें कह्यौ जो
महाराज मैंतौ कछू जानत नाहीं अब मेरो अप-
राध क्षमा करियै पाछें श्रीठाकुरजी आरोगे परि
मास दोयलों बोले नाहीं फेरी बहुत बीनती कीनी
तब बोलन लागे ऐसे सरल भाव हुतौ॥ प्रसंग ॥ १॥

और जगन्नाथजोसी श्रीठाकुरजीकों भोग सप-

र्पिते तामें ताती खीर बहुत समार्पिते सो श्रीठाकुरजी वैसोही ताती खीर आरोगते सो कितनेक दिन पाछे श्रीआचार्यजी महाप्रभू गुजरात पधारे तब खिरालूमें जगन्नाथजोसीके घर उतरे तब श्रीठाकुरजीको दर्शन कीयो तब देखे तो श्रीठाकुरजीके ओष्ट राते हैं तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें श्रीठाकुरजीसों पूछो जो महाराज जिह्वा और ओष्ट राते क्यों हैं तब श्रीठाकुरजीने कह्यौ जो जगन्नाथजोसी मोकों ताती खीर बहुत समर्पत है सो तैसेही मैं आरोगत हौं तब जगन्नाथजोसीसों श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यौ जो तू ताती खीर श्रीठाकुरजीको क्यों समपत है तब जगन्नाथजोसीने कह्यौ जो महाराज हमतो कछू जानत नाहीं जो ऐसी बात है हम तो जानत जो ताती खीर भली तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यौ जो खीर सुहाती भली खीर बहुत ताती न समर्पिये ता पाछें जगनाथजोसी वैसोही करन लागे ॥ प्रसंग ॥ २ ॥

और एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके दर्शन करिवेको जगनाथजोसी अडेलको चले तब मार्गमें अन्नकूटको दिन आयो तब एक सेवक साथ हुतौ तासों कह्यौ जो चामरदार घृत खांड और

कछू आच्छी सामग्री मिलै सो सब ले आउ तब वह सेवक गयो तब देखे तो गांवमें कछू नाहीं तब वह सेवक फिर आयो और कह्यौ जो इहां तो कछू मिलत नाहीं एक ज्वार मिलत हैं तब जगन्नाथजोसीने कह्यौ जो भलें ज्वारही ले आउ तब गांममें जायके ज्वार लीनी तब आछी भांति कूट फटक छानि बीन चुनिके ले आये पाछे जगन्नाथजोसीने वा ज्वारको ठोमर कीयो तब या सेवकने कह्यो जो भुसी निकसी है सो ताको टोकरामें करि ऊपर राख्यो जो ताकी बाफ सो जलदी होय आवेगो तब जगन्नाथने कह्यौ जो भले तब वह ठोमर खदखदान लाग्यौ तब वह टोकरा वामें गिरपर्यो सो सब इकठोरो मिलि गया पाछें भगवदिच्छा मानिके जैसौ तैसौ श्रीठाकुरजीको भोग समर्प्यौ पाछै भोग सराय महाप्रसाद लीयो तब जोसी रात्रिको सोयो तब श्रीठाकुरजीने कह्यो जो मेरे पेटमें दुखत है तब जगन्नाथ जोसीने सुतिवा और सोंठ और अजवायण समर्पी परि मनमें पश्चात्ताप बहुत भयो पाछे श्रीठाकुरजीने कह्यौ जो अब मेरे पेटमे सुख भयौ॥ प्रसंग ॥ ३ ॥

बहुर एक समय जगन्नाथ जोसी अपने सव्य

श्रीठाकुरजीको उत्थापन करिकें पास ठाढे हुते श्रीठाकुरजीकों मूंठा करत हुते और वैष्णव ठाढे दर्शन करत हुते ता समय एक रजपूत गरासिया आयौ सो वो वैष्णव हुतो सो आयकें वैष्णवनमें ठाढौ भयौ ता समय एक डोकरी फूलकी माला लेकें आई सो वह माला दूरते श्रीठाकुरजीके ऊपर वानें डारी तब जगन्नाथजोसीकों रिस चढी सो माला वैष्णवनके ऊपर डारी सो वह माला वैष्णवके गलेमें जाय परी तब वा गरासिया रजपूतकों रिस आई तब गरासियानें अपने मनमें बिचारी जो देखो या जोसीनें माला वाकों दीनी और मोकों न दीनी पारि भलो जो रजपूतको जायो जो या जोसीकों ठौर मारूं तब वह रजपूत तरवार हाथमें लैके नित्य तकत फिरे दाव पावै तौ घात करै तब जगन्नाथ जोसी एक दिन बहिर भूमिते आवत हुते तब वा रजपूतनें जगन्नाथजोसीके ऊपर पीछेंते तरवार चलाई तब श्रीठाकुरजीनें वह तरवार श्रीहस्तसों थामी और श्रीमुखसों कह्यो जो याकों मारे मति वह तब रहि गयो जब जगन्नाथजोसी फिरकें देखे तो श्रीठाकुरजी श्रमित भये पीछें ठाढे हैं तब जगन्नाथजोसीनें वा गरासियासों कह्यो जो फिटरे पापी

तेनें यह कहा कीयो तब वह रजपूत तरवार डारिकें जगन्नाथके पावन पर्यो और कह्यो जो मेरे ऊपर कृपा करियो अनुग्रह करियो और जगन्नाथजोसीके पाँव हाथसों पकर रह्यो तब जगन्नाथजोसीकों दया आई तब वाकों नाम दीयो सो जगन्नाथजोसी ऐसे कृपापात्र भगवदीय हैं तब वा रजपूतकों जगन्नाथजोसीनें नाम दीयो निवेदन करवायो तब वह भले वैष्णव दीन भयो वैष्णवनके बीच ठाढो रह्यो ताको फल सिद्ध भयो वे जगन्नाथजोसी ऐसे कृपापात्र भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ता कहांताई लिखिये ॥ प्रसंग ॥ ४ ॥ वैष्णव ॥ ३६ ॥

जगन्नाथजोसीकी माता तिनकी वार्ता ।

ताकें द्वै बेटा हुते बडे बेटातो नरहर जोसी और छोटे बेटा जगन्नाथजोसी खिरालूके वासी तिन दोउनसों मातानें कह्यो जो तुम जायके श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके पास नाम पाइ आवो और समर्पण करवाय आवो और बेटानके हाथमें एक एक मुहर दीनी सो मोहर एक लाठीमें मेलिकें वे दोऊ भाई अडेलकों चले सो कितनेक दिनमें अडेल जाय पहुंचे सो श्रीआचार्यजी महाप्रभून अडेलमें हते नाहीं आप तो पुरुषोत्तम क्षेत्र श्रीजगन्नाथरायजीके

दर्शनको पधारे हुते कछू जगन्नाथजोसी नरहर जोसीने विचार कीयो जो हम फिर चलेंगे तौ हमारी माता खीजेगी जा नाम समर्पण कीयै विनु तुमक्यों आये ताते आपुन पुरुषोत्तम क्षेत्र चलैं यह अपने मनमें विचार करिके जगन्नाथ जोसी और नरहर जोसी ये दोऊ भाई पुरुषोत्तमक्षेत्रको चलै सो थोरे दिनमें पुरुषोत्तम क्षेत्र जाय पहुंचे जायकै पूछौ जो श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप कहां रहतहैं तब एक वैष्णवनें घर बताय दीनो तहां यह दोऊ भाई गये तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको दर्शन करिकै बैठे तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें पूछौ जो तुम्हारी माता नीकी है तब इनकौ बहुत आश्चर्य भयौ जो यह तो हमकौ पहचानत हैं और हमतौ कबहूं देखे नाहीं और श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें फिरि पूछौ जो श्रीठाकुरजीके दर्शन कर आये तब इन दोउनें कह्यौ जो महाराज नाहीं किये तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें आज्ञा दीनी जो जायकें दर्शन कर आवौ तब यह दोऊ भाई दर्शनकों गये तहां देखें तौ श्रीआचार्यजी महाप्रभू जगन्नाथरायजीके पास ठाढे है तब इनको आश्चर्य भयौ जो यह कहा हमतौ इनकौ अबही घर देखि आये हुते तब मनमें

फिर जानी जो दूसरी बाट होयगी तहां होयके आये होयंगे परि मनमें सन्देह भयौ पाछें दर्शन करिकें आये तब देखेंतो श्रीआचार्यजी महाप्रभू बैठे हैं तब आयकें दंडौत करिकें बैठे तब दोऊ भाई वि-स्मय भये आपसमें मौहडो देखन लागे चक्रत होय रहैं तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें पूछौ जो दर्शन करि आये और जो तुम्हारे मनमें सन्देह आयौ हुतौ सो निवर्त भयौ तब इन दोऊ भाईनें कह्यौ जो संदेह तौ निवर्त भयौ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू-ननें कह्यौ जो तुम्हारी मातानें भेट मौहर पठाई है सो लावौ तब लाठीमें ते मोहर काढिकें आगें राखी पाछें नाम निवेदन करवायो अपनों महात्म इन दोऊ भाईनको आपनें ऐसो दिखायौ सो स्वरूपा-शक्ति भई तापाछें वहां कितनेक दिन रहिकें आज्ञा मांगिकें चले सो मार्गमें श्रीआचार्यजी महाप्रभू-नके स्वरूपको विचार करत जाय ऐसे करत अपने घर आय पहुंचे तब मातासौं सब समाचार कहै तब माता बहुत प्रसन्न भई पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी कृपाते भले भगवदीय भए ताते इन की वार्ता अब कहांताई लिखिये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ३७ ॥

अथ नरहरजोसी जगन्नाथ जोसीके बडे भाई तिनकी वार्ता।

सो एक समय नरहरजोसी पुरुषोत्तम क्षेत्र श्रीजगन्नाथरायजीके दर्शनको चले सो तहां मजल जाय उतरे तब स्नान करिकें रसोई करि श्रीठाकुरजीकौ भोग समर्प्यौ तब देखें तौ एक बालक बरष दसकौ एक रूख ऊपरते उतरके आय ठाडौ भयौ तब वा बालककों देखिकें नरहरजोसीको आश्चर्य भयौ जो यह लरिका कहांते आयौ तब वह लरिका नरहरजोसीके आगें हाथ पसारकें मांगन लाग्यौ तब नरहरजोसीनें अपने मनमें बिचारचौ जो यह सुंदर लरिका मेरे आगें काहेकों हाथ पसारचौ तब नरहरजोसीने द्वै रोटी घीसों चुपरकें तिनके ऊपर दारि धरिकें बालकके हाथमें दीनी तब वह बालक इमलीकें रूख ऊपर चढिगयौ पाछें फेरि नरहरजोसी देखेंतौ वह बालक नाहीं तब दूसरे दिन मजल जाय उतरे स्नान करि श्रीठाकुरजीको भोग समर्प्यौ तब तैसेही वह बालक इमलीके रूख ऊपरते उतरकें आयौ और तैसेही हाथ पसारचौ तब नरहरजोसीकौ और संदेह भयौ जो कोऊ छलि-

वैकौ आयौ होय तो कैसें देउ और जो भगवत्स्व-
रूप होय तौ महाप्रसादी महाप्रसाद कैसें देउ तब
यह संदेह करिकें वा बालककों कछू न दीनों तब
वह बालक रूख ऊपर चढिगयौ पाछें नरहरजो-
सीनें महाप्रसाद लीयौ सो यह बात खिरालूमें जग-
न्नाथ जोसीसों श्रीठाकुरजीनें कही जो आजमें नर-
हरजोसीके पास गयौ हौ तहां मैं हाथ पसारकें
मांग्यौ परि मोकों कछू न दीयौ तब जगन्नाथ
जोसीने वह दिन वह महीना वह सम्वत् वह वार
लिख राख्यौ जो नरहरजोसी आवेंगे तब पूछेंगे
तब कितनेक दिनपाछें नरहरजोसी अपने घर आये
तब मातासों भाईसों मिले पाछें दूसरे दिन दोऊ
भाई सेवामें न्हाए तब जगन्नाथजोसीने श्रीआचा-
र्यजी महाप्रभूनके कुशल समाचार पूछे जो नीके
हैं पाछें जगन्नाथ जोसीनें नरहरजोसीसों कह्यौ जो
अमुके सम्वतमें अमुक महीनामें अमुकी तिथिमें
अमुके वार पटनातें आगें पेडेमें मजल उतरे तब
रसोई करिकें श्रीठाकुरजीकों भोग समर्प्यों तहां
कोऊ बालक हाथ पसारत देख्यौ तब नरहरजो-
सीनें कह्यौ जो एक दिन तौ में सुन्दर बालक देखकें
द्वै रोटी घीसों चुपरि ताऊपर दार धारिकें दीनी

और दूसरे दिन तो मोकों संदेह भयो जो कोऊ कोऊ छलिवेकों आयौ होय तौ कैसें देउ ताते न दीनी तब जगन्नाजोसीनें कह्यौ जो तुमनें बुरीकीनी जो न दीनी वेतौ श्रीठाकुरजी आप हुते और जब आपन दोऊ भाई श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके दर्शनकों गये हुते तब हमारी मातानें मोहर भेट पठाई हुती सो आपन संदेह करिराखी हुती तब आप श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें मांग लीनी ताते अपने मार्गमें श्रीआचार्यजी महाप्रभून बिना श्रीठाकुरजीबिना संदेह न करनो अपने मार्गमें श्रीआचार्यजी महाप्रभू केवल प्रतापते उन बिना कछू न संभवे तब दोऊ भाईनके मनमें यह निश्चय भयो॥ प्रसंग ॥ १ ॥

और एक समय नरहरजोसीको जिजमान अलियान गांवमें रहतौ ताकौ नाम महीधरजी हुतौ तथा वाकी बहनकौ नाम फूलबाई हुतौ तिनसों नरहरजोसीनें कह्यौ जो तुम श्रीगुसांईजीके पास नाम पावौ वैष्णव होउ तब उन कह्यौ जो भलें अवश्य तुम श्रीगुसांईजीकों पधरावौ तब नरहरजोसी आगे आयकें श्रीगुसांईजीकों पधरायकें अलियानमें गये तब महीधरजी तथा फूलबाईसों

कह्यौ जो श्रीगुसांईजी पधारे हैं तब दोऊ भाई बहन अत्यन्त प्रसन्न भये तब महीधरजीनें नरहरजो- सीसों कह्यौ जो मैं श्रीगुसांईजीकौ खाली हाथन कैसें पधराऊं तब महीधरजीनें नरहरजोसीसों रुपै- या मोहरनकी खीचरी करवायक न्यौछावर करिकें श्रीगुसांईजीकों अपने घरमें पधराय ता पाछें मही- धरजी फूलबाई तथा सब बाल गोपाल सब कुटुं बकों श्रीगुसांईजीके पास नाम दिवायौ निवेदन करवायौ और भली भांतिसों श्रीगुसांईजीकी सेवा करिकें बिदा किये पाछें श्रीगुसांईजी द्वारिकाकों पधारे तब नरहरजोसी खिराल अपने घर आये ता पाछें कितनेक दिनमें वा अलियान गांवमें आग लगी ता समय नरहरजोसी खिरालके तालावके ऊपरते नित्यकर्म करिके तुलसी फूलकी डारि तथा झारी हाथमें लैके घर आवत हुते तासमय नरहर- जोसीके मनमें आई जो अलियान गांवमें आग लगी तब नरहरजोसी पैंडे ठाडे होयकें तुलसीदल बीचमें धरिकें झारीमेंते जल लैकें अंजुलीसों तुल- सीदलके पास पानीकी धारा करिकें कुंडालियां कीनी इतनेहीमें अलियानमें आग बुझी और मही- धरजीकी हवेली घर सब बच्यौ तापाछें कितनेक

दिनमें नरहरजोसी अलियानमें गये तब फूलवा-
ईनें नरहर जोसीसों कह्यौ जो यहां आगकौ उप-
द्रव बहुत भयौ है सो श्रीगुसांईजीकी कृपाते अपने
तौ कल्याण भयौ तब नरहरजोसीनें कह्यौ जो प्र-
भूनकी कृपाते सदा कल्याणही होय इतनौं कहिकें
नरहरजोसी खिराल्ह आये तब महाप्रसाद लीयौ
पाछें दोऊ भाई एकान्त बैठे तब नरहरजोसीनें
जगन्नाथजोसीसों कह्यौ जो में एक दिन नित्यकर्म
करिकें तालावके ऊपरते आवत हुतौ तुलसी-
फूलकी डारी तथा झारी मेरे हाथमें हुती और अलि-
यान गांवमें आग लगी सो बात कही तब नरहर-
जोसीसों जगन्नाथजोसीनें कह्यौ जो आपुनकों इत-
नों हट कीयौ न चाहियै जो श्रीठाकुरजीकों श्रम
करवायौ यह अपने मार्गकी रीति नाहीं तब नरह-
रजोसीनें कह्यौ जो में तो हट नाहीं कीयौ परि मेरे
मनमें ऐसी आई जो ये अबही वैष्णव भये हैं और
आगि लगी ताते मैंने ऐसौ कीयौ तब दोऊ भाई
हँसि मुसिक्याय चुपकरि रहे पाछें कह्यौ जो प्रभू
बडे कौतुकी हैं इनकी कृपाते सब भलौ होय आ-
पन हट न कीजै यह अपनो धर्म नाहीं ताते श्री-
वल्लभराजकुमारकी अद्भुत लीला है सरण आये

तिनकों अतिही कल्याण होय सो वे नरहरजोसी तथा जगन्नाथजोसी तथा इनकी माता ऐसे कृपापात्र भगवदीय हैं जो परमार्थके लिये ऐसे कीयौ तातें इनकी वार्ताको पार नाहीं सों अब कहांताई लिखिये ॥ प्रसंग ॥ २ ॥ वै० ॥ ३८ ॥

अथ राणाव्यास साचौरा ब्राह्मण गोधराके वासीकी वार्ता ॥

सो जगन्नाथजोसीने प्रथम राणाव्यासपास नाम पायौ हतौ फिर श्रीआचार्यजी महाप्रभूनपास नाम पायौ परि जगन्नाथजोसी राणाव्यासके पास बहुत रहते सो एकसमय राणाव्यास भगवदिच्छाते गोधराकी वेश्यानें इनसों संग कीयौ सो बात राजद्वारमें सुनी तब हाकिमके प्यादे राणाव्यासकौ लेन- आये तब जगन्नाथजोसीने राणाव्यासको और गांममें करदीनों पाछें जगन्नाथजोसी तहां अकेलै रहे और वे प्यादे आये हुते सो राणाव्यासको ढूंढन लागे तब जगन्नाथजोसीने कह्यौ जो राणाव्यास तौ इहां नाहीं चलौ हौं उत्तर देउंगौ तब जगन्नाथ जोसीको लायके हाकिमके आगें ठाडौ कीयौ तब हाकिमनें कह्यौ जो राणाव्यास कहां है उननें पराई

स्त्रीसों अन्याव कीयौ है तातें वाकों लावौ और मेंतौ जगन्नाथजोसीकों नीकें जानतहौं जो जाको नाम जगन्नाथजोसी सो कबहूं अन्याव करै यह तौ राणाव्यासनें अन्याव कीयौ है ताते उनको लाव तब जगन्नाथजोसीनें कह्यौ जो मेरी कही सुनो तौ मैं कहूं तब हाकिमनें कह्यौ जो कह्यौ तब जगन्नाथजोसीनें कह्यौ जो राणाव्यासनें अन्याव नाहीं कीया राणाव्यास ऐसे काम कबहूं न करै तब हाकिमनें कह्यौ जो क्यों जानियै तब जगन्नाथजोसीनें कह्यौ जो मेरी कही मानों तौ मैं कहूं जो राणाव्यासके बदलै जो कछू कहौ सो मैं करूं तब हाकिमनें एक पैयाको मुगदर मंगायौ सो अग्निमें मेलिकें तातो कीयौ तब जगन्नाथजोसी स्नान करिकें आयौ तब जगन्नाथजोसीनें ठाडौ होयकें कह्यौ जो राणाव्यासनें अन्याव कीयौ होय तौ मोकों अग्नि जरायकें भस्म करिडारियौ और नाहीं अन्याव कीयौ होय मुगदल शीतल होय जइयौ पाछें वह मुगदल अग्निमेंसे काढिकें दोऊ हाथनसों उठाय अपने गरेमें मल्यौ सो घडी एक लौं राख्यौ सब जने बोलै जो जोसी तू काढि तब जगन्नाथजोसीने कह्यौ जो हूं काढिकें कोनकें गरेमें डारूं तब हाकिमनें

कह्यौ जो मेरे गरेमें डारौ पाछें जोसीनें भूमिमें डार-
दीनों तब भूमि जरगई तब सबजने कहन लागे जो
जगन्नाथजोसी तुम धन्य हौ तुम सांचे हौ तुमको
तुम्हारे धनीको ऐसो सांच है यों कहिकें जगन्नाथ-
जोसीकों समाधान करिकें कह्यौ जोसी तुम कछू
मांगौ मैं तेरे ऊपर प्रसन्न भयोहौं जो जोसीनें कह्यो
जो इतनों मांगत हौं जो जानें यह चुगली करी है
तासों कछू मति कहियौ तब यह सुनिकें हाकिम
तथा सबजने बहुत प्रसन्न भये पाछें जगन्नाथजोसी
अपने घर आये वे ऐसे भगवदीय हैं जो श्रीआचा-
र्यजी महाप्रभूनकी कृपाते कहा न होय॥ प्रसंग॥ १॥

और पहिले राणाव्यासनें माधौदास सारस्वतके
पास नाम पायौ हुतौ पाछें श्रीआचार्यजी महा-
प्रभूनके सेवक भये तब परम वैष्णव भये सो वे
राणाव्यास सिद्धपुरमें रहते सो राणाव्यास और
जगन्नाथजोसी सरस्वतीमें स्नान करत हुते ता समय
एक रजपूतानी सती होयवेकों आई तब राणा-
व्यासके पास जगन्नाथजोसी हुतो तिननें पूछौ जो
सती होत है ताको प्रकार कहा तब राणाव्यासनें
कह्यौ जो प्रेतके संग वृथा ऐसौ शरीर जरावत है
जो राणाव्यासनें मूंड हिलायकें कह्यौ जो वह रज-

पूतानी सती होन आई हुती ताने देख्यौ तब वा रज-
पूतानीने साथके मनुष्यनसों कह्यो जो हूंतो न
जरूंगी मोकों सत नाहीं है ताते मेरी हत्त्या चढेगी
ऐसें कहिकें बहुत हासि दीनी और जरी नाहीं तब
वे लोग वा मृतकको जरायकें वा स्त्रीकों गांवके बा-
हिर झोंपरी करदीनी तब स्त्री उहां रही तापाछें रा-
णाव्यास न्हायवेकों आये तब वा स्त्रीनें राणाव्या-
ससों आयके पूछौ जो तुमनें मूंड हिलायके कहा
बात कही ता बातके देखते हों न जरी ताते मोसों
वह बात कहो तब राणाव्यासनें कह्यौ जो हमतौ
आपुसमें हंसत बात करत हुते तब स्त्रीनें कह्यौ जो
हमसौं काहेकौं दुरावतहौ जो बात होय सौ कहौ
और बहुत आग्रह कीयौ तब राणाव्यासनें कह्यौ
जो हम आपसमें हंसत हुते जो यह ऐसी उत्तम देह
पायकें नाहक प्रेतके साथ जरावत है या देहसौं
श्रीठाकुरजीकी सेवा न कीनी न भजन कीयौ ऐसी
उत्तम देह धारिकें श्रीठाकुरजीकों न भज्यौ तब वा
स्त्रीने राणाव्याससों कह्यौ जो हुंतो तुम्हारी शरण
हों जो जा भांति यह देह श्रीठाकुरजीके काम आवै
सो करो तब यह बात सुनिके राणाव्यासने कह्यौ
जो अब तौ तोकों सूतक है सूतक उतरेगो तब हो-

गौ तब स्त्री अपने स्थलको गइ पारि वाको बहुत
बेरह उत्पन्न भयौ जो दिन प्रतिदिन आवै सो राणा
व्यासको दर्शन करि जाय ऐसे करत सूतक उतरचौ
तब सुद्ध होयके राणा व्यासके पास आइ तब राणा
व्यासने कही जो तू सवारे आइयौ सो वा स्त्रीने
वादिन कछू खायो नाहीं पहले चना चबायके रहती
सो वा दिन वा स्त्रीने जलपान हूं नहीं कीयो पाछे
प्रातःकाल भयो तब राणाव्यासके आयवेको समो
भयो तब आयके बेठि रही तब राणाव्यास आये
और स्नान करिके भगवत्स्मरण कीयौ तब वा
स्त्रीसों कहौ जो तू स्नानकरिके बेठि रही पाछे राणा
व्यासने श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको ध्यान धरिके
वाके कानमें नाम सुनायो तब नाम सुनतही स्त्रीको
भगवद्भाव उत्पन्न भयौ तब वा स्त्रीने राणाव्याससों
पूछौ जो अब मैं कहा करूं तब राणाव्यासनें कह्यौ
जो अब भगवत्सेवा करौ तब वा स्त्रीने कह्यौ जो
मेरी स्थित तौ ऐसी है जो तुम कछू टहल देउ सो
मैं करूं पाछें राणाव्यास उपरना परदनी धोयवेकों
देते सो धोयकें सिद्ध करिकें पहुंचावती प्रसाद
राणाव्यासके घर लेती ऐसें करत राणाव्यासके
घरको कामकाज सब करनलागी पाछें भगवत्से-

वाको सब काम काज करनलागी सो कितनेकदिन पाछें राणाव्यासके घर श्रीआचार्यजी महाप्रभू पधारे तब राणाव्यासनें वा स्त्रीकों श्रीआचार्यकी महाप्रभूनपास नाम निवेदन करवायौ तब वह स्त्री परम वैष्णव भई सो राणाव्यास श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे परम भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ता कहांताई लिखिये ॥ प्रसंग ॥ २ ॥ वैष्णव ॥ ३९

अथ रामदाससारस्वतब्राह्मण राजनगरमें रहते तिनकी वार्ता ।

सो रामदासजीके माथे नटवर गोपालजी श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें और अपनी पादुकाजी सेवाके लिये पधराय दीनी सो सेवा सदैव करै ऐसे कृपापात्र भगवदीय है सो रामदास विवाह करिकें पृथ्वीपरिक्रमाकों चले सो कितनेक दिनमें पृथ्वीपरिक्रमा करिकें अपने घर आये पारि रामदास स्त्रीकों अंगीकार न करते तब दिन द्वै तथा चारि रहिकें द्वारिकाकों चलै तब रामदासकी स्त्रीहू साथ चली पारि रामदास स्त्रीको साथ न आवन देहि ईंटनसों मारे पारिरामदासकी स्त्री तौ दूर २ साथही भइ और रामदासके दासकी पातरमें झूठन उबरे

सो खाय नाहीं भूखी ही परि रहै परंतु पतिके साथ २ ही रहे तब एक दिन श्रीरणछोडजीने रामदाससों कही जो तू अपनी स्त्रीको अंगीकार कर त्याग काहेकों करत है तब रामदासने कही जो मैं विरक्त हौं वेरागी हौं मेरौ स्त्रीसों कहा काम है तब श्रीरणछोडजीने कह्यौ जो तेनें बिवाह काहेकों कियौ जा तू श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको सेवक है तोका ऐसी निठुरता न चहिये जो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको सेवक जानि कछू कहत नाहीं अब हों कहत हौं तू अपनी स्त्रीकों अंगीकार करि तब रामदासनें अपनी स्त्रीसों कह्यौ जो तू मेरे साथ चलीआउ तब मार्गमें रामदासके साथ जान लागी तब मजल जाय उतरे तब रामदासने अपनी स्त्रीसों कही जो तू वस्त्र साज लेकें डेरामें बेठि रहियौ और मैं ऊपरा बीनि लाऊं पाछें आय स्नान करि रसोई करी श्रीठाकुरजीको भोग समर्प्यौ भोग सराय पाछे प्रसाद लीयौ और स्त्रीकों प्रसाद दियौ सो कितनेक दिन मार्गमें चलै आये पाछें एक दिन श्रीरणछोडजीनें रामदासकों आज्ञा दीनी जो तू अपनी स्त्रीको नाम दै तब रामदासनें कह्यौ जो हूं नाम कैसें देउं तब श्रीरणछोडजीनें कह्यौ जो तू नाम दै मेरी

आज्ञा है तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकौ नाम ले श्रीरणछोडजीकी आज्ञाते स्त्रीको नाम दीयौ तब स्त्रीके हाथको महाप्रसाद लेन लाग्यौ पाछें कितनेक दिनमें श्रीआचार्यजी महाप्रभू राजनगर पधारे तब रामदासनें आयकें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके दर्शन कीये तब रामदासनें कह्यौ जो महाराज मेरी स्त्रीको नामसमर्पण करवाईये तब आपने कह्यौ जो अबतौ तेने नाम दीयौ है फेरि कहा तब रामदासनें कह्यौ जो महाराज में तो श्रीरणछोडजीकी आज्ञा ते नाम दीयौ है और मोकों श्रीरणछोडजीकी आज्ञा है जो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनपास नाम निवेदन करवाइयौ तब यह सुनिकें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने नाम निवेदन करवायौ पाछें घर आय गृहस्थाश्रम करन लागे वे रामदास श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हैं तातें इनकी वार्ता कहांताई लिखिये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ४० ॥

गोविंददुबे साचोराब्राह्मणतिनकी वार्ता।

सो गोविंददुबे श्रीठाकुरजीकी सेवा नीकी भांतिसों करें परि मनमें विग्रह हुतौ तब गोविंददुबेने श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके बीनती पत्र लिख पठायौ जो महाराज मेरे मनमें विग्रह बहुत रहत है

तातें में कहा करूं तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें नवरत्न ग्रन्थ प्रगट करि गोविंददुबेको लिख पठायौ और पत्रमें लिख्यौ जो या ग्रंथको पाठ तू नित्य करियौ सो तेरी विग्रहता सब मिट जायगी सो कृपापात्र आयौ तब गोविंददुबे नवरत्नकौ पाठ करन लागे सो पाठ करत गोविंददुबेकी सब विग्रहता मिट गई तब श्रीठाकुरजीकी सेवा नीकी भांतिसों करन लागे प्रसंग ॥ १ ॥

और एक समय गोविंददुबे मीरांबाईके घर हुते तहां मीरांबाई सो भगवद्वार्ता करत अटके तब श्रीआचार्यजीने सुनी जो गोविंददुबे मीरांबाईके घर उतरे हैं सो अटके हैं तब श्रीगुसांईजीने एक श्लोक लिखि पठायो सो एक ब्रजवासीके हाथ पठायो तब वह ब्रजवासी चल्यौ सो वहां जाय पहुंचौ ता समय गोविंददुबे संध्यावंदन करत हुते तब ब्रजवासीनें आयकें वह पत्र दीनो सो पत्र बांचिके गोविंददुबे तत्काल उठे तब मीरांबाइने बहुत समाधान कीयो परि गोविंददुबेने फिर पाछें न देख्यौ ॥ प्रसंग ॥ २ ॥

और एकसमय श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप द्वारिका पधारे तब गोविंददुबे और जगन्नाथजोसी

और पांच सात वैष्णव हुते सो आपके साथ हैं तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों द्वारिकामें बीनती कीनी जो महाराज कछू कथा कहिये तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने गोविंददुबेसों कह्यौ जो अबहीतौ मोकों अवकाश नाहीं तब गोविंददुबेने बीनती कीनी जो महाराज थोरीसी कहिये तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कथा कहिवेकों पोथी खोली तब इतनेमें गोविंददुबेसों श्रीरणछोडजी बातें करन लागे तब अपनें गोविंददुबेसों कह्यौ जो पोथी खुलायके बातें कोंनसों करत है तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें फिर देख्यौ जो श्रीरणछोडजीसों बातें करत हैं तब आपने पोथी बांधी और फिर आप पोढे ॥ प्रसंग ॥ ३ ॥

और सब वैष्णव श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके थारकौ महाप्रसाद पावते तब एक दिन श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें खवाससों कह्यो जो तुम इन वैष्णवनकौ थारकौ महाप्रसाद मति देउ सो ता दिन श्रीआचार्यजी महाप्रभू भोजन करिकें उठे हते सो उठतही खवासनें थार छूयके मांजि धरचो तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके थारके महाप्रसाद न मिल्यो सो ता दिन सब वैष्णवननें उपवास करचौ

तब श्रीरणछोडजीनें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों कह्यो जो तुम इन वैष्णवनको थार नित्य देतहो तैसे इनको नित्य दीजियो तब दूसरे दिन श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें गोविंद दुबे और जगन्नाथजोसीसों कह्यो जो तुमनें कालि महाप्रसाद क्यों नहीं लीनों भूखे काहेकों रहे तब गोविंददुबे और जगन्नाथजोसीनें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों बीनती करिके कह्यो जो महाराज कालि आपके थारको महाप्रसाद न मिल्यो तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यो जो तुमको अपने थारको महाप्रसाद तो न देतो पारि तुम्हारी सिपारस बडी ठौरते भई है ताते अब देनों पर्यो पाछें जो नित्य थारको महाप्रसाद देत हुते तैसेही देन लागे तब ये वैष्णव प्रसन्न होयकें रसोई करन लागे तब तहांताईं श्रीआचार्यजी महाप्रभू द्वारिकामें बिराजे तहां जाय वैष्णव पास रहे पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभू श्रीरणछोडजीसों बिदा होयकें अडेलकों पधारे तब सब वैष्णव श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके साथ आए सो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकों अडेलमें पहुंचायकें फेर अपने २ घर आये पाछें श्रीठाकुरजीकी सेवा करन लागे सो वे गोविंददुबे श्रीआचार्यजी महाप्र-

भूनके ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ता कहांताई लिखिये ॥प्रसंग ॥४॥वैष्णव॥४१॥

अथ राजादुबे माधौदुबे दोऊ भाई साचोराब्राह्मण तिनकी वार्ता ।

सो ता गाममें दोऊ भाई साचोरा ब्राह्मण रहते सो एकको नाम हरिकृष्ण हुतौ और एकको नाम रामकृष्ण हुतौ सो बडो भाई रामकृष्ण पढ्यौ बहुत हुतौ और छोटो भाई मूरख हुतौ और वह बडो जो पढ्यौ हुतौ सो गामके चोतरा ऊपर बैठके पटेलके आगें कथा कहतौ और छोटो भाई मूरख हुतौ सो खेतीकी रखवारी करतौ सब टहल करतौ सो वह बडौ भाइ कछू काम गयौ हुतौ दूसरे गाममें सो ता दिन इहां को कथा रह गई पाछें एक दिन मेहकी वर्षा बहुत भई सो वह छोटौ भाई खेतते उठिकें घर आयौ तब भावजने कह्यौ जो तुम रोटी जेंलेउ तब वा देवरने कह्यौ जो सीत बहुत लागत है और मैं बहुत भीज्यौ हूं ताते तू तातो परोसो तौ जेऊँ तब भावजनें कह्यौ जो तू खाय तौ खा नातरमें जायकें सोय रहत हौ अब तू कहा गांमके चोंतरा ऊपर बैठिकें पटेलके आगें कथा कहेगो के दादेको गरास

फेरेगौ ताते खानों होय तौ खा नातर हूंतौ जायकें पडि रहूंगी और जैसो है तैसौ खा नातर कहूं उठिजा तब वा देवरके मनमें बहुत दुःख लाग्यौ और अपने मनमें विचारचौ जोहूं या देशको त्याग करूं कहूं निकस जाऊं ता पाछें घरमें ते निकसके मनमें बि-चार करन लाग्यौ जो राजादुबे माधौ दुबे बडे महा-पुरुष हैं ताते इनको नमस्कार करिकें जाऊं पाछे तहां गयौ तब राजादुबे माधोदुबे दोऊ भाईनको नम-स्कार कीयौ और रोवन लागौ तब दुबेजीने पूछौ जो तू कौन है पाछें देखिके पहिंचान्यौ तब वासों कह्यौ जो तूतौ अमुकेको बेटा है हरिकृष्ण तेरो नाम है और तू हमारी जातिको है सो तोको ऐसो कहा दुःख है तासो तू रोवत है तब वाने कह्यौ जो मेरे दुःखको पार नाहीं तब दुबेजीने कह्यौ जो तू अ-पनो दुःख कहि तोको कहा दुःख है तब याने कह्यौ जो तुम मेरे दुःखको दूर करो तो कहूं तुम बडे हौ महापुरुष हो तब दुबेजीने कह्यौ जो श्रीठाकुरजी बडे हैं वे सबको दुःख दूर करेंगे तू अपनों दुःख कहि तब यानें सब समाचार कहे जो मोको भावजने ऐसे २ बचन कहे हैं सो मेरे हृदयमें खटकत हैं ताते में तुम्हारे पास आयौ हूं सो मेरौ दुःख तुमसे दूर

होयगो पाछे दुबेजीने वाका समाधान कीयौ समाधान करिकें वाको महाप्रसाद लिवायो पाछें रात्रिकों सोय रह्यो तब प्रातःकाल भयौ तब वासों दुबेजीने कह्यो जो तू स्नान करि आउ तब वह जायकें देह कृत करि स्नान करिकें आयौ तब माधौदुबेसों राजा दुबेने कह्यौ जो अब कहा करियै तुमही जानों तुम्हारी जीभ चली है जो तुम करोगे नाहीं तौ कैसें छूटोगे झाड लग्यौ है तब माधौदुबेनें कह्यौ जो अबतौ तुम्हारी शरण आयौ है तुम श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके सेवक हौ अबतौ याको कार्य्य कीयौ चाहिये तब पहिले तौ याकौ क्षौरकरवायो पाछें स्नान करवायके मंदिरके द्वारके आगें बैठायौ तब माधौ दुबेनें राजादुबेसों कह्यौ जो अब याकों कहनों होय सो कहौ तब राजादुबेनें माधौदुबेसों कह्यौ जो तुम्हारो यह काम है मेरौ काम नाहीं तासे तुमहीं कहौ तब माधौदुबेने राजादुबेसों कह्यौ जो तुम बडे हैं ताते तुमहीं कहौ तब राजादुबेने माधौदुबेसों कह्यौ जो मेरी आज्ञा है ताते तुमहीं कहौ तब माधौदुबेने वाकूं उपदेश दीयौ अष्टाक्षर मंत्र कानमें कह्यौ पाछें वाकों अष्टोत्तरशत नामकौ जप करवायौ सो जप कीयौ सो एक २ माला जप कीये पाछें संस्कृत बोलन

लाग्यौ तब माधौदुबेने राजादुबेसों हँसकें कह्यौ जो अब आज्ञा होय तौ एक वार याको फेरि जप करवाइये तब राजादुबेने माधौदुबे सों कह्यौ,कह्यौ जो अवश्य करवाईये पाछें माधौदुबेने दूसरीबार जप करवायौ तब भगवत्स्वरूप स्फुर्द भयौ और पुराण इतिहासमें ज्ञान भयौ तब माधौदुबेनें राजादुबेसों कह्यौ हंसिकें कह्यौ जो आज्ञा होय तौ अब फेरि-याकें जप करवाईये तब राजादुबेने माधौदुबेसों कह्यौ जो अब यह इतनेहीको पात्र है अधिक समाय नाहीं और कह्यौ जो तुम कछू मनमें माति ताईयौ जो हमते भयौ है ताते यह कछू भयौ है सो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी कृपाते भयौ है हमारौ तुम्हारौ स्वरूप तौ वे जानत हैं पाछे वानें उहांई प्रसाद लियौ पाछें दुबेजीकी आज्ञा मांगिके अपने गांमके चौंतरा ऊपर जाय बैठो और कथा कहन लाग्यौ पहले बडो भाई कथा कहतौ सो वह गांव गयौ जानिके कोई न आवतौ सो वा दिन कहूंते वाको सेवक आयौ ताने कथा कहत देख्यौ तब वाने गामके पटेलसों आय कह्यौ जो तुम कथा सुनिवेको क्यों न गए भट्टजी तौ कथा कहि रहे हैं तब पटेल आयके देखे तौ भट्टजी कथा कह रहे हैं

तब पटेलनें कह्यौ जो भट्टजी अबताँई तुम कथा कहनको नाहीं आय तब भट्टजीनें कह्यौ जो पहिलें बडे भाई कथा कहते ताते में नाहा आवतो अब और गांम गये हैं ताते में कथा कहिवेकों अब आयौहूं तब वे भगवदिच्छाते भट्टजी भलीभांति कथा कहन लाग्यौ तात सब कोऊ बहुत प्रसन्न भए और सब कोऊ कहन लागे जो हमारौ बडौ भाग्य है जो अबकें ऐसौ ब्राह्मण मिल्यौ तब कितनेक दिनमें वह कथा सम्पूरण भई तब सबनें मिलिकें भट्टजीकी पूजा करी और कह्यौ जो अबतो तुमहीं कथा कहिवे करौ कथाकों आइयौ पाछें वह ब्राह्मण माधौदुबेके पास आयौ आयकें बिनती करी जो तुमारी कृपाते मेने कही जो जाकी यह पूजा मिली है सो तुम लेउ यह सब द्रव्य तुमरौ है तुम मेरे गुरूहो तब राजादुबे माधौदुबेने वासों कह्यौ जो हमारे और तुम्हारे गुरू श्रीआचार्यजी हैं तातें यह द्रव्य सब उनको है हमारौ यामें कछु नाहीं ताते यह द्रव्य सब अडेल पहुंचायनो तब वा ब्राह्मणने सब द्रव्य अडेल पहुंचायौ सो कितनेक दिन पाछें रामदास साचौरा ब्राह्मण और जगन्नाथजोसी य वैष्णव श्रीआचार्यजी महाप्रभूनक दर्शनको अडल

जातहैं तिनके साथ वह द्रव्य अडेल पहुंचाय दीयौ तब कितनेक दिनमें वाकौ बडौ भाइ आयौ वह गांम गयौ हुतौ सो आयौ तब याने राजादुबे माधौदुबेसों कह्यौ जो तुम आज्ञा देउ तौ मेरे पिताको ग्रास है सो फेरौं तब दुबेजीने कह्यौ जो अब कहा कछू संदेह है तू जा सब सिद्ध होयगौ तब वह दुबेजीसों आज्ञा लेकें वा गांमकौ चल्यौ सो जाय पहुंच्यौ पाछें वा राजासों मिल्यौ आशीर्वाद दीयौ तब वह रजपूत वा भट्टको देखिकें बहुत प्रसन्न भयौ और कह्यौ जो हमारो बडौ भाग्य जो तुम कृपा करिके आये और कह्यौ तुम डेरा करौ तब उन डेरा कीयौ पाछें रसोईकी सामग्री चलती करी पाछें सबजनें भट्टजीके पास आय बैठे तब भट्टजीनें एक श्लोकको व्याख्यान कर्यौ तब वे सब जने बहुत प्रसन्न भये और कह्यौ जो तुम पांच रात्र कृपा करिके रहो पाछें तुमारी बिदा करेंगे ऐसे कहिकें वेतौ अपने घरको गये पाछें रसोई करि श्रीठाकुरजीकों भोग समर्प्यौ भोग सरायकें महाप्रसाद लीयौ तब दूसरे दिन सब मिलिकें विचार करन लागें जो भट्टजीकी बिदा कब करियै और कहा करियै और यह ब्राह्मण बहुत योग्य है और

बहुत दिनमें आयौहै तब उन सबनमें एक वृद्ध
हुतौ तिनने कह्यौ जो याको सो मनतौ अन्न देउ
और एक सत याकों मुद्रा देउ और याके पिताको
ग्रास पुरातन भूमिहै सो एकसो बीघा है सो याको
लिखि देउ इतनों लिखि देउ जो हमहूं ब्राह्मणऋणते
छूटे तब सबनने कह्यौ जो यह ठीक बात कहेहे सो
याको कह्यौ सबनको करनो चाहिये पाछें सबनें
मिलकें चीठी लिखिदीनी और कह्यौ जो याकों
अन्न सिद्ध है सो ले जाउ तब भट्टने कह्यौ जो यहं
सब अन्न मेरे घर पहुंचाओ तब वा अन्नके गाडा
भरदीनें और कह्यौ जो अपनेसाथ लिवाय लेजाउ
आर सबनें मिलकें वस्त्र दीनें और गाय और एक
भेंस और सतमुद्रा इतनों याको दीयो और कह्यौ
जो तुम इतनों प्रतिबर्ष आयकें ले जायोकरो
तब भट्टजी सबनसों बिदा होयकें अपने गांवको
चले सो आय पहुंचे तब अपने द्वारेके आगे आय
पुकारचौ और पुकार कह्यौ जो भाभी किवाड
खोल हों पटेलके चौतरा ऊपर कथा कहिकें और
पिताकौ ग्रास फेरिकें आयो हों ताते अब द्वारि
खोल तब भाभी खोलकें देखे तो देवर सांचेही ठाढो
है तब देखकें बडो भाई उठि आयो तब देखे तो

छोटे भाईके ऊपर भगवत तेज बिराजत है तब वह बडौ भाई डरप्यौ जो मति यह कछू मनमें बुरी लावे तब वह छोटा भाई भाभीके पांय लाग्यौ और कह्यो जो तुम्हारे बचनते मोकों श्रीठाकुरजीकी कृपाते भई है तब वाके बडे भाईने कह्यौ जो स्नान करौ महाप्रसाद लेउ तब छोटे भाईने कह्यौ जो मेंतो राजादुबे माधौदुबेकों नमस्कार कीयेबिना जल-पान न करूंगौ तब वाके बडे भाईने कह्यौ जो यह कहा तब छोटे भाईने कह्यौ जो यह भयौ है सो सब उनकी कृपाते भयौ है मोकों तो तुम नीके जानत हो जैसौ हो तैसौ तब बडे भाईने कह्यौ जो में तुम्हारेसाथ चलूंगो तब दोऊ भाई राजादुबे माधौ दुबेके घर गये तब जायके बडे भाईनें उनको नम-स्कार कीयौ और छोटेनें दंडोत करी तब राजादु-बेनें माधौदुबेसों कह्यौ जो तुम्हारौ सेवक आयौ है और यह प्रसंग याके बडे भाईके आगे माति काहियौ तब दुबेजीने कह्यौ जावो बैठो तब वे दोउ भाइ बेठे ता पाछें दुबेजीसों छोटे भाईने सब वार्ता निवेदन करी तब दुबेजीने कह्यौ जो तेरे उपर श्रीआचा-र्यजी महाप्रभूनको हाथ है ताते ऐसौ क्यों न होय तब वाके बडे भाईने कह्यौ जो हमतो श्रीआचार्यजी

महाप्रभूनके दर्शन नाहीं करे हमने तौ तुम देखे हौ और जैसे याके ऊपर कृपा करिकें याकों कृतार्थ कीयौ है तैसें मोकोंहूं कृपा करके कृतार्थ करौ तब वाकूं हूं दुबेजीने कृतार्थ कीयौ नाम सुनायौ पाछें दोऊ भाइनको महाप्रसाद लिवायौ पाछें छोटे भाईने दुबेजीसों कह्यौ जो आज्ञा होय तो अन्न ये मुद्रा गाय भैंस कपडा उहां सों जो लायौ हों सो आपके मन्दिरमें आवै तब दुबेजीनें कह्यौ जो तुमतौ जानतही हौ जो या द्रव्यके धनी तो श्रीआचार्यजी महाप्रभू हैं तब वाने कह्यौ जो आपकीआज्ञा प्रमान तब दुबेजीने कह्यौ जो अन्न और गाय भैंस और सब द्रव्य इकठोरो करौ पाछें दुबेजीसों दोऊ भाई बिदा होयके अपने घर आये तब सब द्रव्य हुतौ सो इकठोरो कीयौ पाछें दिन थोरे समें श्रीआचार्यजी महाप्रभू द्वारिका पधारे तब सिद्धपूरमें राणाव्यासके घर उतरे तब राजादुबे माधौदुबे और वहू सब द्रव्य लेके श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके दर्शनकों सिद्धापुरमें आये तब आयकें श्री आचार्यजी महाप्रभूनके दर्शन कीये पाछें इन दोऊ भाईनको श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके पास नाम निवेदन करवायौ और वह द्रव्य हुतौ सो सब भेट कीयौ तब दिन द्वै चार रहिके आप आगे पधारे तब राजादुबे

माधौदुबे और वे दोऊभाई ब्राह्मण श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों बिदा होयकें अपने घर आये पाछें वे दोऊ भाई ब्राह्मण राजादुबे माधौदुबेके संगते बडे भगवदीय भए ताते संग करनो सों भगवदीयको करनों वे राजादुबे माधौदुबे ऐसे कृपापात्र भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ता कहांताईं लिखिये॥ प्रसंग॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ४२ ॥

अथ उत्तम श्लोकदास साचौरा ब्राह्मण तिनकी वार्ता।

सो उत्तम श्लोकदास श्रीनाथजीके सेवकनकी रसोई करते और सबनकूं आप परोसते ताते सब सेवक उत्तम श्लोकदासकों महतारी कर बोलते सेवकनकों प्रीतसे परोसते ताते श्रीगुसांईजी इनके ऊपर बहुत प्रसन्न रहते वे उत्तम श्लोकदास श्रीआचार्यजी महा प्रभूनके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ता कहांताईं लिखिये। प्रसंग।१।वैष्णव४३॥

अथ ईश्वरदुबे साचौरा ब्राह्मण तिनकी वार्ता।

सो ईश्वरदुबे श्रीनाथजीके सेवकनकी रसोई करते और उत्तम श्लोकदासहू श्रीनाथजीके सेवकनकी

रसोई करते सो तब उत्तमश्लोकदासकी देह छूटी
तब श्रीगुसांईजीनें ईश्वरदुबेको नाम उत्तमश्लोक-
दास राख्यो सो वे श्रीनाथजीकी सेवकनकी रसोई
करते सो अपनी गांठिते घृत मँगायके सबनके ने-
कते अधिक घृत परोसते ताते याहूसों सब सेवक
महतारी कहके बोलते सो यह बात श्रीगुसांईजीने
सुनी सो सुनिके बहुत प्रसन्न भये तब ईश्वरदुबेसों
श्रीगुसांईजीने पूछो जो तुम अपनी गांठिते द्रव्यका
घृत मंगायके काहेको परोसत हो तब ईश्वरदुबेने
कह्यो जो महाराज इनको सेवामें श्रम बहुत होतहै
तब यह सुनके श्रीगुसांईजी बहुत प्रसन्न भय और
कहें जो याको सब सेवक ऊपर ऐसी बात सत्य है
तब इश्वरदुबेसों श्रीगुसांईजीने कह्यो जो तू मांगिहो
तेरे ऊपर बहुत प्रसन्न भयोहों तब ईश्वरदुबेने प्रसन्न
होयके कहा जो महाराज मेरो मन तुम ऊपरते अप्र
सन्न होय तब श्रीगुसांईजीसों वैष्णवनने कहो जो
महाराज याने यह कहा मांग्यो तब श्रीगुसांईजी
सुनिके चुपकारि रहे तब श्रीगुसांईजीसुं हरिदासनें
पूछो जो महाराज मेरे मनमें सन्देह है जो उत्तम-
श्लोकदासनें यह कहा मांग्यो तब श्रीगुसांईजीनें
कह्यो जो यह संदेहतो उनहीसों मिटैगो तब उन

वैष्णवननें उत्तमश्लोकदाससों पूछी जो तुमने श्री-
गुसांईजी पास कहा मांग्यो तब उत्तमश्लोकदासने
कह्यो जो जब श्रीगुसांईजी मोपर प्रसन्न होयकें
कह्यो जो हों तेरे ऊपर प्रसन्न भयो हों ताते तू मांगि
तब श्रीगुसांईजी मोकों प्यारे लागे तब मनमें बिचार
भयो जो आज प्रभूजीकी प्रसन्नताते खरो प्यारो
लागतहों और में सेवक हों और जो कदाचित्
कोऊ अपराधते मन प्रसन्न होय जाय तब मेरो
मन कहूं बिगरे ताते यह मांग्यो जो सदा निरंतर
तुमारे चरणारविन्दपर मन रहे सो उनके दीएते
रहे तब यह बात सुनिकें सब वैष्णव प्रसन्न भये
तब विचारे जो सेवकको ऐसोई धर्म चाहिये पाछें
श्रीगुसांईजी प्रसन्न होयकें श्रीअंगकी सेवादीनी सो
वे मुखिया भीतरिया भये वे उत्तमश्लोकदास श्री-
आचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे परमकृपापात्र भगव-
दीय हैं ताते इनकी वार्ताको पार नाहीं ताते इनकी
वार्ता कहांताई लिखिये॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ४४ ॥

अथ वासुदेवदास छकडा सारस्वत ब्राह्मण सीहनंदके तिनकी वार्ता।

सो एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके बडे
पुत्र श्रीगोपीनाथजीसों अडलते आगरे पधारे सो

आगरेमें वैष्णवननें एक सौ एक मोहर भेंट कीनी पाछें आगरेते श्रीगोपीनाथजीनें आज्ञा करी जो कोई ऐसो वैष्णव है जो एक सौ एक मोहर हमारे घर पहुंचावै तब वासुदेवदासने कह्यौ जो महाराज मौहर मोकों देउ में पहुंचाउंगो तब वे मौहर वासुदेवछकडाकों दीनी सो मौहर लायकें मेलिके गोला कीयौ सो गोलाकी पूजा करत मार्गमें चलेगये सो दिन पांचमें अडेलजायपहुंचे सो गांवकेबाहर गोला फोरकें मोहर काढि पाछें श्रीगुसांईजीकों दीनी और श्रीगोपीनाथजीको पत्र श्रीगुसांईजीकों दीनी पाछें श्रीगुसांईजीनें वह पत्र बांचिके मौहर गिन लीनी पाछें श्रीगुसांईजीनें वासुदेवदासकों महाप्रसाद लिवायौ पाछें वासुदेवदासने श्रीगुसांईजीसों बीनती कीनी जो महाराज पत्रको जबाब लिखियै और पत्रमें मौहरनकी पहुंच लिखियै जो हूंतौ सवारे जाउंगौ तब श्रीगुसांईजीनें वा पत्रकौजबाब लिखिदीनों जो मौहर पहुंची ताकी पहुंच लिख पत्र बिडचौ सो बीडक वासुदेवदासको दीनों पाछें वासुदेवदास सोय रहै तब रात्रि घडी एक रही तब वासुदेवदास उठिकें श्रीगुसांईजीके पास आयकें दंडोत करिकें अडेलते चले सो पांचदिनमें श्रीजीद्वारआये श्रीगु-

सांईजीको पत्र श्रीगोपीनाथजीको दीनौ दिन दशमें अडेलआये और गये सो पत्र बांचिके गोपीनाथजी बहुत प्रसन्नभये और पूछौ जो वासुदेवदास मोहर कौन भांतिसों लेगये हुते तब वासुदेवदासनें कह्यौ जो महाराज मोहरनको गोला करकें वा गोलाकी पूजा करत लेगयौ तब श्रीगोपीनाथजीने कह्यौ जो या भांति कबहूं न राखियै जो स्वरूप करि मानियै ताकों या भांति कैसे करियै तब वासुदेवदासनें कह्यौ जो महाराज प्रतिष्ठा तौ न भई हुती ॥ प्रसंग ॥ १ ॥

बहुर एकसमय श्रीगुसांईजी श्रीमथुरामें बिराजत हुते सो एक समय श्रीगुसांईजी शृंगार करि सेवाते पहुंचिकें बाहर बैठकमें बिराजे सो बैठकमें बैठकें रूपचंदनंदाके पत्र लिख्यो तामें वसंतकी सामग्री मंगाई तब वासुदेव सौं कह्यौ जो तू इतनी सामग्री लेकें संध्याकों आइयौ तब भंडारीको आज्ञा दीनी जो एक टोकरा याको प्रसादको देउ तब भंडारीनें सुको प्रसाद दीनों टोकरामें तब श्रीगुसांईजीनें वासुदेवदासकों आज्ञा दीनी जो ताकों पनही पहरेकी कछू चिंता नाहीं पेडेमें प्रसाद खातो चल्यौ जैयौ तब वासुदेवदास सोई करत आये सो जब आगरे आय पहुंचे तबतांई प्रसाद खाय चुके तब झारी

झारीकें रूपचंदनंदाके घर गये तासमय रूप चंद-
नन्दा अपने घर प्रसाद ले चुक्यो हौ चलूलेकें सीक
करतहो सो वासुदेवदास पत्र लेकें आये तब रूप-
चंदनंदानें हाथ धोय पोंछिकें वह पत्र माथे चढायकें
लीनों और भाईसों कह्यौ जो वासुदेवदास आये हैं
सो घरमें कहौ ये भूखे होंयगे तब वासुदेवदासने
कह्यौ जो मोकों तौ मथुरा जानों है तासों मोकों
सखडी महाप्रसाद लेवेको अवकाश नाहीं ताते
सामग्री लेदेउ तौ में जाऊं इहां तौ प्रसाद लेउंगो
नाहीं तब रूपचंदनंदा वस्त्र पहरकें सामग्री लेन
गये तब वासुदेवदास वहां गये तब रूपचंदनंदानें
छोटे भाई गोपालदाससों कह्यौ जो अपने घरमें
जितनो प्रसाद होय सो तू लेके छारछू दरवाजे
बैठियौ हम आवत हैं तब छोटे भाईने जितनों घरमें
प्रसादहौ सो सब लेकें छारछू दरवाजे आय बैठ्यौ
और रूपचंदनंदा बाजारमें आयके सब सामग्री
लीनी तब वासुदेवदासनें कह्यौ जो मेरो अगारो घर
तो प्रसादी है तब सब सामग्री पिछली ओर कटिसों
दृढ कर बांधी पाछें रूपचंदनंदा और वासुदेवदास
छारछू दरवाजे आये तब देखें तौ छोटो भाई बैठो
है प्रसाद लीये सो सब प्रसादसों वासुदेवदासकी

झोरी भरी और विदा कीए आप दोऊ भाई घरको
आए और आप वासुदेव मथुराको आये सो तीसरे
पहर श्रीगुसांईजी स्नान करवेकों पधारे हुते ता
समय वासुदेवदास सामग्री लेकें आय ठाडौ भयौ
तब श्रीगुसांईजी उठिकें वासुदेवदासकी कटिते
सामग्री खोलिलीनी और श्रीगुसांईजी वासुदेवदा-
सके ऊपर बहुत प्रसन्न भये और आज्ञा दीनी जो
तोको महाप्रसादकी सामग्री राखी है सो जायकें
प्रसाद ले तब वासुदेवदास विश्रांत स्नान करिकें
आयौ तब प्रसाद लीयौ सो वासुदेवदासकी क्षुधा
बहुत हुतीमणदेढखातौ पारि जैसौ खातौ बहुत तैसेही
बहुत पराक्रम हुतो मथुराते दोय पहरमें आगरे
गये और आये ऐसे पराक्रमी हुते ॥ प्रसंग ॥ २ ॥

बहुर नित्यप्रति श्रीगुसांईजी श्रीठाकुरजीकी
सेवा करिकें बाहिरआयकें खवाससो कहते जो तू
थेली पीढा लैकें विश्रांतजैयौ और आपदर्शनार्थ
जन्मस्थान पधारते सो जन्मस्थान दर्शन करिके
पाछें श्रीगुसांईजी विश्रांत स्नानको पधारते या
भांतिसों श्रीगुसांईजी नित्य करते सो एकदिन मथु-
रिया चौबे सब मिलकें काजीकेपास जायकें चुगली
करी जो या ब्राह्मणसों लागा बांधी करौ सो इनके

सेवक आए हैं सो तुमको दोय चार हजार रुपैया देइंगे तब काजीमनुष्य दोयसौ हथियार बांधिकें जन्मस्थान आय ठाडौ भयौ इतनेमें श्रीगुसांईजी श्रीकेशोरायजीके दर्शनको पधारे तब दर्शन करिकें बाहर आए पाछें घोडाऊपर सवारभये तब काजीने कह्यौ जो अब तुम कहां जाउगे तब वासुदेवदासनें श्रीगुसांईजीसों बीनती कीनी जो महाराज मोकों बुरी नजर दीसत है तब श्रीगुसांईजीने कह्यौ जो ये तेरो कहा करेंगे तोसों होय सो तू हू करि तब वासुदेवदास देखे तौ एकके हाथमें ढाल और गुरज देखी सो ताकें वासुदेवनें एक थपेड मारी सो थपेड लागतमात्र वह तौ गिरपरयौ तब वाकी ढाल और गुरज लेकें वासुदेवदासके पीछें मनुष्य बीस पच्चीस हुते तब वे भागिकें हवेलीमें बैठिकें दरवाजौ देकें छिप रहे तब श्रीगुसांईजी घोराऊपर सवारभये और उनके दरवाजे होकर पधारे तब वासुदेवदासने श्रीगुसांईजीसों कह्यौ जो महाराज अब भले इकठौरे भये हैं जो आज्ञा होयतौ इन सबनकों दरवाजौ तौरकें मारों तब श्रीगुसांईजीनें नाहीं कीनी और कह्यौ जो तेरो ये कहा लेत हैं पाछें श्रीगुसांईजी विश्रांत पधारे तब दूसरे दिन श्रीगुसांईजी स्नानको पधारे तब वह

काजी अपने मनुष्यनकों साथ लेकें गरेमें पडुका देकें आयकें बीनती करी जो महाराज आज हम कन्हैया देखे और भीमहू देखे जो प्रभूजीके प्रताप ते सब डरे तब श्रीगुसांईजीने कह्यो जो यह ऐसो हुतौ जो फिर यासों बोलते तौ अकेलौ यह सबनकों मारतो तुम सब ठोर रहते और याको मनमें तौ बहुत आईहुती पारे हमें तौ ऐसी न करनीहुती पाछें काजीको समाधान करिकें घरको पठायो सो श्रीगुसांईजीकी कृपाते श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके सेवक ऐसे सामर्थवान हुते ॥ प्रसंग ॥ २ ॥

और सीहनन्दमें उत्सव होतो तब वासुदेवदास कों बुलावते नाहीं तब एकसमय सीहनंदके वैष्णव मिलिकें श्रीगोकुल श्रीगुसांईजीके दर्शनको आये सो तिनके साथ वासुदेवदासहू आये तब वैष्णवननें श्रीगुसांईजीको दर्शन कीयौ पाछें उहां रहिकें कोई समय पायकें वासुदेवदासने श्रीगुसांईजीसों बीनती करकें कही जो महाराज ये वैष्णव मोकों सीहनन्दमें उत्सव होतहै तब बुलावत नाहीं तब श्रीगुसांईजी चुपकारिरहे तब पाछें उन वैष्णवनको जब डेराको बिदाकिये तब तिनमेंते चारपांच मुखिया रहें ग्यो तिनको श्रीगुसांईजीनें राखें और सब वैष्णव-

नको डेरा पठाये तब श्रीगुसांईजीनें उन वैष्णवनसों पूछी जो तुम वासुदेवदासको उत्सव कीर्तनमें क्यों नाहीं बुलावतेहो तब उन वैष्णवननें बीनती करिकें कही जो महाराज वासुदेवदासको बड उत्सवमें क्यों नाहीं आवतहैं और छोटे उत्सवमें नाहीं बुलवत जो ये भूखे रहेंगे तो दोषलागे तब श्रीगुसांईजीने उनको आज्ञादीनी जो तुम बंधान बांधो जो सो वैष्णवनकों बुलावो तो पचास तो और वैष्णवनको बुलावो और पचासमें एक वासुदेवदासको बुलावो और जहां पचास बुलावो तो पच्चीस तो और वैष्णव बुलावो और पच्चीसमें एक वासुदेवदासको बुलावो और जहां पच्चीस बुलावो तहां तेरह तो और वैष्णवनकों बुलावो और बारहमें एक वासुदेवदासको बुलावो ऐसे दशतांई श्रीगुसांईजीनें बंधान बांध्यो ऐसे पांचतांई बंधान बांध्यो ऐसे जितने बुलावने होय तितनें तो और वैष्णव बुलावो और आधेनमें एक वासुदेवदासको बुलावो तब उन वैष्णवननें कह्यो श्रीगुसांईजीसों जो महाराज भूखे रहेगें तब श्रीगुसांईजीनें उन वैष्णवनसों कह्यो जो दशतांई तुम आधेमें वासुदेवदासकों बुलावो तामें चाहेसो होय ताको तुम कहा करोगे सो यह प्रकार

मेने तुमको करदीनों है सो मेरी आज्ञाते तुमको कछू बाधा नाहीं जो तुम आधेमें वासुदेवदासकों खुशीसे बुलावौ पाछें भूखो रहे तौ तुमको कछू दोष नाहीं परि यह श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको सेवक है ताते बुलायेबिना वासुदेवदासको तुम उत्सव मति करियों तब वैष्णवननें कही जो महाराजकी आज्ञा होयगी सोई करेंगे तब वे कोईक दिन श्रीगोकुल रहिकें पाछें सब वैष्णव सीहनन्दको गये तब वे वैष्णव सोई करन लागे श्रीगुसांईजी वासुदेवदासको श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको सेवक जानिकें ऐसी कृपा करते सो वे वासुदेवदास श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं तातें इनकी वार्ता कहांताईं लिखिये ॥ प्रसंग ॥ ४ ॥ वैष्णव ॥ ४५ ॥

अथ बाबा वेणुदास और कृष्णदास घघरिया तथा यादवदास ति० वा०।

सो वे बाबा वेणु दास हृदयके नेत्रनसों देखते सो बाबावेणुदास और छोटे भाई कृष्णदास ये दोऊ भाई श्रीकेसोरायजीके आगें कीर्तन करते तहां याद

वदास हूं कीर्तनमें साथ हुते तब कीर्तन करनलागे सो ये पद गावत हुते जो "देखरी नैनन गिरवरधरनसों" यह पद गावत कृष्णदासने अपनी देह छोडी तब यादवदासनें बाबा वेणुदाससों कह्यौ जो यह पद गावत कृष्णदासनें अपनी देह छोडी तब बाबा वेणुदासने कह्यौ जो हमतौ अपनी देह श्रीनाथजीद्वारमें छोडेंगे पाछें कृष्णदासको संस्कार श्रीकेसोरायजीके पाछें कीयो ता पाछें सूतक उतर्यो तब शुद्ध होयकें श्रीनाथजीद्वार चले सो कितनेक दिनमें श्रीनाथजी द्वार आय पहूंचे तब पर्वत ऊपर आयकें बाबा वेणुदासनें श्रीनाथजीके दर्शन कीये पाछें बाबा वेणुदासनें कीर्तन कीये तब श्रीनाथजीके कंठते फूलकी माला गिरि सो माला और एक बीडा रामदास भीतरियानें बाबा वेणुदासकों दीनों सो बाबा वेणुदासने मांथे चढायकें लीनों तब रामदास भीतरियानें बाबावेणुदाससों कह्यौ जा तुम्हारी बिदा श्रीनाथजीने कीनी तब बाबावेणुदासनें श्रीनाथजीको दंडोत कीनी पाछें नीचे उतरे सा आन्यौरकी ओर उतरे तब बाबा वेणुदासनें यादवदाससों कह्यौ जो हूं तो पर्वतते नीचे उतरिके अपनी देह छोंडूंगो तू सावधान रहियौ और तू वेगो

आईयौ ऐसें यादवदाससों काहके बावा वेणुदास पर्वतते नीचे उतरके श्रीनाथजीको दंडौत कर तमात्र अपनी देह छोडी पाछें यादवदासनें बावा वेणुदासको संस्कार कीयौ पाछें सूतक उतर्यौ तब शुद्ध होयकें यादवदास श्रीगुसांईजीके पास आये सो श्रीगुसांईजीको दर्शन कीयौ और दंडौत कीनी तब श्रीगुसांईजी यादवदासको परम भगवदीय जानकें मनमें बिचारें जो काइ एक दिनमें यादवदासकी स्थितिहै ताके लिये श्रीगुसांईजी बिचारें जो श्रीनाथजीकी सेवामें यादवदासको राखियै तो आछो है तब श्रीगुसांईजीनें कह्यौ जो यादवदास तुम अकेले हो ताते अब श्रीनाथजीकी सेवा करो तब श्रीगुसांईजीकी आज्ञाते यादवदासनें श्रीनाथजीकी सेवा नीकी भांतिसों करी सो सेवासों पहुंचिकें यादवदास नीचे उतरे और नीकी भांतिसों सेवा करते सो कहूं बंगालेमें जायकें यादवदास लकडी परी होय सो इकठौरी करी पाछें जब जान्यौ जो लकडी सिद्ध भई तब श्रीनाथजी पास आज्ञा मांगिकें दंडौत करिकें नीचे उतरे सो अग्नि लेकें जहां लकडी इकठौरी हुती तहां आप आए सो लकडीनको श्रीनाथजीकी ध्वजाके आगे चौतरा बनायौ सो चौत-

राके ऊपर आप पोढे जादिशाको व्यार चलत हुती ता दिशाको अग्नि धरिकें ध्वजाको प्रनाम करिकें श्रीनाथको स्मरण करिकें यादवदासनें अपनी देह छोडी पाछें व्यारते अग्नि जरि उठी सो जरिकें भस्म होगई यादवदासने अपने हाथनसों अपनो संस्कार कीयो तथा बावा वेणुदासको संस्कार कीयौ तातें यादवदासनें अपनौ यही विचार कीयौ जो सब सेवकनको मेरो संस्कार करिवेमें कष्ट होयगो और सेवामें बिरोध होयगो तातें यादवदासनें अपनों संस्कार अपने हाथसों कीयौ और पाहिलें बावा वेणुदासनें यादवदाससों कह्यौ हुतौ जो तू वेगी आइयौ बिलम्ब मति करियौ सो तो श्रीगुसांईजीने श्रीनाथजीकी सेवा सोंपी तातें इतनेदिन बिलंब भयौ पाछें दिन द्वै भये तब श्रीगुसांईजीनें पूछो जो यादवदास देखियत नाहीं सो कहां गयो है तब सेवकननें कह्यौ जो महाराज यादवदास कहूं बनमें लकडी इकठौरी करत हुते तब श्रीगुसांईजीने कही जो उहां जायकें देखौ तौ तब श्रीगुसांईजीके कहेतमात्र वैष्णव जायकें देखें तौ उहां कछू नाहीं राखकी ढेरी परी है तब वैष्णवननें श्रीगुसांईजीसों आयकें कह्यौ जो महाराज उहां तौ कछू दीखत

नाहीं राखकी ढेरी परी है तब श्रीगुसांईजी अपने श्रीमुखसों कह्यौ जो ऐसो भगवद्भक्त जो काहूंको दुःख न देतौ वे यादवदास श्रीमहाप्रभूनके ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय जो स्वइच्छासे अपनी देह छोडी सो सब ग्वालननें देख्यौ सो चकत होय रहे तातें बावा वेणुदास और कृष्णदास घघरिया और यादवदास बनिया ऐसे कृपापात्र भगवदीय हैं तातें इनकी वार्ताको पार नाहीं सो अब कहांताईं लिखिये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ४६ ॥

अथ जगतानन्द सारस्वत ब्राह्मण थानेश्वरकेवासी तिनकी वार्ता ।

सो जगतानंद सरस्वती ऊपर कथा कहते तब समय श्रीआचार्यजी महाप्रभू थानेश्वर पधारे सो जगतानन्द सरस्वती ऊपर कथा कहि रहे हुते सो तहां श्रीआचार्यजी महाप्रभू जाय बिराजे तब जगतानन्द सरस्वतीनें एक श्लोकको व्याख्यान कीयौ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यौ जो याको व्याख्यान भावतौ बहुत है तब जगतानंदनें कह्यौ जो श्लोकको अर्थ तौ कह्यौ जो श्रीशुकदेवजीनें कह्यौ सो कह्यौ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें

कह्यौ जो श्रीशुकदेवजी लरिका है तब जगतानंदनें
कह्यौ जो अधिकी व्याख्यान होय तौ तुमही आय
कें कह्यौ तब श्रीआचायजी महाप्रभूननें कह्यौ जो
तू तौ व्यास आसन बैठ्यौ है हम तेरो अतिक्रम
क्यों कर कर तब इतनों सुनत मात्र जगतानंदचौकी
छोडकें उठिठाडौ भयौ तब श्रीआचार्यजी महा-
प्रभूनने चौकीऊपर वस्त्र बिछायके पोथी धरी और
फिर आप ताके नीचे बैठे और वा श्लोकको भाव
फेरिकें वाको अर्थ कह्यौ सो व्याख्यान करतरतीन
पहर व्यतीत भये तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें
कह्यौ जो या श्लोकके व्याख्यान मास दोय तीनलों
बीतेगो पारि अब तुम भूखे होउगे ताते अब तुम
उठो तब जगतानंदनें कह्यौ जो महाराज आप
तौ ईश्वर आपके भाव घटिवेके नाहीं तहां चाहो
तहांतांई कहौ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें पोथी
बांधी तब जगतानंदनें साष्टांग दंडवत कीनी और
कह्यौ जो महाराज मेरौ घर पावन करियै तुम तो
साक्षात पूरन पुरुषोत्तम हौ तब श्रीआचार्यजी महा-
प्रभूनने कह्यौ जो तू तो अन्यमार्गीय है हम तेरे घर
कैसें पधारेंगे तब जगतानंद सरस्वती स्नान करिके
आय ठाडो भयौ और बीनती करकें कह्यौ जो

महाराज मोकों कृपा करिकें नाम दीजिये तब श्री-आचार्यजी महाप्रभूननें कृपा करिकें नाम दीयो तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभू वाके घर पधारे और जगतानंदके घर सेव्य ठाकुरजी हुते सो वे तुलसीमांझ बैठते तहां वे सदा एक लोटी श्रीठाकुरजीके ऊपर डारते हैं तब श्रीठाकुरजीकू श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने तुलसीमेंसों काढिके पंचामृतसों स्नान करवाय न्यारे बैठाये पाछें शृंगार करि राजभोग समर्प्यो पाछें जगतानंदकों सेवाकी विधि सिखाये और कह्यौ जो नित्य याही भांतिसों सेवा करियौ तब जगतानंद भले भगवदीय भये सो श्री-ठाकुरजीकी सेवा नीकी भांतिसों करन लागे सो वे जगतानंद श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे कृपा-पात्र भगवदीय है ताते इनकी वार्ता कहांताई लि-खिये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ४७ ॥

अथ आनंददास विश्वंभरदास दोऊ भाई क्षत्री हुते तिनकी वार्ता।

सो वे दो भाई अति कृपापात्र भगदीय हैं सो वे दोऊ भाई एकत्र बैठिकें भगवत्वार्ता करते तथा श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी वार्ता अहर्निश करते

कबहूं वार्ता कहत छोटे भाइकों निद्रा आय जाती तब श्रीठाकुरजी हुंकारी देते तब बडे भाइ आनंददाससों तो भगवत्वार्ताके आवेशमें जानते नाहीं जो हुंकारी कोन देत है जब वार्ता कहि चुकते तब आनंददास विश्वंभरदाससों पूछते जो मैंने तोसूं वार्ता कहि सो तू समझ्यो तब विश्वंभरदासनें कही जो मे तौ इहांतांई सुनी पाछें मोको तो निद्रा आई हुती तब आनंददासनें कही जो तू तौ अबतांई हुंकारी देत हुतो तब विश्वंभरदासनें वासों कही जो मे तौ हुंकारी दीनी नाहीं तब आनंददासनें कही जो श्रीठाकुरजीनें हुंकारी दीनी होयगी तब दोऊ आनन्ददास विश्वंभरदास अपने मनमें बहुत प्रसन्न भये और कह्यौ जो हमारो बडो भाग्य है श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी कृपाते श्रीठाकुरजीने हुंकारी दीनी हमारी कही सब वार्ता सुनी ताते वे दोऊ भाई आनंददास विश्वंभरदासश्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे कृपा पात्र भगदाय हैं ताते इनकी वार्ता अब कहांतांई लिखय॥प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥४८॥

अथ एक ब्राह्मणी हुती तिनकी वार्ता।

सो ब्राह्मणीके माथे श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें श्रीबालकृष्णजीकी सेवा पधराई हुती सो वह ब्राह्म-

णी श्रीबालकृष्णजीकी सेवा करती पारि वह अपने घरमें निपट निकंचन हुती ताते श्रीठाकुरजीके आगे माटीको कुंजा भर राखती और रसोईमें माटीके पात्र और घर निपट संकीर्ण इतनेहीमें सब रसोई मंदिर आचार हुते और नेत्रनसों थोरी दीसे वृद्ध भइ ताते एसा सेवा करती सो और वैष्णव देखिकें सेवा करतमें सो आपसमें सब चर्चा करन लागे जो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने या ब्राह्मणीके माथे कहा जानिके सेवा पधराई है यह तो कछू समझत नाहीं ऐसे सब वैष्णव आपुसमें चर्चा वार्ता करन लागे सो एकदिन श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको कोस ऊपर गांव हुते तहां पधारे हुते पाछे तहां ते फिर तब तहांते वा ब्राह्मणीके द्वारके आगे होयके निकसे तब सा-थके वैष्णव हुते तिननें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों वीनती कीनी जो महाराज आपने वा ब्राह्मणीके माथे श्रीबालकृष्णजीकी सेवा पधराई है ताको यह घर है सो याके घर पधारकें देखिये याको घर याको आचार कैसो है तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप असरण सरण अंतरयामी वा ब्राह्मणीके घर पधारे सो ता समें वह ब्राह्मणी रसोई करत हुती रोटी क-रिकें घीसों चुपरत जाय और श्रीठाकुरजी आप

आरोगत जाय पारि वाकों तौ दीसत कछू नाहीं हाथसों टटोरे कहैं जो रोटी आगें दीसत नाहीं कहा मूस बिलाई ले जात है ऐसे कहै और रोटी करत जाय और श्रीठाकुरजी आरोगत जाय सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू ठाडे ठाडे देखे पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें वा डोकरीसों कह्यौ जो अरी बाई तेरो बडौ भाग्य है जो तेरी करी रोटी श्रीठाकुरजी आप आरोगत हैं तब वह बाई श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको दंडोतकरि पाछें बोली जो महाराज में नाहीं जानी जो राज पधारे हैं मोकों तौ कछू दीसत नाहीं पारि तुम्हारी कही श्रीठाकुरजी मान लेत हैं तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने वैष्णवनसों कह्यौ जो श्रीठाकुरजा तौ केवल स्नेहके वश है ताते मेरी कानसों श्रीठाकुरजी आरोगत हैं और उनकी भक्ति मान लेतहैं तब वैष्णव मुसिक्यायकें चुप करि रहै पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभू अपने घर पधारे वा बाईके ऊपर बहुत प्रसन्न भये वह बाइ श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी ऐसी परम कृपापात्र भगवदीय ही ताते इनकी वार्ताको पार नाहीं सो अब कहां ताईं लिखिये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ४९ ॥

अथ एक क्षत्राणी तिनकी वार्ता।

सो वह क्षत्राणी आप चरखा कातती सो सूतके पैसा दोय तीन आवते सो ताकी जो सामग्री आवती सो ले आवती रसोई बालभोग करि श्रीठाकुरजीको भोग समर्पती ऐसे निर्वाह करती सो एक दिन ऐसो विचार कर्यो जो सूतकाते तासो थोरा२ अधिक काते सो इकठोरो करत जाय सो टका दश बारहको भेलो कियो सो सूत बेचके टका दस बारह आये सो विनको घृत खांड ले आई सो घर आयकें मेदा छानी पाछें दूसरे दिन सबके लडुआ सिद्ध कीये और मनमें कही जो दिन दस बारहको सामग्री सिद्ध भई है सो दिन दश बारहको निश्चंत भईहों सो तादिन श्रीठाकुरजीको आरोगाई और बाकी सामग्री एक हांडीमें करकें मंदिरमें धरि राखी पाछें श्रीठाकुरजीको राजभोग समर्प्यों भोग सराय आरती करकें आप महाप्रसाद लेकें चरखा कातन लागी तब श्रीठाकुरजी आप सिंहासनसे उतरके सामग्रीकी हांडी लैके सिंहासन ऊपर आय बैठे सो हांडीमेंसे लडुवा काढिके आप आरोगन लागे तब मंदिरमें हांडी खटखटान लागी तब वा क्षत्राणीने कही जो कहा मूंसा बिलाई होय देखूं तौ

सही कोन है तब वह क्षत्राणी काँतत हुती सो तहांते उठिके देखन गई मंदिरके किवाड खोलकें देखे तौ श्रीठाकुरजी सिंहासन ऊपर हांडी लेकें बैठे हैं और वामेते लड्डुआ काढि २ कें आरोगत है तब वह क्षत्राणी देखकें छाती कूटन लागी और कहन लागी जो यह सामग्री तौ तुम्हारेही लिये दिन दस बारहको करि राखी हुती यह तुमने कहा कीयौ जो आजही आरोगे तब श्रीठाकुरजीने कह्यौ जो कहा तु लेखो करिके आजही निवरी तेंने आलसके लिये इक ठौरीकर राखी हुती सो कहा नित्य नई न होती तब वह क्षत्राणी बोली जो महाराज मेरो अपराध क्षमा करो अबते नइ सामग्री नित्य प्रति करिकें समर्पूंगी सो श्रीठाकुरजी याके लिये आरोगे जो ये दिन दस बारहको निश्चंत होती तो याकों आरत रहती नाहीं और जो नित्यकी नित्य सामग्री करे तौ याकों आरति रहै जो मोकों सामग्री करनी है ताते श्रीठाकुरजीने ऐसें करी ताते श्रीठाकुरजीकी सामग्री दिन वारिते अधिक न करनी और या क्षत्राणीने छाती कूटी जो श्रीठाकुरजी आरोगे ताके लिये कूटी श्रीठाकुरजी तो प्रसन्न होयकें आरोगे वाने छाती याके लिये नाहीं कूटी जो श्रीआचा-

र्यजी महाप्रभूनके मार्गकी तौ यह मर्यादा है जो
श्रीठाकुरजीके आगे भोग धरियै सो आरोगे उठाय
धरियै सो सामग्री होय सो न आरोगे तौ श्रीठा-
कुरजीनें आचार्यजी महाप्रभूनके मार्गकी मर्यादा
छोडी तो कदाचित मोहूकों छोडें याके लिये वा
क्षत्राणीने छाती कूटी तब श्रीठाकुरजीनें कही जो
तू तौ आजही लेखौ करि निवरी नित्य नई कहा न
होती तब याकों निश्चय भयौ जो मार्गकी मर्यादा
तौ श्रीठाकुरजीनें नाहीं छोडी हों दस बारह दिनकों
निश्चंत होय बैठती ताके लिये श्रीठाकुरजी आरोगे
ताते वह क्षत्राणी ऐसी परम भगवदीय ही तिनकों
श्रीठाकुरजी सेवाते एक क्षणहू स्वास्थ होन देते
नाहीं सेवामें सदा आरति रहै सो कियौ वा क्षत्रा-
णीसों श्रीठाकुरजी ऐसे सानुभाव हुते जो चाहियै
सों मांगलेते ऐसी कृपापात्र भगवदीय ही ताते
इनकी वार्ताको पार नाहीं सो कहांताई लिखिये
॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ५० ॥

अथ सास गोरजा, बहू समराई दोऊ क्षत्राणी सीहनंदकेवासी ति० वार्ता ।

सो इनके मांथे श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें

श्रीदामोदरजीकी सेवा पधराई हुती सो इन सास
बहुनते श्रीठाकुरजी बहुत सानुभाव हुते सो एक
समय श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप थानेश्वर पधारे
तब थानेश्वरहीमें रहै पारि सीहनंदन पधारते जो
काहेते थानेश्वर और सीहनंदके बीच सरस्वती नदी
है सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू सरस्वती उल्लंघन
न करते काहेते जो आप आचार्य है ताते थानेश्वर-
हीमें रहते सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू थानेश्वर
पधारे तब सासनें बहूसों कह्यौ जो मैं श्रीआचार्यजी
महाप्रभूनके दर्शनको जातहों तू श्रीठाकुरजीकी
सेवा नीकी भांतिसों करियौ शृंगार करि रसोई
करिकें भोग समर्पियो इतनों बहूसों सास कहिकें
श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके दर्शनको गई तब वह
न्हायके सेवा करन लागी जब पाक सिद्ध भयौ तब
श्रीठाकुरजीको भोग समर्प्यौ तब समयानुसार
भोग सरावन गई तब देखे तौ सामग्री सब यथा-
स्थिति ज्योंकि त्यों है तब बहूनें वीनती कीनी जो
महाराज मैंतौ जानत कछू नाहीं और सासनें तो
मोसों कह्यौ नाहीं और तुम आरोगत नाहीं सो
काहेते अबहू कहा करूं ऐसे कहत बिलबिलायके
खेद करन लागी जो मोसों कछू चूक पारि होयगी

रसोई आछी न भई होयगी तथा पात्र मांजितेमें शुद्ध न भये होंयगे कछू तौ भयो होयगो जो श्रीठाकुरजी आरोगत नाहीं पाछें भोग सराय पात्र मांजे आछी भांतिसों धोय पोंछके फेरि रसोई करी दूसरीबार जब पाक सिद्ध भयौ तब श्रीठाकुरजीको भोग समर्प्यों और मनमें कहतजाय जो मेते कछू चूक परि होयगी हों तौ कछू जानत नाहीं कहा भयौ तातें श्रीठाकुरजी आरोगे न होंयगे अब आछी भांतिसों पात्र मांजिकें रसोई करी है सो अब श्रीठाकुरजी आरोगेंगे सो जब समय भयौ तब दूसरीबेर भोग सरावनगई तब देखेतो श्रीठाकुरजीके आगे सामग्री यथास्थित है तब फेर बिलबिलावे रोवे और बीनती करे और कहे जो महाराज हों कछू जानत नाहीं सो तुम क्यों नाहीं आरोगत और अपनें मनमें विचार करती जाय जो मोको रसोई करनों आवत नाहीं के मेरी देहको कछू दोष है ऐसे विचार करत जाय और भोग सरावतजाय और छातीभर आवे और कहे मेरो कोन अपराध होयगो जो श्रीठाकुरजी आरोगत नाहीं पाछें फेरि जब पात्र आछी भांतिसों मांजिकें तीसरीवार भोग समर्प्यो समय भयो तब भोग सरावन गई तब फेरि

सामग्री यथास्थिति है तब तो महाखेद भयौ जो अबहू कहा करूं श्रीठाकुरजी भूखे रहेंगे सासनेंतौ मोसों कछु कह्यौ नाहीं ऐसें कहे तब मूर्छा खायकें श्रीठाकुरजीके आगे भूमिमें गिरपरी और बहुत दुःख करन लागी श्रमित बहुत भई ताते वाको तनक निद्राहु आई सवारेसों जलहू नाहीं लीनों सो कंठ जूदो सूखे अतिव्याकुल हैकै परी तब श्रीठाकुरजीते वाकौ बहुत दुःख सह्यौ न गयौ तब सिंहासनते नीचें उतरिकें श्रीठाकुरजीनें वासों कह्यौ जो तू काहेकों खेद करतहै हों तीन्योवेर आरोगोहूं तू कछू संदेह माति करे तब याने कह्यौ जो में कैसे जानूं तब श्रीठाकुरजीने कह्यौ जो तू भूखी है कछू खायले तब कह्यौ जो हूं तो न खाउँगी जब आपको आरोगत देखूंगी तब लेउंगी तब श्रीदामोदरजीनें कह्यौ पारि यहतौ मानेनाही तब आप जलकी झारी लेकें आए और कह्यौ अरी तेरौ गरौ सूखो जात है तू तनक जलपान तौ ले तब श्रीठाकुरजीने अपने श्रीहस्तसों वाके मुखमें जल चुवायौ तब कह्यौ जो सवारे तू देखेगी तौ मे आरोगूंगो तब उठिकें सखडी महाप्रसाद सब गायनको लिवायौ रसोई पोतकें रसोईकी सामग्री सब सिद्ध कर राखी रात्रिकों उत्साहसों

सोयरही पाछें प्रातःकाल उठिकें नित्यकर्म तथा स्नान करि तथा रसोई करि तब पाक सिद्धभयौ तब श्रीठाकुरजीको भोग समर्प्यौ तब टेरा सरकावन लागी तब श्रीदामोदरजी बोले जो अब तू टेरा काहेको सरकावत है अब तू देखि में आरोगतहौं और सब सामग्री यथास्थिति रहेगी तब समराई तहां ठाडीभई और श्रीठाकुरजी भोजन करत देखे तब श्रीठाकुरजी आप भोजन किये पाछें सब सामग्री थारमें ज्योंकी त्यों यथास्थित रही तब श्रीठाकुरजीने कही जो याही भांतिसों तू नित्य जान लीजियौ तब समराईनें कही जो हूं तो देखूं तबही मानू ता पाछें नित्य भोग धरे तब श्रीठाकुरजीको भोजन करत देखे तब श्रीठाकुरजीहू समराईके देखत भोजन करें जो चाहे सो मांगिलेय पाछें हांसादिक करें पाछें वाको सब रसको अनुभव करवायौ सो समराई सकल रसको अनुभव करन लागी तब यह बात श्रीदामोदरजीने श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों कह्यौ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें समराईकी सास गोरजासों कही जो श्रीठाकुरजी कछू सानुभाव जतावत है तब गोरजातो कछू बोली नाहीं पाछें गोरजा श्रीमहाप्रभूनसों बिदा होयकें

सीहनंद अपने घर आई तब दूसरे दिन सासनें सेवा करि रसोई करके आपने श्रीठाकुरजीको भोग समर्प्यौ जब भोग सर्‍यौ तबहुं चौकी उठी जो श्रीठाकुरजी आरोगे नाहीं तब सासनै कह्यौ जो सुनि बहू श्रीठाकुरजी तौ लरिकाहैं तातै तोहीसों हिले होयंगे तातै रसोई तु वेगि कर तब बहूने रसोई करि भोग समर्प्यौ तब श्रीठाकुरजीनें कह्यौ जो मैं तौ अबही आरोगोहों तब बहूने कही जो हूतें देखूं तब मानूं तब भोग समार्पिकें कह्या जो महाराज आरोगों तब समराईके देखत श्रीठाकुरजी आरोगे सो जब सास रसोई करे तब बहूको बुलावे जो थार ले जाउ सो वो थार ले जायके आरोगावे ऐसे नित्य प्रति करे सो यह वात श्रीठाकुरजीनें श्रीमहाप्रभूनसों कही पाछें बहु श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके दर्शनको थानेश्वर गई तब आयके श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको दर्शन कीयौ ता समय श्रीआचार्यजी महाप्रभू पाक करत हुते तब समराई रोटी बेलनको बेठी तब श्रीआजार्यजी महाप्रभूननें बहूसों कह्यौ जो तेरी सब बात हमसों श्रीठाकुरजीनें कही है जो हमको समराई भली भांतिसों सुख देत है तब समराई मुसक्याय रही आर कह्यौ

जो इतनी हू बात श्रीठाकुरजीके पेटमें नाहीं ठहरी तो कहा करिये पाछें कह्यौ जो महाराज लरिकाकी कहा पूछत हौ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू सुनके बहुत प्रसन्न भये और आप श्रीमुखसों कहन लागे जो देखो इनसों कैसो सम्बंध है श्रीठाकुरजीको और कहै जो या बहूके ऊपर बहुत कृपा है और बहू सालन करती सो नीकी भांतिसों करती सो श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यौ जो नित्य सालन क्यों नाहीं करत तब बहू बोली जो लरिकाके मनमें आवै सो करियै तब यह सुनकें श्रीआचार्यजी महाप्रभू बहुत प्रसन्न भयै याकी सास गोरजा बहुत उत्तम सामग्री करती ताते श्रीठाकुरजीको बहुत प्रिय लागती ताते इन सास बहुनके ऊपर बहुत प्रसन्न रहते ताते इन सास बहूनकों दर्शन देवेकों श्रीमहाप्रभूजी तथा देखिवेके निमित्त प्रतिवर्ष आप थानेश्वर पधारते तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू कहते जो कहा करिय सो सरस्वती उल्लंघनी नाहीं नातर इनको सीहनंदमें दर्शन देतौ सो वे सास बहू ऐसी परम कृपापात्र भगवदीय ही ताते इनकी वार्ता कहांताई लिखिये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥

वैष्णव ॥ ८१ ॥

अथ कृष्णादासी रुक्मनी बहूजीकी-दासी हुती तिनकी वार्ता ।

सो कृष्णादासी अडेलमें श्रीरुक्मनी बहूजीकी खवासी करती सो एक समय रुक्मनी बहूजीके गर्भ रह्यौ हो तब कृष्णादासीनें कह्यौ जो अबके बेटा होयगो तिनको नाम श्रीगोकुलनाथजी धरूंगी सो गर्भके दिन सम्पूर्ण भये तब रुक्मनीजी बहूके पेटमें विथा भई तब कृष्णादासीनें जायकें जोतीषीसों पूछौ जो अब मुहूर्त केसो है तब वा जोतषीनें दिन नीको न कह्यौ तब कृष्णादासी फिरि आयके श्री-रुक्मनी बहूजीके पेटपै हाथ फेर्यौ और कह्यौ जो महाराज अब तौ मति पधारौ आजकौ दिन नीको नाहीं तब पेटकी व्याधि सब दूर भई पाछे दिन दोय तीन बीते तब कृष्णादासीने बिचार्यो अब फेरि पूछियै जो आज दिन केसो है तब कृष्णादासीनें फेरि जायके पूछौ जो आज दिन केसो है तब वा जोतषीने कह्यौ जो आज दिन बहुत नीको है तब कृष्णादासीने आयकें श्रीरुक्मनी बहूजीसों वीनती करकें कह्यौ जो महाराज अब पोढिये अब बालक प्रगट होय तौ भलो है तब बहूजी महाराज पोढी तब

कृष्णादासीनें बहूजी महाराजके पेटपै हाथ फेऱ्यौ औ कह्यौ जो महाराज अब पधारियै तब श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीद्वार पधारे हुते तब पेटमें व्यथा भई और बालकको जन्म भयौ तब ता समय कृष्णादासीने श्रीगोकुलनाथजी नाम धऱ्यौ ता पाछें श्रीगुसांईजीकौ वधैया पठायौ तब श्रीगुसांईजी महाराज अडेलकों पधारे तब नामकरण कीयो तब श्रीवल्लभ नाम धऱ्यौ परि कृष्णादासीकी कानितें श्रीगोकुलनाथजी नाम राख्यौ ऐसी कृष्णादासीके ऊपर कृपा थी जो जाके कहे ते दोऊ नाम प्रसिद्ध भये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥

पाछें श्रीघनश्यामजीको जन्म भयौ तब नामकरण बिचारण लागे तब श्रीवल्लभजीने कह्यौ जो श्रीगोकुलनाथजी नाम धऱ्यौ तब श्रीगुसांईजीने कह्यौ जो यह नाम तौ तिहारो है तब दोऊ नाम प्रमाण कायै सो श्रीवल्लभ कुलके विषे सब कोऊ श्रीवल्लभ नाम कहत हैं और सब जगतमें श्रीगोकुलनाथजी प्रसिद्ध भये और जन्मपत्रमें श्रीकृष्ण है सो गोप्य राख्यौ श्रीगुसांईजीने कह्यौ जो यह नाम गोप्य रहै ताते कृष्णादासी श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी ऐसी कृपापात्र [illegible] सो

इनकी वार्ता कहांताईं लिखिये ॥ प्रसंग ॥ २ ॥
वैष्णव ॥ ५२ ॥

अथ बूलामिश्र पंडित तिनकी वार्ता।

सो बूलामिश्र एक कपूर छत्रीके प्रोहित हुते ताकी स्त्रीके संतति न हुती तब वानें दूसरौ विवाह कीयौ तब ताहू स्त्रीके संतति न भइ तब बहूनें वा क्षत्रीसों कह्यौ जो तुम हरिवंश पुराण सुनो तब तुम्हारे संतति होयगी तब वा क्षत्रीनें जायके बूलामिश्रसों प्रार्थना करी जो तुम मोकों हरिवंश पुराण सुनावौ तब बूलामिश्रने कह्यौ जो अबतो मोकों अवकाश नाहीं जब अवकाश होयगो तब तुम्हारे घर जायकें सुनाऊंगौ तब वह क्षत्री अपने घर आयौ जब एक महीना बीत्यौ तब एक दिन अचानक बूलामिश्र वा क्षत्रीके घर पधारे तब बूलामिश्रकों वा क्षत्रीने बहुत आदर सन्मान कीयौ तब बूलामिश्रने कह्यौ जो तुम दोऊ स्त्रीपुरुष स्नान करिकें आय बैठौ तब दोऊ स्त्रीपुरुष स्नान करिकें आय बैठे तब बूलामिश्रने देह शुद्ध होवेक लीये एक दान करवायौ पाछें हरिवंश पुराणको एक श्लोक अन्तको सुनायौ ॥

सो श्लोक ॥ इदं मया ते हरिकीर्तनं महच्छ्रीकृष्णमाहा-
त्म्यमपारमद्भुतम् ॥ शृण्वन्पठन्नाशु समाप्नुयात्फलं
यच्चापि लोकेषु सुदुर्लभं महत् ॥ १ ॥

यह हरिवंश पुराणके अन्तको श्लोक सो बूला-मिश्रने वा क्षत्रीको सुनायौ और आशीर्वाद दीयौ और मंत्राक्षत पढिकें वा क्षत्रीकी बडी स्त्रीकी गोदमें दीए तब वा क्षत्रीने कह्यौ जो यह मिश्रजी तुमनें कहा कियौ यह तौ स्त्री धर्म हूं नाहीं होत है तब बूलामिश्रनें कह्यौ जो श्रीठाकुरजी सर्व सामर्थ्यवान है जो देनहार होयंगे तो याहीको पुत्र देयंगे अब तौ मेने याकों अक्षत दीये सो तो दीये तब इतनों कहिकें बूलामिश्र अपने घरकों चलन लागे तब वा स्त्रीनें बहुत बीनती कीनी जो मोकों सम्पूर्ण हरिवंश पुराण सुनावौ तब बूलामिश्रने कह्यौ जो तोकों श्रीठाकुरजी सम्पूरण फल एकही श्लोकमें देयंगे ऐसे कहिकें बूलामिश्र तौ अपने घरको आये पाछें वा बडी स्त्रीको ऋतु आई पाछे गर्भवंत भई तब कितनेक दिनमें वाकें पुत्र भयौ वे बूलामिश्र श्रीम-हाप्रभूनके ऐसे भगवदीय हैं तिनके अनुग्रह हते वाके पुत्र भयौ हरिवंश पुराणकौ एक श्लोक सुनेते सम्पूर्ण सुनेकौ फल भयो ताते बूलामिश्र ऐसे परम

कृपापात्र भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ता कहांताईं लिखिये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ५३ ॥

अथ मीरांबाईके पुरोहित रामदास तिनकी वार्ता ।

सो एक दिन मीरांबाईके श्रीठाकुरजीके आगें रामदासजी कीर्तन करत हुते सो रामदासजी श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके पद गावत हुते तब मीरांबाई बोली जो दूसरो पद श्रीठाकुरजीको गावो तब रामदासजीने कह्यौ मीरांबाई सो जो अरेदारी रांड यह कोनको पद है यह कहा तेरे खसमको मूंड है जो जा आजते तेरो मुंहडौ कबहूं न देखूंगो तब तहांते सब कुटुम्बको लेकें रामदासजी उठि चले तब मीरांबाईने बहुतेरो कह्यौ पारि रामदासजी रहे नाहीं पाछें फिरके वाको मुख न देख्यो ऐसे अपने प्रभूनसों अनुरक्त हुते सो वा दिनते मीरांबाईको मुख न देख्यो वाकी वृत्ति छोड दीनी फेरिवाके गांवके आगे होयकें निकसे नाहीं मीरांबाईने बहुत बुलाए पारि वे रामदासजी आये नाहीं तब घर बैठे भेंट पठाई सोई फेरि दीनी और कह्यौ जो रांड तेरो श्रीआचार्यजी महाप्रभून ऊपर

समत्व नाहीं जो हमको तेरी वृत्ति कहा करनी है हमारे तौ श्रीआचार्यजी महाप्रभू सर्वस्व हैं हमतौ उनके हैं उन बिना हमारे सर्वस्व त्याग करनों उनके चरणारविंदको आश्रय राखनों ऐसी वृत्ति बहु तेरी होयगी वे रामदास श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ता कहां-तांई लिखिये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ६४ ॥

अथ रामदास चौहान तिनकी वार्ता।

सो रामदास चौहान श्री गोवर्द्धनकी कंदरामें रहते सो प्रथम श्रीआचार्यजी महाप्रभू श्रीनाथजी-द्वार पधारे तब श्रीगोवर्द्धननाथजीको पाट बेठाये तब रामदासजी गोवर्द्धनकी कंदरामेंसूं बाहिर आये तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने रामदासजी सों कह्यौ जो रामदास श्रीगोवर्द्धननाथजीकी सेवा सावधानीसों करियौ तब रामदासजीनें वहां एक मंदिर छोटौसों ईंटनको बनवायौ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें वा मंदिरमें श्रीनाथजीकौ पधराये सो पहिले श्रीगोवर्द्धननाथजी श्रीगोवर्द्धनपर्वत ऊपर बिराजते सो ब्रजवासी लोगननें एक फूंसकी छाति कर राखी हुती ता छातिमें बैठते और कबहूं २ दूध दही ब्रजवासी समर्पते देवदमन यह नाम कहते सो

दूध दही माखन सब आरोगते तथा श्रीगोपालला-
लजी यह नाम कहते सो श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें
श्रीगोवर्द्धननाथजीको मंदिरमें पधराये पाछे श्रीना-
थजी नाम प्रगट कीयौ तबते सब कोऊ श्रीनाथजी
कहन लागे वे रामदासजी श्रीआचार्यजी महाप्रभू-
नके ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं तातें इनकी
वार्ताको पार नाहीं सो अब कहां तोईं लिखिये ॥
प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ५५ ॥

अथ रामानंद पंडित सारस्वतब्राह्मण तिनकी वार्ता ।

सो एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभू थानेश्वर
पधारे तहां रामानंद पंडितके घर पधारे सो रात्रिको
उहां पोढे हुते सो जब पिछली रात्रि भई तब रामा-
नंद पंडितने अपना स्त्रीसों कह्यौ जो वेगि उठि
गोबर और ले चौकाको चाहियेगो नातरि सबारे ये
वैष्णव उठेंगे सो ले जायंगे तब यह बात श्रीआ-
चार्यजी महाप्रभूनने सुनी ता समय श्रीआचार्यजी
महाप्रभू हाथ पांव धोयवेको उठे हुते तब अति
क्रोधवंत भये तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें रामा-
नंद पंडितको बुलायौ तब आपने गडुआमेंते जल

लेकें वाके हाथमें मेलिकें मंत्र पढिके वा जलको वा ऊपर छिरको और अपने श्रीमुखसों कह्यौ जो मैं तेरो त्याग कीयौ तेने मेरे सेवकनसों यों कह्यौ जो तू वेगि उठि गोबर औरले नातर वैष्णव उठेंगे तो लेजायंगे तो तू रसोईको सामान कहांते करेगौ ऐसो कहिकें तहांते उठि चले क्षण एक रहे नाहीं सो थानेश्वरते एक गांव ता ऊपर महीतीर्थ है सो तहां आये फिर वहां आपने स्नान कीयो सो जब श्रीआचार्यजी महाप्रभू रामानंद पंडितके घरते चलन लागे तब थानेश्वरके वैष्णवनें बहुत बीनती कीनी पारि श्रीआचार्यजी महाप्रभू रहे नाहीं और कह्यो जो में यहां रहिकें जलपान न करूंगौ ता पाछें काहूनें रामानंद पंडित पास नाम पायौ हौ तिनसों श्रीगुसांईजी गंगोज्व कहते तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू थानेश्वर पधारे पाछें रामानंदकी अवस्था बिकल भई तब बाजारमें जो वस्तु देखतो सो खातो कछू मर्यादा नाहीं पारि इतनी मर्यादा तौ करै जो खाय सो समर्पिके खाय यों कहै जो श्रीगोवर्द्धननाथजी तुम आरोगियों इतनों कहिकें मुखमें मेले सो एक दिन हलवाईकी दुकानपै जलेबी बहुत आछी देखी सो जलेबी वामेंते लेकें कह्यौ जो श्रीनाथजी तुम

आरोगियौ ऐसे कहिकें खाई ता समय श्रीनाथ-
जीनें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों कह्यो जो आज
तो हमने जलेबी बहुत आछी आरोगी है तब
श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कह्यौ जो कौने समर्पे
है तब श्रीनाथजीने कह्यौ जो तुम्हारे सेवक रामा-
नंदने समर्पि है तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने
कह्यौ जो महाराज मे तौ वाकौ त्याग कीयौ तुम
वाके यहां क्यों आरोगे हौ तब श्रीनाथजीनें कह्यौ
जो तुम मोकों काहेको सोंपति हौ हम तुम्हारी
कानितें अंगीकार करत हैं तुम हमको जाको सोंपत
हो ताको तुम त्याग करत हो परि हम तुम्हारे सों-
पेकों नाहीं छोडत है तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू
चुपकरि रहै तब यह बात श्रीआचार्यजी महाप्रभू-
नने दामोदरदास हरसानीसों कही तब दामोदर-
दास हरसानीने बीनती कीनी जो महाराज आप
याको अंगीकार कब करोगे तब श्रीआचार्यजी
महाप्रभूननें दामोदरदाससों कह्यौ जो यासों अब
वैष्णवको अपराध पडेगो तो हम याकों लक्षजन्म
पाछें अंगीकार करेंगे श्रीनाथजीने अंगीकार कीयौ
तौहै परि इतनों अंतराय भयौ ताते वैष्णवसों
बोलनों सो विचारके बोलनों बिना बिचारें सर्वथा

न बोलनों ऐसे वैष्णवको रहनों ॥ प्रसंग ॥ १ ॥
वैष्णव ॥ ५६ ॥

अथ विष्णुदास छीपी तिनकी वार्ता ।

सो विष्णुदास वृद्ध भये तब श्रीगोकुलमें श्रीगु-साँईजीकी बैठकके द्वारेकी द्वारपालकी करते और कोई पंडित आवतो तासों विष्णुदास पूछते जो तुम क्यों आए हो और कहाँ जात हौ तब उन पंडित-ननें कह्यौ जो हम श्रीगुसांईजीके पास वाद करन आए हैं तब विष्णुदासनें उन पंडितनसों कह्यौ जो तुम मोसों वाद कर लेउ तब विष्णुदास उन पंडि-तनसों वाद करकें निरुत्तर करदेते व्याकरणशास्त्र पुराण इतिहास सब शास्त्रनके बचन लेके निरुत्तर कर देते तब वे पंडित अपने मनमें समाधान करि-कें पाछें फिर जाते और वे कहते अपने मनमें जो जिनके द्वारपालक ऐसे हैं तो तिनके धनीकी कहा बात होयगी सो श्रीगुसांईजीलों काहू पंडितकों न जान देते द्वारहोते पंडित निरुत्तर होयकें फिर जाते तब एकदिन श्रीगुसांईजीनें कह्यौ जो कोई पंडित अब बाद करनकों नाहीं आवत सो काहेते तब

वैष्णवननें कह्यौ जो महाराज उन पंडितकों विष्णु-
दास निरुत्तर कर देते हैं ताते पंडित अपने मनमें
समाधान करिके फिर जाते हैं तब श्रीगुसांईजी
श्रीमुखसों कह्यौ जो विष्णुदास तुमको तौ श्रीमहा-
प्रभूनकी कृपाते ऐसी सामर्थ है जो तुम पंडितनको
जीतकें निरुत्तर कर देत हौ पारि उन ब्राह्मणोंको
अति श्रम होत है ताते अब जो कोई पंडित वाद
करनकों आवै ताकों हमारे पास आवन दीजो तब
उन पंडितनकों जान देते विष्णुदास श्रीआचार्यजी
महाप्रभूनके ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं उनको
ऐसी सामर्थ हुती जो पंडितनकों निरुत्तर करि दूषण
करते ॥ प्रसंग ॥ १ ॥

और एक भट्ट हुतौ सो श्रीगुसांईजीसों कहतौ
जो तुम्हारे सेवकनको मैं जिमाऊंगो तब श्रीगुसां-
ईजी चुपकर रहते सो वा श्रीगुसांईजीको सुसर
हुतौ श्रीघनश्यामजीको नाना हुतौ सो एक दिन
वा भट्टने श्रीगुसांईजीको न्यौत्यो तब श्रीगुसांईजी
उनके घर भोजनको पधारे तब तहां विष्णुदास
जलपानको गडुआलेकें साथ गये तब श्रीगुसांईजी
भोजन करिकें उठे तब श्रीगुसांईजीकों विष्णुदासने
शुद्ध आचमन करवायौ पाछें श्रीगुसांईजी मंदिरमें

पधारे तब विष्णुदासको श्रीगुसांईजीने आज्ञा दीनी जो तुम प्रसाद लेके वेगि आइयो सो जा थारमें श्रीगुसांईजीने भोजन कीए हुते ता थारमेंते प्रसाद अपनी पातरमें धरिकें थार धोय धर्यौ पाछें आप प्रसाद लेवेको बैठे तब भट्टजी और सामग्री लेकें आये तब विष्णुदासनें कह्यौ जो मोकों नाहीं चाहियत तब भट्टजीनें कह्यौ जो झूठन काहेको लेतहो नीकी सामग्री लेउ तब विष्णुदासने कह्यौ जो मोकों नाहीं चहियत मेरी पातरमें डारोगे तौ मेरी पातर छूय जायगी तब भट्टजी अति क्रोधवंत भये पाछें उन भट्टजीने श्रीगुसांईजीसों कह्यौ जो तुम्हारे शूद्रनें मोसों ऐसे कह्यौ जो मेरी पातरमें मतिडारो और डारोगे तो मेरी पातर छूय जायगी तब श्रीगुसांईजी चुप करिरहे पाछें श्रीगुसांईजी मुसिक्यायके भट्टजीसों कह्यौ जो तुम हमारे सेवकनकों जिमावन कहत हुते सो तुमसों हमारो एक शूद्र न जिमायौ गयो और सेवकनको कैसे जिमाओगे तब भट्टजी मुसक्यायकें चुपकरिरहे सो वे विष्णुदास श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ताको पार नाहीं सो कहांतांई लिखिये ॥ प्रसंग ॥ २॥ वैष्णव॥ ८७॥

अथ जीवनदासक्षत्रीकपूर सीह-नंदकेवासी तिनकी वार्ता ।

सो एक समय सीहनंदके सब वैष्णव मिलिकें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके दर्शनको अडेल आवत हुते सो मार्गमें एक दिन मजल जाय उतरे तहां सब वैष्णव अपने २ चौका देत हुते ता समय मेह चढि आयौ तब वैष्णवननें कह्यौ जो वर्षा आई ऐसो कार्य भयौ तब जीवनदास बोले तुम चिंता मति करो तब जीवनदासने श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको नाम लेके मेहको आन दीनी जो तोको श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी आनि है जो तू बरषे मति तब वह मेह रहगयौ पाछें सब वैष्णवनने भोग समर्पि महाप्रसाद लीनौ तहां रात्रिको सोये ता पाछें सब वैष्णव अडेल आये तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकौ दर्शन कीयौ पाछें यह बात सबनने श्रीगुसांईजीसों कही जो महाराज एक दिन सब हम वैष्णव पाक करत हुते ता समय मेहचढि आयौ तब जीवनदासने आपकी आनि देके ऐसे कहिकें मेहको बरजो तब यह सुनिकें जीवनदाससों श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें पूछौ और कह्यौ जो क्योंरे हमारी तेने

आनि दीनी और कदाचित वर्षा होती तो तू कहा करतौ ? तब जीवनदासने कह्यौ जो महाराज वह कोन है जो आपकी आनि दीये उपरांत बरषे यह इन्द्रकी कहां सामर्थ है तब यह बात जीवनदासकी सुनिकें श्रीआचार्यजी महाप्रभू मुसिक्यायकें चुप-करि रहै तब उन जीवनदासपै श्रीआचार्यजी महा-प्रभूनकी ऐसी कृपा हुती उन जीवनदासकों श्री-आचार्यजी महाप्रभूनके स्वरूपकौ ऐसो ज्ञान हुतौ सो आनि देकें मेह बरजो तिनकी कहा कहिये तब वैष्णवनने कह्यौ ये बडे भगवदीय हैं वे जीवनदास श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ता अब कहांतांई लि-खिये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ५८ ॥

अथ भगवान्‌दास सारस्वतब्राह्मण ति०।

सो उन भगवानदासनें श्रीआचार्यजी महाप्रभू-नकी सेवा नीकी भांतिसों कीनी तब श्रीआचार्यजी आप भगवानदासके ऊपर बहुत प्रसन्न भये तब भ-गवानदासको श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने आप कृपा करिकें अपनी श्रीपादुकाजीकी सेवा दीनी जो तू

इनकी सेवा नीकी भांतिसों करियो तब भगवानदास श्रीपादुकाजीकी सेवा नीकी भांतिसों ऐसी भांतिसों सेवा करते जो श्रीठाकुरजी इनसों सानुभाव हुते बातें करते सो एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभू भगवानदासके घर पधारे सो जा ठौर श्रीआचार्यजी महाप्रभू बिराजतहैं ता ठौर नित्य उठिकें सवारें भगवानदास दंडौत करते सो याते वा ठौरपर कोऊ पाव न धरतौ ऐसौ उनकी भावहौ सो वे भगवानदास श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ता कहांतांइ लिखिये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ५९ ॥

अथ भगवानदास श्रीनाथजीके भीतरिया तिनकी वार्ता ।

सो एकसमय श्रीनाथजीके बालभोगकी सामग्री करत भगवानदाससों कछू सामग्री दाझी तब श्रीगुसांईजी भगवानदासके ऊपर बहुत खीजे और भगवानदासकों सेवाते भिन्न बैठारे सो भगवानदास गोविंदकुंड ऊपर आय अच्युतदासके पास आय बैठे पाछें श्रीगुसांईजी आप स्नान करिवेको गोविंदकुंड ऊपर पधारे और भगवानदासतौ

पूंछरीकी और अच्युतदासके पास हुते सो भगवानदासने सब समाचार कहे पाछे जब श्रीगुसांईजी गोविंदकुंड स्नान करिकें अच्युतदासको दर्शन देन पधारे तब श्रीगुसांईजीके दर्शन करिके अच्युतदासकी आंखनमेसूं आंसूनको प्रवाह चल्यौ सो देखकें अच्युतदासको श्रीगुसांईजीनें अच्युत दाससों पूछौ जो अच्युतदास तुमको ऐसो दुःख कहाहै तब अच्युतदासने श्रीगुसांईजीसों कह्यौ जो महाराज श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको तौ श्रीनाथजीने आज्ञा दीनी है जो तुम जीवनको ब्रह्म सम्बंध करावो सो साठलाख जीवनको तुमद्वारा अंगीकार करनो है और श्रीआचार्यजी महाप्रभूनेतो तुमको सोंपे है और तुम जीवनको अपराध देखन लागे और जीवतौ सदा अपराधहीते भरचो है और जीवनको अंगीकार कैसें होयगो तब श्रीगुसांईजी यह बात सुनिकें आप भगवानदासको हाथ पकरिके श्रीगोवर्द्धन ऊपर लेचढे और श्रीगोवर्धननाथजीकी सेवा जा रितिसों करते ता रीतिसों सेवा करनकी आज्ञा दीनी और कही जो अबते सावधानीसों सेवा करियौ और सामग्री आछी भांतिसों करियौ तब भगवानदासने ता समय श्रीगुसांईजीके आगे नयौ

पद करिकें गायौ सो पद ॥ राग सारंग "श्रीविठ्ठलेशचरण कमल" ॥ सो यह पद गायौ सो सुनिकें श्रीगुसांईजी बहुत प्रसन्न भये पाछें भगवानदास सावधानीसों सेवा करन लागे ताते भगवानदास श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हैं सो इनकी वार्ता अब कहांताईं लिखिये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ६० ॥

अथ अच्युतदास सनाढ्य ब्राह्मण तिनकी वार्ता ।

सो वे अच्युतदास मानसीगंगाऊपर रहते तहां चक्रतीर्थ है तहां रहते सो नित्यशृंगारके समय श्रीनाथजीके दर्शनको आवते सो दर्शन करिकें अपने स्थलको आवते सो उन अच्युतदासजीनें श्रीनाथजीकी तीन परिक्रमा दंडौती करीहुती तब श्रीगुसांईजी अच्युतदासके ऊपर बहुत प्रसन्न भये और श्रीगुसांईजी अपने श्रीमुखसों कहते जो अच्युतदास बडे भगवदीय हैं और बडे महापुरुष हैं सो वे अच्युतदास श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके तथा श्रीगुसांईजीके ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ता कहांतांईं लिखिये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ६१ ॥

अथ अच्युतदास गौडब्राह्मण तिनकी वार्ता ।

सो वे अच्युतदास बडे भगवदीय हैं और श्री-आचार्यजी महाप्रभूनने इनके माथे श्रीमदनमो-हनजीकी सेवा पधराईहुती आपको पाट बैठारेहुते सो अच्युतदास श्रीमदनमोहनजीकी सेवा नीकी भांतिसों करते तब श्रीमदनमोहनजी आप अच्यु-तदाससों सानुभाव हुते बातें करते और अच्युत-दास ऊपर श्रीठाकुरजी ऐसी कृपा करते और एक दिन अच्युतदास श्रीनाथजीके दर्शनको आवत हुते तब श्रीगोवर्द्धननाथजीकी एक दंडौती परि-क्रमा करते ऐसे भगवदीय हैं और जब श्रीगुसां-ईजीके पास आवते तब श्रीगुसांईजी अच्युतदा-सकों दंडौत न करन देते और कहते जो ऐसे श्री-आचार्यजी महाप्रभूनके कृपापात्र भगवदीयहैं ताते इनको दंडवत न करन दीजियै पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने लौकिक लीला आसुरव्यामोहलीला दिखाई तब अच्युतदासनें श्रीमदनमोहनजीकों श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके घर पधराये आप श्री-बद्रीनाथजीके दर्शनको उठिगये तब उहां जायके

श्रीबद्रीनाथजीके दर्शन करिकें अन्नजलको त्याग करिके अपनी देह छोडी पाछें श्रीमदनमोहनजीको कह्यौ गोपीनाथजीने श्रीगोवर्द्धननाथजीके पास पधराये वे अच्युतदास श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे भगवदीय हैं जिन श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको स्वरूप साक्षात् करिजान्यौ और उनकी श्रीमहाप्रभूनके ऊपर बडी आसक्तिहुती जो परोक्ष भये पाछें अन्नजलको त्याग कीयौ तब देह छोडी भक्तिमार्गको स्वरूपके बल विरहासक्ति है सो वे अच्युतदास ऐसे भगवदीय हैं तातें इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ६२ ॥

अथ अच्युतदास सारस्वत-ब्राह्मण तिनकी वा० ।

सो एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके संग अच्युतदासने पृथ्वीपरिक्रमा दीनीहुती सो श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें अच्युतदासकों अपनी पादुकाजीकी सेवा दीनी सो अच्युतदासने अति उत्तमरीतिसों श्रीपादुकाजीकी सेवा कीनी तातें श्रीआचार्यजी महाप्रभू अच्युतदासको नित्य दर्शन देते और जो श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें संन्यास ग्रहण

कीयौ सो केवल उनके भावार्थ कीयौ तब एक वै-
ष्णवसों श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यौ जो एक
डौंगी काशीको भाडेकर लाउ तब वह वैष्णव डौंगी
भाडे कर लाये ताके ऊपर श्रीआचार्यजी महा-
प्रभू चढिकें बनारस पधारे तहां संन्यास डेढ मही-
नातांई राख्यौ तब वह वैष्णव जो काशीमें गयौ
हो सो काशीते कडामें आयौ तब अच्युतदास त-
था सब वैष्णवनसों कह्यौ जो श्रीआचार्यजी महा-
प्रभूने संन्यास ग्रहण कीयौ फेरि काशी पधारे
सो उहां डेढ महीना तांई रहे पाछे आसुरव्यामो
हलीला दिखाई तब अच्युतदासनें वा वैष्णवसों
कह्यौ जो तोको भ्रम भयौ होयगो तब वा वैष्णवने
कह्यौ जो मैं श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके साथ हुतौ
सो काशीते देखिकें अबही हौं आयो हौं तब अच्यु-
तदासने कह्यौ जो ऐसी कबहू न करे जो जीवनको
आसुरव्यामोहलीला दिखावत हैं तब अच्युतदा-
सनें मंदिरके किवाड खोलिकें वा वैष्णवको श्री-
आचार्यजी महाप्रभूनके दर्शन करवाये तब देखे
तो श्रीआचार्यजी महाप्रभू बिराजे हैं और पोथी
देखत हैं तब वा वैष्णवनें दंडौत कीनी तब श्रीआ-
चार्यजी महाप्रभूनें कह्यौ तुम कछू संदेह मति करौ

यह प्रागट्य लौकिकरीतिसों देह धरेकी लीलाहै और सिंहासन बैठक अलौकिक लीला नित्य है तातें यह लीला अब दशअवतार प्रगट हैं तातें तहां आयेहैं तातें संदेह न करनों यह आसुरव्यामोहलीला है सो श्रीगुसांईजी सर्वोत्तममें लिखे है जो "प्राकृतानुकृत व्याज मोहिता सुरमानुषः" मनुष्य देह धरे ताकी यह लीला है सो अच्युतदास ऐसे स्वरूप नेष्ठाके जिनको श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके स्वरूपको ऐसो दृढ विश्वास है वे अच्युतदास श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हैं तातें इनकी वार्ता कहांतांई लिखिये॥ प्रसंग॥ १॥ वैष्णव॥ ६३ ॥

अथ नारायणदास अम्बालेके वासी हुते तिनकी वार्ता।

सो वे नारायणदास देशाधिपतीके चाकर हुते तिनको राजद्वारको काम बहुत हुतो तातें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके दर्शनको आय सकते नाहीं परि अंतःकरनमें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके दर्शनकी आतुरता बहुत जो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके दर्शनको कब जाऊंगो परि आय सकते नाहीं तातें नारायणदासनें एक चाकर राख्यौ ताको महीना रुपैया चारिको कीनों और वासों कह्यौ जो तेरो यह

काम है जो मोंकों छिन २ में सुरत दिवायौ करि
जो भैयाजी श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके दर्शनकों
कब चलोगे यह कहिकें सुनाऊ जो हमको श्रीआ-
चार्यजी महाप्रभूनके दर्शनकी सुधि रहै सो वह
चाकर योंहीं कह्यौ करे तब नारायणदास अपने
कार्यमें बैठे तब आगे आयकें ठाडो होयकें एक
घडी उपरांत कहै जो भैयाजू श्रीआचार्यजी महा-
प्रभूनके दर्शनकों कब जाउंगे ऐसेही नित्य प्रति
कहै और नारायणदास श्रीआचार्यजी महाप्रभू-
नको भेंट बहुत पठावतें नारायणदास ऐसे भगव-
दीय हैं सो उनको चित्त सदा श्रीआचार्यजी महा-
प्रभूनके चरणारबिन्दसे रहतौ ताते श्रीआचार्यजी
महाप्रभू बहुतहीं प्रसन्न रहते वे नारायणदास ऐसे
कृपापात्र भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ता कहांतांई
लिखिये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ६४ ॥

अथ नारायणदास भट्ट मथुरामें रहते तिनकी वार्ता।

सो नारायणदासको श्रीमदनमोहनजीनें आज्ञा
दीनी हुती जो बृन्दावनमें अमुकी ठौर हों सो व-
हांसों काढिकें मोंकों बाहिर पधराऊ तब नारायण-
दास जायकें श्रीमदन मोहनजीकों बाहिर पधरायकें

पाछे जब श्रीगोपीनाथजीने श्रीमदनमोहनजीकों पाट सिंहासन बैठारे तब कितनेक दिनताँई नारायणदासनें सेवा कीनी तब उनके पाछें उनकौ कोऊ न हुतौ ताते बंगाली गोडीया सेवा करन लागे श्रीगोपीनाथजीनें पाट बैठारे ताते सब कोऊ दर्शनको जात है वे नारायणदास ऐसे भगवदीय हैं तिनको श्रीमदनमोहनजीनें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको सेवक जानिकें नारायणदासके उपर कृपा कीनी ताते वे नारायणदास श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ता कहांताँई लिखिये प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ६५ ॥

अथ नारायणदास चौहान ठट्ठेके वासी तिनकी वार्ता।

सो वे नारायणदास ठट्ठेके पादशाहके दीवान कुल्लकुल्ला हुते जो नारायणदास दीवान करे सो होय पाछें कितनेक दिनमें वह पादशाह नारायणदासके ऊपर कोप्यौ तब नारायणदासको पकरयौ तब बहुत मारयौ और बन्दीखानेमें दे दीयौ पाछें पचास लाख रुपया वाके माथे दंडको कीयौ सो दिन प्रति पांच हजार भरनौ और जा दिन रुपैया न भरे

ता दिन नारायणदासके पांचसौ कौरडा मारने पादसाहने ऐसों बंधान कीयो तब एक समय श्री-आचार्यजी महाप्रभूनके सेवक दोऊ भाई ब्राह्मण तिनने अपने मनमें विचार कीयौ जो ठट्ठेमें नारा-यणदास दीवान है सो हम उनके पास चले हमकों अपनी कन्याको विवाह करनो है ताते जो वे कछू देय तौ कन्याको विवाह करें सो ऐसो विचारके वे दोऊ भाई अपने घरते ठट्ठेको चले सो ठट्ठेमें जायकें पहुंचे तब वहां जायकें सुन्यौ जो नारायणदास तौ बंदीखानेमें पर्यौ है तब वह दोऊ भाई अपने मनमें विचार करन लागे जो अब कहा करियै ऐसो वि-चार इन दोऊ भाईननें कीयौ जो अब यहांसों च-लियै तब प्रातःकाल यह बात नारायणदासनें सुनी जो वे दोऊ भाई श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके सेवक गांवमें आये हैं सो उनने सुनी जो नारायणदासतौ बंदीखानेमें पर्यौ है ताते अब यहांसे प्रातःकाल चलेंगे तब नारायणदासनें उनके पास मनुष्य पठा-यौ और कहवाय पठाई जो तुम आये सो मेरो बडा भाग्य है मेरे पास तुम प्रातःकाल होयकें द-र्शन अपने मोकों देकें जैयौ तब वे दोऊ भाई प्रातः-काल उठि देहकृतिकरि तिलक मुद्रा करि नित्य-

कर्मसों पहुंचकें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको चर-
णामृत और महाप्रसाद लेकें जहां नारायणदास
बंदीखानेमें हुते तहां दोऊ भाई नारायण दासके
पास जाय मिले तब नारायणदासने उनको देखिकें
परम आनंद भयो और बहुत प्रसन्न भये तब उन
दोऊ भाईननें चरणामृत और महाप्रसाद नारायण
दासको दीनों तब नारायणदासने लीनों और कह्यौ
जो मोकों बंदीखानेमें वैष्णवनको दर्शन भयो तब
नारायणदासने श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके कुशल
समाचार पूछे पाछें भगवद्वार्ताके प्रसंग करनलागे
इतनेमें नारायणदासके घरतें पांचहजार रुपैयानकी
थैली आई सो द्वारपालने थैलीके उपर मोहरछाप
करिकें नारायणदासके पास पठाई तब नारायण-
दासने वे पांचों थैली उन दोऊ भाईनको सौंपि दीनी
और दंडौत कीनी और कह्यौ जो अब तुम वेगि
पधारो और श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकों मेरी दं-
डोत करियो और तुम अपनी कन्याको विवाह या
द्रव्यते भली भांतिसों करियों तब वे दोऊ भाई
ब्राह्मण नारायणदासतें विदा होयकें चले तब इत-
नेंमें पादसाह बोल्यौ जो पांचौ थैली नारायणदास
वारी लावौ तब दरबान बोल्यौ जो पांचौ थैलीन

ऊपर मोहर छाप करि नित्य नारायणदासके पास पठावत है त्योंही पठाई हैं तब पादसाह बोल्यौ जो खजानचीको बुलावो तब मनुष्य जायके खजानचीको बुलाय लाये तब खजानची आगें आय ठाडौ भयौ तब पादसाहनें खजानची सों पूछौ जो क्यौंरे तेरेपास नारायणदासके पासते पांच थैली आई हैं तब खजानचीनें कही जो साहब मेरे पास तौ नाहीं आई तब पादसाहको बहुत क्रोध भयौ और कह्यौ जो नारायणदासको बुलावौ तब नारायणदासको बंदीखानेमें ते बुलाये सो बुलायके पातसाहके पास ठाडौ कीयौ तब नारायणदास ते पातसाहनें पूछौ जो नारायणदास आज थैली क्यों नाहीं आई पाछे थोडोसो गाढो कोरडा करिके कोरडावारो बुलायौ और पातसाहनें पांचसो कोरडाको हुक्म दीयौ और पातसाह बोल्यौ जो नारायणदास सांच कहि जो आज थैली क्यौं नाहीं आई द्वारपालनें तौ मुहुर छाप करिकें तेरे हवाले कीनी और तेने यह कहा कीयौ तू सांच कहि नाहीं तो कोरडा लागत हैं तब नारायणदास सलाम करिके बोल्यौ जो हजरत आज मेरे गुरुभाई आये हुते सो वे पांचौ थेली उनको दीनी और मेने अपने मनमें कह्यौ जो में आज मार खाय

रहूंगो परि यह घडी कहां हैं तब पातसाह चुप करि रह्यौ पाछें एक घडी बिचारिकें कह्यौ जो श्याबास तू अपने गुरुके मार्गमें ऐसे सांचौ हैं सो मैं तेरे ऊपर बहुत प्रसन्न तब पातसाहनें वाही समय बेडी कट-वाइके वाही समय घोडा तथा सिरोपाउ मंगायकें नारायणदासको पहरायौ घोडा दीयौ और निवा-ज्यौ तब फेरिके अपनौं कुल्लकुल्लांको दीमान राख्यौ जैसो पहिले हुतौ तैसेही कीयौ काम सब सोंप्यौ और नारायणदासके माथे दंड कीयौ हुतौ सो सब माफ करिके सिरो पाव पहरायकें कह्यौ जो जा घर होय आउ सो सिरो पाव पहिरकें घोडा ऊपर चढिकें नारायणदास घरको गये सो वे दोऊ भाई वैष्णव गांवमेंही हुते सो वे दोऊ भाइ वैष्णव सुनिकें नारायणदाससों मिलिवेको आये तब नारायणदास उनसों मिले भेंटे और कह्यौ जो मेरे गुरूके सेवक आये तौ मैं छूटौ तब उन वैष्णवननें कह्यौ जो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी कृपाते क्यों न छूटे तब नारायणदासनें ६ हजार मोहरकी एक थेली वैष्ण-वनके हाथ श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकों भेंट पठाई पाछें वे दोऊ भाई उहांसो चले सो कितनेक दिनमें श्रीगोकुल आये तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू श्री-

गोकुलमें हुते सो उन दोऊ भाई वैष्णवनने आयकें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको दर्शन कीयो और नारायणदासकी हजार मोहरनकी थैली आगे राखी तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें नारायण-दासके कुशल समाचार पूछे तब उन वैष्णवनने सब समाचार कहै तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू अपने श्रीमुखसों कहें जो जाको वैष्णव ऊपर ऐसो दृढ स्नेह हैं ताकौ कष्ट क्यों रहै पाछें वे वैष्णव ब्राह्मण श्रीआचार्यजी महाप्रभूनते बिदा होयकें अपने घरको गये सो बेटीको विवाह आच्छी भां-तिसो कीयो और पहले उनको नाम नारिया हुतौ सो सेवक भये पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें नारायणदास नाम धर्‍यो जाको ऐसो मन होय तापै श्रीठाकुरजी ऐसी कृपा करें प्रभूजीको नाम भक्त-वत्सल है सो अपनेको थोरेहीमें कृपा करत हैं सो वे नारायणदास ऐसे कृपापात्र हुते इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ६६ ॥

अथ एक क्षत्राणि अकेली सीहनन्दमें रहती तिनकी वार्ता ।

सो वा क्षत्राणीके श्रीनवनीतप्रियाजी बिराजे हैं

श्रीठाकुरजी सानुभाव हैं सो वह बाई अकिंचनसेवा जब करिपहुंचे तब सूतकाते तामें जो कुछ बढती आवे तासों निर्वाह करे सो घरके द्वारे काछि-नतरकारी बेचनआवे तब श्रीठाकुरजी मंदिरमेंते पुकारके कहें अरी अमुकी तरकारी बिकने आई है तू ले ऐसे श्रीठाकुरजी कहैं तब वह क्षत्राणी सब भांतिकी तरकारी लेहि सो केतिकतौ कच्ची समर्पै केतिक रसोईमें छौंकिकें समर्पै और कबहू काछि-नको शब्द श्रीठाकुरजी न सुने और वहू काछिन आगे निकसजाय तब वह बाई सामग्री कछूले न सके तब श्रीठाकुरजी वासों बहुत रारिकरें जैसे लौकिक लरिका राररकरे तैसे श्रीठाकुरजी वा क्षत्रा-णीसों झगरोकरें और एक दिन कछू पकवान बाल-भोगको होय न आयौ तब रोटी घीसों चुपरिकें रात्रिकेलिये ढांकिराखी सो जब रात्रि आधीभई तब श्रीठाकुरजी बोले वा क्षत्राणी बाईको जगाई और कही जो हों भूखोहों तब वा बाईनें कह्यौ जो लालजी पकवानतौ कछू नाहीं है और रोटी घृतसो चुपरी धरी है तब श्रीठाकुरजी कहे जो भलो रोटी-हीलाउ तब वा बाईने रोटी आगे आनि राखी तब श्रीठाकुरजीनें बाईसो कह्यौ जो तू मोकों रोटीकी

तुतुरीकरके दे तब वह बाई श्रीठाकुरजीके हस्तमें देत जाय तब अपने श्रीहस्तमें लेकें कतार २ कें आरोगतजाय पाछें जब जलपान करिकें पोढें पारि क्षत्राणीकें मनमें क्षोभ भयौ बहुत सो और कह्यौ जो सबारे उधारे लायके पकवान कर धरोंगी जो रात्रिकों श्रीठाकुरजीने फीकी अकेली रोटी आरोगी पाछें दूसरे दिन पकवान करिधर्यौ तब रात्रिकौं श्रीठाकुरजीनें मांग्यौ तब पकवानलेकें आगें धर्यौ तब श्रीठाकुरजी आरोगे तब कह्यौ जो अमुकी तेने पकवान तौ धर्यौ परिमोकों पकवान बीच रोटीकी तुतरीअति अद्भुतस्वादलगी तब वा क्षत्राणीने कह्यौ जो महाराज मैं कहाकरूं मेरे कोई कमावन वारौतो है नाहीं मैं तों अकेलीहों मोतेतो कबहूं कछू होय आवत नाहीं तब श्रीठाकुरजीनें वा क्षत्राणीसों कहौ जो तू नित्य पकवान काहेको करत है तू मोकों रोटी चुपरिकें धारिराख्यौकारि मोको तेरी रोटी बहुत रुचित है ताते तू संकोच मातिकरै हमकों तो तेरी रोटीचुपरी बहुत स्वाद लागत है पाछें वह रोटी कारि राखती सो श्रीठाकुरजी आरोगते वह क्षत्राणी श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी ऐसी कृपापात्र भगवदीयही ताते इनकीवार्ताको पार नाहीं सो अब कहांताईं लिखिये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ६७ ॥

अथ दामोदरदास कायस्थ सेरगढके वासी तिनकी वार्ता।

सो तिनकी सेव्य ठाकुर श्रीकपूररायजीसों बहुत गौरस्वरूप हुतौ तिनके पास श्रीनवनीतप्रियाजी बैठिते सो एक समय दामोदरदासकी स्त्री वीरबाई ताके गर्भ रह्यौ पाछें प्रसूत भई सो पुत्रजन्म भयौ सो घरकी बहू बेटी सब प्रसूतके कामकाज करन लागी सो श्रीठाकुरजीकी सेवामें विलम्ब भयौ वीरबाई प्रसूतकर्मतें बहुत कहें जो कोऊ सेवामें न्हाय श्रीठाकुरजीकी सेवामें अबेर होत है पारि कोई नाहीं न्हाय तब श्रीठाकुरजीनें वीरबाई सों कह्यौ जो तू स्नान करिके सेवा क्यों नाहीं करत है तब वीरबाई प्रसूतकर्मं ते उठिके श्रीठाकुरजीसों कह्यौ जो महाराज मेरी तो यह व्यवस्था है मोकों तो सेवामें आवनों नाहीं प्रसूतिकामेंहू अपरस छूइ जायगौ तब श्रीठाकुरजी महाराजने वीर बाईसों कह्यौ जो मोकों तौ सेवामें विलम्ब होय है मोको इतनी अवार भइहै और कोऊ न्हात नाहीं तातें तूही न्हाउ तब वह वीरबाई श्रीठाकुरजीके आग्रहतें उठिके प्रसूत कामेंतें न्हायके कछू देकें श्रीठाकुरजीकी

सेवा करिकें पाछें भोग समर्प्यौ पाछें समयानुसार भोग सरायकें अनोसर करिकें आय भोजन करिकें खाटमें सोय रही श्रीठाकुरजीकी आज्ञासों सेवा कीनी सो ऐसें चालीस दिनतांई नित्य करती तब श्रीठाकुरजीनें कह्यौ जो तेनें मेरी आज्ञा हूं मानी और वेद मार्गकी रीति हू राखी ताते श्रीठाकुरजी बहुत प्रसन्न भये तब चालीस दिन बीते तब शुद्ध स्नान करिकें सेवा करन लागी पहले पात्र वस्त्र सब अपरस दूरकीने और दूसरे सब नये मँगवाये पाछें भलीभांतिसों सेवा करन लागी ताते वह वीरबाई श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी ऐसी कृपापात्र भगवदीय ही ताते इनकी वार्ता अब कहांतांई लिखिये॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ६८ ॥

अथ स्त्री पुरुष दोउक्षत्रीहुते तिनकी वार्ता।

सो वे स्त्रीपुरुष दोऊजने सीहनंदमें आय रहै सो वह घर निपट छोटो हुतौ ताते श्रीठाकुरजी ता समय बैठते सो आधी कोठरीमें तो रसोई करते और आधीमें रहते और सैयाको ठौर न हुती ताते एक बांसको मेंडा कर राख्यौ हुतौ ताके ऊपर श्रीठाकुरजी पोढते आप स्त्रीपुरुष दोऊ जने रात्रको

आंगनमें सोय रहते ऐसे करत तब चातुर मासके दिन आये तब मेह बरषतौ तोऊ वे आंगनमें सोय रहते परिभीतर न सोवते तब श्रीठाकुरजी भीतरसों बोलते जो अरे अमुका अमुकीहौ तुम भीजत क्योंहौ भीतर क्यों नाहीं सोवतहौ बाहिर काहेकौ पौढे भीजतहौ ताते तुम भीतर आवौ और हमतौ ऊचें मेडापर हैं तुम नीचै क्यों नाहीं सोवतहौ तब वा क्षत्राणीनें कह्यौ जो महाराज तुमतौ ऊंचा मेडा ऊपर पौढतहौ और में नीचे कैसें सोऊं तब श्रीठाकुरजी प्रसन्न होयकें कहै जो कछू बाधक नाहीं तुम कछू संकोच मति करौ हम तुम ते प्रसन्न होयकें कहत है ताते तुम भीतर खुशीसों सोय रहौ पाछें तब वे दोऊजने भीतर सोमन लागे परि ऐसी भांतिसों सोवते मति कहूं स्वासवाजै ऐसे सावधानीसों सोवते सो वें स्त्रीपुरुष श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे कृपापात्र भगवदीयहै ताते इनकी वार्ता कहांताई लिखिये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ६९ ॥

अथ सुतार कारीगर अडेलमें रहते ति० ।

सो उन सूतार ऊपर श्रीआचार्यजी महाप्रभू बहुत कृपा करते वा सूतारके ऐसौ नेम हुतौ जो श्रीआचार्यजी महानप्रभूनके दर्शन विना एक दिन

न रहतौ ताते वह सूतार सब घरको कामकाज छोडिकेंनित्य श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके दर्शनको आवतौ तब घरके मनुष्य दुःख बहुत पावते ताके लियें श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप वा सूतारके घर पधारते वासों श्रीआचार्यजी महाप्रभू बहुत वार्ता करते और श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी माता इलंमागारूजी सो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी माता खीजती और कहै जो तुम ऐसे अनुचित क्यों करत हौ ऐसे उचित नाहीं ऐसे करिकें इलंमागारूजी बहुत रिस करती परि श्रीआचार्यजी महाप्रभू चौथे पांचवें दिन तौ पधारते ऐसी कृपा श्रीआचार्यजी महाप्रभू वा सूतारके ऊपर करते सो वह सूतार श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको ऐसे कृपापात्र भगवदीय हो ताते इनकी वार्ता कहांताई लिखिये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ७० ॥

अथ एक क्षत्री हुत ताकी वार्ता ।

सो वा क्षत्रीसों अन्य मार्गीयको स्नेह हुतौ सो एक दिन वह क्षत्री अन्यमार्गीयके घर गयौ तब वा क्षत्रीसों कह्यौ जो तुम आज यहांही पाक करियों तब वाके आग्रहते वा क्षत्री वैष्णवनें पाक उहां-

ही कीयौ तब पाक करिकें वा अन्यमार्गीय ठाकु-
रके आगें श्रीनाथजीको नाम लेकें भोग समर्प्यौ
पाछें समयानुसार भोग सराय वाको प्रसाद दीयौ
पाछें आपने लियो पाछें उहांही विश्राम कीयौ सो
निद्रा वसभये तब वा अन्यमार्गीयके सेव्य स्वरू-
पनें स्वप्नमें कह्यौ जो आजतौ हम भूखे रहे तब वा
अन्यमार्गीयनें कह्यौ जो तुमकों तौ वा वैष्णवनें
पाक भोग समर्प्यौ हौ और तुम भूखे कैसे रहिगये
तब उनके सेव्य श्रीठाकुरजीने कह्यौ जो वह तौ
श्रीनाथजी आप आरोगे है हमको तौ श्रीनाथजीने
उहांते दूरकीयौ तब वह अन्यमार्गीयको मित्र-
सोयो हौ ताको जगायौ तब वह जाग्यौ तब सब
समाचार कहे तब वा क्षत्रीनें कह्यौ जो मैं तोसों
केतीकवार कह्यौ जो तू श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको
सेवक होय सो याहीके लियें हमारे प्रभूजी श्रीआ-
चार्यजी महाप्रभूनकी कृपाते सेवकके हाथको
आरोगत है पाछे वह अन्यमार्गीय सब कुटुंब
सहित श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी शरण आये सब
समेत सेवक भयौ पाछें वाके स्वरूपको श्रीआचा-
र्यजी महाप्रभूननें पंचामृतसों स्नान करवायौ पाछें
पाट बैठारे तब पाछे भोग समर्प्यौ समयानुसार

भोग सरायके सब वैष्णवको बुलाय महाप्रसाद लिवायौ पाछें वह अन्यमार्गीय श्रीठाकुरजीकी सेवा भली भांतिसों करन लाग्यौ पाछें वह क्षत्री भलौ वैष्णव भगवदीय भयौ वा क्षत्री वैष्णवके संगते भलौ भगवदीय भयौ ताते संग करनों तौ वैष्णवको करनौ भगवदीयको करनो वह क्षत्री वैष्णव श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको ऐसौ कृपापात्र भगवदीय हौ ताते इनकी वार्ता कहांतांई लिखिये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ७१ ॥

लघुपुरुषोत्तमदास क्षत्री ति० वार्ता ।

सो वे लघुपुरुषोत्तमदास श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको तथा श्रीनाथजीको एक सार जानते श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकौ स्वरूप साक्षात पुरुषोत्तम करि जानते लघु पुरुषोत्तमदासकी श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऊपर बडी आसक्ति हुती ताते श्रीमहाप्रभूजी लघुपुरुषोत्तमदासके ऊपर बहुत प्रसन्न रहते लघुपुरुषोत्तमदास दूसरौ स्वरूप जानते नाहीं श्रीठाकुरजीको तथा श्रीमहाप्रभूजीको एक जानते वे लघुपुरुषोत्तमदास ऐसे कृपापात्र भगवदीय है ताते इनकी वार्ता कहांतांई लिखिये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ७२ ॥

अथ कबिराजभाट तिनकी वार्ता।

सो वे कबिराजभाट ब्राह्मण हुते सो तीन भाई हुते सो तीनों भाई श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं उनको समर्पण करवायौ पाछें श्रीनाथजी सन्निधान बहुत कबित्त पढे नये २ कबित्त करिकें श्रीनाथजीके सन्निधान कबित्त सुनावते पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके कबित्त बहुत कीये ताते श्रीआचार्यजी महाप्रभू कबिराज भाटके ऊपर बहुत प्रसन्न रहते सो वे कबिराजभाट श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ता अब कहांताई लिखिये॥ प्रसंग॥ १ वैष्णव॥ ७३॥

गोपालदास ठौराकेवासी ति० वार्ता।

सो गोपालदासके कीये छंद बहुत हैं सो गोपालदासकी श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऊपर बहुत आसक्ति हुती सो एक समय गोपालदास अडेल आय सो दूसरे दिन श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको जन्मोत्सव हुतो सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू मार्कंडेय पूजाको बैठे हुते ता समय गोपालदासने एक नयौ छन्द करिके गायौ॥ सोपद॥ रागबिलावल॥

माधौमास भारि वैसाख श्रीवल्लभहरि जन्म लीयौ ॥ यह सुनिकें श्रीआचार्यजी महाप्रभू बहुत प्रसन्न भय पाछें गोपालदासनें बहुत छन्द कीये सो वे गोपालदास श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हैं तातें इनकी वार्ता कहांताईं लिखियें ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ७४ ॥

जनार्दनदास चौपडा क्षत्री ति० वार्ता ।

एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभू श्रीनाथजीद्वार पधारे हुते पाछें श्रीगोकुल आये तब जनार्दनदासनें श्रीमहाप्रभूनको दर्शन कीयौ तब कह्यौ जो ये साक्षात् पूरण पुरुषोत्तम हैं ईश्वर हैं तब जनार्दनदासनें बीनती कीनी जो महाराज मोकों शरण लीजियै तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें जनार्दनदासको आज्ञा दीनी जो स्नान करिकें आऊ तब जनार्दनदास स्नान करिकें आयौ और दंडवत कीनी और बीनती कीनी जो महाराज मोकों नाम समर्पण करवाईयै तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें श्रीनाथजीके सन्निधान जनार्दनदासको समर्पण करवायौ पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी कृपातें जनार्दनदास भलौ वैष्णव

भयौ सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू जनार्दनदासके ऊपर बहुत कृपा करते वे जनार्दनदास श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे कृपापात्र भगवदीय है सो इनकी वार्ता कहांताई लिखियै ॥प्र०॥१॥वै०॥७५॥

गडुस्वामी सनाढ्य ब्राह्मण ति० वार्ता।

सो वे गडुस्वामी आप स्वामी कहावते सो एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभू वृन्दावनमें पधारे हुते तब गडुस्वामीको आज्ञा भई श्रीठाकुरजीने कृपा करिकें रात्रिको स्वप्नमें जनायौ जो सवारे श्रीआचार्यजी महाप्रभू इहां पधारेंगे सो तू इनकी शरण जैयौ तू सेवक हूजियौ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप सवारे पधारे तब गडुस्वामी स्नान करिकें जहां श्रीआचार्यजी पधारे हुते तहां गये तब जायकें गडुस्वामीनें दंडौत कीनी और बीनती करिकें यह कह्यौ जो महाराज मोको शरण लीजीये तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू मुसिक्यायकें कहै जो तुमतौ आप स्वामी हौ तुमको सेवक कैसे करिये तब गडु स्वामीनें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों बीनती कीनी जो महाराज मोको भगवद् आज्ञा भई है जो तू श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी शरण जैयौ

ताते महाराज मोकों शरण लीजियै तब श्रीआचा-र्यजी महाप्रभूननें गडुस्वामीको नाम दीयौ पाछें निवेदन करवायौ ता पाछें जो गडुस्वामीनें जो सेवक कीयै हुते तिन सबनको श्रीआचार्यजी महाप्रभून पास नाम दिवायौ पाछें वे गडुस्वामी बडे भगवदीय भये श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप गडुस्वामीके ऊपर बहुत प्रसन्न रहते सो वे गडुस्वामी ऐसे भग-वदीय है ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ७६ ॥

अथ कन्हैयासाल क्षत्री तिनकी वार्ता।

सो उन कन्हैयासाल क्षत्रीके ऊपर श्रीआचा-र्यजी महाप्रभू बहुत प्रसन्न रहते बडी कृपा करते श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें आप कृपा करिकें अ-पने ग्रन्थ कन्हैया सालको पढाये सोई ग्रन्थ कन्है-यासालके पासते श्रीगुसांईजीने पढे सो श्रीआचा-र्यजी महाप्रभूनकी कृपा ते सब स्फुर्द रूपभये सो वे कन्हैयासाल क्षत्री श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे परमकृपापात्र भगवदीय है ताते इनकी वार्ता कहांताईं लिखिये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ७७ ॥

अथ नरहरदासगोडिया तिनकी वार्ता।

सो एक दिन श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें नरहर दासके घर श्रीमदनमोहनजी पाटबैठारेहुते सो श्री-

मदनमोहनजीकी सेवा नरहरदासनें नीकी भांतिसों कीनी पाछें शरीर जब पर्यौ तब सेवा न होय आई तब नरहरदासनें श्रीठाकुरजी श्रीगुसांईंजीके घर-पधराये सो श्रीगुसांईंजी श्रीरघुनाथजीके पधरायै सो श्रीगोकुलचंद्रमाजीके पास जुदे बैठते हैं न्यारे सिंघासन ऊपर बिराजते सो श्रीगुसांईंजी नरहर दासके ऊपर बहुत प्रसन्न भयै वे ऐसे भगवदीय है और नरहरदासनें अपनें मनमें विचारीजो श्रीठाकु-रजी कबहू न सुख पावेंगे श्रीगुसांईंजीके घर सुखपा-वेंगे सो वे नरहरदास श्रीगुसांईंजीके ऐसे परम कृपा-पात्र भगवदीय है सो ताते इनकी वार्ता कहांतांई लिखिये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ७८ ॥

अथ बादरायणदास तिनकी वार्ता ।

सो बादरायणदास और उनकी स्त्री मोरबीमें रहते सो बादरायणदासको पहिलोनाम बादा हुतौ सो एक समय आछे भट्ट द्वारका श्रीरणछोडजीके दर्शनको जातहुते सो मोरबीमें रात्रिको वसे सो बादरायणदासनें उनको राखे तब बादरायणदासनें उन पास नाम पायौ पाछे आछें भट्टकेपास श्रीभा-गवत श्रवण कीयौ तब श्रीभागवत सम्पूर्ण करिकें

बादरायणदासते बिदाहोयकें पाछें भट्ट द्वारिका श्रीरणछोडजीके दरशनको गये तब कितनेक दिन पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप द्वारिका श्रीरणछोडजीकें दरशनको पधारे हुते तब मोरबीमें उतरे सो बादरायणदास और उनकी स्त्री दोऊ जनेननें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके पास फेरिके नाम पायौ पाछें समर्पण करवायौ पाछे श्रीआचार्यजी महाप्रभू मोरबीमें दिन द्वै रहे तापाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप श्रीरणछोडजीके दर्शनको पधारे तब बादरायणदास और उनकी स्त्री श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके संग गये तब दोऊ स्त्री पुरुष श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी सेवामें रहै सो उन दोऊननें ऐसी सेवा कीनी जो श्रीआचार्यजी महाप्रभू उनके ऊपर बहुत प्रसन्न भये तब याको नाम पहले बादा हुतौ सो श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें याको नाम बादरायणदास धर्यौ ता पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभू द्वारिकासों चले तब ये दोऊ जनें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके साथ गये सो मोरबीलों साथ आये पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनते आज्ञा मांगकें मोरबीमें रहै पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप श्रीगोकुल पधारे वे बादरायणदास श्रीआचार्यजी

महाप्रभूनके ऐसे कृपापात्र भगवदीयहै ताते इनकी वार्ता कहांताई लिखिये॥ प्रसंग ॥ १॥ वैष्णव॥७९॥

सद्दूपांडेमानिकचंदपांडे इनकी स्त्री तथा नरौबेटी आन्यौरमें रहते ति० वा० ।

सो जब श्रीआचार्यजी महाप्रभू पृथ्वीपरिक्रमा करत झारखंडमें पधारे तब श्रीनाथजीने श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों कह्यौ जो तुम मेरी सेवाको चलावौ ब्रजमें श्रीगोवर्द्धन पर्वत है तहां हम तीन दमन है (देवदमन, नागदमन,इन्द्रदमन,) तिनके मध्यमें हम देवदमन हैं सो देवदमन मेरो नाम है सद्दूपांडेको बडौभाई मानकचंदपांडे है तहां हम प्रगट भये हैं तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू परिक्रमा झारखंडमें राखिकें ब्रजको पाउधारे सो सेवक हूं पांचसात साथ है दामोदरदास हरसानी कृष्णदासमेघन रामदासजी माधोदास प्रभृत इत्यादिक श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके सेवक सब आन्यौरमें आये सो मध्याह्न समय श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप सद्दूपांडेके घर पावधारे सो एक बडौ चौतरा सद्दूपांडेके घरके द्वारें हुतौ ताके ऊपर श्रीआचार्यजी महाप्रभू विराजे तब सद्दूपांडेनें श्रीआचार्यजी

महाप्रभूनसों कह्यौ जो स्वामी कछू खाऊगे तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यौ जो हम तौ कछू न खायंगे तब कृष्णदास मेघनने कह्यौ जो येतौ अपने सेवकके हाथको लेत है बिना सेवक तो ये काहूके हाथको लेत नाहीं इतनेमें श्रीगोवर्द्धन पर्व-तते श्रीनाथजी पुकारे जो नरौ मेरौ दूध लाउ तब नरोने कह्यौ जो महाराज आज तौ हमारे पाउन आये हैं ताते दूध नाहीं तब श्रीनाथजीने कही जो तेरे पाउने आये हैं सो तो भली भई हम कहा करैं परि मेरौ दूध तौ लाउ तब नरो बोली जो वारीलाल लाई तब नरौ कटोरा भरि ले गई श्रीनाथजीको प्यायौ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें दामोदर-दाससौं पूछौ जो दमलातें कछू सुन्यौ तब श्रीआ-चार्यजी महाप्रभूनसों दामोदरदासनें कह्यौ जो महाराज यह शब्द और झारखंडको शब्द एक मिलत है सो ऐसौ जान्यौ परत है जो यहांई प्रगटे हैं सवारे चलेंगे तब इतनेमें नरो दूध प्यायकें आई तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें नरोसौं पूछौ जो कहां गई हुती और कहा लेगई हुती तब नरो बोली जो राज देवदमनको दूध प्याय आयी हों तब नरोपे माँग्यौ जो यामें दूध है तब नरोने कह्यौ जो रंचक

है तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनें कह्यौ जो यामेंते
बच्यौ है सो हमको दें तब नरो बोली जो महाराज
घरमें बहुत दूध है तब सद्दूपांडेने श्रीआचार्यजी
महाप्रभूनसों बीनती कीनी जो महाराज हमहारे
आपजीते अब हमको नाम दीजियै तब श्रीआचा-
र्यजी महाप्रभूनके मानिकचन्द तथा सद्दूपांडे तथा
इनकी स्त्री तथा नरो ये सब सेवक भये उनके ऊपर
आपने हाथ फेरौ और नाम दीयौ ता पाछें वह दूध
लीयौ पाछें उनकेहू घरकौ दूध दही अंगीकार क-
र्यौ सो वे भले भगवदीय हैं तब श्रीआचार्यजी
महाप्रभूनने सद्दूपांडेसों पूछौ जो कहौ यहां ऊपर
देवदमन प्रगट भये हैं सो कोन भांतिसो प्रगट भये
हैं तिनको प्रागट्य तुम हमसों कहौ सो श्रीआचा-
र्यजी तो साक्षात् ईश्वर हैं आपही करत हैं और
आपही पूछत हैं सो काहेते जो आप जीवके ऊपर
कृपा करिवेके लीये तब सद्दूपांडेने श्रीआचार्यजी
महाप्रभूनसों कह्यौ जो महाराज एक हमारे गांम-
कौ ग्वाल हुतौ सो सब गांमकी गायनकौ चरावतौ
सो सब प्रकार सद्दूपांडेनें श्रीआचार्यजी महाप्रभू-
नके आगें कह्यौ सो सब श्रीआचार्यजी महाप्रभू-
नने सुन्यौ सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू तौ आप

पूरण पुरुषोत्तम हैं आपही करत हैं सो वे सद्दूपांडे तथा माानिकचंद पांडे और सब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं जिनके पासते श्रीआचार्यजी महाप्रभू तथा श्रीनाथजी जो चाहिये जो सो मांगिलेते और आप जिनके घर पधारते ॥ प्रसंग ॥ १ ॥

और एक दिन श्रीनाथजी इनके घर दूध पीवेको सोनेको कटोरा ले आये तब श्रीनाथजीनें नरोसो कह्यौ जो दूधलाउ तब नरोतौ वा कटोरामें दूध डारत जाय और श्रीनाथजी आप आरोगत जाय सो दूध पीके श्रीनाथजी आप तौ पधारे और कटोरा वहांही भूलि आये तब सवारे भये पाछें मंगलआरतीके समय भीतरियानें देखो तौ मंदिरमें कटोरा नाहीं तब इतनेमें नरौ कटोरा ले आई और कह्यो जो यह कटोरा लेउ रात्रिको लरिका भूलि आयौ है तब सबजने बहुत प्रसन्न भये वह नरौ ऐसी भगवदीयहै ॥ प्रसंग ॥ २ ॥

और एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों श्रीनाथजीनें कह्यौ जो मोकों गाय मंगाय देउ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें दामोदरदास हरसानीसों कह्या जो श्रीनाथजीने गायनके लिये आज्ञा

दीनी है सो श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें अपने हस्तको छल्ला सुवर्णको दीनौ और दामोदरदास हरसानीसों कह्यौ याके दामनकी गाय ले आवो तब दामोदरदासने वह छल्लासद्दूपांडेको दीनों और कह्यौ जो याको वेचिकें याके दामनकी गाय ले देउ श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने गाय मँगाई है तब सद्दूपांडेने कह्यौ जो श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप गायनको कहा करेगें तब दामोदरदासने कहौ जो श्रीनाथजीने श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों गाय मँगाई है ताके लिये उनने कही है तब सद्दूपांडेनेकही जो मेरे यहांगायहै सोकोनकीहै वहतो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी है जोचाहियै सोलीजियै तब दामोदरदासनेकही जोश्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी ऐसी हीआज्ञा है ताते याको बेचिके गाय ले देउ तब सद्दूपांडेनें वह छल्ला बेचिके ताकी गाय दो ले दीनी सो दोऊगाय श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें श्रीनाथजीको समर्पि पाछें दस गाय सद्दूपांडेनें श्रीनाथजीकी भेटकीनी पाछें सब वैष्णवनको खबर भई जो श्रीनाथजीनें गायनके लिये श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों आज्ञाकरी है सो वैष्णवननें गाय पठाई काहूनेदोय काहूने चारि काहूनेंदश पठाई ऐसेकरत दोयसेके

आसरे गायभेलीभई सोश्रीनाथजीको गाय बहुत प्रिय हैं तबते श्रीनाथजीको नाम गोपाल श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें धऱ्यो है तब श्रीगुसांईजीनें गोपालनामते गोपालपुर गांव वसायौ ताहीते सूरदासजीनें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके प्रगटगोपाल नामकीये हैं प्रथम गाय सुरगायो सोवे सद्दूपांडे तथा नरौ सबकोउ श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हैं सो इनकी वार्ताको पार नाहीं ताते इनकी वार्ता अब कहां ताईं लिखिये ॥ प्रसग ॥ ३ ॥ वैष्णव ॥ ८० ॥

अथ नरहरदास संन्यासी तिनकी वार्ता।

सोएक वेनाकोठारीहुतौ ताने प्रथम नरहरदास संन्यासीकेपास नामपायौ हुतौ सोएकसमय श्रीआचार्यजी महाप्रभून तबद्वारिका पधारेहुते तब नरहरदास संन्यासी और वेनाकोठारी श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके साथहुते सो द्वारिकागये तहां श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप नरहरदास संन्यासीकेउपर बहुत प्रसन्न भये तब नहरदास संन्यासीनें बीनतीकीनी जो महाराज मेरे ऊपर कृपाकरिये तौमें प्रार्थना करतहों तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू
[illegible] पाछें कहें जो कहा

प्रार्थना करत है तब नरहरदास संन्यासीनें कह्यौ जो महाराज वेना कोठारीको शरणलीजियै तब श्री आचार्यजी महाप्रभूननें कृपाकरिकें नामदीयौ समर्पणकरवायौ पाछें वे नरहरदास संन्यासीके ऊपर प्रसन्न बहुत भये सो वे नरहरदास संन्यासी श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसें कृपापात्र भगवदीय हैं तातें इनकी वार्ता कहांताई लिखियै ॥ वै० ८१ ॥

अथ गोपालदास जटाधारी श्रीनाथजीकी खवासी करत हुते तिनकी वार्ता।

सो श्रीनाथजी उनसों सानुभाव हुते और गरमीके दिनमें श्रीनाथजीको भोग आवतौ तब गोपालदास आप नेत्र मूंदके पंखाकरते तब रात्रिको श्रीनाथजी जगमोहनमें पोढते तहां गोपालदास ठाडे होयकें आंखमूंदिके पंखाकरते चारपहरठाडेरहते परिदेह आलस कछू बाधा न करतौ रात्रिकेविषै श्रीठाकुरजीके श्रीस्वामीजीके वचन सुनतौ तब आप कहते जो गोपालदास आंखखोलदेउ तेरौ परदाके सो तब गोपालदास कहते जो महाराज मोको श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी आज्ञा नाहीं तातेमें क्यों कर

खोलूं तब कबहूं श्रीनाथजी अपने श्रीहस्तसों गोपालदासके मुखमें मेलते ऐसी कृपा करते तब ऐसे करत कितनेक दिन बीते तब एक दिन गोपालदासनें वीनती करिकें कही जो महाराज मोकों पृथ्वी परिक्रमा करिवेकी आज्ञा दीजिये मेरो मनोरथ पृथ्वीपरिक्रमा करिवेको है तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यो जो अवश्य करिये पाछें गोपालदास आज्ञा मांगिकें पृथ्वीपरिक्रमाको गये तब और वैष्णवननें कह्यो जो महाराज ऐसे कृपापात्रको ऐसो मन क्यों कर होय तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यो जो यह गयो तो है पारि जाय सकेगो नाहीं मजल दोय चारि जायगो तब याको बिरह होयगो ता बिरहकारिकें याकी देह छूटेगी तब सब वैष्णवननें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों बीनती कीनी जो महाराज इनकी देह याभांति क्यों पडे तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कह्यो जो महदअपराध इन श्रीठाकुरजीसों बिगाडो ताको नाम महदअपराध कहियै इनसो एक महद अपराध पड्यो है तासों इनकी यहगति भई तब सब वैष्णवननें पूछौ जो महाराज इनकी देह या भांतिसो पडेतो सही पारि महदअपराध काहेसों कहियुत है तब श्रीआचार्यजी

महाप्रभूननें कही जो यह गोपालदास पहिलें श्रीनाथजीकें बागकी रखवारी करतौ सो एक श्रीठाकुरजीको सेवक ब्राह्मणको लरिका हुतौ सो रात्रिकों वा बागमेंते फूल चुरायकें लेजातौ सो एक दिन गोपालदासनें वाको पकऱ्यो सो वह भाज्यो सो वह अपने मंदिरमें ढुबक्यौ सो गोपालदासनें जायकें वाके मुक्कीकी मारी सो बात अब श्रीठाकुरजीको वह बात सुधि आई जो याकों महदअपराध पऱ्यौ है ताते पृथ्वीपरिक्रमाकी इच्छा भईहै सो गोपालदास पांचचारि मजल गयौ पाछें बिरह भयौ सो बिरहकरिकें गोपालदासनें देह छोडी तब यह बात श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें सुनी तब अपनें श्रीमुखते कहें जोगोपालदासके परलोकमें तौ हानि नाहीं जो यह श्रीनाथजीके चरणन पास पहुंचौ ताते भगवदीयको सर्वथा बिगाड न करनो भगवदीयको बिगाड करेतौ याभांतिसों होय भगवदीयके बिगाडे ते गोपालदासकी यह गति भई वे गोपालदास श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे परम कृपापात्र भगवदीयहैं ताते इनकी वार्ता अब कांताई लिखिये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ८२ ॥

अथ कृष्णदास ब्राह्मण तिनकी वार्ता ।

सो वह कृष्णदास वा गाममें रहते परि अकिं-
चन रहते सो एक समय वैष्णव दस पन्द्रह मिलकें
श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको दर्शनको अडेलकों
जातहुते सो जा गांवमें कृष्णदास रहते ता गांवमें
आये सो कृष्णदासके घर आये तब कृष्णदासतो
घर हुते नाहीं कछू कार्यार्थके लियै कोस तीन ऊपर
गयै हुते और कृष्णदासकी स्त्री घर हुती तब वा
स्त्रीनें उन वैष्णवनकौ साष्टांग दंडवत कीनी श्रीकृ-
ष्णस्मरण कहि बहुत आदर सनमान करिकें अपने
घरमें बैठारे पाछें मनमें बिचारें जो अब कहा करियै
तब सुधिआई जोवह बनिया नित्य टोक्यो करतहै
जो तू मोसों मिलि तू मांगेगी सो देउंगो सो आज
वासों सीधोसामग्री लाऊं ऐसे बिचारिकें स्त्रीचली
सो वा बनियाकी हाटपै गई तब वा बनियाने टोकी
तब वा बनियासों स्त्रीनेंकही जो मैं तोसों कालि मि-
लूंगी तू मोकों आज सौदा चाहियतहै सो दै तब वा
बनियाने कह्यौ जो तू मोसों कौल करतो मैं मानूं
तब वा स्त्रीने वासौ कौलकरि दीनों तब वा स्त्रीको
सीधोसामग्री चहियतहुतों सो दीनों तब लेकें घर
आई तब घरआयकें रसोई करि श्रीठाकुरजीकों

भोगसमर्प्यों समयानुसार भोगसराय अनोसरि करिके पाछें वैष्णवनको महाप्रसाद लिवायौ तब वैष्णवनने महाप्रसाद भलीभांतिसों लीनों पाछें कृष्णदास घर आये तब वैष्णवनसों मिले दंडवत करिकें भीतरगये तब स्त्रीसो कह्यौ जो कहा खबरि है वैष्णवनकों महाप्रसाद लिवाईये तब स्त्रीने कह्यौ जो प्रसादतौ लिवायौहै तब कृष्णदासनें कह्यौ जो सीधोसामग्री कहांते लाई कहा प्रकारकीयौ तब जो प्रकारकीयौहुतौ सो सब कह्यौ और कह्यौ जो यह बनिया मोसों नित्य टोकाकरतौ जो तू मोसो एक दिन मिलि तू कहेगी सो देउंगो तब आजवासों कोलकरार करिकें सीधोसामग्री लाइहों तब कृष्णदास वा स्त्रीके ऊपर बहुत प्रसन्नभये पाछें स्त्रीपुरुष दोऊजनेनने सीरो महाप्रसादलीयौ पाछें कृष्णदास वैष्णवनकेपास आयबैठे सबरी रात्रि भगवद्वार्ता करतवीती जब सवारोभयौ तब सब वैष्णव बिदा होयके चले तब कृष्णदास थोरीसी दूर पहुंचावन गयौ पाछें आप घरआय स्नानकरि श्रीठाकुरजीकी सेवा करिकें यावृतकोगये पाछें वा स्त्रीने रसोईकरि श्रीठाकुरजीको भोगसमर्प्यों भोगसराय अनोसरकरी महाप्रसाद टोकिधरयौ तब कृष्णदास घरि सांझको

आये तब वही सीरो महाप्रसाद दोऊजनेनने लीयौ तब कृष्णदासने अपनी स्त्रीसो कही जो तुमने कालि वा बनियासों कौलकीयौहुतो सो वह बनिया पेडों देखत होयगो ताते वाका कौलपूरो करिये तो भलौहै तब वह स्त्री उबटनोंकरि न्हायके स्त्रीजनके शृंगारहौतहैं सो सबकरिकें वह स्त्रीचली सो वरषाके दिन हुते सो मेहवरषगयौहुतौ सो मार्गमें कींच भईहुती ताके लिये कृष्णदासनें अपनी स्त्रीसों कही जोतू मेरे कांधेपै बैठले मैं पहुंचाय आऊ मार्गमें कीचि बहुतभईहै तेरेपाय कीचमें भरिजायंगे सो वह बनिया देखिकें तेरौ अनादर करेगो तब वा स्त्रीको अपने कांधेपर चढायकें लेचले सो वा बनियाकी हाटकेआगे उतारदीनी तब वा स्त्रीनें वा बनियाकों हैलापारकेंकहो जो किवाड खोलि तब वा बनियाने कींवाडखोलिदीने और वा स्त्रीको भीतरलीनी तब वह बनिया पायधोयवेको पानी ले आये और कह्यौ जो पायधोय तब स्त्रीने कह्यौ जो मेरेपाय कीचसो भरेनाहीं तब वा बनियाने कह्यौ जो मार्गमें तो कीचबहुतभईहै और तेरेपाय कोरेकेसरहै तब वा स्त्रीनेकहो जो तू पूछिके कहाकरेगो तू तेरो काम कारि तब वा बनियाने कह्यौ जो यहतौ बातकही-

चाहिये तब वा स्त्रीने कह्यौ जो मेरो भरतार मोको
कांधे ऊपर चढायक लायौहौ तब यह बात सुनिकें
वा बनियाकौ बडो आश्चर्य भयौ और सब वृत्तान्त
हो सो पूछौ जो यह कहा कारनहै सो सब मेरे आगें
कहि तब वा स्त्रीने जो प्रकारभयौहौ सो सब कह्यौ
सो वह सुनके बनिया अपने मनमें धृकारकरन
लाग्यौ और कहौ जो धन्य जन्म तुमारौ जो जिनकौ
ऐसो मन साच्यौहै और धृकारजन्ममेरोहै तब दोऊ
हाथ जोरिकें दंडौत कीनी और कह्यौ जो मेरो अप-
राध क्षमा करियै और मेरे उपर कृपा राखियै मेरी
तुम बहनहौ ऐसे कहि वा बनियाने बहुत दुखमान्यौ
पाछें वा बनियानें स्त्रीको कपडा पहरायके वाके घर
पहुंचायदीनी और कृष्णदाससों वा बनियाने बहुत
वीनती कीनी जो तुम मेरो अपराध क्षमा करो यह
मेरी बहन है और तुम मेरे पूज्यहौ तब कृष्णदासने
कही जो तेरो कहा अपराध है तू संकोचमति कर
फेरि वह बनिया कितनेकदिन पाछें श्रीआचार्यजी
महाप्रभूनको सेवक भयौ नाम समरपण कीयौ तब
वा बनियाको नाम श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें ज्ञान
चंद धरचौ पाछें वह बनिया बडौ भगवदीयभयौ
सो कृष्णदासके संगते भयौ ताते संगकरनोंतो भग-

वदीयको करनौ जासों भगवद्भक्ती उत्पन्नहोय पाछें वह बनिया सदा कृष्णदाससों नमत रहतौ उनकी स्त्रीसों बहन कहतौ सो ऐसो सम्बंध राखतौ सो वे कृष्णदास श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे कृपापात्रभगवदीय है ताते इनकी वार्ता कहांताई लिखिये ॥ प्रसग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ८३ ॥

संतदास चौपडा क्षत्री आगरेके ति०।

सो वे संतदास पहिले बहुत संपतवान हुते व्यौपार बहुत हुतो लाखनको व्यौपार करते सो द्रव्य सब व्यौपारहीमें खोयौ पाछें सेऊंके बजारमें कौडी बेचन लागे टका २४ की पूंजी हुती सो जबतांई पैसा ढाई कमावते तबतांई उहां बैठे रहते कोडीनकी ढेरी पैसानकी करिराखते सो गाहक पैसा धरकें कोडीनकी ढेरी लेजाते और संतदास आपपोथी बांचते मार्गमें काहूसों बोलते नाहीं भगवत् रसमें छिके रहते और जो कोऊ भगवत्भक्ति आवतौ तासों बडे भगवद्वार्ता करिके औरसों संभाषण न करते रसोईको टका एकलगावते और धेलाकी चवेनी आनि राखते सो रात्रिको वैष्णव आयकें बैठते भगवद्वार्ता कीर्तन करते सो सब चवेनी महा प्रसाद बांटि देते सो वैष्णव लेके उठते ऐस ढाइ

पैसामें निर्वाह करते ऐसे करत कितनेक दिनबीते तब नारायणदास गौडदेसकेनें सुनी जो संतदासके द्रव्यकौ बहुतसंकोच है ताते नारायणदासनें संतदासकौ पत्रलिख्यौ और एक मौहरनकी थैलीपठाई सोहुंडी कासदलेकें आयौ तब संतदासकौ पत्रदीनों तब वह पत्र संतदासनें वांच्यौ और तामें हुंडी ही सो वांची तब हुंडी ही सो तौ श्रीगुसांईजीकें पास पठाई और एकटका कासदकोंदीनों और संतदासनें नारायणदासको पत्र लिख्यौ तामें लिख्यौ जो तुमनें हुंडी पठाईही सो तौ अडेल श्रीगुसांईजीको पठायदीनी और तुम्हारी प्रभूतामें हमारे एक दिनकी रसोईनभई तादिनकीकमाई कासदकोदीनी जब हुंडीपहुंची तब भंडारीनें श्रीगुसांईजीकों बचाई सो एक सौ मौहरनकी है सो नारायणदासनें गौडदेसते संतदासकों पठाई सो संतदासनें यहां पठाई है तब श्रीगुसांईजीने कह्यौ जो संतदासतौ श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके बडेही कृपापात्र भगवदीय हैं ताते वैष्णवकोद्रव्य काहेकौ राखेंगे ॥ प्रसंग ॥ १ ॥

बहुर कितनेक दिनपाछें श्रीगुसांईजीनें श्रीगोकुल वास कीयौ तब संतदास उत्सवके दिन आगरेते दरशनको आवते और श्रीगुसांईजी आप

आगरे पधारते तब संतदासकेघर विना बुलाए पधारते आप श्रीगुसांईजी श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके सेवकजानि ऐसी कृपा करते तब कितनेक दिन पाछें संतदासकी देहथकी तब श्रीगोकुलते चापाभाईकों बुलायौ सो चापाभाई श्रीगुसांईजीकी आज्ञा मानिकें आगरे आये तब संतदासनें चापाभाईसों कह्यौ जो यह घर तुम्हारौ है जानो तो कोई एक दिन स्त्रीकों रहन दीजियौ और जानोतौ गहने घर दीजियौ अथवा बेचकें दामले जाउ ऐसे कहिकें घरके पत्र खत चापाभाईको सोंप दीनों तब चापाभाई खत पत्र लेकें श्रीगोकुल आये तब श्रीगुसांईजीसों सब समाचार कहे पाछें संतदास बहुत आसक्ति भये तब वैष्णव सब आयजुरे तब संतदाससों कह्यौ जो तुम कहौ तौ रेणुका स्थल अथवा मथुरा जहां कहों तहां लेचले तब संतदासनें कह्यौ जो मोकों कहारेणुकास्थल कृतार्थ करेगो तब वैष्णवनने कह्यौ जो श्रीगोकुल लेजाय तब संतदासनें कह्यौ जो श्रीगोकुलजायके कहा राख झडाऊंगो ऐसे कहिकें आगरेहीमें देह छोडी पाछें वैष्णवनने कृत्य उहांही कीयौ पाछे यह बात वैष्णवननें श्रीगुसांईजीके आगे कही तब श्रीगुसांईजी अपने श्रीमु-

खते कहैं जो वे संतदास ऐसे भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ता कहांतांई लिखिये ॥प्र०॥२॥ वै॥८४॥

अथ सुन्दरदास तिनकी वार्ता ।

सो सुन्दरदास श्रीजगन्नाथरायजीके दश कोस परे एक गांवमें रहते तहां कृष्ण चैतन्यको सेवक माधौदास सो उहां रहतौ सो सुंदरदासके और माधौ दासके परस्पर स्नेह बहुत हुतौ सो सुंदरदास जब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी सराहना करतौ तब माधौदास कहतौ जो मेरे जो कछू है सो सब कृष्ण चैतन्यकौ है सो जहां एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभू पाउधारे हुते तब सुंदरदासनें अपने घर पधराये तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें उहां रसोई करिकें श्रीठाकुरजीकों भोगसमर्प्यौ पाछें भोग सरायौ तब माधौदासने थार आवत देख्यौ तापाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभू आपतौ भोजन करिकें पोढे तब माधौदासने सुन्दरदासते कही जो तेरे गुरूके हाथते श्रीठाकुरजी आरोगे नाहीं औरमें श्रीठाकुरजीको आरोगावत हों सो तो एकहू ग्रास रहत नाहीं तब सुंदरदासनें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों कही तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें माधौ दासको बुलायकें पूछौ तब माधौदासने जो वृतान्त हुतौ सो सब कह्यौ जो काल हम तेरे घर आवेंगे सो

देखेंगे मेरे आगें श्रीठाकुरजी आरोगेंगे तब जानूं-
गो तब दूसरे दिन श्रीआचार्यजी महाप्रभू माधौ-
दासके घर पधारे और कह्यौ जो अब थार श्रीठा-
कुरजीके आगें आन राखि तब माधौदास थार ले
गयौ श्रीठाकुरजीके आगें भोग धऱ्यौ फिर बाहर
आयौ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू मंदिरके द्वार
ऊपर बैठे रहें सो वहां एक प्रेत नित्य आयकें श्री-
ठाकुरजीके आगेंते खाय जातौ सो वह प्रेत वाहू
दिन आयौ तब देखेतौ श्रीआचार्यजी महाप्रभू बि-
राजें है तब वह प्रेत खिस्यानों और कह्यौ जो राज
अबहूं भूखौ रहूंगौ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू-
नने कह्यौ जो तेंने अब तांई खायो सोतौ खायौ
पारि अब न खान पावेगौ तातें अब इहांसों जा तब
वह प्रेत फिर गयौ तब माधौदास भोग सरावन गयौ
तब देखेंतौ थार ज्योंका त्यौं भऱ्यौ है तब माधौ-
दासने कह्यौ जो तुम्हारे आगे मेरे श्रीठाकुरजी
आरोगे नाहीं ऐसे सामान्य बचन बहुत बोले पारि
श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप चुप करि रहै कछू
बोले नाहीं तब माधौदास रात्रिको सोयौ तब श्री-
ठाकुरजीके अनुचर आये सो बहुत माऱ्यो और
खाटते औंधौ पटक माऱ्यौ तब माधौदासने उनसों

कह्यौ जो तुम मोकों काहेको मारतहौं तब जगन्ना-
थरायजीने कह्यौ जोतू श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों
ऐसौ सामान्य बचन क्यों बोल्यौ मैं तेरे इहां कब
आरोगतहों जो तू भोग धरतौ सो तौ प्रेत खाय
जातौ हौ आज श्रीआचार्यजी महाप्रभूभी और
ऊपर बैठे हुते ताते न खाय सक्यौ तू उनसों क्यों
बुरो बोल्यौ वेतौ मेरौ स्वरूप हैं तब माधौदासने
उनसों कह्यौ जो मैं सवारें श्रीआचार्यजी महाप्रभू-
नसों अपराध क्षमा करवाय आउंगो मैंने ऐसे न
जान्यौ तब माधौदास प्रातःकाल उठिकें श्रीआ-
चार्यजी महाप्रभूनके पास आयौ और साष्टांग
दंडवत कीनी और बीनती करकें कह्यौ जो महाराज
मेरौ अपराध क्षमा करिये सो श्रीआचार्यजी महा-
प्रभू आपतौ परमदयाल हैं तब प्रसन्न होयके कहें
जो तेरौ कहा अपराध है हम तेरे ऊपर बहुत प्रसन्न
हैं तब माधौदासने बीनती कीनी जो महाराज
मेरे घर पावधारौ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू मा-
धौदासके घर पावधारे और प्रसन्न होयकें माधौ-
दासको नाम सुनायौ तापाछें माधौदासकों निवेदन
करवायौ पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें माधौ-
दासके ठाकुरकों पंचामृतसे स्नान करवायो तापाछें

श्रीठाकुरजीकों सिंगारकरिकें सिंहासन पाट बैठारे पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें पाककरिकें भोग समर्प्यौ तब समयानुसार भोग सराय अनोसारि करिकें पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें माधौदाससों कह्यौ जो तू वैष्णवनकों बुलायलावों तब माधौदासनें कह्यौ जो महाराज पांच सात वैष्णव बुलायलावों तब आचार्यजी महाप्रभूननें कह्यौ जो पांच सातकी कहा है जितनें तेरे मनमें आवे तितनेबुलाय लाउ तब माधौदासनें श्रीमहाप्रभूजीसों कह्यौ जो महाराज प्रसादतों थोरो है और वैष्णव बहुत आवेंगे तो कैसें होयगी तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कह्यौ जो माधौदाससोंके जो अर तेरी अक्कल मारीगई है प्रसाद कबहू न घटे तेरे या गांवमें जितने वैष्णव होय तिन सबको बुलायलाउ पाछें जितने वैष्णव हैं तिन सबनको बुलायलायो तब सबनकों महाप्रसाद लिवायो तोहू वह थार भरचो रह्यौ तब माधोदाससों श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यौ जो वैष्णवकें विषे विश्वास चाहिये जो भगवत् प्रसाद सदा अटूट रहै या भांतिसों माधौदासकों श्रीमहाप्रभूजीनें अंगीकार करचौ सो सुंदरदासके संगते भयौ ताते संग करनो तो भगव-

दीयको करनों सो वे सुंदरदास श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे कृपापात्र भगवदीय है ताते इनकी वार्ता कहांतांई लिखिये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव। ८५।

मावजीपटैल तथा इनकीस्त्री बिरजौ ति०।

सो वे मावजी पटैल तथा इनकी स्त्री बिरजौ बरस दिनमें दोय बेर श्रीगोकुल आवते श्रीनाथजीके दर्शनकौं तथा श्रीगुसांईजीके दर्शनको आवते सो श्रीगुसांईजी इनके ऊपर बहुत प्रसन्न रहते बहुत-कृपाकरते पाछें उनको कृष्णभट्टको संगभयौ तब बिरजोनें कृष्णभट्टसोंकह्यौ जो तुम हमारे माथे सेवा-पधारावौतौ भलौ है तब कृष्णभट्टनें महाराज गुसां-ईजीसों बीनती करिकें कह्यौ और उनक माथे सेवा पधराई सो श्रीगुसांईजीने श्रीठाकुरजीको पाट बै-ठार्‍यौ सो स्नेहपूर्वक सेवा करते सामग्री भली भां-तिसों करते श्रीमहाप्रभूजीके सेवक दस कोस पर रहते तिनको प्रसाद लिवावते ऐसे भली भांतिसों सेवा करी कृष्णभट्टआदिदेकें करी ॥ प्रसंग ॥ १ ॥

और एक समय वैष्णव सब प्रसाद लेनकौं उत्सवके दिन बैठे हुते तब बिरजोनें वैष्णवनको अनसखडी महाप्रसाद परोस्यो तब बिरजोने कृष्ण-भट्टसों बीनती कीनी जो मोकों ऐसौ मनोरथ है जो

सब वैष्णवमंडली बैठी होय और में सखडीमहाप्र-
साद सबनको लिवाऊं तब कृष्णभट्टनें कह्यौ जो
यह मनोरथ है सो तो भक्तिभावसों होय परि यह
द्रव्यसाध्य है तब विरजाने पूछौ जो द्रव्यसाध्य
सो कहा ताकौ अर्थ मोकों समझायके कहौ तब
कृष्णभट्टन कह्यौ जो यह वैष्णवमंडली लेकें श्री-
गोकुल श्रीगुसांईजीके पास जैये पाछें श्रीगुसां-
ईजी आज्ञा देय सो करिये जो श्रीगुसांईजी आज्ञा
देय तौ सखडी महाप्रसाद लीयौ जाय ताते यह
द्रव्य साध्य है जो मार्गमें सब खरच करिये और
वैष्णवनकी आज्ञा लेनौ तब बिरजानें मावजी पटै-
लते कह्यौ जो मोकों यह मनोरथ है सो मनोरथ
कियौ चाहिये तब मावजीपटैलने कह्यौ जो मेरे पास
दो लक्षमुद्राहैं इनसों काम होयतौ भलेंई करिये तब
कृष्णभट्टनें कह्यौ जो इनसों काम अवश्य होयगो
आपन श्रीगुसांईजी पास चलें तब श्रीगुसांईजी
आज्ञा देय सो करिये सो मावजीकी गांठमें द्रव्य
बहुत हुतो सो सब लेकें उज्जेन आये पाछें कृष्ण-
भट्टनें वैष्णव सब इकठौरे करिकें श्रीगोकुल श्रीगु-
सांईजीके दरशनको आये पाछें श्रीगोकुल आयकें
श्रीगुसांईजीके दर्शन कीये पाछें कृष्णभट्टनें श्रीगु-

सांईजीसों बीनती कीनी जो महाराज बिरजोको
ऐसो मनोरथ है जो सखडी महाप्रसाद मेरे हाथसों
सब वैष्णवनकी मंडली बैठी होय तिनकों में परोसों
तब श्रीगुसांईजीने कही जो यह मनोरथ तौ पुरुषोत्तम
क्षेत्र बिना न होय तब सब वैष्णवनकी मंडलीलेकें
बिरजो चली श्रीनाथरायजीकूं सो कितनेक दिनमें
जाय पहुंची तब श्रीजगन्नाथजीके दर्शन कीये पाछें
जो मनोरथ हुतौ सो सब नानाप्रकारकी सामग्री
करवायकें श्रीजगन्नाथरायजीकों भोग समर्प्यौ
पाछें वह प्रसाद सखडी अन सखडी सब वैष्णव-
नकों बिरजोनें अपने हाथसों परोसिकें लिवायौ
बिरजोनें अपनों सब मनोरथ पूरन कीयौ पाछें बि-
रजो उहां कछूकदिन रहिकें सब वैष्णवनसहित
श्रीगोकुल आई तब श्रीगुसांईजीको दर्शनकीयौ
दंडवत कीनी तापाछें जो बातकरी सो सब श्रीगुसां-
ईजीके आगेंकही पाछें और जो द्रव्य बच्यौ सो सब
गुसांईजीकी भेंट कीनों तब श्रीगुसांईजी बिरजौको
भाव देखिकें वाके ऊपर बहुत प्रसन्न भयै पाछें सब
वैष्णवनको महाप्रसाद लिवायौ तब श्रीगुसांईजीनें
आप प्रसाद लीयौ तापाछें बिरजौ तथा सब वैष्णव
श्रीगुसांईजीके साथ श्रीनाथजीद्वार आये तब श्री-

नाथजीके दर्शन कीये तब बिरजो तथा श्रीगुसांईजी सब वैष्णवनसहित श्रीनाथजीते बिदा होयके अपने देशकौ गये वह बिरजो ऐसी भगवदीयही॥प्र०॥२॥

और बिरजौ वरस दिनमें दोय बेर श्रीगोकुल आवती तब एक गाडातौ गुडकौ भरलावती और एक गाडा घृतको भरलावती सो एक महीनालों रहती तामें पंद्रह दिनतौ श्रीगोकुल रहती और पंद्रहदिन श्रीनाथजी द्वार रहती या भांतिसों बिरजौ रहती तब सामग्री करिकें भोगसमर्पि भोगसरायकें सब ढांकिधरे जब गायनके ग्वाल आवते तब महाप्रसाद दूध अंगीकार करते और खिरकमें लिलावती और आवती जब दोऊ पधरावनी करती सो वह बिरजौ ऐसी भगवदीयही सो पद्मरावलके संगते ताते संगकरनों तौ भगवदीयकौ करनों सो इनकी वार्ताको पार नाहीं ताते अब कहांतांई लिखिये ॥ प्रसंग ॥ ३ ॥ वैष्णव ॥ ८६ ॥

गोपालदास नरोडामें रहते ति० वार्ता।

सो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने उनकौ आज्ञा दीनी हुती जो तुम सबनकों नाम दीजियें ताते वे गोपालदास नामदेते सो एक समय श्रीआचार्यजी

नरोडामें पधारे हुते तब गोपालदासतौ घर न हुते गोपालदासके बेटा घर हुते गोपालदास कहूं या वृत्तिको गए हुते तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने गोपालदासके बेटानसों पूछों जो गोपालदास कहां गये हैं तब गोपालदासके बेटानने कह्यौ जो कछू श्रीठाकुरजीके कामकौं गयो है तब यह सुनिकें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकों मन अप्रसन्न भयौ जो गोपालदासके बेटा ऐसे कैसे बोलत हैं तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कह्यौ जो यह कैसे वैष्णव है तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कह्यौ जो यहां रहनों उचित नाहीं हैं तब फिर अपने मनमें बिचारे की गोपालदासको तौ आवन दीजिये वह कैसे बोलत हैं तब पाछें संध्यासमय गोपालदास आये तब गोपालदासनें संध्यासमय श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकौ दर्शन कीयौ तब गोपालदाससों श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने पूछौ जो गोपालदास तुम कहां गये हुते तब गोपालदासनें कही जो महाराज पेटलाग्यो है ताते यावृत्तिकों गया हुतो तब यह सुनिकें गोपालदासके ऊपर बहुत प्रसन्न भये और आप श्रीमुखसों कहै जो यह वैष्णवको लक्षण है जो या वृत्तिमें श्रीठाकुरजीको नाम न लेय॥ प्रसंग॥ १॥

और एक समय गोपालदास श्रीनाथजीके दर्शनकों आय सो साथ एक सेवक हुतौ तहां ज्वर चढि आयो सो लंघन द्वै चारि कीये तब रात्रिको गोपालदासको प्यास लागी सो वा सेवकके पास जल मांग्यौ सो सेवकतौ सोयौ हुतौ सेवकने तौ सुनी न हुती तब श्रीठाकुरजी जलपानकी झारी लेके आये सो गोपालदासकों जल पिवायो और वह झारी उहांही धरि आये श्रीनाथजीको हृदय अति कोमल है ताते भक्तिकी आरती सहिनसकें ॥ प्रसंग ॥२॥

और एक समय गोपालदासनें चोपराबिरह करिकें गायौ ॥ सोचोपरावेकी ॥ "सिखंडी श्याम घनसखी कंठ मनोहरहार ॥ धन्य दिन जेनों देखसूं नयनन नन्दकुमार" ॥ १ ॥ ऐसे चौपरा बहुत कीये ॥ प्रसंग ॥ ३ ॥

और एक समय श्रीगुसांईजी आप नरोडामें पधारे तब बाहिर डेराकीये हुते पाछें जब गोपालदास उत्थापनके समय श्रीगुसांईजीके दर्शनकों आये तब द्वै वैष्णवनने कह्यौ जो हमकों श्रीगुसांईजीके पासनाम दिवावौ तब गोपालदासने कह्यौ जो हम नाम देते हैं सो नाम श्रीगुसांईजी देते हैं ताते तुमकों घर चालिकें नाम देयंगे पारि उन वैष्ण-

वनको मन श्रीगुसांईजी पास नाम पायवेकौ सो तीनवेर उन वैष्णवनने कह्यौ सो तीनोंवार गोपालदासने वैसेही कह्यौ जो तुमकों घर चलिकें नाम देयंगे सो यह वात श्रीगुसांईजीनें अपने काननते सुनी पाछें उन वैष्णवनसों श्रीगुसांईजीने कही जो तुम कहा कहत हो तब उन वैष्णवनने कह्यौ जो महाराज हमकौ नाम दीजिये तब श्रीगुसांईजीनें उनको नाम सुनायो उनको कृतार्थ करे पाछें गोपाल दाससों श्रीगुसांईजी यों कहें जो गोपालदास तुम्हारौ अंगीकार श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कीयो है सो तो दृढभयौ है परि जिननें तुम्हारे पास नाम पायो है सो तौ हमारे कबहूं न होयंगे सो श्रीगुसांईजीने क्षोभ करिकें गोपालदाससों कह्यौ पाछें गोपालदासनें जितनेनको नाम दीयौ हुतो तिन सबनकों फिर सबनकों गुसांईजीके पास नाम दिवायौ तब वे सब कृतार्थ भय तिनसों श्रीगुसांईजी गंगोज्व कहते उन गोपालदासकों सामित्वआयौ ताते इन जीवनकों अकाजभयो ताते वे गोपालदास श्रीआचार्यजी महा प्रभूनके ऐसे परमकृपापात्र भगवदीय हैं सो इनकी वार्ता कहांताई लिखिये॥ प्रसंग॥४॥वैष्णव॥८७ ॥

सूरदासजी गऊघाटऊपर रहते ति० वा०

सो एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभू अडेलते ब्रजकों पावधारे सो कितनेक दिनमें गऊघाट आये सो गऊघाट आगरे और मथुराके बीचोंबीच है तहां श्रीआचार्यजी महाप्रभू पावधारे सो गऊघाट ऊपर श्रीआचार्यजी महाप्रभू उतरे तहां श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप स्नानकरिकें संध्यावंदन करिकें पाक करनको बैठे और श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके सेवकनको समाज बहुत हुतो और सेवकहू अपने अपने श्रीठाकुरजीको रसोई करन लागे सो गऊघाट ऊपर सूरदासजीको स्थल हुतो सो सूरदासजी स्वामी है आप सेवक करते सूरदासजी भगवदीय हैं गान बहुत आछो करते ताते बहुत लोग सूरदासजीके सेवक भये हुते सो श्रीआ, जार्यजी महाप्रभू गऊघाट ऊपर उतरें सो सूरदासजीके सेवक देखिके सूरदासजीसों जाय कहा जो श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप पधारे हैं जिनने दक्षिणमें दिग्विजयकीयो है तब पंडितनको जीते हैं भक्तिमार्ग स्थापन कीयो है सो श्रीवल्लभाचाय यहां पधारे हैं तब सूरदासजीनें अपने सेवकसों कह्यो जो त्र जायके दूर बैठि जब आप भोजनकरिकें बिराजे

तब खबरि करियो हम श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके दर्शनको जायंगे सो वह तनक दूर जाय बैठो तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप पाककरत हुते सो पाक सिद्ध भयौ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें श्रीठाकुरजीको भोग समर्प्यों पाछें समयानुसार भोगसराय अनोसरिकरिकें महाप्रसाद लेकें श्रीआचार्यजी महाप्रभू गादीऊपर बिराजे तहां सब सेवकहू पहुँचिकें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकें आसपास आय बैठे तब वह सूरदासजीको सेवक आयो सो सूरदासजीसों कही जो श्रीआचार्यजी महाप्रभू बिराजे हैं तब सूरदासजी अपने स्थलते आयकें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके दर्शनकों आये तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कह्यौ जो सूरआवों बैठो तब सूरदासजी श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको दर्शनकरिकें आगें आय बैठे तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कही जो सूर कछू भगवद्यश वर्णन करौ तब सूरदासजीने कही जो आज्ञा सो सूरदासजीनें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके आगें एक पद गायौ ॥ सो पद-

राग धनाश्री-हों हरि सब पतितनको नायक ॥
को करिसके बराबर मेरी इतने मानकों लायक ॥ १ ॥

जो तुम अजामेलिसों कीनी जो पाती लिखपाऊं ॥ होय विश्वास भलौ जिय अपनें और पतित बुलाऊं ॥ २ ॥ सिमिटे जहां तहांते सब कोऊ आयजुरे इक ठौर ॥ अबके इतनें आनि मिलाऊं वेर दूसरी और॥३॥ होडाहोडी मनहुलास करिकरे पापभारि पेट ॥ सबहिन ले पायन तरिपारिहों यही हमारी भेंट ॥४॥ ऐसी कितनीक बनाऊं प्रानपति सुमरन है भयौ आडौ ॥ अबकी वेर निवार लेउ प्रभू सूर पतितकों ठाडौ ॥ ५ ॥ और पद गायौ—

राग धनाश्री—प्रभूमें सब पतितनकोटीकौ ॥ और पतित सब द्यौसचारिकें में ता जन्मतहीकौ ॥ १ ॥ बधिक अजामिलि गनिका त्यारी और पूतनाही-कौ ॥ मोहि छांडि तुम और उधारे मिटै शूलकेसें जीका ॥ २ ॥ कोउ न समरथ सेव करनका खेचि कहतहों लीकौ ॥ मरियतलाज सूरपति तनमें कहत सबनमें नीकौ ॥ ३ ॥

ऐसौ पद श्रीआचायजी महाप्रभूनके आगें सूर-दासजीने गायौ सो सुनिकें श्रीआचार्यजी महाप्रभू-नने कह्या जो सूरहेकें ऐसो घिघियात काहेको है कछू भगवल्लीला वर्णन करि तब सूरदासनें कह्यौ जो महाराज हौंतो समझत नाहीं तब श्रीआचार्यजी

महाप्रभूननें कह्यौ जो जा स्नान करिआउ हम तोकों समझावेंगे तब सूरदासजी स्नान करि आये तब श्रीमहाप्रभूजीनें प्रथम सूरदासजीकों नाम सुनायौ पाछें समर्पण करवायौ और फिर दशमस्कंधकी अनुक्रमणिका कही सो तातें सब दोषदूर भये तातें सूरदासजीकौं नवधाभक्ति सिद्ध भयी तब सूरदासजीनें भगवल्लीला वर्णन करी अनुक्रमणिकातें संपूर्णलीला फुरी सो क्यों जानिये सो दशमस्कंधकी सुबोधिनीमें मंगलाचरणकौ प्रथम कारिका कीये हैं सो यह श्लोक सूरदासजीनें कह्यौ॥ सो श्लोक–

नमामि हृदये शेषे लीलाक्षराब्धिशायिनम् ॥
लक्ष्मीसहस्रलीलाभिः सेव्यमानं कलानिधिम् ॥ १ ॥

और ताही समय श्रीमहाप्रभूनके सन्निधान पद कीये ॥ सो पद–

राग बिलावल–"चकईरी चलि चरण सरोवर जहां न प्रेम बियोग" यह पद सम्पूर्ण करिकें सूरदासजीने गायौ सो यह पद दशमस्कंधके मंगलाचरणकी कारिकाके अनुसार कीयौ सो यामें कह्यौ है जो तहां श्रीसहस्रसाहित नितक्रीडत "शोभित सूरदास या भांति" पद कीये तातें जानी जो सूरदासकों सम्पूर्ण सुबोधिनी स्फुरी सो श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें

जान्यौ जो लीलाको अभ्यास भयौ पाछें सूरदास-जीने नंद महोतसव कीयौ सो श्रीआचार्यजी महा-प्रभूनके आगे गायौ ॥

राग देवगन्धार—"ब्रज भयौ महरके पूत" ॥ जब यह बात सुनी ॥ सो यह श्रीआचार्यजी महाप्रभू-नके आगे गायौ सो सुनिके श्रीआचार्यजी महाप्रभू बहुत प्रसन्न भये और अपने श्रीमुखतें कहें जो सूर-दास मानों निकटही हुते पाछें सूरदासजीनें अपने सेवक कीये हुते तिन सबनको नाम दिवायौ पाछें सूरदासजीनें बहुत पद कीये पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें सूरदासजीकों पुरुषोत्तम सहस्रनाम सुनायौ तब सूरदासजीको सम्पूरण भागवत स्फु-र्तना भई पाछें जो पद कीये सो श्रीभागवत प्रथम स्कंधते द्वादशस्कंधतांई कीये तातें वे सूरदासजी श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभू गऊघाट ऊपर दिन दोय तीन बिराजे पाछें फेरि ब्रजको पाव धारे तब सूरदासजीहू श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके साथ ब्रजकों आये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥

अब जो श्रीआचार्यजी महाप्रभू ब्रजकों पधारे सो प्रथम श्रीगोकुल पधारे तब श्रीआचार्यजी महा-

प्रभूनके साथ सूरदासजीहू आये तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें अपनें श्रीमुखसों कह्यौ जो सूरदास श्रीगोकुलकों दर्शन करौ सो सूरदासजीनें श्रीगोकुलकों दंडवत करी सो दंडवतमात्र श्रीगोकुलकी बाललीला सूरदासजीके हृदयमें फुरी और सूरदासजीके हृदयमें प्रथम श्रीमहाप्रभूननें सकल लीला श्रीभागवतकी स्थापी हैं ताते दर्शन करतमात्र सूरदासजीकों श्रीगोकुलकी बाललीला स्फुर्दनाभई तब सूरदासजीनें विचारचौ मनमें जो श्रीगोकुलकी बाललीलाको वर्णन करिकैं श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके आगें सुनाइये जन्मलीलाको पद तौ प्रथम सुनायो है अब श्रीगोकुलकी बाललीलाको पद गायौ ॥ सो पद—

राग बिलावल—सो नितकरन पुनीतालिये ॥ घुटुरुवन चलत रेणु तनमंडत सुरत वेषकीये ॥ १ ॥ चारुकपोललोल लोचन छबि गोरोचनको तिलकदिये ॥ लारलटकन मानों मतमधुपगन माधुरी मधुरापिये ॥ २ ॥ कठुलाकंठ बजत केहरि नख राजत है सखी रुचिराहिये ॥ धन्य सूर एकौ पल यह सुखकहाभयौजीये ॥ ३ ॥

यह पद सूरदासजीनें गायौ सो सुनिकें आप

बहुत प्रसन्न भये पाछें और हू पद गायौ तब श्रीमहाप्रभूजी अपनें मनमें विचारे जो श्रीनाथजीके यहां और तो सब सेवाकौ मंडानभयौ और कीर्तनकौ मंडान नाहीं कीयो है ताते अब सूरदासजीको दीजियै तब आप श्रीजीद्वारपधारे सो सूरदासजीको साथ लीयेही सो श्रीनाथजीद्वार जाय पहुँचे तब आप स्नानकरिकें मंदिरमें पधारे तब सूरदासजीसों कह्यौ जो सूरदास ऊपर आउ स्नान करिकें श्रीनाथजीकौ दर्शन करि तब सूरदासजी पर्वतऊपरजायकें श्रीनाथजीकौ दर्शन कीयौ तब आपनें कह्यौ जो सूरदास कछू श्रीनाथजीको सुनावौ तब सूरदासजीने प्रथम विग्यप्तको पद गायौ॥ सो पद-

राग धनाश्री-"अबहों नाच्यौ बहुतगोपाल"॥ यह पद सम्पूर्ण करिकें श्रीनाथजीके आगें गायौ तब श्रीमहाप्रभूजीने कह्यौ जो अबतौ सूरदास तुममें कछू अविद्या रही नाहीं तुम्हारी अविद्या तो प्रभूननें दूर कीनी ताते कछू भगवद्यश वर्णन करो तब सूरदासजीने महात्म और लीला ऐसो जसकरिकें गाय सुनायौ ॥ सो पद-

रागगौरी-"कोन सुकृत इन व्रजवासिनकों ॥"यह पद सम्पूर्ण करिकें गायौ सो सुनिकें श्रीमहाप्रभूजी

बहुत प्रसन्न भये सो जैसो श्रीआचार्यजी महाप्रभू-
ननें मार्ग प्रकाश कीयौहौ ताके अनुसार सूरदास-
जीने पद कीये श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके मार्गको
कहा स्वरूप है महात्म ज्ञानपूर्वक सुदृढस्नेह कीयौ
परमकाष्टा हैं और स्नेह आगें भगवानको महात्म
रहत नाहीं ताते भगवान वेर वेर महात्म्य जनावत हैं
नाम प्रकरनमें पूतना करि सकट तृनावर्त करि गर्गा-
चार्य करि यमुलार्जुन करि वैकुंठ दर्शन करि ऐसें
करिकें भगवानने बहुत महात्म जतायौ पारि इन ब्रज-
भक्तिनको स्नेह परम काष्टापन्न है ताते ताही समय
तौ महात्म्य रहै पाछें विस्मृत होजाय ॥ प्र० ॥२॥

और सूरदासजीनें सहस्रावधि पदकीये हैं ताको
सागर कहियै सो सब जगतमें प्रसिद्धि भये सो सू-
रदासजीके पद देशाधिपतिने सुने सो सुनिकें यह
बिचारौ जो सूरदासजी काहू बिधिसों मिले तो भलौ
सो भगवदिच्छाते सूरदासजी मिले सो सूरदासजी
सो कह्यौ देशाधिपतिने जो सूरदासजी में सुन्यो है
जो तुमने बिसन पद बहु कीये हैं जो मोकों परमेश्व-
रनें राज्य दीयौ है सो सब गुनीजन मेरौ जस गावत
हैं ताते तुमहूं कछू गावौ तब सूरदासजीने देशाधि-
पतिके आगे कीर्तन गायौ ॥ सो पद-

राग बिलावल–"मनारे तू करि माधौसों प्रीति" ॥ यह पद देशाधिपतिके आगें संपूर्ण करिकें सूरदासजीनें गायौ सो यह पद कैसो है जो या पदको अहर्निश ध्यान रहेतो भगवदनुग्रहकी सादा सांति रहै और संसारते सदा वैराग्य रहै और कुसंगको सदा भय रहै और भगवदीयके संगकी सदा चाह रहै और श्रीठाकुरजीके चरणार्बिंद ऊपर सदा स्नेह रहै देशादिके ऊपर आसक्ति न होय ऐसो पद देशाधिपतिको सुनायौ सो सुनिकें देशाधिपति बहुत प्रसन्न भयो और कह्यौ जो सूरदासजी मोकों परमेश्वरने राजदीनों है सो सब गुनीजन मेरौ जस गावत हैं तातें मेरो जस कछू गावौ तब सूरदासजीने यह पद गायौ॥ सो पद–

राग केदारौ–"नाहिन रह्यौ मनमें ठौर" ॥ यह पद संपूण करिकें सूरदासजीनें गायौ सो सुनिकें देशाधिपति अकबर बादशाह अपने मनमें बिचार्यौ जो ये मेरौ जस काहेको गावेंगे जो इनको कछू मेरी बातको लालच होय तौ गावै येतो परमेश्वरके जन हैं और सूरदासजीते या पदके समाप्तमें गायौ ॥ "होजो सूर ऐसें दर्शको इमरत लोचनप्यास" ॥ यह गायौ हो देशाधिपतिने पूछौ जो सूरदासजी

तुम्हारे लोचन तो देखियत नाहीं सो प्यासे कसें मरत हैं और बिन देखें तुम उपमाकों देत हौ सो तुम कैसें देत हौ तब सूरदासजी कछू बोले नाहीं तब फेरि देशाधिपति बोलो जो इनके लोचन हैं सोतो परमेश्वरके पास हैं सो उहां देखत हैं सो वर्णन करत हैं तब देशाधिपतिनें सूरदासजीके समाधानकी मनमें बिचारी जो इनको कछू दीयौ चाहिये पारि यह तौ भगवदीय है इनकों कछू काहू बातकी इच्छा नाहीं पाछें सूरदासजी देशाधिपतिसों बिदा होयकें श्रीनाथजीद्वार आये ॥ प्रसंग ॥ ३ ॥

एक समय सूरदासजी मागमें चले जाते हैं सो कोऊ चौपड खेलत हुते सो वा चौपड खेलमें ऐसे लीन हैं जो कोऊ आवते जातेकी सुधि नाहीं ऐसे खेलमें मग्न हैं सो देख सूरदासजीके संगके भगवदीय हैं तिनसों सूरदासजीनें कह्यौ जो देखौ वह प्राणीकैसौ अपनौ जनमारा खोवत हैं भगवाननें तौ मनुष्य देह दीनी है सो तौ अपनी सेवा भजनेके लिये दीनी है सो येतौ या देहसों हाड कूटत हैं यामें यह लौकिकसिद्धि नाहीं सो काहेते जो या लोकमें तो अपजस और परलोकमें भगवानतें बहिर्मुख ताते श्रीठाकुरजीने इनकौ मनुष्य देह

दीनी है तिनकों चौपड ऐसी खेलनी चाहियै सो ता समय एकपद सूरदासजीने अपने संगकेनसों कह्यौ ॥ सो पद–

राग केदारो–मन तू समझि सोच विचार ॥ भक्ति बिन भगवान दुर्लभ कहतनिगम पुकार ॥ १ ॥ साध-संगति डारि फाँसा फेरि रसनासारि ॥ दाव अबकें पर्‍यौ पूरौ उतरि पहिली पार ॥ २ ॥ वाकसत्रे सुनि अठारे पँचहीकों मारि ॥ दूरत ताजि तीनकौन चमकि चौक बिचार ॥ ३ ॥ काम क्रोधजंजालभूल्यौ ठग्यो ठगनी नारि ॥ सूरहरिकें पद भजन बिन चल्यौ दोउ करझार ॥ ४ ॥

यह पद सूरदासजीनें अपने संगके भगवदीयनसों कह्यौ सो या पदमें सूरदासजीनें कहा कह्यौ "मनतू समझि सोच विचार" ये तीन्यौ वस्तु चौपडमें चाहिय सोइ तीनों वस्तु भगवानके भजनमें चाहियै काहेते जो समझि न होयतौ श्रवण कहा करेगौ ताते पहिले तौ समझ चाहियै और सोच काहिय चिंतासों भगवानके प्राप्तकी चिंता न होय तौ संसार ऊपर बैराग्यकैसें आवै ताते सोच कहियै और बिचार जा या जीवकों बिचारहीं नाहीं तौ संगदुसंगमें कहा करेगौ ताते बिचार चाहियै सो ये

तीनों वस्तु होंयतौ भगवदीय होय ताते ये तीनों वस्तु भगवदीयकों अवश्य चाहियै और चौपडमें हूं ये तीनों वस्तु चाहिये समझ कहे गिनवो न आवतो गोटकेसें चलै और सोच अगम जो मेरे यह दाव पडैतो यह गोटचलूं बिचारजो वाहीमें तन-मन जो ये तीनों वस्तु होय तो चोपडखेली जाय सो वे सूरदासजी श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं ॥ प्रसंग ॥ ४ ॥

बहुर सूरदासजी श्रीनाथजीद्वार आयकें बहुत दिनताँई श्रीनाथजीकी सेवा कीनी बीचरमें श्रीगोकुल श्रीनवनीतप्रियाजीके दर्शनकों आवते सो एक समय श्रीसूरदासजी श्रीगोकुल आये श्रीनवनीतप्रियाजीके दर्शन कीये और बाललीलाके पदबहुत सुनाये सो श्रीगुसांईजी सुनिकें बहुत प्रसन्न भये पाछें श्रीगुसांईजीनें एक पालना संस्कृतमें कीयौ सो पालना सूरदासजीकों सिखायौ सो पालना सूरदासजीनें श्रीनवनीतप्रियाजी झुलत हुते ता समय गायौ ॥ सो पद–

राग रामकली–"प्रेमपर्य्यंके शयनं" यह पद सूरदास जीने सम्पूर्ण करिकें गाय सुनायौ श्रीनवनीतप्रियाजीकों पाछें या पदके भावके अनुसार बहुत पदकीये सो सुनिकें श्रीगुसांईजी बहुत प्रसन्न भये

पालनाके भाव अनुसार पद गायो ॥ सो पद–

राग बिलावल–बालविनोद आंगनमेंकी डोलनि ॥ मणिमयभूमिसुभगनंदालयबलिबलि गईतोतरी बोलनि ॥ १ ॥ कठुलाकंठरुचिरकेहरि नखब्रजमालबहुलई अमोलनि ॥ वदनसरोज तिलक गोरोचन लरलटिकन मधुगनिलोलनि ॥ २ ॥ लीन्योंकर परसत आननपर कछू खाय कछू लग्यो कपोलनि॥ कहें जन सूर कहांलों बरनों धन्य नंदजीवन जग तोलनि ॥ ३ ॥

गोपाल दुरे हैं माखन खात ॥ देखि सखी सोभा जो बढी अतिस्याम मनोहरि गाति ॥१॥ उठि अवलोकि ओट ठाडी ह्वै जिह विधि नहीं लखि लेत ॥ चक्रतनैन चहूं दिस चितवत और सबनकों देत॥२॥ सुंदर कर आनन समीप हरिराजत यह आकार ॥ जनुजल रुहताजि वेर बिधिसों लाये मिलत उपहार ॥ ३ ॥ गिरिगिरि परत बदनतें ऊपर द्वैदाधि सुतके बिंदु ॥ मानहू सुधाकन खोरवत पियजियदुंद ॥ ४ ॥ बालविनोद बिलोक सूरप्रभू बित भई ब्रजकी नारि ॥ फुरतन बचन बरजिबेकों मनराही बिचार बिचार ॥ ५ ॥

राग जैतश्री–कहां लगवरनो सुंदरताई ॥ खेलत कुमर कतिक आंगनमें नैन निरख सुखपाई ॥ १ ॥

कुल है लसत श्यामसुंदरके बहु बिधिरंगविवनाई॥ मानउ नवघन ऊपर राजत मघुवा मनुष्य चढाई ॥ २ ॥ सेतपीत अरु असितलाल साणि लटकनि- भाल रु राई ॥ मानहूं असुर देव गुरुसों मिलि भूमि- जसो समुदाई ॥ ३ ॥ अतिसुदेशमृदु चिहरहरत मनमोहन सुखवगराई ॥ मानहूं मंजुलकंज ऊपर वर अलि अवलि फिर आई ॥ ४ ॥ दूधदंत छबि कही न जात कछू अलि पल लप झलकाई ॥ किल- कत हंसत दुराति प्रगटत मानो विधुमें बिपुलताई ॥ ५ ॥ खंडत बचन देत पूरन सुख अद्भुत यह उ- पमाई ॥ घुटुरुन चलत उठत प्रमुदितमन सूरदास बलिजाई ॥ ६ ॥

राग रामकली–देखौ सखी एक अद्भुत रूप ॥ एक अम्बुजमध्य देखियत बीस दधिसुतजूप ॥ १ ॥ एक अवली दोय जलचर उभे अर्क अनूप ॥ पंच- वार चढिगाहि देखियत कहौ कहा स्वरूप ॥ २ ॥ सिसुगनमें भई सोभा कोऊकरौ विचार ॥ सूर श्री गोपालकी छबि राखो यह निरधार ॥ ३ ॥ ऐसे पद सूरदासजीनें गाये पाछें फेरि श्रीनाथजीद्वार आये ॥ प्रसंग ॥ ५ ॥

अब सूरदासजीनें श्रीनाथजीकी सेवा बहुत

कीनी बहुत दिन ताईं ता उपरांत भगवदिच्छा जानी जो अब प्रभूनकी इच्छा बुलायवेकी है यह बिचारिकें जो नित्य लीला फलात्मक रासलीला जो जहां करे हैं ऐसी जो परासोली तहां सूरदासजी आये श्रीनाथजीकी ध्वजाकौ दंडौत करिकें ध्वजाके साम्हे सन्मुख कारिकें सूरदासजी सोये पारि अंतःकरन यह जो श्रीआचर्यजी महाप्रभू दर्शन देयंगे अब यह देह तौ थकी ताते अब या देहसों श्रीनाथजीको दर्शन होयतौ जानिये परमभाग्य है श्रीगुसांइजीको नाम कृपासिंधु है भक्तनके मनोरथ पूरन कर्त्ता हैं ऐसे विचारके सूरदासजी श्रीगुसाईंजीकौ चिंतवन करत हैं और श्रीगुसांईजीकेसे कृपासिंधु हैं जैसें सूरदासजी उहां स्मरण करत हैं तैसेही श्रीगुसांईजी इनको छिनहूं नहिं भूलत हैं श्रीनाथजीको सिंगार हो तौ ता समय सूरदासजी मणिकोठामें ठाडे २ कीर्तन करते सो ता दिन श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीको सिंगार करत हुते और सूरदासजीको कीर्तन करत न देखो तब श्रीगुसांईजीने पूछौ सूरदासजी नाहीं देखियत सो काहेते तब काहू वैष्णवनने कह्यौ जो महाराज सूरदासजीतो आज परासोलीकी ओडी जात देखे हैं तब श्रीगुसांईजीनें

जान्यौ जो भगवदिच्छाते अवसान समें हैं ताते सूरदासजी परासोली गये हैं तब श्रीगुसांईजीनें अपने सेवकनसों कह्यौ जो पुष्टिमार्गको जिहाज जात हैं जाकों कछू लेनों होय तौ लेउ और जो भगवदिच्छाते राजभोग आरती पाछें रहत हैं तो मेंहू आवतहों पाछें श्रीगुसांईजी वेर २ सूरदासजीकी खबार मंगायौ करे जो आवै सोई कहैं जो महाराज सूरदासजीतो अचेत हैं कछू बोलत नाहीं ऐसे करत श्रीनाथजीके राजभोगको समय भयो सोराजभोग आरती करिकें श्रीगुसांईजी श्रीगिरिराजते नीचे उतरे सो आप परासोली पधारे भीतरिया सेवक रामदासजी प्रभृत और कुंभनदासजी और श्रीगुसांईजीके सेवक गोविंदस्वामी चत्रभुजदास प्रभृत और सब श्रीगुसांईजीके साथ आये सो आवतही सूरदासजीसों श्रीगुसांईजीनें पूछी जो सूरदासजी कैसेहौ तब सूरदासजीनें श्रीगुसांईजीको दंडोत करिकें कह्यौ जो महाराज आये हौ महाराजकी बाट देखत हुतौ यह कहिकें सूरदासजीने एक पद गायो ॥ सो पद—

राग सारंग—देखौ देखौ हरिजूको एक सुभाव ॥ अ-
अतिगंभीरउदारउदधिप्रभू जान सिरोमनराय॥१॥

राईजितनी सेवाको फल मानत मेरुसमान॥समझि-
दास अपराध सिंधु सम बूंदनएकौ जानि ॥ २ ॥
बदन प्रसन्न कमल पद सन्मुख दीखतही है ऐसें ॥
ऐसें विमुखहू भये कृपाया मुखकी जब देखौ तब
तैसे ॥ ३ ॥ भक्त विरह करत भय करुणा डोलत पाछें
लागे॥सूरदास ऐसे प्रभूकों कत दीजे पीठ अभागे ४

यह पद सूरदासजीनें कह्यौ सो सुनिक श्रीगु-
साँईजी बहुत प्रसन्न भये और कह्यौ जो ऐसो दैन्य-
प्रभू अपने सेवकनको देहि या दैन्यके पात्र एही है
तब वा वेर श्रीगुसांईजी पास ठाडे हुते और चत्र
भुजदासहू ठाडेहुते तब चत्रभुजदासनें कह्यौ जो
सूरदासजीने बहुत भगवत् जश वर्णन कीयौ परि
श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी जस वर्णन ना कीयौ
तब यह वचन सुनिकें सूरदासजी बोले जो मैंतो सब
श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकोही जसवर्णन कीयो है
कछू न्यारौ देखूं तौ न्यारौ करूं परि तेरे साथ कहत
हों या भांति कहिकें सूरदासजीने एक पद कह्यो ॥
सो पद—

राग बिहागरौ—भरो सो दृढ इन चरणनकेरो ॥
श्रीवल्लभनखचंद्रछटाबिनु सब जगमांझि अंधेरो ॥
॥ १ ॥ साधन और नहीं या कलिमें जासोंहोतनिबेरो॥

सूर कहा कहि दुबिधिआधिरौ विनामोलकौचेरो॥२

यह पद कह्यो पाछें सूरदासजीकौं मूर्छा आई तब श्रीगुसांईजी कहैं जो सूरदासजी चित्तकी वृत्ति कहां है तब सूरदासजीनें एक पद और कह्यौ॥ सो पद–

राग बिहागरो–बलिबलिबलिहौं कुमर राधिका नंद-सुवनजासों रतिमानी॥ वे अति चतुर तुम चतुर सिरोमन प्रीतिकरी कैसें होत है छानी॥ १॥ वे जुधरततन कनक पीतपट सो तो सब तेरी गति ठानी॥ ते पुनि श्यामसहेज वे शोभा अंबर मिस अपने उरआनी॥ २॥ पुलकित अंग अबहीहै आयौ निरखि देखि निज देह सियानी॥सूरसुजान सखीके बूझे प्रेम प्रकाश भयौ बिहसानी॥ ३॥

यह पद कह्यौ इतनों करिकें सूरदासजीको चित्त श्रीठाकुरजीको श्रीमुखतामें करुणारसकें भरे नेत्र देखे तब श्रीगुसांईजीने पूछौ जो सूरदासजी नेत्रकी वृत्ति कहां है तब सूरदासजीने एक पद और कह्यौ॥ सो पद–

राग बिहागरो–खंजन नैनरूपरसमाते॥ अतिसे चारु चपल अनियारे पल पिंजरा न समाते॥ चलि चलि जात निकट श्रवणनके उलटिपुलटिताठंकफं-

दाते ॥ सूरदासअंजल गुणअटके नातर अब उडि जाते ॥ १ ॥

इतनों कहतही सूरदासजीने या शरीरको त्याग कीयौ सो भगवल्लीलाम प्राप्तभये पाछें श्रीगुसांईजी सब सेवकनसहित श्रीगोवर्द्धन आये ताते सूरदासजी श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं सो इनकी वार्ताको पार नाहीं ताते इनकी वार्ता कहांताईं लिखिये॥प्र०॥६॥वै०॥८८॥

परमानन्ददास कन्नौजिया ब्राह्मण ति०

सो परमानंददासजी परमभगवल्लीलामध्ययाती श्रीठाकुरजीके परमसखा हैं सो जब श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप भूतलपर प्रगट भये तब श्रीगोवर्द्धन नाथजीकी आज्ञाते दैवी जीवनके उद्धारार्थ और तैसेंई श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकों श्रीठाकुरजीकों परकार सब प्रगट भयौ और आप श्रीगोवर्द्धन पर्वतमें प्रगट भयौ सो गोपालदासजी वल्लभाख्यानमें गाये हैं जो अनेक जीव कृपा करे " वादेशांतरपरवेश " ताते परमानंददासजीकौ जन्म कन्नौजमें हैं कन्नौजिया ब्राह्मणके घर भयौ सोवे परमानंददासजी

बहुत योग्यभये और कविभये भगवत्कृपाके पात्र-
भये कीर्तन बहुत आछौ गावते ताते परमानंददास-
जीके संगसमाज बहुत रहतो आप स्वामीकहावते
आपसेवक करते सोभगवदिच्छाते एक समय पर-
मानंददासजी कन्नोजते आप प्रयागकों आये सो
प्रयागमें उतरे सो वहां कीर्तन बहुत आछें गावते
ताते बहुत लोग कीर्तन सुनिवेकों आवते और अडे-
लते कार्यार्थ लोग बहुत आवते सो इनके कीर्तन
सुनिकें पार अडेलमें जाय कहते जो परमानंददा-
सजी इहां प्रयागमें आये हैं सो कीर्तन बहुत आछें
गावत हैं सो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके सेवक
जल घरिया कपूरछत्री सो उनके रागउपर बहुत
आसक्ति परि वे अवकाश नाहीं पावें जो परमानंद
दासजीके कीर्तन सुनिवेकूं आवे सेवामें अवकाश
नाहीं पावें जो प्रागजायसकें सो एक दिन एक
वैष्णव प्रागते अडेलमें आयो सो वाने कह्यो जो
आज एकादशी है सो परमानंददासजी आज जाग-
रनकरेंगे सो यह सुनिकें वा जलघरियानें अपनें
मनमें विचार्यो जो आज परमानंदजीकें कीर्तन सु-
निवेकों चलनों सो वे छत्री कपूर जलघरिया अपनी
सेवासों पहुंचकें रात्रिकों अपने घर आये सो घर

आयकें अपने मनमें विचार कीयौ जो या वेर नावतौ मिलेगी नाहीं तातें कहा कर्तव्य पारि वे पैर-वेमें भले निपुन हुते सो मनमें बिचारी जो पैरकें पारजैये पाछें अपने घरते चले सो श्रीयमुनाजीके तीरउपर आयठाडे भये तब पर्दनीपहरकें वस्त्र सब मांथेसों बांधिकें श्रीयमुनाजीमें पैरकें प्रयाग आये पाछें वस्त्र पहरकें जाठौर परमानंद स्वामी उतरे हुते तहां आये सो इनको कछू मिलापतौ परमानं-दस्वामीसों हुतौ नाहीं जहां और सब जने बैठे हुते तहां एऊजाय बैठे पारि एउ श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके सेवक हैं सो सब कोऊ जानत हुते ताते सबननें इनकों आदर करकें बैठायौ सो ये बैठे ता पाछें परमानंदस्वामीनें कीर्तनको प्रारंभ कीयौ सोपरमानंदस्वामीने विरहके पदगाये सोवि-रहके पद काहेको गाये सो प्रथम इनको स्वरूप कहि आये हैं कही जो यह लीला मध्यायाती श्रीठा-कुरजीके परमानंदस्वामी परमसखा हैं सो उहांसो बिछुरे और इहांतो अबही श्रीठाकुरजीको दर्शन नाहीं भयो और श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको दर्शन अब होयगो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके मार्गको यह सिद्धांत है जो भगवदीयको संग होयतौ श्रीठा-

कुरजी कृपाकरें ताहीके लियै श्रीआचार्यजी महा-प्रभूनने परमानंदस्वामीके ऊपर अनुग्रह करिकें अपने कृपापात्र भगवदीयके अंतःकरणनमें प्रेरना-करिकें परमानंदस्वामी ये इहां पठाये सो ये श्री-आचार्यजी महाप्रभूनके सेवक कैसे हैं जो जिनको श्रीठाकुरजी एकक्षनहूं नाहीं छोडत इनको संगही रहत हैं काहेतें सूरदासजी गाए हैं " भक्तिविरह करतकरुणामय डोलत पाछें २ " और जगन्नाथ-जोसीकीहुवार्तामें लिख्यौ है जो जब रजपूतनें तर-वार चलाई तब श्रीठाकुरजीनें हाथ पकर्‍यौ ताते श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके सेवकनके सदा श्रीठा-कुरजी निकटही रहत हैं तातें परमानंदस्वामीने विरहके पद गाये सो पद–

राग बिहागरो–ब्रजके बिरही लोग बिचारे ॥ बिन गोपाल ठगेसे ठाडे अति दुर्बल तनहारे ॥ १ ॥ मात जसोदा पंथ निहारत निरखत सांझ सकारे ॥ जो कोई कान्ह कान्ह कहि बोलत अंखियन बहुत प-नारे ॥ २॥ यह मथुरा काजरकी रेखा जे निकसेते कारे ॥ परमानन्द स्वामी बिनु ऐसे जैसे चंदा बिनु तारे ॥ ३ ॥ और पद गायौ सो पद–

राग बिहागरो–सब गोकुल गोपाल उपासी ॥ जो

गाहक साधनके उधौ सो सब बचन ईस पुरकासी ॥ १ ॥ जद्यपि हरिहम तजी अनाथ करि अब छांडत क्यों रतिजासी॥ अपनी सीतलता तहां छोडत जद्यपि विधुराहु है ग्रासी॥२॥ किंह अपराध जोग लिखि पठयौ प्रेम भजनते करत उदासी ॥ परमानन्द अंसीको बिरहन माँगें मुक्ति पुनरासी ॥ ३ ॥

राग कान्हरो-कौन रसिक है इन बातनकौ ॥ नंद नंदन विन कासों कहियै सुनिरी सखी मेरे दुखिया मनको ॥ १ ॥ कहावे यमुना पुलिन मनोहर कहा वह चंद सरद रातिकौ ॥ कहावे मंद सुगंध अमल रस कहावे षट्ट पद जल जातनकौ ॥ २ ॥ कहावे सेज पौढिबो बनकौ फूल बिछौना मृदुपातनकौ ॥ कहावे दरस परस परमानंदकोमलतन कोमल गातकौ ॥ ३ ॥

राग कान्हरो-माईको मिलवै नंदकिसोरे ॥ एक वारको नैन दिखावें मेरे मनको चोरे ॥ १ ॥ जागतजा मगन तनहीं खूंटत क्यों पाऊंगी भोरे॥सुनरी सखी अब कैसें जीजै सुन तमचर खगरोरे॥२॥ जो यह प्रीति सत्य अंतरगति जिन काहू बन होरे॥ परमानंद प्रभू आन मिलेंगे सखी सीस जिन ढोरे॥३॥

इत्यादिकपद विरहके ऐसे परमानंद स्वामीने

सगरी राति गाये पाछिली घडी चारि रात्र रही तब
जो जो जागरनमें आये हुते सो सब अपने घरकों
गये तैसेंई श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके सेवक एक
जल घरिया कपूरहूं परमानंद स्वामीसों जैसी कृष्ण
स्मरण कहिकें चले और परमानंद स्वामीके कीर्तन
सुनिकें बहुत प्रसन्न भये और परमानंद स्वामीसों
कह्यौ जो जैस हमने सुने हुते ताते अधिक देखे तुम
परम भगवद् अनुग्रह पूरण होये जल घरिया क्षत्री
कपूर श्रीमहाप्रभूके परम भगवदीय हैं ये जो चलि
आये सो परमानंद स्वामीके ऊपर अनुग्रह करि-
वेकों आये हैं नातर भगवदीय काहेकों काहूके घर
जाय और यह ऊपर काहे आये हैं जो श्रीआचा-
र्यजी महाप्रभूनके निकटही रहत हैं सो याको हेत
यह जो निकट रहत हैं तो इन जलघरिया क्षत्री
कपूरकी गोदमें बैठिकें श्रीनवनीत प्रियाजीनें पर-
मानंदस्वामीके पद सुने जो श्रीआचार्यजी महाप्र-
भूनके मार्गकी मर्यादा है जो श्रीआचार्यजी महा-
प्रभूनके अनुग्रह बिना श्रीठाकुरजी कृपा न करे
सो उन जलघरिया छत्री कपूर ऊपर श्रीआचा-
र्यजी महाप्रभूनको परम अनुग्रह है ताते श्रीनवनी-
तप्रियाजी इनकी गोदमें बैठिके परमानंदस्वामीके

पद काहेकों सुनने पडे सो ताकोहेत यह जो भगव-
दीय परमानंदस्वामीके ऊपर श्रीनवनीतप्रियाजी
अनुग्रहकरिवेकों आप पधारे हैं तातें सुनें सो श्री-
आचार्यजी महाप्रभूनके सेवक जलघरिया क्षत्री
परमानंदस्वामीसों जैसी कृष्ण करिके चले सो श्री-
यमुनाजीके तीर ऊपर आये सो वहां आयके वि-
चार कीयौ जो नावकी बाट देखै तो अवार होयगी
और सेवा छूटेगी और श्रीआचार्यजी महाप्रभूभी
खीजैंगे तातें जैसे पैरके आये हुते तैसेंही चले सो
पैरके पार गये सो पार आवतही स्नान करिकें अपनी
सेवामें तत्पर भये पाछें वहां प्रागमें परमानंदस्वा-
मीकी रात्रिके जागरनके श्रीमतिसों आंखिलगी
निद्रा आई सो इतनेमें स्वप्न आयौ सो स्वप्नमें देखे
जो जैसे रात्रिके जागरनमें श्रीआचार्यजी महाप्र-
भूनके सेवक जलघरिया क्षत्री बैठे हैं और उनकी
गोदमें श्रीनवनीतप्रियाजीके दर्शन भये और स्व-
प्नमें श्रीनवनीतप्रियाजी परमानंदस्वामीसों कहें
और परमानंदस्वामीकी निद्रा खुली सो वा श्रीमु-
खको कोऊ सौंदर्य कोटिकंदर्पलावण्य परमानंद
स्वामीने देख्यौ सो स्वप्नमें तो हृदयमें धारिलीयौ
और मनमें चटपटी लगी सो यह दर्शन फेरि कब

होयगो तब यह मनमें बिचार्‍यौ जो यह दर्शन उन श्रीआचार्यजी महाप्रभूके सेवक क्षत्री जलघरिया विना न होयगो ताते होयतो उनके पास जैये जो उनसों मिले तब कार्य सिद्धि होय ऐसो परमानंदस्वामीने अपने मनमें विचार कीयो सो ततकाल प्रागते अडेलकूं चले सो श्रीयमुनाजीके तीर ऊपर आय ठाडे भये सो प्रातःकालको समय भयौ सो प्रथम नाव चली तापर बैठिकें पार उतरे तब आगें जायकें देखें तो श्रीआचार्यजी महाप्रभूजी स्नान संध्यावंदन करत हैं सो परमानंदस्वामीकों श्रीमहाप्रभूजीको कैसो दर्शन भयौ साक्षात् पूरन पुरुषोत्तम श्रीकृष्णचंद्रसो श्रीगुसांईजी वल्लभाष्टकमें लिख्यो है"सोवस्तुतःकृष्णएवच"ऐसो दर्शन भयौ जो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके सेवक जलघरिया क्षत्रीकपूरकी गोदमें श्रीठाकुरजी काहेको बैठे यह कारण जिनके माथ ऐसे प्रभू विराजत हैं पर परमानंदस्वामीके मनमें यह जो क्षत्री कपूर मिले तो आछी सो काहेते जो जिनके माथे ऐसे प्रभू और जिनके दर्शनते श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको दर्शन भयौ ता पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने अपने श्रीमुखसों कह्यौ जो परमानंद कछू भगवदीय जस

वर्णन करि ॥ तब परमानंद स्वामीनें बिरहके पद गाये ॥ सो पद–

राग सारंग–कोनवेरभई चलेरीगोपाले ॥ होंननसारगईहोंन्योते वारवार बोलत ब्रजबाले ॥ १॥ तेरौतनको रूप कहां गयौ भामिन अरु मुखकमलसुखाय रह्यौ ॥ सब सौभाग्य गयौ हरिके संग हृदयसों कमल बिरहदह्यौ ॥२॥ को बोलेकोनैनउघारे कोप्रतिउत्तरदेहि विकलमन ॥ जो सर्वस्वअक्रूर चुरायौ परमानंदस्वामीजीवनधन ॥ ३ ॥

राग सारंग–जियकी साधन जियहीरहीरी ॥ बहुरि गोपाल देखि नाहीं पाए बिलपतकुञ्जअहीरी ॥ १ ॥ एक दिनसोंजसमीप यह मारग वेचन जातदहीरी॥ प्रीतके लिये दानामिस मोहन मेरी बाँहगहीरी ॥ २॥ बिन देखें घडी जातकलपसम बिरहाअनलदहीरी॥ परमानंद स्वामी बिन दर्शन नैननींदबहीरी ॥३॥

राग संगम–वह बात कमलदलनैननकी ॥ वारवार सुधि आवत रजनी बहु दुरिदेनी सेनी सेनकी ॥१॥ वह लीला वह रास सरदको गोरजरजनी आवनि ॥ अरुवहऊंचीटेरमनोहर मिसकरिमोहसुनावनि॥२॥ वसन कुञ्जमें रास खिलायो विथा गमाई मनकी ॥ परमानंदप्रभूसों क्योंजीवे जो पोखीमृदुवैनकी॥३॥

या भांति परमानंदस्वामीनें विरहके पद गाये सो सुनिके परमानंदस्वामीसों कह्यो जो कछू बाल-लीला वर्णन करि तब परमानंदस्वामीनें कह्यो जो महाराज मैं कछू समझत नाहीं तब श्रीमहाप्रभूननें कह्यो जो स्नान करि आउ हम तोकों समझावेंगे तब परमानंदस्वामीनें श्रीमहाप्रभूसों पूछो जो महाराज आपको सेवकविरक्त कहांहै तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कह्यो जो कछू टहलकरत होयगो तब परमानंदस्वामी स्नानकों गये सो तब परमानंदस्वामी आगे जायकें देखें तो यमुनाजलकी गागर लैकें वह कपूर छत्री आवत हैं तब निकट आये सो साम्हैं मिले सो उनको देखकें परमानंदस्वामी बहुत प्रसन्न भये और परमानंदस्वामीनें उनको नमस्कारकरी औ कह्यो जो रात्रिको जागरनमें आप पधारे हुते सो श्रीठाकुरजीनें आपकी गोदमें बैठिके मेरे कीतर्न सुने सो आपकी कृपाते श्रीठाकुरजीने मोसों कह्यो जो मैं श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके सेवक जलघरियाक्षत्रीकी गोदमें बैठिकें तेरे कीर्तन सुने हैं और आपकी कृपाते मेरो भाग्य सिद्ध भयो है सो आवतही तुम्हारी कृपाते मोकों दर्शनभयो इतनी बात सुनिके उन जलघरियाने कह्यो जो ऐसे माति

कह्यौ जो श्रीआचार्यजी महाप्रभू सुनेंगे तो खीजेंगे
सो सेवा छोडके क्यों गये तातें यह बात मति कहौ
तब इतनी सुनिकें परमानंदस्वामीकों आश्चर्य भयो
और कह्यौ जो एधन्य हैं जिन ऊपर श्रीठाकुरजीकों
ऐसो अनुग्रह है और ये अपनों स्वरूप छिपावत हैं
पाछें परमानंद स्वामीतौ स्नानको गये और जल-
घरिया जलकी गागर लेके मंदिरमें गयो पाछें पर-
मानंदस्वामी श्रीयमुनाजीमें स्नान करिकें तत्काल
आप श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके आगे आय ठाडे
भये तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कह्यौ जो पर-
मानंदस्वामी आगे आउ बैठौ तब परमानंदस्वामी
आप आगे आय बैठे तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू-
नने परमानंदस्वामीको नाम सुनायो पाछें मंदिरमें
पधारकें श्रीनवनीतप्रियाजीके सन्निधान परमानं-
दस्वामीकों ब्रह्मसंबंध करवायो पाछें अनुग्रह करि-
कें परमानंदस्वामीकों अनुक्रमणिका सुनाई काहेते
जो प्रथम परमानंदस्वामीसों श्रीआचार्यजी महा-
प्रभूननें अपनें श्रीमुखसों कह्यौ जो भगवद्यश वर्णन
करि सो परमानंदस्वामीनें बिरहको पद गायो तब
श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कह्यौ जो परमानंद-
स्वामी बाललीला गाउ तब परमानंदस्वामीने कह्यौ

जो राजमें कछू समझत नाहीं सो परमानंदस्वामीने काहेते कह्यौ जो ऊपर कहि आये हैं जो ये श्रीठाकुरजीसों बिछुरे हैं सो बिछुरेके दुःखकी तौ स्फुर्ति रही और संयोग जो सुख भयौ ताको विस्मरन भयौ जो काहेते जो सबलीला बिशिष्ट पूरणपुरुषोत्तमतौ श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों घर पधारे हैं सो परमानंददासकों श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें अनुक्रमणिका सुनाई तब सब लीलाकी स्फुर्ति भई और अनुक्रमणिका सुनाई ताको कारण कहा जो श्रीआचार्यजी महाप्रभूको नाम है "श्रीभागवतपीयूषसमुद्रमथनक्षमः" सो श्रीभागवतकौं श्रीगुसांईजी अमृतको समुद्रकरिकें वर्णन किये हैं सो अनुक्रमणिकाद्वारा श्रीभागवतरूपी समुद्र श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें परमानंदस्वामीके हृदयमें धरचौ तातेवाणीतो सब अष्टकाव्यकी समानहै और ये दोऊ परमानंदस्वामी और सूरदासजी सागरभये सो याते जो श्रीभागवतरूपी अमृतसागरको स्वरूप इनके हृदयमें श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें धरचौ सो काहेते जो सबकोऊ सूरसागर और परमानंदसागर कहते अब परमानंददाससो श्रीआचार्यजी महाप्रभू श्रीमुखसों कहै जो बाललीला वर्णन करि

सो परमानंददासजीने ततकाल बाललीलाके पद करिकें श्रीनवनीतप्रियाजीके सन्निधानगाये ॥ सो पद–

रागसांमरी–माईरीकमल नैनश्यामसुंदरझूलतहैंपलना ॥ बाललीलागावत सबगोकुलके ललना ॥१॥ अरुणतरुणकमलनखमनिजसजोती ॥ कुंचितकचमकराकृत लटकतगजमोती ॥२॥ अंगूठागहिकमलपानमेलतमुखमाहीं ॥ अपनोंप्रतिबिम्बदेखिपुनिपुनिमुसिकाहीं ॥३॥ जसुमतिके पुन्यपुञ्जवारवारलाले ॥ परमानंदस्वामीगोपालसुतसनेहपाले ॥ ४॥

यह पदसुनिकें श्रीआचार्यजी महाप्रभू बहुत प्रसन्नभये फेरि और पद गायो ॥ सो पद–

राग बिलावल–जसोधातेरेभाग्यकीकही न जाय ॥ जोमूरतिब्रह्मादिकदुर्ल्लभसो प्रघटे हैं आय ॥ १ ॥ शिवनारदसनकादिकमहामुनिमिलवेकरतउपाय ॥ तेनंदलाल धूरधूसरवपु रहत गोदालिपटाय ॥ २ ॥ रतनजडितपोढाय पालने वदन देख मुसिकाई ॥ झूलौमेरेलालबलिहारीपरमानंदजसगाई ॥ ३ ॥

राग बिलावल– "मणिमय आंगन नन्दके खेलत दोऊ भैया" सो ऐसें बाललीलाके पद परमानंददासने गाय सो सुनिकें श्रीआचार्यजी बहुत प्रसन्नभये सो परमानंददासजी श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके

पास है सो परमानंददासकों आपने कीर्तनकी सेवा दीनी सो परमानंददासजी श्रीनवनीतप्रियाजीको नित्य नये पद करिकें भांति भाँति के सुनावते तब अनोसर होतो तब परमानंददासजी श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके आगें पद कीर्तन करे श्रीआचार्यजी महाप्रभू नित्य कथा कहते सो परमानंददासजी नित्य सुनते सो ताही प्रसंगके कीर्तन करिकें परमानंददासजी सुनावते सो एक दिन परमानंददाजीनें श्रीठाकुरजीके चरणार्बिंदको महात्म सुन्यौ सो चरणार्बिंदके महात्मको कीर्तन करि श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको सुनायौ सुनिकें श्रीआचार्यजी महाप्रभू बहुत प्रसन्न भये ॥ सो पद—

राग कान्हरौ—चरण कमल वंदौं जगदीश गोधनके संग धाए ॥ जे पदकमल धूरि लपटाने करि गहि गोपीनके उर लाए ॥ १ ॥

यह पद सम्पूरण करिके परमानंददासजीनें गायौ और श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके स्वरूपको और प्रार्थनाको पद गायौ ॥ सो पद—

राग कान्हरौ— "यह मांगों गोपीजनवल्लभ" ॥

यह परमानंदस्वामीने सम्पूर्ण करिकें गायौ सो सुनिकें श्रीआचार्यजी महाप्रभू अपने मनमें जाने

जो यह मिसकरके परमानंददासजी या पदकों सुनायकें व्रजके दर्शनकी प्रार्थना कीनी है ताते व्रजकों अवश्य चलनों ॥ प्रसंग ॥ १ ॥

श्रीआचार्यजी महाप्रभू यह विचार करें जो व्रजकों पधारवेकों उद्यमकीयो सो दामोदरदास हरिसानी कृष्णदास मेघन परमानंददासजी और यादवदास हलवाई तथा रसोईकी सामग्री संगलेकें चले और सब वैष्णव संगले आप श्रीआचार्यजी महाप्रभू व्रजको पधारे सो व्रजको आवत परमानंददासको गाम कन्नौज आयो तब परमानंददासने श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों वीनती कीनी जो महाराज मेरे घर पधारिये आपके अनुग्रहते मेरौ भाग्य सिधि भयो है अब मेरो घरहू पावन करिये तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप अंतरयामी कृपानिधान भक्तमनोरथपूरक आप कृपा करिकें पधारें सो परमानंददासके घर आछी भांतिसों श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें रसोई करि श्रीठाकुरजीकों भोग समर्प्यौ पाछें भोग सरायकें आप प्रसाद लीयौ पाछें आप गादीतकियानके ऊपर बिराजे तब परमानंददाससों कह्यौ जो कछू भगवद्यशगावौ ॥ तब परमानंददासने मनमें बिचारी जो या समय श्रीआचार्यजी

महाप्रभूनको मन तो ब्रजमें श्रीगोवर्द्धननाथजीके पास है ताते विरहके पद गाऊं सो विरहको पद ऐसो गायो जानें छिनहूं कलप समान जाय ॥ सो पद-

राग सोरठ-हरि तेरी लीलाकी सुधि आवै॥ कमल नैन मनमोहनी मूरत मनमन चित्र बनावै ॥ १ ॥ एक वार जाय मिलत माया करि सो कैसे विसरावै॥ मुख मुसिक्यान वंक अविलोकन चाल मनोहर भावै ॥ २ ॥ कबहुक निवड तिमर आलिंगन कब हुकपिक सुरगावै ॥ कबहुक सभ्रम क्वासि २ कहि संगहीन उठि धावै ॥ ३ ॥ कबहुक नैन मूंदि अंत-रगति मणिमालापहरावै ॥ परमानंदश्याम ध्यान करि ऐसे बिरह गवावै ॥ ४ ॥

यह पद परमानंददासने गायौ सो सुनिकें श्री-आचार्यजी महाप्रभूनकों मूर्छा आई सो जा लीला-को पद परमानंददासनें गायौ ता लीलाविषै श्री-आचार्यजी महाप्रभू मान भये सो देहानुसंधान न रह्यौ सो तीन दिनलों श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकों मूर्छा रही सो सबरे सेवक दामोदरदास हरसानी प्रभृति श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके दर्शन करे सो वैसेही बैठे रहे चतुर्थ दिनके प्रातःकाल श्रीआचा-र्यजी महाप्रभू सावधान भये तब सब वैष्णव प्रसन्न

भये तब परमानंददासजी मनमें डरपै जो फेरि ऐसो पद न गाऊं फेरि सूधे पद गाए ॥ सो पद–

राग बिभाग–माईरीहोंआनंदगुनगाऊं॥ गोकुलकी चिंतामणिमाधौ जो मांगो सो पाऊं ॥ १ ॥ अबते कमलनैन ब्रज आयै सकल संपदा बाढी॥नंदरायके द्वारे देखौ अष्ट महासिद्धिठाढी ॥ २ ॥ फूले फले सदा वृन्दावन कामधेनुदुहिदीजै ॥ मारगमेघइंद्रवरषामें कृष्ण कृपा सुख लीजै ॥ ३ ॥ कहत जसोधा सखियनआगें हरि उत्तकर्षजनावै ॥ परमानंददास कोठाकुर मुरली मनोहर भावै ॥ ४ ॥ और हू पद गायौ ॥ सो पद–

राग गौरी–"विमलजस वृन्दावनके चंद्रको" ॥ यह पद संपूर्ण करिके गायौ फेरि और गायौ–

राग सारंग–"चलिरी नंदगांव जायवसियै" ॥ यह पद संपूर्ण करिकें गायौ सो पदमें यह कह्यौ जो चलरी नंदगांव जायबसियै सो श्रीमहाप्रभूजी सुनिके ब्रजकों पधारे सो प्रथम श्रीगोकुल पधारे सो श्रीगोकुल आवतही श्रीआचार्यजी महाप्रभू श्रीयमुनाजीके तीर ऊपर छोंकरके नीचे बैठकमें तहां श्रीआचार्यजी महाप्रभू बिराजै और एक बैठक श्रीद्वारिकानाथजीके मंदिरके पास है सो भीतरकी

बैठक है सो रात्रिके विश्राम तथा रसोईकी ठौरहै उहां श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको घर हुतौ जब आप श्रीगोकुल पधारते तब उहांई उतरते सो यह भीतरकी बैठक है पाछें सब वैष्णवनने श्रीयमुनाजी स्नान कीयै और परमानंददासजीहू श्रीयमुनाजीको जस वर्णन कीयै ॥ सो पद–

राग रामकली–श्रीयमुनाजीयहप्रसादहोंपाऊं॥ तिहारेनिकटरहोंनिसवासर रामकृष्णगुनगाऊं ॥ १ ॥ मंजन बिमल पावनजलचिंताकुलखबहाऊं ॥ तिहारीकृपाभानकीतनयाहरिपदप्रीतबढाऊं ॥ २ ॥ बिनतीकरौयहीवरमाँगौ अधमसंगबिसराऊं ॥ परमानंददास फलदातामगनगोपाललडाऊं ॥ ३ ॥

राग रामकी–" श्रीयमुनाजी दीनजान मोहिदीजै"

सो ऐसे पद संपूरणकरिकें श्रीयमुनाजीके परमानंददासजीनें बहुत गाये श्रीआचार्यजीके आगें तीर विषें गाये ता उपरांत श्रीमहाप्रभूजीनें परमानंददासकों बाललीलाविशिष्ट श्रीगोकुलके दर्शन करवाये सो परमानंददासको ऐसो दर्शन भयो सो सब व्रजभक्त श्रीयमुनाजलकी गागरिभरि ले जात हैं और श्रीठाकुरजी मार्गमें खेलते हैं और व्रजभक्तिनकों जलकी गागरि उठाय देत हैं और उनकी

कछुतोरे हैं या भांतिसों दर्शन भये सो तेसोई पद श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके आगें गायौ ॥ सोपद--

राग बिलावल--जमुनाजल घर भरिचली चंद्रावलि नारी ॥ मारग खेलत मिलि घनश्याम मुरारी ॥ १ ॥ नैननसों नैनामिले मन रह्यौ है लुभाई ॥ मोहनमूरत जियवसी पगधरो न जाई ॥ २ ॥ तबकी प्रीति प्रगटभई यह पहली भेंट ॥ परमानंद ऐसी मिली जैसी गुडमें चेंट ॥ ३ ॥

राग सारंग--लालनेकटेकोमेरीबैयां ॥ ओघटघाटचल्यौ नहीं जाई रपटतहों कालिन्दीमाहियां ॥ १ ॥ यह पद संपूरणकरकें ऐसे पद गाये तापाछें परमानंददासनें बाललीलाके पद बहुत गाये और श्रीगोकुलकों स्वरूप जामें आवे ऐसो पदगायौ ॥सो पद--

राग कान्हरौ--गावतगोपीमधुव्रजवानी ॥ जाके भुवनवसतात्रिभुवनपति राजानंदयसौधारानी ॥ १ ॥ गावत वेदभारतीगावत गावतनारदादिमुनिज्ञानी ॥ गावत गुन गंधर्व काल शिव गोकुलनाथ महातम जानी ॥ २ ॥ गावत चतुरानन जदुनायक गावत शेषसहस्र मुखरास ॥ मनक्रम वचन प्रीत यह अंबुज अबगावत परमानंददास ॥ ३ ॥ यह पद परमानंददासनें गायौ पाछें और पद गायौ ॥ सो पद--

राग कान्हरौ--जसुमति गृह आवत गोपीजन ॥ वासरताप निवारन कारन वारंवार कमलमुख निरखन ॥ १ ॥ चाहतप करि देहरी उलंघम किलक किलकहुलसत मनहीं मन॥ लौंन उतारि दोऊकरि-वारी फेरवार तन मन धन ॥ २ ॥ लेन उठाय चापतहीयौ भारि प्रेम दिवस लागै दृग दरकन ॥ चली लै पलनापोढावनको अरुकसाय पोढे सुन्दर घन॥३॥ देत असीस सकल गोपीजन चिरजीवोलोगगजमुन ॥ परमानंददासको ठाकुर भक्त वत्सल भक्ति मन रंजन ॥ ४ ॥

राग हमीर--" चितै चितै चितवारचौरी माई " ॥ यह पद सम्पूरण करकें गायौ सो ऐसे पद परमानंददासने बहुत गाये ता पाछें श्रीगोकुलनाथजीके दर्शन करिकें परमानंददास श्रीगोकुल ऊपर बहुत आसक्ति भये सब ऐसे पद गाये जामें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी प्रार्थनाकीनी जो मोकों श्रीगोकुलमें आयकें चरणारविंदके नीचें राखो नितप्रति प्रभूनके दर्शन करौ सर्व लीलाविशिष्ट पूरन पुरुषोत्तम हैं और यह पद गायौ ॥ सो पद--

राग कान्हरौ--यह मांगौजसोदानंदन ॥ चरणकमलमनमनमधुकर या छबिनैननपाऊं दर्शन ॥ १ ॥

चरणकमलकी सेवा दोऊतन राजत बिजैलताघननं-
दन ॥ वृषभानुनंदिनीमेरेउरवसुप्रानजीवनघन॥२॥
बृजवसिवोजमुना अचिवो श्रीवल्लभको दास यही
पन ॥ महाप्रसादपाऊं हरि गुनगाऊं परमानंददास
जीवनधन ॥ ३ ॥

राग कान्हरो–"जबलगिजमुनागायगोवर्द्धन तब-
लग गोकुलगांवगुसांई"॥यह पदसम्पूरण प्रार्थनाके
पद गाये तब कितनेक दिन श्रीआचार्यजी महाप्रभू
श्रीगोकुलमें बिराजे ता पाछें सब वैष्णवनकों संग
लेकें श्रीगोवर्द्धन नाथजीके दर्शनको पधारे ॥
प्रसंग ॥ २ ॥

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभू स्नान करिकें पर्वत
ऊपर पधारे सो आवतही परमानंददासनें श्रीना-
थजीकों श्रीमुखदेखिकें वहांके वहां रहे तब श्रीम-
हाप्रभूजीनें श्रीमुखसों कह्यो जो परमानंददास
कछू भगवतलीला गावो तब परमानंददास अपने
मनमें विचारे जो कहा गाऊं तब ऐसे विचारो जो
जामें प्रथम अवतारलीला पाछें चरणारविंदकी
वंदना पाछें भगवद्वर्णनको स्वरूप ता पाछें बाल
क्रीडा ता पाछें श्रीठाकुरजीको महात्म ऐसो पद
परमानंददासनें गायो सो पद–

राग कान्हरौ–मौहननंदरायकुमार ॥ प्रगटब्रह्मनिकुंज नायक भक्तहित अवतार ॥ १ ॥ प्रथमचरण सरोजबन्दो श्यामघनगोपाल ॥ मकरकुंडलगंडमंडित चारुनैन विसाल ॥ २॥ बलिरामसहित विनोदलीला सेकरहेता दास परमानंदप्रभूहारिनिगमबोलत नेत ॥ ३ ॥ और आसक्तिको पद गायो–

राग पूरवी–मेरौमाईमाधौसौंमनलाग्यौ ॥ मेरौनैन औरकमलनैनकौ इकठौरौकरिमान्यौ ॥१॥ लोकवेदकी कानितजीमें न्यौतीअपनेआन्यौ ॥ एकगोविंदचरणके कारणवैरसबनसौंठान्यौ ॥२॥ अबकोभिन्नहोयमेरीसजनीदूधमिल्यौजैसेपान्यौ ॥ परमानंदमिली गिरधरसों है पहलीपहचान्यौ ॥ ३ ॥

ऐसे पद परमानंददासनें गाये ता पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभू सेनआरतीकर श्रीनाथजीको पोढाये तब अनोसरकरि आप नीचे पधारे तब परमानंददासहू नीचे आय बैठे तब रामदासभीतरियानें परमानंददासको महाप्रसाद दूध पठायौ सो दूध परमानंददासजी लेवे लागे तब तातो लाग्यौ तब परमानंददासजीनें सीरोकरिकें लीयौ तापाछें रामदासनें पूछौ जो तुमको महाप्रसाद दूध पठायौहौ सो आयो तब परमानंददासने कही जो हां

आयौ परि दूध बहुत तातो हुतौ सो ऐसो दूध श्रीठा-
कुरजी कैसें आरोगतहैं तातें दूधतो सुहातो भलौ
तब रामदासनें कह्यौ जो बहुत आछौ आप भगवदी-
यहौ जैसे आज्ञाकरोगे तेसे करेंगे तब सकारें सब
सेवक ध्यान करिकें श्रीगोवर्द्धननाथजीकी सेवामें
तत्परभये तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू स्नानकरिकें
श्रीगिरिराज ऊपर पधारे तब श्रीगोवर्द्धननाथजी-
कों जगाये तब वा समय परमानंददासजी जायकें
श्रीठाकुरजीके जगायवेको पद गायौ ॥ सो पद—

रागविभास—जागोगोपाललाल मुखदेखोंतेरौ ॥
पाछें ग्रहकाजकरों नित्यनेममेरौ ॥ १ ॥ विगसत
निसा अरुण दिसा उदित भयौ भानु ॥ गुंजत अंग-
पंकजवन जागियें भगवान ॥ २ ॥ द्वारेठाडेबंदीज
नकरतहैं पुकार ॥ वंसप्रसंगगावतहरिलीलासार ॥
॥ ३ ॥ परमानंदस्वामी दयाल जगतमंगलरूप ॥
वेदपुराणपठतमहिमालीलाअनूप ॥ ४ ॥

यह पद परमानंददासने गायौ फिरि कलेऊको
पदगायौ ॥ सो पद—

राग रामकली—पिछावारेहैग्वालनटेर सुनायौ ॥
कमल नैन प्यौरोकरतकलेऊ कोटन सुखलों आयौ
॥ १ ॥ अरी मैया गैया एकवनव्यायरही हैं बछरा

उहांहींबसायौ ॥ मुरलीलईनलकुटियानलीनी अर बरायकोउसखानबुलायौ ॥ २ ॥ चक्रतभईनंदजूकी रानी सत्यआय किधौंअपनौं पायौ ॥ फलो नअंगसमातरसबत्रिभुवनपति सिरछत्र जो छायौ ॥ मिल बैठे संकेत सघनवन विविधि भांति कीयौ मन भायौ ॥ परमानंद सयानी ग्वालनि उलटि अंग गिरधर पिय प्यायौ ॥ ४ ॥

ऐसे पद परमानंददासनें गायौ ता पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजीके मंगलाके दर्शन खुले तब परमानंददासनें श्रीगोवर्द्धननाथजीसों पूछौ जो आप तातो दूध क्यों आरोगत है तब श्रीनाथजीनें कह्यो जो ये हमको समर्पतहै सो आरोगतहै ता पाछें परमानंददासजी नित्यकीर्तनकरिकें सुनावते तब तासमय एक राजा दर्शनकों आयों सो श्रीगोवर्द्धननाथ जीके दर्शन करे तब फेरि आयकें रानीसोंकही जो श्रीगोवर्द्धननाथजी ठाकुर बहुत सुंदरहैं ताते तूजायकें दर्शन करिआउ तब रानीनें कही जो जैसे हमारी रीतिहै सो होयतो दर्शन करें तब राजानें कही जो श्रीगोवर्द्धननाथजीके दर्शनमें काहेको परदा है तब रानीनें मानी नहीं तबराजानें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों वीनती कीनी जो महाराज मेंतो रानी-

सों बहुतकहतहों परि वह आवत नाहीं ताते आप कृपाकरिकें दर्शन करवावौ तौ वहकरै तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कही जो यहां लेआवो जो प्रथम वाकों एकांतमें दर्शन करवावेंगे तापाछें और लोग दर्शनकरेंगे तब राजा अपनी रानीकों लिवायके श्रीगोवर्द्धननाथजीके दर्शन करवाये सो सबलोग सरकिगये तब रानीदर्शन करिवेलागी तब इतनमें श्रीगोवर्द्धननाथजीने सिंहपौरके किवाडखोलदीये सो सब भीरदौरके रानीके ऊपरिपरी सो रानीकें सब वस्त्र निकसपरे और बहुत लज्जितभई तब राजाने रानीसोंकही जो मेन तोसों पहिलेही कह्यौ हुतो जो श्रीठाकुरजीके दर्शनमें काहेको परदा है ये ब्रजके ठाकुर हैं इननें काहूको परदा राख्यौ नाहीं तब वा समय परमानंददासजीने ॥ पद गायो–

राग देवगंधार–" कोनियह खेलवेकी वानि ॥ मदनगोपाललालकाहूकी राखतनाहिनकानि " ॥ १ ॥

यह एकतुकपरमानंददासजीनें गाईहुती तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यौ जो परमानंददास ऐसें कहौ जो भली यह खेलवेकी वानि ॥ तब परमानंददासजीनें एसौही पद गायो ॥ सोपद–

राग देवगंधार–भलीयहखेलवेकीवानि ॥ मदनगो-

पाल लालकाहूकी नाहिनराखतकानि ॥ १ ॥ अप-
नेहाथले देतहैं चनवर दूधदही घृतसानि ॥ जोवर-
जोतोआंखदिखावै परधनकोंदिनदान ॥२॥ सुनिरी
जसोधा सुतके करतब पहल मांटमथानि ॥ फोरि-
डारिदधिडारिआजरमेंकोनसहै नितहानि ॥ ३ ॥
ठाडीदेखतनंदजूकीरानी मूंदि कमल मुखहानि ॥
परमानंददासजानत हैं बोलि बूझिधों आनि ॥ ४ ॥

यह पद परमानंददासने गायौ ता पाछें कितेक
पद गाये जो जो लीला श्रीठाकुरजीने करी सो ता
ता लीलाके पद परमानंददासनें गायौ सो एक दिन
भगवदीय रामदासजी कुंभनदासजी सब वैष्णव
मिलिकें परमानंदजी जहां रहत हुते तहां आये
सो भगवदीय आये जानिकें परमानंददासजी बहुत
प्रसन्नभये जो आज मेरे घर भगवदीय आये हैं सो
मेरो बडौ भाग्य है और आज मेरो भाग्य सिद्धि
भयौहै सो काहेते जो श्रीठाकुरजी भगवदीयके हृद-
यमें सदा सर्वदा विराजत हैं ताते भगवदीयकी कृपा
होय तौ श्रीठाकुरजी अनुग्रह करें जो ये सब भगव-
दीय मेरेघर पधारे हैं सो प्रथम भगवदीयकी न्यौछा-
वरिकरी चाहिये जो ऐसो तो कछू नाहीं जो न्यौछा-
वरि करों जब यह बिचारकें परमानंददासने ऐसेही
पद कह्यौ ॥ सो पद--

राग हमीर--आये मेरे नंदनंदनके प्यारे ॥ माला-
तिलक मनोहर बानो त्रिभुवनके उजियारे ॥ १ ॥
प्रेम सहतवसत मन मोहन नेकहुटरतनटारे ॥ हृदय
कमलके मध्य विराजत श्रीव्रजराजदुलारे ॥ २ ॥
कहा जानोंकोनपुण्य प्रगट भयौ मेरे घर जो पधारे॥
परमानंद प्रभुकरी न्योछावर वारवारहों वारे ॥ ३॥

यह पद भगवदीय भेटकरि अपने आये भगवदी-
यनकों विदाकिये ता पाछें ऐसा रीतिसों परमानंद-
दासनें श्रीनाथजीकी भलीभांतिसो सेवाकीनी सो वे
परमानंददासजी श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे
कृपापात्र भगवदीय हैं सो इनकी वार्ता कहांताई
लिखिये ॥ प्रसंग ॥ ३ ॥ वैष्णव ॥ ८१ ॥

अथ कुंभनदास गोरवा तिनकी वार्ता ।

सो वे कुंभनदासजी श्रीगोवर्द्धनपर्वतके पास
जमुनावतो गांव है तामें रहते सो जमुनावतो नाम
वागांवको काहेते है जो जमुनाजीको प्रवाह सार-
स्वतकल्पमें याके निकट हुतो ताते जमुनावतो नाम
वा गांवको है तामें कुंभनदासजी रहते और परा-
सोली चंदसरोवरके ऊपर उन कुंभनदासजीकी
धरती हुती सो वहां खेती करते सो कुंभनदासजी
श्रीगोवर्द्धननाथजीके परमसखा हुते और कृपापात्र

हुते सो अबही श्रीगोवर्द्धननाथजी प्रगट होयके श्रीमहाप्रभूजीको बुलावेंगे तब ये भगवदीय प्रसिद्ध होयंगे सो एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभू पृथिवीपरिक्रमा करत झारखंडमें पधारे सो झारखंडमें श्रीगोवर्द्धननाथजीनें आज्ञा दीनी जो हम गोवर्द्धनमें तीन दमन हैं ॥ नागदमन इन्द्रदमन देवदमन तिनके मध्यमें हम देवदमन हैं सो मेरो नाम हैं ताते तुम आयके हमकों पधरावो और हमारी सेवाको प्रकार प्रगट करो तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें पृथ्वीपरिक्रमा उहांही राखिकें वेग पधारे तब दामोदरदास हरसानी कृष्णदास मेघन गोविंददुबे जगन्नाथजोसी रामदास ये पांच वैष्णव संग हुते सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू श्रीगोवर्द्धनकी तरहटी आयकें सद्दूपांडेके चोंतरा ऊपर बिराजे सो आगें श्रीगोवर्द्धननाथजीके प्रागट्यमें यह सद्दूपांडे भवानीनरो श्रीआचार्यजीमहाप्रभूनके सेवक भये हुते तिनकों श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें श्रीगोवर्द्धननाथजीकी सेवा सोंपी और ब्रजवासी ब्रजमें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके सेवक बहुत भये और कुंभनदासजी श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी शरण आये सो श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें श्रीगो-

वर्द्धननाथजीको एक छोटोसो मंदिर सिद्धि करवायौ तामें श्रीनाथजीकों पधराये और रामदास चोहानकों सेवाकी आज्ञा दीनी और सब ब्रजवासी लोग दूध दही माखन लावते सो श्रीगोवर्द्धननाथजी आरोगत हुते और रामदासकों जो भगवदिच्छातें जो आप प्राप्त होय सो भोग धरते और आप प्रसाद लेते और जे ब्रजवासी लोग श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके सेवक भये हुते तिनकों श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने आज्ञा दीनी जो यह मेरो सर्वस्व है सो तुम सब बातनसों यत्न राखियो और सेवामें तत्पर रहियो और कुंभनदासकों और सब सेवकनकों श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें आज्ञा दीनी जो तुम देवदमनके दर्शन किये विना महाप्रसाद मति लीजियो तब या भांतिसों आज्ञा करिकें श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें पृथ्वीपरिक्रमा झारखंडमें राखी हुती अब कुंभनदासजी नित्य श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी कृपाते श्रीगोवर्द्धननाथजीके दर्शनकों आवते सो कुंभनदास कीर्तन बहुत नीके गावते जो श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कुंभनदासजीकों नाम सुनायो और ब्रह्म संबंध करवायो तब कुंभनदासजी नित्य नये पद करिकें श्रीनाथजीको सुनावते और

श्रीनाथजी कुंभनदासजीके घर पधारते और बहुत क्रीडा करते खेलत वार्ता करते और बहुत कृपा कुंभनदासजीके ऊपर करते अब रामदासजी श्रीगोवर्द्धननाथजीकी सेवा करन लागे सो एक समय मलेक्षको उपद्रव भयो सो यहां मानिकचंदपांडे सद्दूपांडे रामदासचौहान कुंभनदास सब मिलिके विचार कियो जो यह मलेक्ष आयो है सो यह धर्मको द्वेषी है सो कहा कर्तव्य है तब सबने कहो जो यामें कहा कर्तव्य कहा पूछनों अपनो विचार्यो कहा होत है ताते श्रीनाथजीको पूछो जो महाराज कहा करें तब श्रीनाथजीने आज्ञा दीनी जो हमको यहांते ले चलों हम यहांते उठेंगे तब सबननें पूछो जो महाराज कहां पधारोगे तब आपनें श्रीमुखसों कह्यौ जो टोडके घनेमें चलेंगे तब एक भैसा मंगायौ तापर श्रीगोवर्द्धननाथजीको बैठाये तब एक ओरते तौ रामदास पकरें रहे और एक औरते कुंभनदास पकरे रहे और सब सेवक संग चले जात हैं तहां घनेमें कांटे बहुत हुतें सो उहां कांटेनमें बैठे सो वस्त्र सबनके फटिगये और सरीरमें कांटे लगे दुःख बहुत पायो सो घनेमें एक तालाव हुतौ तहां रूखनको एक चौक है तहां बडरूख नीचे श्रीनाथजी

बिराजे सो कछूक सामग्री संग्रह हुती सो रामदा-
सने भोगधरि जलको करुआ भरिकें आगे धरिकें
सब वैष्णव बेठे तब श्रीगोवर्द्धननाथजीनें कुंभनदा-
ससों कह्यौ जो कुंभनदासजी कछू गावौ तब कुंभ-
नदासजीतौ मनमें कुढरहे हुते तब एक पद नयो
करिके गायो ॥ सो पद-

राग सारंग-भावत है तोय टोडको घनौ ॥ कांटे
लगे गोखरू बूढे फटयौ जात यह तनौ ॥ १ ॥ सिहों
कहा लोकटीकोडर यह कहा वानकबन्यौ ॥ कुंभ-
नदासप्रभू तुम गोवर्द्धनधर वह कोन रांडढेडनीको
जन्यौ ॥

यह पद कुंभनदासनें गायौ सो सुनिके श्रीना-
थजी मुसिक्यायकें चुप करि रहे इतनेमें श्रीगोव-
र्द्धनते समाचार आये जो वह मलेक्षकी फोज आई
हुती सो पाछी फिरगई तब श्रीगोवर्द्धननाथजी
पर्वत ऊपर मंदिरमें पधारे ॥ प्रसंग ॥ १ ॥

अब श्रीनाथजी पर्वत ऊपर मंदिरमें पधारे सो
व्रजके लोगनकों बहुत हर्ष भयौ सो धन्य देवदमन
जो ऐसो उपद्रव आयो हुतौ सो इनके प्रतापते सब
मिटि गयौ तब कुंभनदासजी प्रसन्न होयकें पद गाये
सो पद श्रीगोवर्द्धननाथजीको सुनाये ॥

राग श्रीचर्चरी-" जयति जयति हरिदास सर्वध-रनें " ॥ यह पद सम्पूरण करिकें गायौ पाछें और पद गाय ॥ सो पद-

राग सारंग-" कृष्णतंनतरयातीर" यह पद सम्पूरण करिकें कुंभनदासने गायौ पाछें नित्य ऐसे पद कुंभनदासजी देवदमनको सुनावते तब कुंभनदास-जीके पद सब जगतमें प्रसिद्ध भये सो सब लोग इनके पद गावते तब इनको पद काहू कलामतने सीख्यौ सो फतेपुर सीकरीमें देशाधिपतिके आगें कुंभनदासजीको पद कीयो भयौ पद वा कलामतने गायौ सो सुनके देशाधिपतिको चित्त वा पदमें गडगयौ और माथौ धुनौ जो ऐसेहू महापुरुष व्है गयै हैं जिनको ऐसे दर्शन परमेश्वरके होत हैं तब वा कलामतने कह्यौ जो अजी साहब अबहू हैं सो सुनिकें देशाधिपति बहुत प्रसन्न भयौ और वा कला-मतसों कह्यौ जो वे कहां हैं तब वा कलामतनें कही जो श्रीगोवर्द्धनके पास जमुनावतौ गांवहैं तहां वे रहत हैं तब देशाधिपतिने कही जो यहां बुलावौ हम उनसों मिलेंगे तब देशाधिपतिने मनुष्य और अस-वारी कुंभनदासके बुलायवेकों भेजे तब कुंभनदासजी तो घर हुते परासोलीमें बैठे हुते सो मनुष्यनने उहां

बतायदीये तब कुंभनदासजी घरतो हुते नाहीं पात-
साहने यादकीये हो तब कुंभनदासने कही जो
भैय्या में कछू देशाधिपतिको चाकरतौ नाहीं मेरो
देशाधिपतिसों कहा काम है तब देशाधिपतिके
मनुष्यननें कही जो बाबा हमतो काम कछू समझत
नाहीं परिहमको देशाधिपतिको हुक्म है जो कुंभ-
नदासकोले आवो ताते यह पालकी है यह घोडाहै
जापर चाहो तापर बैठिकें चलिये हमतो आये हैं
सो आपको ले जायंगे तब कुंभनदासनें मनमें विचा-
रकीयौ जो विनाजाये तौ निर्वाहनहोयगो सो कुंभ-
नदासजी ततकाल उहांते पनहिं पहिरके चले तब
कुंभनदासजीकों जो लेवेको आये हुते तिनने कही
जो बाबासवारीमें बैठिये तब कुंभनदासने कह्यौ
जो भैय्या में तौ कबहू बैठ्यौ नाहीं पाछें ऐसेंही चले
सो फतहपुर सीकरी आय पहुंचे सो देशाधिपतिके
डेराहुते तहां गये तब मनुष्यननें देशाधिपतिसों
कह्यौ जो कुंभनदासजी आये हैं तब देशाधिपतिनें
कुंभनदाससों कही जो कुंभनदासजी आवो बैठो सो
आय बैठे सो वह स्थल कैसोहै जामें जडावकी रा-
वटी तामें मोतीनकीझालरी लगीहै ऐसो स्थलहै
तामें बैठे तब मनमें बहुत दुःखलाग्यौ और कह्यौ

जो यासो तौ हमारे ब्रजके हींसनके रूख आछे हैं सो जिनपें श्रीगोवर्द्धननाथजी खेलतहैं तब इतनेमें देशाधिपति बोल्यौ जो कुंभनदासजी तुमने विसन पद बहुतकीयेहैं सोमेने तुमको बुलायो है ताते तुम कछू विसनपद गावो तबकुंभनदासजी तौ मनमें कुढेहुते जो विचारें कहागाऊं मेरीवाणीकेभक्ता तौ श्रीगोवर्द्धनधरहैं और कछू गाये विना मेरौकाम चलेगौ नाहीं ताते ऐसो गाऊं जो कबहूं मेरो नाम न लेय काहेते जो याकेसंगते मेरे प्रभूछूटैहैं ताते कछू कठोर वचनकहूं जो बुरोमानेगौ तो कहा करेगो तब यह मनमें आई " जोजाको मनमोहनसंगकरे एकोके सबसे नहीं सिरने जो जगवैरपरे " यह विचारिके तासमय कुंभनदासजीने एक नयौ पदकरिकें गायौ ॥ सो पद–

राग सारंग–भक्तनकौकहासींकरीकाम ॥ आवत जात पन्हैयाटूटीविसरगयोहरिनाम ॥ १ ॥ जाको मुखदेखे दुखलागै ताकोकरनपरीपरनाम ॥ कुंभनदासलालगिरधर विन यह सब झूठौ धाम ॥ २ ॥

यह पद गायौ सोदेशाधिपति अपने मनमें बहुतकुटयौ और कह्यौ जो इनको काहूबातकोलालच होयतो मेरो जसगावें इनकोंतो अपने परमेश्वरसों

सांचोसनेहहै इतनो कहिकें देशाधिपतिनें कुंभनदासकों सीखदीनी तब कुंभनदासजी उहांतेचले सो मार्गमें आवत अतिक्लेश जो कब हों प्रभूनकों श्रीमुखदेखों सो ऐसो विचारके कुंभनदासजी आवतहैं ता समय पद गायो ॥ सो पद-

राग धनाश्री-कबहूदेखहों इन नैननु॥ सुंदरश्याम मनोहरमूरत अंग अंगसुखदेननु॥ १॥ वृन्दावन बिहारदिनदिनप्रतिगोपवृन्दसंगलैननु॥ हंसिहंसि हरिखपतौवनपावन बांटिबांटिपयफेननु ॥ २ ॥ कुंभनदासकितेदिनवीते कियेरेणुसुखसेननु ॥ अब गिरिधरबिन निसऔरवासर मननरहतक्योंचेननु ॥ ३ ॥

यह पद मार्गमें गावत आये सो आयके श्रीगोवर्द्धननाथजीके दर्शनाकिये और दोय दिनलों दर्शन नभये सो कुंभनदासजीकों दोयजुगकी बराबर बीते सो श्रीमुखदेखतेही सब दुःख विसरगयो तब एकपदगायो ॥ सोपद-

राग धनाश्री-नैनभरिदेखौनंदकुमार॥ तादिनतेसब भूलिगयोहों बिसरचौपनपरवार ॥ १ ॥ विनदेखेहोंविकल भयोहों अंगअंगसबहारि ॥ तातेसुधिहै सावरीमूरतिकी लोचनभरिभरिवार ॥ २ ॥ रूपरासपैमितनहीं मानोंकेसेमिसेलोकन्हाई ॥ कुंभनदासप्रभु गोवर्द्धनधर मिलियैबहुररीमाई ॥ ३ ॥

राग धनाश्री–हिलगनिकठिनहैयामनकी ॥ जाके लियै देखिमेरीसजनी लाजगईसबतनकी ॥ १ ॥ धर्मजाउ अरुलोगहंसोसब अरुगावोकुलगारी ॥ सोक्योंरहेताहिबिनदेखे जो जाको हितकारी ॥२॥ रसलुब्धकनिमखनछांडत ज्योंआधीनमृगगानों ॥ कुंभदाससनेहपरम श्रीगोवर्द्धनधरजानों ॥ ३ ॥

ऐसेपद बहुत कुंभनदासजीनें गाये सो सुनिके श्रीनाथजी बहुत प्रसन्नभये और कह्यौ " यह मोबिन रहत नाहीं " ॥ प्रसग ॥ २ ॥

और एकसमय राजामानसिंह सबठौरते दिग्विजयकरिकें अपनें देसकूं चले तब मनमेंविचारे जोबहुतदिनमें आये हैं ताते मथुरावृन्दावन होयकेंचलनों सो यह विचारकें आगरेते चले सो मथुराआयै तब बिश्रांत स्नान करिकें श्रीकेसोरायजीके दर्शन करिकें वृन्दावनचले सो उष्णकालके दिनहुते तब वृन्दावनके सब महंतननेजानी जोआजयहाँ राजामानसिंह दर्शनको आवेगो सो यहजानिके श्रीठाकुरजीकों आछे२ जरीकेवागे बहुत आभरणपहराये पिछवाई चंदोवा सब जरीनके बांधे इतनेमें राजा मानसिंह दर्शनकोंआयौ सोभीतरि मंदिरके आयकें श्रीठाकुरजीके दर्शनकीये सो उष्णकालके दिन हुते

सो बहुत गरमी पडे सो तासमय राजा मानसिंह
पै ठाडौ न रह्यौ गयौ सो ऐसे दर्शन चार पांचजगह
खडे हुते सोतहांसबठौर दर्शनकरि सब ठौरते
बिदाहोयकें अपनेडेरामें आये सो डेराआयकें मन-
मेंविचारेजो अबहीकूचकरें सो वहांसो असवारहो-
यकें चले सो तीसरेपहर गोवर्द्धन गांवआये सो
मानसीगंगाऊपर डेराकीये सो तहां श्रीहरदेव-
जीके दर्शन कियै सो वहां वृन्दावनके महंतनने
बडेठाठबनायेहैं तैसोई यहांठाठ बनायराख्यौ हुतौ
सो राजामानसिंहतहांते दर्शनकरिकेचले तब काहू-
नेकही जो महाराज यहां श्रीगोवर्द्धननाथजी बहुत
सुंदरठाकुरहैं तहां आपदर्शनकोंचलो तबराजा मान-
सिंहने कह्यौ जो यहां तो अवश्य चलनो ये ठाकुर
सब ब्रजके राजाहैं ताते इनके दर्शनतो अवश्यकरने
तब तहांते चले सो गोपालपुरगांव आये तब आय-
कैंपूछी जो दर्शनको कहासमय है तब काहूने कही
जो उत्थापनके दर्शनतोहोयचुकेहैं अब भोगके दर्श-
न होयंगे तब यह सुनिकें राजामानसिंह श्रीगोवर्द्ध-
ननाथजीके दर्शनकों गिरराजऊपर आये सो उष्ण-
कालकेदिन मार्गके श्रमित दूरकेचले आयेसो गर-
मीमें राजा बहुत व्याकुलभयोहुतो इतनेमें भोगके

दर्शन खुले सो राजामानसिंहको मणिकोठामेंलेगये तिनदिननमें श्रीनाथजीकीसेवा वैभवसोंहोतहुती बडो मंदिरसिद्धि भयौहुतौ श्रीगोवर्द्धननाथजीके आगें गुलाबजलको शृंगार भयौहुतो निजमंदिर मणिकोठा तिवारी सब जलमयहोय रहे हुते सोतासमय राजामानसिंह दर्शनकोंगयेहुते सो श्रीगोवर्द्धननाथजीके दर्शन करिकें साष्टांगदंडवत कीनी और गरमीमें राजा व्याकुल भयोहुतौ सो सीतलताईभई बडो चैनभयो और श्रीगोवर्द्धननाथजीको श्रीमुखदेखकें राजा बहुत प्रसन्नभयौ और कह्यौ जो साक्षात्पूरणब्रह्म श्रीकृष्ण वृन्दावनचन्द्र श्रीगोवर्द्धननाथजी हैं आगें श्रीभागवतमें सुन्यौ हुतौ सो आज देखे आजकोदिन है सो धन्य है और आज मेरौ बडौभाग्य है और मनमें कह्यौ जो यह भोगको समय है सोतौ प्रभूनकी राजधानीको समय है सोवे प्रभू विराज है आगे तालमृदंगबाजत हैं कीर्तन होतहै सो कुंभनदासजी ठाडे २ मणिकोठामें दर्शन करत हैं और कीर्तन गावतहैं सो राजा मानसिंहको मन वा पदमें गडगयोहुतौ तेसोंई कोटिकंदर्पलावण्यस्व रूप और तेसोंई कीर्तनकुंभनदासजी करत हुते ॥ सो पद-

राग नट–रूपदेख नेना पल लागै नाहीं ॥ गोवर्द्धनके अंग अंगप्रतिनिरखिनेनमनरहततहीं ॥ १ ॥ कहा कहौकछू कहत न आवै चितचोरयोमांगवैदहीं ॥ कुंभनदास प्रभूके मिलनकी सुंदर बात सखियनसों कही ॥ २ ॥

राग धनाश्री–आवतमोहनमनजुहरयोहो ॥ होंग्रहअपनेसचुसोंबैठी निरखिवदनअस्वराविसरयोहो ॥ १ ॥ रूपनिधानरसिकनंदनंदननिरखिवदनधीरजनधरयोहो ॥ कुंभनदासप्रभू गोवर्द्धनधरअंगअंगप्रेम पियूष भरयो हो ॥ २ ॥

ऐसे पद कुंभनदासजी गावत है इतनेमें राजभोगके दर्शनहोय चुके तब राजा मानसिंह दंडौत करिकें अपने डेरामें गयो तब कुंभनदासजी संध्या आरतीके दर्शन करिकें अपनी सेवासों पहुंचकें अपने घरकों गये तब राजामानसिंह अपने डेरामें जायकें अपने पासके मनुष्य हुते तिनमें श्रीगोवर्द्धननाथजीके सिंगारकी वार्ता करन लागे और कह्योजो यह श्रीगोवर्द्धननाथजीके आगें कौन गावत हुतो इनने ऐसे विसन पद गायेहैं जो कछू कहिवेमें नाहीं आवत तब काहूने कही जो महाराज एक ब्रजवासीहै कुंभनदास नामहै सो आपने

सुनेही होयंगे देशाधिपतिसों मिले हुते सो हैं तब राजामानसिंहने कही जो हमहू इनसों मिलेतौ आछौ तब राजामानसिंह सवारे उठे सो श्रीगिरिराजकी परिक्रमाको निकसे जो परासोली आये सो परासोलीमें कुंभनदासजी न्हायकें बैठे इतनेमें श्रीगोवर्द्धननाथजी पधारे श्रीमुखसों कहे जो कुंभनदासजी हों तो एक बात कहूंगो तब इतनेमें राजा मानसिंह आयौ सो कुंभनदासजीको प्रणाम करिकें बैठौ और श्रीनाथजीतौ उहांते दूरजाय ठाडे भये सो श्रीनाथजीतौ एक कुंभनदासजीको देखेहै और इनको भतीजीको देखेहै तब कुंभनदासजीकी दृष्टी तौ श्रीनाथजीके संगहीगई सो श्रीनाथजी बैठेहैं तहां कुंभनदासजी देखवो करे तब भतीजी बोली जोबावा राजाबैठेहैं तब कुंभनदासजीने कही जोमें कहाकरूं जो बैठेहैं तो जाबात कहतहुते सो तो भाजिगये सो अब कहेंगे तब दूरते श्रीनाथजी कहैं जो कुंभनदास में बातकहूंगो तब कुंभनदासजी प्रसन्नभये और भतीजीसों कह्यौ जो अमुकी आरसी लाउ तिलककरों तब भतीजीने कही जोबावा आरसीतौ पडियापीगई तब राजानै कुंभनदासजीकी भतीजीसों जो अरीछोरी पडिया कहा पीगई

तब वह कठौठीमें पानी लायकें कुंभनदासजीके आगें धर्यो तब कुंभनदासजी वामें देखिकें तिलक करन लागे इतनेमें राजा मानसिंहनें अपनी सोने की आरसी कुंभनदासजीकें आगें धरी और कह्यो जो बाबायामें देखिकें तिलक करिये तब कुंभनदासजी बोले जो अरे भैय्या याको हों कहा करूंगो हमारे तो यहां छानिके घरहैं ताते कोऊ याके पाछें हमारो जीव लेयगो ताते हमें तो यह नाहिं चाहियत है तब राजा मानसिंहने इनके आगें सोनेकी थैलीधरी तब कुंभनदासनें कह्यो जो भैया हमको धनतो चाहिये नाही हमारे तो यह खेती है ताको धन आवत है सो खातहैं तब राजा मानसिंहने कह्यो जो भलो आपको गामहै ताको लिखोहै करि देउ तब कुंभनदासनें कह्यो जो भैया होतो ब्राह्मण नाहीं जो तेरो उदक लेउ तब फेरि राजा मानसिंहनें कह्यो जो बाबा कछू तो आज्ञा करो तब कुंभनदासनें कह्यो जो हमारो कह्यो कराग तब राजा मानसिंहनें हाथ जोर कह्यो जो महाराज आप कहोगे सो करूंगो तब कुंभनदासनें कह्यो जो फेरि मेरे पास तुम मत आईयो तब राजा मानसिंहनें कह्यो जो महाराज धन्य है यह मायाके भक्ततो सगरी

पृथ्वीमें फिरौ सो बहुत देखे पारिभगवद्भक्ततौ एक एही देखे यह कहिकें राजा मानसिंह कुंभनदासकों दंडौत करिकें उठ चल्यौ तब फेरि आयकें कुंभनदाससों श्रीनाथजीनें वह बात कही और बहुत प्रसन्न भयौ तब फेरि कुंभनदासजी श्रीगिरराजऊपर आयकें श्रीनाथजीकी सेवामें ततपर भयै॥ प्रसंग॥ ३

और एक समय कुंभनदासजीकों मिलिवेकों बृन्दावनके महंत हरिवंश भृत आयै सो यह जानिकें आयै सो महापुरुष हैं इनसों श्रीठाकुरजी बोलत हैं बातें करत हैं और काव्य इनकी सुनी सो कीर्तन बहुत सुन्दर कीयै ताते ऐसे पद श्रीठाकुरजीके साक्षात्कार विना न होय यह जानिकें कुंभनदाससों मिलवे आयै सो कुंभनदाससों मिलिकें बहुत प्रसन्न भये और कह्यौ जो कुंभनदासजी तुमने विसन पद बहुत कीयै सो हमनें आयकें सुनेहैं और आपको पद श्रीस्वामिनीजीकौ नाहीं सुन्यौ ताते आप कोइ स्वामिनीजीकौ पद सुनावौ तब कुंभनदासजीनें श्रीस्वामिनीजीको पद करिकें गायौ ॥ सो पद–

राग रामकली ॥ ताल चरचरी–कुमरिराधिकाकेतुव सकल सौभाग्यकीवावदनपरकोटिसचंद्रवारौं॥ खंजनकुरंगसतकोटिजं घन ऊपर सिंहसतकोटि उपर

न्यौंछावर उतारौ मत्तसतकोटि चालिपर कुंभसत-कोटि इन कुचनपरिवारि डारौं ॥ १ ॥ कीर दशकोटि दशननपरिकहिनवारौ पंककंदूरवहूकसतकोटि अ-धरन ऊपर वारि रुचिर गर्भटारौ ॥ नागसतकोटिवे-नीऊपरकपोतसतकोटिकारिजुगलपर वारनेनाहिन-कोऊलोकउपमाजुधारौ ॥ २ ॥ दासकुंभन स्वा-मिनी सुनख सिखअति अद्भुत सुठान कहालगि समारौ ॥ लाल गिरधरकहत मोहितो हिलौ जीवहू रूप छिनछिन निहारौ ॥ ३ ॥

यह पद कुंभनदासनें गायो सो सुनिके महंत बहुतही रीझे और कहैं॥जो हमनें श्रीस्वामिनीजीके पद बहुत किये हैं परिवहां उपमादीनीही और वारि फेरिडारी ताते कुंभनदासजी आप बड़े महापुरुष हौं आपकी सराहना कहां तांई करियै वा महंतनें कुंभनदासकी बडी बडाई करी बहुत रीझे ता पाछें वे महंत आदि सब कुंभनदासजीसों बिदा होयकें अपने घरगये ॥ प्रसंग ॥ ४ ॥

और एक समय श्रीगुसांईजी श्रीगोकुलमें अपने घरते श्रीनवनीतप्रियाजीसों आज्ञा मांगिकें विदे-साथ द्वारिकाकों पधारे सो श्रीगुसांईजी नाथजी-द्वारि पधारे सो श्रीनाथजीकों सेवासिंगार किये

ता पाछें आपभोजनकरिकें गादीऊपर विराजे तब सब सेवक दर्शनकों आये तब बात चलतमें कुंभनदासकी बातचली तबकाहू वैष्णवनें कह्यो जो महाराज कुंभनदासजीकों द्रव्यको बहुत संकोच है सात बेटाहूहैं और उपजततौ एक खेतीकी है ताको धन आवत है तासों निरवाहकरत हैं सो यह बात श्रीगुसांईजीने अपन मनमें राखी ता पाछें उत्थापनके समय कुंभनदासजी दर्शनको आये तब श्रीगुसांईजी अपने श्रीमुखसों कहें जो कुंभनदास हम श्रीद्वारिका रणछोडजीके दर्शनको पधारेंगे और विदेसहू होयगो वैष्णवनें बहुतकारिकें लिख्योहै ताते जो तुम संगचलोतौ विदेसमें भगवदीयको ग्रहकालबाधा न होय तब भगवदीयको काल व्यतीतहो जाय कछू जान्यौ न परै और में सुन्योहो जो कछू तुम्हारे द्रव्यको संकोच है सो उहां सिद्धि होयगो ताते सर्वथा तुमको चल्यौ चाहिये तब कुंभनदासजीनें कही जो आज्ञा इतनेमें दर्शनको समय भयो सो श्रीगुसांईजी आप स्नान करिकें श्रीनाथजीके मंदिरमें पधारे श्रीनाथजीकी सेवासों पहुंचिके श्रीनाथजीको पौढायकें बैठकमें पधारे और कुंभनदासजीकौ सीखदीनी जो कुंभनदासजी तुम सेवासों पहुं-

चिकें वेग आईयो हम कालि आरती करिकें अप-
छराकुंडऊपर जाय रहेंगे तब कुंभनदासजी श्रीगु-
सांईजीकों दंडौत करिकें अपने घरकों आये सवारे
सेवासों पहुंचकें श्रीनाथजीके दर्शन करिकें अपछ-
राकुंड ऊपर आये और श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीसों
सीखमांगिकें आप नीचे आये पाछें आप भोजन-
कीये और सब सेवकनकों महाप्रसाद लिवायो ता
पाछें समयें ताहीको महूर्तहुतो सो श्रीगुसांई आप
पर्वत नीचे आये सोई अपछराकुंड ऊपर आये सो
तहां अपछराकुंड ऊपर डेरा करे हुते सब सेवक
अगाऊ सो ठाडे हुते सो श्रीगुसांईजी डेरा पधारिकें
पोढे इतनेमें सब सेवक सामान लेकें वेऊ आये सो
कुंभनदास उहां बैठिकें बिचारत हुते कहिये जो
कहिवेकी होय प्राननाथ बिछुरनकी बिरियां जानत
नाहिं न कोऊ यह विचार करत उत्थापनको समय
भयो तब आप गुसांईजी आप भीतर डेरामें जागे
और कुंभनदासजीकूं दर्शनकी सुधि आई सो वहां
पुंछरीकी ओर कोनेमें जायकें बैठि कीर्तन गावत
है और आखिनमेंते जलको प्रवाह बहतहो सो
कुंभनदासने एकपद गायो ॥ सो पद—

राग सारंग—केते हैं जुगरो बिन दख॥तरुण किशो-

ररासिक नंदनंदन कछूक उठाति मुखरेखें ॥ १ ॥ वह वह शोभा वह कांति बदनकी कोटिकचंदविसेखें ॥ चितवन वह हास्य मनोहर वह नटवर वपुभेषें ॥२॥ श्याम सुंदर संग मिलि खेलनकी आवत जिये अपेखें ॥ कुंभनदास लालगिरधर बिन जीवन जन्म अलेखें ॥ ३ ॥

यह पद कुंभनदासनें गायौ सो श्रीगुसांईजी आप डेराके भीतरसुनों सो कुंभनदासजीकों कलेश श्रीगुसांईजीसों सह्यौ न गयौ सो श्रीगुसांईजी आप डराक बाहर पधारें और श्रीमुखते कह्यौ जो कुंभनदास अब तुम बेगिजाउ तुम्हारा बिदेसहोय चुक्यौ और जो तुम्हारी अवस्थाहै एसा उनकी अवस्था है सो कैसें जानिये जो श्रीअक्काजीनें गज्जनधावनकों पानलेवेकों पठायौ सोगज्जनकोंतों भगवद्‌आसक्ति देखें विना एकक्षणहू न रह्यौ जाय सो गज्जनधावन पानलेवेकों बाहिर गये सो थोरीसी दूर गये और ज्वरचढि आयौ सो मूरछा खायकें गिरे और श्रीअक्काजीने श्रीनवनीतप्रियाजीकों भोग समर्प्यौं तब श्रीनवनीतप्रियाजीनें गज्जनधावनको बोलन सुन्यौ तब श्रीनवनीतप्रियाजीनें अपन श्रीमुखसों कह्यौ जो मेरा गज्जनधावन कहां है तब श्रीअक्का-

जीनें कह्यौ जो वहतौ पानलेवेकों गयो है तब श्री-नवनीतप्रियाजीनें कह्यौ जो मेरौ गज्जनधावन आ-वेगौ तव आरौगूंगो सो श्रीहस्त खेंचकें बैठरहे तब वेगिगज्जनधावनकों बुलायौ तब गज्जनधावननें कही जो बाबा आरोगौ तब श्रीनवनीतप्रियाजी आरोगे हैं यह श्रीआचार्यजी महाप्रभूकी मर्यादा है जो जितनों सेवकको स्वामी ऊपर स्नेह होय और भगवद्गीतामें भगवान कहेंहैं ॥

श्लोक-ये यथामां प्रपद्यंते स्तांस्तथैवभजाम्यहं॥ यह आधौश्लोककह्यौ ताते श्रीमुखसों कहें जो इहां तुम्हारी बिवस्था और उनकी बिवस्था है सो ऐसो कुंभनदासकों और श्रीनाथजीकों बिरहहुतो ताते श्रीगुसांईजीनें कुंभनदासकों सीख दीनी तब कुंभ-नदासनें श्रीनाथजीके दर्शन कीये तब कुंभनदा-सने एकपद गायौ ॥ सो पद-

राग सारंग-जो ये चौंपमिलनकी होय ॥ तौ क्यौं-रहै ताहि विन देखें लाखकरौ जिनकोय॥ जो ये विरह परस्परव्यापै जो कछूजीवनवनै॥ लोकलाजकुलकी मर्यादा एकौ चितनगनै ॥ कुंभनदास प्रभूजायतन लागी और न कछू सुहाया गिरधरलाल तोहि विन देखे छिनछिन कलप विहाय ॥

सो यहपद कुंभनदासनें श्रीनाथजीके सन्निधान गायौ सो सुनिकें श्रीनाथजी बहुत प्रसन्न भये सो कुंभनदास श्रीनाथजीकों देखकें प्रसन्न भये॥प्र०॥८

और एक समय कुंभनदासजी श्रीगुसांईजीके पास बैठेहुते तब कुंभनदासने श्रीगुसांईजीसों कह्यौ जो महाराज बेटा डेढ है और हेंतो साथ तब श्रीगुसांईजीने कह्यौ जो कुंभनदास डेढकौकारन कहा तब फेरि कुंभनदासजी कहें जो महाराज आखौबेटा तौ चत्रभुजदास है और आधौ बेटा कृष्णदास हैं सो श्रीनाथजीकी गायनकी सेवा करत है तासों आधौ है कुंभनदासजी कृष्णदाससों आधौ क्योंकहें ताको हेत यह जो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने पुष्टिमार्ग प्रगटकीयो है सो पुष्टिमार्गकहा है जो ब्रजभक्तनको हेंत यहमार्ग प्रगट कीयो है सो भगवदीय गाये हैं" जो सेवा रीतिप्रीत ब्रजजगकी जनहितजगप्रगटाई" सो ब्रजभक्तनकी कहारीति है जो श्रीठाकुरजीके सन्निधानतौ सेवाकरें और श्रीठाकुरजी वनमें पधारे तब गुणगानकरें जो ये वस्तु होयतौ आखौ और इनमेंते एक होयतौ आधौ ताते चत्रभुजदास सेवा और गुणगान है ताते आखौ और कृष्णदासमें एक सेवा है सो आधौ तब श्रीगुसांईजी श्रीमुखते

कहें जो भगवदीय है तेई बेटा हैं और बहुत भयेतौ कौन कामके यह चत्रभुजदासकी वार्तामें लिखे हैं ॥ प्रसंग ॥ ६ ॥ वैष्णव ॥ ९० ॥

अथ कृष्णदासकी वार्ता ।

सो वे कृष्णदास श्रीनाथजीकी गायनकेग्वालहुते श्रीगुसांईजीने इनको गायनकी सेवादीनी हुती सो कृष्णदास श्रीनाथजीकी गायनकी सेवाकरते सवारे खिरकसेवासों पहुंचकें फेर गायन चरायवेको जाते सोसगरेदिन कृष्णदासगायनकीसेवाकरते सोएक-दिन गायचरायकें पूछरीकेपोर कृष्णदासगायनके संग आवतहुते सो सगरी गायतौ खिरकमेंआई औरगायबडीहुती ताकों औन बहुतभारी हुतौ सो वहगाय बहुत हरवे २ चलती सो वा गायकों आवत अंधियारौपारिगयौ सो तहांपर्वतकेनीचे अँधियारेमें एक नाहर निकस्यौ सो गायपै दोर्यौ तब कृष्णदा-सकहैं जो अरे अधर्मी यहश्रीनाथजीकी गाय हैं तू भूखौहोयतौ मेरे ऊपर आऊ तब इतनेमें गायतौ भाजिखिरकमें गई और नाहरनें कृष्णदासको अप-राध कियौ और ऊपर कहि आये हैं जा गायसब खिरकमें आइ तब श्रीनाथजी आपगायदुहिवेकों ... हैं और वह बडीगाय

खिरकमें आई सो वह गायकों श्रीदुहिवेकों बैठे
और कृष्णदास बछराथामें हैं और वह गाय बछ-
राकों चाटतहै सो ऐसे दर्शन कुंभनदासजीकों भये
ता पाछें गोदुहन करिकें श्रीनाथजी गिरिराजऊपर
मंदिरमें पधारे तब श्रीगुसांईजीनें भोग समर्प्यो
और कुंभनदासजी खिरकमेंसे आये सो दंडौती
सिलापास ठाडे भये इतनेमें समाचार आये जो कृ-
ष्णदासकों नाहरने मार्यौ सो सुनिकें कुंभनदास
मूर्च्छा खायके गिरे सो ऐसे गिरे जो देहानुसंधान
भूल गये तब कुंभनदासजीकों सब कोऊ बुलावे
पारि बोले नाहीं तब यह समाचार काहूनें श्रीगुसां-
ईजीसों कहे जो महाराज कृष्णदासको नाहरनें मा-
र्यौ और गायकों कृष्णदासनें बचाई सो कृष्णदास
उहांही परेहैं तब श्रीगुसांईजी कहे जो गाय कबहूं
न छोडि आवै अंत समय गाय संकल्प करतहैं
ताको गाय उत्तम लोकको ले जात हैं और कृष्ण-
दासनें तौ श्रीनाथजीकी गाय बचाई हैं ताते कृष्ण-
दासकों गाय कैसें छोडि आवैगी और श्रीगुसां-
ईजीने कह्यौ जो कुंभनदासजी कहां है तब काहूं
वैष्णवनें कही जो महाराज कुंभनदासजीकों कलेश
बहुत बाधा कीयौ है जो कुंभनदासजी ऊपर आ-

वत हुते सो कुंभनदासजीके आगें काहूनें कृष्णदासके समाचार कहैं सो सुनतही कुंभनदासजी मूर्छा खायकें गिरे सो लोग बहुतही बुलावत हैं परि आवत नाहीं तब श्रीगुसांईजीने अपने श्रीमुखसों कह्यौ जो फेरि कुंभनदासजीकी खबर लावौ जो कुंभनदासजीकी देह कैसे है सो वे आयकें कुंभनदासजीकों पुकारें तब ये समाचार श्रीगुसांईजीसों कहें जो महाराज कुंभनदासजीतौ कछू समझत नाहीं तब श्रीगुसांईजी तौ सेनभोगके दर्शन करिकें श्रीनाथजीकों पोढायकें आप नीचे पधारे सो देखकें मार्गके साम्हें कुंभनदासजी परे हैं और लोग चारचौ ओर ठाडे हैं सो कहतहैं जो कुंभनदासजी कैसे भगवदीय हैं पारि पुत्रको सोक बहुत बुरो होतहै या पीरासों कोई बच्यौ नाहीं काहेते जो अपनी आतमाहै तब यह बात लोगनकी सुनिकें श्रीगुसांईजी मनमें विचारे जो यहांतौ कारण कछू और है और लोगनकोंतौ कछू और भाखत हैं ताते भगवदीयको स्वरूप करिवेके लिये श्रीगुसांईजी अपने श्रीमुखसों कही जो कुंभनदासजी सवारे तुम वेगी आईयौ तुमको श्रीगोवर्द्धननाथजीके दर्शन करावेंगे तुम मनमें खेद माति करौ इतनों श्रीगुसांईजी श्रीमुखसों कहें तब कुंभनदासजी उठ ठाडे

भये और प्रसन्न भये तब श्रीगुसांईजीकों दंडौत करिकें कुंभनदासको जो कार्य करनों हौ सो सब कीयौ पाछें सवारे कुंभनदासजी दर्शनकों आये श्रीनाथजीकों सिंगार करिके श्रीगुसांईजीसों कह्यौ जो प्रथम कुंभनदासजीकों दर्शन कराय देउ सो कुंभनदासजी वैष्णवनके ऊपर यहकार कीयौ जो सूतकीको कौन मंदिरमें जानदेतौ सो कुंभनदास-जीके अनुग्रहते सब कोउ दर्शन करते हैं सो कुंभ-नदासजी नित्य एक बेर दर्शन करिकें परासोलीमें जाय बैठते सो वहां बैठेर विरहके पद गावते सो पद-

राग धनाश्री-तुम्हारे मिलन बिन दुखित गुपाल ॥ अति आतुरब्रजसुंदरप्यारे बिरहीबेहाल ॥ १ ॥ सीत-लचंदतपत भयोदाहत किरणकमलजनुजाल ॥ चंद-नकुसुमसुहाय धनसारलगतवदीज्वाल ॥ २ ॥ कुंभ-नदासप्रभू नवधनतुमविन कनकलतामानोंसूपीजी-वमाकाल ॥ अधरामृत वंशीसीचिलेउतुमगिरगोव-र्द्धनलाल ॥ ३ ॥

राग धनाश्री-अब दिनरात्रि पहारसेभये ॥ तब ते निघटतनाहिनिजबते हरिमधुपुरीगये ॥ यह जानियै बिधाता जुगसमकीने जामनये ॥ जागत जागविहा-तनके ऐसें प्रीतठये ॥ ब्रजवासीअतिपरमदीनभये

व्याकुलसोचलयै ॥ उन प्राणदुखित जलरुहगनदारुणहेमपयै ॥ कुंभनदासबिछुरतनंदनंदनबहुतसंतापकरे॥अब गिरधरबिनरहतनिरंतरनौतननरिछयै ॥

राग केदारो–औरनकों समीपबिछुरनों आयौ मेरीहिसा ॥ अबकोजसोवेसुखअपने आलीमोकोंचाहतरिसा ॥ नाजानों यह बिधाताकी गति मेरे आंकलिखे ऐसौकोनारिसा ॥ कुंभनदासप्रभूगिरधरकहत निसदिनरहज्योंचातकघन त्रिसा ॥

ऐसे पद गाय २ कुंभनदासजीनें सूतते पद किये पाछें शुद्ध होयकें कुंभनदासजी भगवत्सेवामें आये ऐसी जिनकों दर्शनकी आरति सो वे कुंभनदासजी श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ताको पार नाहीं ताते इनकी वार्ता कहांताई लिखिये प्र० ॥१॥ वै०॥८१॥

अथ कृष्णदास अधिकारी ति० वार्ता।

सो वे कृष्णदास शूद्र एक वेरद्वारिका गये हुते सो श्रीरणछोरजीके दर्शन करिकें तहांते चले सो आपन मीरांबाईके गांव आयौ सो वे कृष्णदास मीरांबाईके घर गये तहां हरिवंशव्यास आदि दे विशेषसह वैष्णव हुते सो काहूकौ आये, आठ दिन काहूको आये दशदिन काहूको आये पंद्रहदिनभये हुते तिनकी बिदा न भई हुती और कृष्णदासनें तौ

आवतही कही जो हूंतोचलूंगौ तब मीराबाईने कही
जो बैठो तब कितनेकमहौर श्रीनाथजीको देनलागी
सो कृष्णदासनें न लीनी और कह्यौ जो तू श्रीआ-
चार्यजी महाप्रभूनकी सेवकनाहींहोत ताते तेरी भेंट
हम हाथते छूवेंगे नाहीं सो ऐसे कहिकें कृष्णदास
उहांते उठिचले सो जब आगे आये तब एक वैष्ण-
वनें कह्यौ जो तुमने श्रीनाथजीकीभेंट नाहीं लीनी
तब कृष्णदासने कह्यौ जो भेटकी कहा है पारि मीरां-
बाईके यहां जितने सेवक बैठे हुते तिन सबनकी
नाक नीचे करिकें भेटफेरी है इतने इकठोरे कहां
मिलते यह हूं जानेंगे जो एकबेर शूद्र श्रीआचार्यजी
महाप्रभूनको सेवक आयौ हुतो ताने भेट न लीनी
तो तिनके गुरूकी कहाबात होयगी ॥ प्रसंग ॥ १॥

और प्रथम सेवा श्रीनाथजीकी बंगाली करते सो
श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें मुकुटकाछनी हीराके
आभरन भराय दीने हैं सो नित्य करते सो भेट
आवती सो खरच होती कछू संग्रह न राखते सब
खरच होय जातौ और बंगाली सेवा करते पाछें
श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कृष्णदासकों आज्ञा-
दीनी जो तुम श्रीगोवर्द्धनरहौ सेवा टहलकरौ तब
कृष्णदास अधिकारीभये अधिकारकरन लागे पाछें

एक दिन मथुराकौ चलनलागे सो अडींगलों पहुंचे तब पेंडेमें अवधूतदास मिले महापुरुष हुते व्रजमें फिर्‍यौ करते सो कृष्णदासको मिले तब अवधूत-दासनें कह्यौ जो कृष्णदास तुम कहां चले तब कृष्ण-दासनें कही जो मथुराजातहौं कछू काम है तब अवधूतदासनें पूछौ जो श्रीनाथजीकी सेवा कोन करत है तब कृष्णदासने कही जो बंगाली करत हैं तब अवधूतदासनें कही जो श्रीनाथजीकों अपनौ वैभवबढावनो है ताते तुम बंगालीनको दूर क्यों नाहीं करत सो अवधूतदाससों श्रीनाथजीने कह्या जो मोकों बंगाली बहुत दुःख देत हैं सो तब बंगाली श्री-नाथजीकों भोग धरते सो उनकी चुटियामें छोटोसो स्वरूप हुतौ देवीकोंसो साम्हैंबैठावते जब भोगसरा-वते वादेवीकौ अपनी चुटियामें धरलेते ऐसे सदा-करते सो बात अवधूतदासकों श्रीनाथजीने जनाई ताते अवधूतदासने कृष्णदाससों कह्यौ जो तुम बंगालीनकों दूरकरौ तब कृष्णदासने कही जो श्रीगु साईंजीकी आज्ञाविनाकेसे काढें तब अवधूतदासनें कह्यौ जो तुम अडेलमें जायकें श्रीगुसाईंजीकी आज्ञाले आवौ जैसे बनै तैसे इन बंगालीनकों काढौ तब कृष्णदास अडींगते फिरे सो श्रीगोवर्द्धन आये

तब बंगालीनसों कह्या जो हूंतौ श्रीगुसांईजीके पास
अडेल जातहों तुम श्रीनाथजीकी सेवा सावधानीसों
करियों और सब सवकहुते तिनसों कृष्णदासनें
कह्यौ जो हूंतो श्रीगुसांईजीके पास कछू काम है
सो अडेलकों जातहों तुम सावधान रहियो ता पाछे
श्रीनाथजीसों बिदा होयके अडेलकों चले सो
दिन १९ में श्रीगुसांईजीके पास आय पहुंचे सो
आयकें श्रीगुसांईकों दडोत कीये तब श्रीगुसा-
ईजीनें पूछौ जो कृष्णदास तुम क्यों आये तब
कृष्णदासनें कह्यौ जो श्रीनाथजीकों अपनों वैभव
बढावनों है और बंगालीनने बहुत माथो उठायो
है जो भेट आवत है सो लेजात हैं सो सब अपने
गुरूनको देत हैं तब श्रीगुसांईजी कहें जो श्री-
आचार्यजी महाप्रभू असुरव्यामोहलीला दिखाई
ता पाछें श्रीगोपीनाथजी पूरबको परदेशकीयौ सो-
एकलक्षकी भेटभई पाछें अडेल आये तब श्रीगो-
पीनाथजीनें कही जो यह पहलो परदेशहै ताते यामें
आयौ सो सब श्रीनाथजीको है श्रीनाथजीकों विनि
योग कियौ चाहिये ता पाछें श्रीगोपीनाथजी दिन-
दशबारह रहकें पाछें श्रीनाथजीद्वार पधारे सो जाय
पहुच तब श्रीगोपीनाथजीनें दर्शन कीयौ पाछें

जोलायेहुते सो सबभेट कियौ आभूखन सब जडा-
वके समराये थार कटोरा डबरा चमचा तष्टी प्रभृ-
त सब सोंनारूपाके किये सबकरिकें श्रीनाथजी-
सों बिदाहोयकें श्रीगोपीनाथजी अडेल आये ता-
पाछें बंगाली बरस एककें भीतर सब लेगये अपने
गुरूके यहां जायकें दीयौ यह बात श्रीगुसांईजीनें
कृष्णदाससों कही और कह्यौ जो बंगालीननें माथौ
उठायौ परिवे श्रीआचार्जजी महाप्रभूनके राखे हैं सो-
कैसे निकलेंगे तब कृष्णदासनें श्रीगुसांईजीसों कह्यौ
जो महाराज श्रीनाथजीकी आज्ञा है जो बंगाली-
नकों निकासौ तातें आप या बातमें कछू मतिबोलौ
मोकों आप आज्ञा करौतौ अपनों आप करलेउंगो
जैसे बंगाली निकसेंगे तैसे काढुंगो तब श्रीगुसांई-
जीनें कह्यौ जो अवश्य तब कृष्णदासनें कह्यौ जो
महाराज दोयपत्र लिखये एकराजाटोडरमल्लके ना-
मका एकबीरबलकेनामकौ तब श्रीगुसांईजीनें दोय
पत्रलिखदीने राजा टोडरमल्लकों और बीरबलकों
लिखौ जो कृष्णदासकों श्रीनाथजी द्वार भेजे हैं
जो तुमसों कृष्णदास कहै सो करि देउंगे सो पत्र
लेकें श्रीनाथजीद्वारको चलें सो आगरे आये तहां
टोडरमल्ल राजा बीरबलसों मिले पत्र श्रीगुसांईजीके

हुते सो दीये सो उन पत्र बांचिकें कृष्णदाससों कह्यौ जो तुम कहौ तैसें करें तब कृष्णदासने कह्यौ जो अबतो में मथुरा जातहौं बंगालीनकों काढिवेकों ता पाछें कृष्णदास राजा टोडरमल्लसों बिदा होयकें श्रीनाथजीद्वारको चले सो मथुरा आये तब मार्गमें अवधूतदास मिले तब कृष्णदाससों अवधूतदासने कही जो कृष्णदासजी ढील कहा करि राखी है बंगालीनकों काढौ श्रीनाथजीकी ऐसी इच्छाहै श्रीनाथजीकों अपनों वैभव फैलावनों है तब कृष्णदासने कह्यौ जो श्रीगुसांईजीकी आज्ञा लेकें आयौ हौं अब जायकें बंगालीनकों काढत हौं इतनों कहिकें कृष्णदास चलै सो श्रीनाथजीद्वार आये सो वे बंगाली सब रुद्रकुंड ऊपर रहते सो उहां उनकी झोंपरी हुती सो कृष्णदासने जराय दीनी तब सोर भयौ तब बंगाली सेवा छोडकें पर्वतके नीचे आये तब कृष्णदासनें पर्वत ऊपर अपने मनुष्य पठाय दीये तब बंगाली देखेंतो कृष्णदासनें झोंपरीमें आग लगाय दीनी है तब सब बंगाली कृष्णदाससों लरन लागे तब कृष्णदासनें द्वै २ चार ४ लाठी सबनके दीनी तब वे बंगाली तहांते भाजे सो मथुरा आये तब रूपसनातनके पास आयकें सब बात कही

तब इतनेमें कृष्णदासहू आय ठाडे भये तब रूप-
सनातननें कृष्णदासके ऊपर खीजकें कह्यौ जो
क्योंरे शूद्र तू कोन जो इन ब्राह्मणनकों मारे तब
कृष्णदासने कही जो हूं शूद्रहों पारि तुमहू तो
अग्निहोत्री नाहीं तुमहूतो कायस्थ हो तब सनात-
नने कह्यौ जो यह बात पातसाह सुनेगो तो तू कहा
जबाब देयगो तब कृष्णदासनें कह्यौ जो होंतो नीके
जबाब देउंगो पारि तुमको जुबाब देतमें दुःख हो-
यगो और तुमकों जवाबआवेगो जो तुम कायस्थ
होयकें इन ब्राह्मणनसों दंडौत करावत हो तब
रूपसनातन तो चुप व्है रहे और बंगालीनसों कह्यौ
जो तुम जानो येजानों तब बंगाली मथुराके हाकिम
पास गये तब कृष्णदास जाय ठाडे भये तब हाकि-
मने कह्यौ जो भयो सोतो भयो पारि अब इनकों
राखो तब कृष्णदासनें कह्या जो अब तो इनको
न राखेगें येतो हमारे चाकर हुते सो हमने इनकों
सेवा सोंपी हुती सो ये सेवाछोडकें क्यों आये जो
इनकी झोंपरी जरगई हुती तो हम नई छवाय देते
ताते अब हमतो न राखेंगे ताऊपर तुम कहतहो जो
हम श्रीगुसांईजीकों लिखेगें वेकहेंगे तैसे करेंगे तुम
श्रीगुसांईजीकों लिखो पाछें कृष्णदास श्रीनाथजी-

द्वार आये और बंगाली सब अपने श्रीकुंड आये तब कृष्णदासनें श्रीगुसांईंजीकों पत्र लिखौ तामें बंगाली काढे सो सब समाचार बिस्तार करिकें लिखे और लिख्यौ जो अब पधारियैतौ भलो है सो पत्र श्रीगुसांईंजीके पास अडेल आयौ तापाछें श्रीगुसांईंजी अडेलते चले सो श्रीनाथजीद्वार आयै तब वे बंगाली सब आये तब श्रीगुसांईंजीसों कह्यौ जो हमकों श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें सेवामें राखेहुते सो कृष्णदासनें हमकों काढे तब श्रीगुसांईंजीनें कह्यौ जो तुम सेवा छोडके क्योंगयै दोष तुम्हारोहै ताते अबतो सेवामें न राखेंगे तब वा बंगाली बहुत बीनती करनलागे जो महाराज अब हम खायंगे कहा तब श्रीगुसांईंजीने इनकों श्रीनाथजीके बदले श्रीमदनमोहनजीकी सेवादीनी और कह्यौ जो इनकी सेवा तुमकरियों जो आवै सो खाईयो तब वे बंगाली श्रीमदनमोहनजीकी सेवा करन लागे ताते उन बंगालीनने श्रीगोवर्द्धन रहिवौ छोडदीयौ ता पाछें श्रीनाथजीकी सेवामें गुजराती ब्राह्मण भीतरिया राखे श्रीनाथजीकों अपनों वैभवबढावनों हौ सो सब भीतरियानकों नेग और सबसेवकनकों नेग जोजाभांति श्री-

नाथजीने कह्यौ ताभांति श्रीगुसांईजीने बांधौ तबते श्रीनाथजीकी सेवा प्रनालिकाते होनलागी और कृष्णदास अधिकार करनलागे प्रसंग ॥ २ ॥

बहिर श्रीनाथजीने कृष्णदासकों आज्ञादीनि जो श्याममतिको लेकें ताल पखावज लेकें तू परासोलीमें आइयौ कुसोश्यामकुमर आछौ मृदंग बजावते सो श्रीनाथजीकी सैन आरती उपरांत अनोसर भयौ तब कृष्णदास श्यामकुमरके घर गये तब कृष्णदासने श्यामकुमरसों कही श्रीनाथजीने आज्ञा करी है सो मृदंगलेके परासोली चलौ तब श्यामकुमरने कह्यौ जो मोहूकों श्रीनाथजीनें आज्ञाकरीहै ताते चलिये तब श्यामकुमर मृदंगलेकें आयौ तब कृष्णदास और श्यामकुमर येदोऊजने परासोलीसों देखेतौ श्रीनाथजी स्वामिनीजी सहित बिराजे हैं तब श्रीनाथजीने श्यामकुमरसों कह्यौ जो तूतौ मृदंग बजाय और कृष्णदाससों कह्यौ जो तू कीर्तन करि और श्रीनाथजी और श्रीस्वामिनीजी नृत्यकीयौ तहां कृष्ण दासने पदगायौ ॥ सो पद—

राग केदारौ—श्रीवृषभानुनन्दनी नाचतगिरधरसंग लागडाटउरपातिरपरासंसंगराखौ ॥ झपतालमिल्यौ रागकेदारौ सप्तसुरनअबघरतानरंगराख्यौ ॥ पाई-

सुखसिद्धि भरतकामविविधि रिद्धि अभिनवदल स-
तसुहागहुल्लास रंगराख्यौ ॥ वानता सतजूथ संग-
लिये निरखत क्यों सघसचंद बलिहारी कृष्णदास-
सुघररंगराखौ ॥

यह पद कृष्णदासनें गायौ श्यामकुमरनें मृदं-
गबजायौ श्रीनाथजी और स्वामिनीजी नृत्य-
कीयौ तातें श्रीमहाप्रभूजीकी कानितें श्रीनाथजी
कृष्णदासके ऊपर ऐसी कृपा करतहुते॥ प्रसंग ॥ ३ ॥

और कृष्णदासन बहुत पदकीयै तब एक समय
सूरदासजीनें कृष्णदाससों पूछा जो तुम पदकरत
हौ तामें मेरी छाया है तब कृष्णदासने सूरदास-
जीसों कह्यौ जो अबक ऐसो पदकरू जा जाम तु-
म्हारी छाया न आवे तब कृष्णदास एकांतमें बैठिकें
एकाग्रचित्तकरिकें नयौपद करनलागे जो जामें तीन
तुकको कीयौ आर चौथीतुक बन नाहीं तब घडी
दोयलो विचारे जो आगें तुक चलत नाहीं तो भलौ
फेरी प्रसादलेकें विचारेंगे सो जापत्रमें लिखत हुते
सो पत्र तथाद्वातिलेखनी उहांइधारिकें प्रसाद लेवेको
उठे जबकृष्णदास प्रसाद लेवेको बैठे तब श्रीनाथ-
जीनें आप तीन तुक वा पत्रमें अपने श्रीहस्तसों लि-
खिदीये कृष्णदासनें आधौ पद कियौ हुतौ ताकों

आप श्रीनाथजी पूरौकरिकें आपतौ पधारे ता पाछें कृष्णदास प्रसाद लेकें आये तब देखौ तौ श्रीनाथजी पूरौपदकरिकें श्रीहस्तसों लिखि गये हैं सो देखकें कृष्णदास बहुत प्रसन्नभयौ और कहे जो सूरदासजी आवेंतौ पदसुनावें तब उत्थापनके समय सूरदासजी दर्शनकों आये तब कृष्णदासने कह्यौ जो सूरदासजी नयोपद एकमेनें कीयो है तामें तुम्हारी छाया नाहीं धरी तब सूरदासजीने कह्यौ जो कहौ सुनों तौ जानों तब पद कह्यौ सो पद–

राग गौरी--आवतवनेंकान्हगोपबालकसंगनेंचुकीखुर रेणु छुरतु अलकावली ॥ भौहैंमनमथचापवक्रलोचनबान सीससोभितमत्तमयूरचंद्रावली॥ उदित उडुराजसुंदर सिरोमणि वदन निरखि फूलीनवलजुवतीकुमुदावली ॥ अरूणसकुचअधरबिंबफलहसातकहत कछुकप्रकटित होत कुंददसनावली ॥ श्रवणकुंडलभालतिलकवेसारिनाक कंठकौस्तुभमणिसुभगत्रिवलावली ॥ रतनहाटकखचित पुरसियदिकानपाति बीच राजत सुभपुलकमुक्तावली ॥

अथ श्रीनाथजीकृत--वलयककणबाजूबंद आजानुभुज मुद्रिकाकरदलबिराजत नखावली ॥ कणतरमुरलिकामोहित अखिलविश्वगोपिकाजनमासिग्रसथितप्रेमावली ॥ कटि क्षुद्रघंटिकाजटितहीरामयी

नाभिअम्बुजवलितभृंगरोमावली ॥ धाय कबहुक-
चलतभक्तहितजानिपियगंडमण्डल रुचिरश्रमजल-
कणावली ॥ पीतकोसयपरिधानें सुंदर अंग चरण-
नुपुरवाद्यगीतसबदावली ॥ हृदयकृष्णदासगिरवर
धरणलालकीचरणनखचन्द्रिकाहरति तिमिरावली॥

यह पद कृष्णदासनें सूरदासजीके आगें कह्यौ
सो सूरदासजी तीन तुक तांई तौ बोले नाहीं और
तीनतुकके आगे कहनलागे तब सूरदासजीने कृष्ण-
दाससों कह्यौ जो कृष्णदास मेरे तुमसों वाद है और
प्रभूनसों वाद नाहीं में प्रभूनकी वानी पहिचानतहों
तब कृष्णदास चुपकररहे ताते कृष्णदास ऐसे भग-
वदीय हैं ॥ प्रसंग ॥ ४ ॥

और एकसमय श्रीनाथजीके भंडारमें कछू साम-
ग्रीचाहियतहुती सो कृष्णदास गाडालेकें आग-
रेकौं आये सो आगरेके बजारमें एकवेश्या नृत्य-
करत हुती ख्यालटप्पा गावतहुती और भीरहुती
सब लोग तमासो देखतहुते सो कृष्णदास बाजा-
रमें तमासेमें जाय ठाडे भये तबभीर सरकगई
तब वह वेश्या कृष्णदासके आगें नृत्य करन लागी
सो वह वेश्या बहुत सुंदर और गावै बहुत आछौ
नृत्य तेसोईकरे सो कृष्णदास वा वेश्याके ऊपर-
रीझे और मनमें कहें जो यहतौ श्रीनाथजीके लाय-

कहै ता पाछें वा वेश्याकों दशमुद्रातौ उहांही दीये और कही जोरान्निकों समाज सहित आइयौ ता-पाछें कृष्णदास उहां हवेलीमें उतरे सो सामग्री चहि-यत हुती सो सब लेकें गाडा लदायसिद्धिकरवायौ तापाछें रात्रिपहरगइ तब वेश्यासमाजसहित आई तापाछें नृत्यभयौ गानभयौ वापै कृष्णदास बहुत-रीझें सोरुपैया सतएकदिये तब वा वेश्यासों कह्यौ जो तेरौ गानहू आछौ और नृत्यहू आछौ परिह-मारो सेठ है सो तेरे ख्यालटप्पा ऊपर रीझे गो नाहीं ताते हौंकहों सो गाइयौ तापाछें कृष्णदासनें एक पूरबीरागमें पदकरिकें सिखायौ तापाछें दूसरे दिन वावेश्याकों साथ लेके चले सो आगरेते आये पाछें तीसरे दिन श्रीनाथजी द्वार आये सामग्री सब भंडा-रमें धराई तापाछें जब उत्थापनको समय भयौ तब कीर्तनिया काहूकों बागे न दीये तब वा वेश्याकों समाज सहित लेगये श्रीगुसांईजी मंदिरमें ठाडे श्रीनाथजीकों मूंढाकरत है और मणिकोठामें वेश्या नृत्य करन लागी और यह पद गायौ ॥ सो पद-

राग पूरवी–मोमन गिरधर छबिपर अटक्यौ ॥ ललित त्रभंगी अंगन परिचालिगयौ तहांईठटक्यौ ।१। सजल श्यामघन चरणनीलहै फिराचितअनितनभ-

टक्यौ ॥ कृष्णदास कियौप्राणन्यौछावारि यह तन जगसिरपटक्यौ ॥ २ ॥

यह पद वा वेश्यानें गायौ सो जब गावत २ पिछलीतुक आई जो "कृष्णदास कियौ प्राण न्यौछावर यह तन जग सिरपटक्यौ " इतनों कहत मात्र वा वेश्याके प्रान ततकालनिकासिगये और दिव्य स्वरूप धारिके श्रीनाथजीकी लीलामें प्राप्तभई और वा वेश्याके समाजी हुते सो मरन लागे जो हमारी तौ यातें जीविकाहुती अब हम कहा खायंगे तब कृष्णदासनें कह्यौ जो तुम क्यों रोवतहौ चलौ नीचे खायवेको देऊं तब उन समाजीनकों नीचे लायकें कृष्णदासनें सहस्र रुपया दे बिदा किये कृष्ण दासने अपने मनते समर्पी ताते श्रीनाथजीनें वा वेश्याकों अंगीकार करी ताते श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी कानितें सेवककी समर्पी वस्तुयाभांतिसों अंगीकार करत हैं ॥ प्रसंग ॥ ५ ॥

और कृष्णदासको गंगाबाईसों बहुत स्नेहहुतो सो श्रीगुसांईजीकों न सुहावतो सो एकदिन श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीकों भोगसमर्पितहुते सो सामग्री ऊपर गंगाबाईकी दृष्टीपरी ताते श्रीनाथजी आरोगे नाहीं परिभोगतौ समर्प्यौं ता पाछें समय भयौ तब भोग सरायो तब आरती करि अनोसरि करिकें

श्रीगुसांईजी आप नीचे पधारे तब सेवक आदि भीतरिया सबने प्रसाद लीयौ तब श्रीगुसांईजी आप तौ भोजन करिकें पोढे तब श्रीनाथजीनें भीतरियाकों लातमारिकें जगायौ और वासूं कहें जो हूंतौ भूखो हूं तब वा भीतरियाने कह्यौ जो महाराज श्रीगुसांईजीनें भोग समर्प्यौ हौ और तुम भूखे क्यों रहे तब श्रीनाथजीने कही जो राजभोगमेंतो गंगाबाईकी दृष्टी परीहुती ताते राजभोग आरोग्यौ नाहीं तब वह भीतरिया उठि श्रीगुसांईजीके पास आयौ सो श्रीगुसांईजी भोजन करिकें पोढे हुते तब भीतरियाने आयकें श्रीगुसांईजीके चरण दाबे तब श्रीगुसांईजी चौंकि उठे तब देखेंतो श्रीनाथजीको भीतरियाहै तब वा भीतरियासों पूछौ जो यहां इतनीवेर कहां आयौ हौ तब वा भीतरियाने कह्यौ जो महाराज आज श्रीनाथजी भूखे हैं मोकों लात मारिकें जगायौ और कह्यौ जो आजतौमें भूखौ हौं तब मेंने श्रीनाथजीसों कह्यौ जो महाराज भोगतो श्रीगुसांईजीने समर्प्यौ हौ तुम भूखे क्यों रहे तब श्रीनाथजीनें कही जो सामग्रीपरतो गंगाबाईकी दृष्टि परी तातेमें नाहीं आरोग्यौ तब श्रीगुसांईजी सुनतही ततकाल स्नानकरिकें पर्वतऊपर पधारे सो वह भीतरियाहू स्नान करिकें श्रीगुसांईजीके साथही आयौ

तब श्रीगुसांईजीके वा भीतरियासों कही जो भात और बडीकरौ जो तत्काल सिद्ध होय आवै तब भात औरबडीकरीसो तत्काल सिद्धभयो तब श्रीनाथजी कौ भोग समर्प्यौ पाछें भीतरिया रसोईकरिकें स्नान-करिकें पर्वतऊपर आये तब श्रीगुसांईजीकी आज्ञा भई जो राजभोगकी सामग्री तौ भई सिद्धि ता पाछें राजभोग सेनभोग इकठौरो समर्प्यौ ता पाछें समय भयौ तब भोगसराय सेन आरती करी तब श्रीना-थजीकों पोढाये भोगसर्यौ हो सो प्रसाद एक डव-रामें उहांई रहगयौ तब रामदास भीतरियानें कही जो पहले भोग समर्प्यौ हुतो सो उहांहीरह गयो तब श्रीगुसांईजी डवरामेंते ठलायके लेतउतरे पाछें सब सेवकनकों वह बडी भातको महाप्रसाद रंचक २ बांटि दीनों ता पाछें श्रीगुसांईजी आपहू आरोगे सो वह बडी भातको प्रसाद अतिअद्भुतिभयो अति-अलौकिक स्वादभयो सो श्रीगुसांईजी आपसरायो तब कृष्णदास ठाडे हुते तब कृष्णदासने कही जो महाराज आपही करनहारे आपही आरोगनहारे तो क्यों न उत्तम होय तब श्रीगुसांईजीने हंसके कही जो यह तुम्हारेही कीये भोगत हैं ॥प्रसंग॥६॥

अब जो यह बात श्रीगुसांईजीनें कही जो यह तुम्हारेही कीये फल भोगत हैं सो यह बात सुनकें

कृष्णदासने श्रीगुसांईजीसों बिगाडी तब श्रीगुसां-
ईंजीसों कृष्णदासने कही जो तुम पर्वतऊपर मति
चढो तब श्रीगुसांईजी आप तो तहांते फिरे सो
परासोलीमें आय रहे तब मनमें बिचारी जो कृष्ण-
दास कहामने करेगो पारि श्रीनाथजीकी इच्छा
ऐसीहै सो श्रीनाथजीकी इच्छा जानिकें कछू बोले
नाहीं सो आप परासोलीमें रहैं सो परासोलीमें ध्व-
जाके साम्हें बैठिकें विज्ञप्ति कियो और श्रीगुसांईजी
तीनदिनतो श्रीगोवर्द्धनरहते और तीनदिन श्रीगो-
कुलरहते तब ते परासोली आय रहे तब श्रीगुसां-
ईजी श्रीनाथजीके मंदिरकी खिरकी परासोलीकी
ओर पडती ताके साम्हेंबैठिते तब श्रीनाथजी आप
खिरकीमें आय दर्शन देते तब यह जानिकें कृष्ण-
दासने परासोलीकी ओरकी खिरकी बनवाय दीनी
तब ते श्रीगुसांईजी गोकुलते जब परासोली आवते
तब रामदासजी सबसेवक आदिदै श्रीनाथजीके
राजभोग आरती करिकें अनोसरिकरिकें श्रीगुसां-
ईंजीके दर्शनको परासोली आवते सो आयकें चर-
णोदक लेय पाछें प्रसादलेते सो कृष्णदासको सुहा-
वतो नाहीं और सबसेवक श्रीगुसांईजीके दर्शन
विना महाप्रसाद केसे लेय पारि सेवकनसों कृष्ण-
दासकी चले नाहीं और श्रीगुसांईजी एक पत्र

लिखकें रामदास भीतरियाकों देते और कहते जो श्रीनाथजीको दे दीजो सो पत्र श्रीनाथजीको देते श्रीनाथजी विज्ञप्त उत्तर लिखिकें रामदासको देते सो रामदास श्रीगुसांईजीकों देते तब श्रीगुसांईजी वा पत्रकों वांचिकें पानीमें पीजाते या भांतिसों छै महीना बीते पारि श्रीगुसांईजीनें श्रीनाथजीको अ-धिकारी वैष्णव जानिकें और श्रीआचार्यजी महा-प्रभूनको सेवक जानि कछू न कह्यौ पारि श्रीनाथ-जीके बिरहको स्नेह बहुत करते या भांति छै महीना भये तब एक दिन राजा बीरबल आय निकसे तब ता दिन तौ श्रीगुसांईजी परासोलीहुते श्रीगिरधरजी घर हुते तब राजा बीरबलनें श्रीगुसांईजीकौ खबर कराई तब पोरियाननें कही जो श्रीगुसांईजीतो प-रासोली है श्रीगिरधरजी घरहैं तब राजा श्रीगिरध-रजीके दर्शनको आये तब बीरबलसों श्रीगिरधर-जीने कही जो कृषणदास अधिकारी काकाजीको श्रीनाथजीके दर्शन नाहीं करन देत सो काकाजी-कों खेद बहुत होतहै काकाजी परासोलीमें जाय दर्शन करतहैं तब बीरबलनें श्रीगिरधरजीसों कह्यौ जो अबहूं जायके कृष्णदासको काढूंगो यों कहिकें राजा बीरबल श्रीगिरधरजीसों बिदा होयकें मथुरा आये और श्रीगुसांईजी परासोलीते श्रीगोकुल

आये और बीरबलने पांचसो मनुष्य भेजे और कह्यौ कृष्णदासकों पकरि लावो सो वे मनुष्य श्री-गोवर्द्धन आयकें कृष्णदासकों पकरि लाये सों वे बीरबलनें कृष्णदासको बंदीखानेमें दीनों तब श्री-गिरधरजीसों कहवाय पठाई जो कृष्णदासकों बं-दीखानेमें दीनो है तब श्रीगिरधरजीनें श्रीगुसां-ईजीसों कही जो कृष्णदासको बंदीखानेमें दीनेहैं तब श्रीगुसांईजीने कह्यौ जो हाय हाय श्रीआचा-र्यजी महाप्रभूनके सेवकनको ऐसो कष्ट तब श्री-गुसांईजीने श्रीगिरधरजीसों कह्यौ जो तुमनें कह्यौ होयगो तब श्रीगिरधरजीनें कह्यौ जो हमने तो बीरबलसों सहजही कह्यौ हुतौ जो काकाजीकों दर्शन नाहीं करन देते सो काकाजीकों बहुत खेद होत है तब श्रीगुसांईजीने कह्यौ जो भोजन जब करूंगो तब कृष्णदास आवेगो तब श्रीगिरधजरि ततकाल घोडा मंगाय असवार होयकें मथुराकों आये तब बीरबलसों कह्यौ जो काकाजी भोजन नाही करत ताते कृष्णदासकों छोड देउ तब राजा बीरबलनें कृष्णदास श्रीगिरधरजीके हवालें कर दियो तब श्रीगिरधरजी ततकाल संगले श्रीगोकुल आये तब श्रीगुसांईजीने सुनी जो श्रीगिरधरजी कृष्णदासको साथ लेके आवत हैं सो श्रीगुसांईजी

ठकुरानी घाटऊपर पहुंचे और वा ओरते कृष्णदास आये सो श्रीगुसांईजीको दर्शन कियौ और दंडौत करी और एक नयौ पद करिकें गायौ ॥सो पद–

राग केदारौ–श्रीबिट्ठलजूके चरणकीबलि ॥ हमसे पतितउधारनकारन परमकृपालआयेआपनचलि ॥ उज्जलअरुणदयारंगरंजित दशनखचंद्रविहरत मन निरदलि ॥ सुभगकरसुखकरशोभन पावनभक्तिमुदितललितकर अंजलि ॥ अतिसेमरदुलिसुगंधसुशीतल परतत्रिविधितापडारतमल॥भजिकृष्णदास वार एक सुधिकरि तेरोकहाकरेगो रिपुकल ॥

यह पद श्रीगुसांईजीके आगे गायो पाछें श्रीगुसांईजी कृष्णदासको अपने घर ले आये पाछें कृष्णदाससों श्रीगुसांईजीनें कह्यौ जो उठो भोजनकरो तब कृष्णदासने कह्यौ जो महाराज आपभोजन करिये पाछेंमें झूठन लेउंगो तब श्रीगुसांईजी भोजनको बैठे तब कृष्णदासनें एक पद और गायौ सा पद–

राग कान्हरो–ताहीकौंसिरनाइये जोश्रीवल्लभसुतपद रजरतिहोय ॥ कीजेकहा आनऊंचेपदतिनसों कहासगाई मोय॥सार सार विचारमतौकरिश्रुतिवचनगोधनालियौनिचोय ॥ तहांनवनीतप्रगटपुरुषोत्तमसहजई गोरसलियो॥ विलीय जाके मनमें उग्र

भरम है श्रीविठ्ठल श्रीगिरधरदोय ॥ ताकौ संग-
विषमविषहूते भूलिहूचातुरकरहैजिनकोय ॥ जिन
प्रतापदेखिअपने चख असमसारजोभिदेन तोहि ॥
कृष्णदासतेसुरते असुर भये असुरते सुर भये
चरणनछोह ॥ ४ ॥

यह पद सुनिकें श्रीगुसांईजी बहुत प्रसन्न भये
पाछें श्रीगुसांईजी भोजन करिकें पधारे तब कृष्ण-
दाससों कह्यौ जो अब जाउ भोजन करौ तब कृष्ण-
दास भीतर गयेतब श्रीगिरधरजीनें श्रीगुसांईजीकी
झूठनकी पातर कृष्णदासके आगे धरी तब कृष्ण-
दासनें महाप्रसाद लिनोंपाछें बीडा दोयदीयेरात्रिकों
कृष्णदास वहांई सोयरहे तापाछें पिछली रात्रि घडी
दोय रही तब श्रीगुसांईजी उठे देह कृतकारिकें स्नान
कियौ श्रीनवनीत प्रियाजीके मंगलाके दर्शन करिकें
बाहिर पधारे तब श्रीनाथजी द्वार पधारवेकी तैया-
रीकीये तब घोडा दोय मंगाये एक घोडा ऊपर
श्रीगुसांईजी असवार भये एक घोडा ऊपर कृष्ण-
दास असवारकीयौ और श्रीगोकुलते चले सो श्री-
नाथजीद्वार दिनपहर सवा एकचढे जाय पहुंचे सो
यहां श्रीनाथजीको राज भोग आयौ हुतौ सो श्री-
गुसांईजी ततकाल स्नान करिकें ऊपर पधारे और
श्रीगुसांईजी विज्ञप्तिपत्र परासोलीते लिखते सो रा-
मदास भीतरियाके हाथ पठावते ताकों प्रतिउत्तर

श्रीनाथजी पत्रमें लिखिके श्रीगुसांईजीको पठावते सो श्रीगुसांईजी जलमें घोरपीजाते सो पिछले दिनको पत्र श्रीनाथजीके हस्ताक्षरको सो श्रीगुसांईजी राख हुते सो पत्र साथही ले आये हुते पाछें श्रीनाथजीको राजभोग आयो हुतो सो समय भयो तब श्रीगुसांईजी भोगसरायवेको पधारे तब श्रीगुसांईजीको देखके श्रीनाथजी बहुत प्रसन्न भये और पूछो जो नीकेहो तब श्रीगुसांईजी कहें जो तुमको देखे सोई दिननीके हैं पाछें परस्पर दोऊ जने मुसिक्याये पाछें श्रीगुसांईजी राजभोग सरायो पाछें वह पत्र हुतो सो झापीमें धर्यो पाछें राजभोगके दर्शन खुले तब कृष्णदासने कीये पाछे श्रीगुसांईजी राजभोग आरती करि अनोसरि करि नीचे पधारे पाछें रसोई करि भोग समर्पित भोजन करि श्रीगुसांईजी पोढे सो उत्थापनते घडी दोय पहले उठे पाछें उत्थापनको समय भयो तब स्नान करि ऊपर पधारे सो संखनाद करवायो श्रीनाथजीके उत्थापन भये पाछें सेन आरती उपरांत दर्शन करिकें कृष्णदासको श्रीनाथजीके सन्निधान बुलायो और कहो जो कृष्णदास तुम अधिकार करो और श्रीनाथजीकी सेवा नीकी भांतिसों करियो तब कृष्णदासने श्रीनाथजीके सन्निधान एक पद गायो ॥ सो पद—

राग कान्हरौ—परमकृपालश्रीवल्लभनंदन करत कृपानिजहाथ दे माथैं॥ जे जनशरण आये अनुसरहीं-गहिसोंपति श्रीगोवर्द्धननाथैं ॥ परमउदारचतुर-चिंतामणिराखत भव धराते साथैं॥ भजिकृष्णदास काज सब २ सरहीं जो जानें श्रीविठ्ठलनाथैं ॥ २ ॥

यह पद गायौ और वीनती कीनी जो महाराज मेरौ अपराध क्षमा करौ तब श्रीगुसांईजीने कह्यौ तुमारौ अपराध श्रीनाथजी क्षमा करेंगे पाछें कृष्ण-दासको बिदा कीयो पाछें श्रीनाथजीको पोढायकें श्रीगुसांईजी नीचे उतरे श्रीगुसांईजी परम दयाल कृष्णदासको सत कछूमनमें आनों श्रीआचार्यजीके सेवक जानि अनुग्रह कीयो पाछें श्रीगुसांईजी दिन दोय रहे पाछें श्रीगोकुल पधारे फिर कृष्णदास श्रीगुसांईजीकी आज्ञाते अधिकार करन लागे ॥

प्रसंग ॥ ७ ॥

सो बहुती वरसलो भली भांतिसों अधिकार कियौ पाछें वैष्णवने कृष्णदाससों कही जो मोकों एक कूआ बनवावनों है और मोकों अपने देशकों जानों है ताते द्रव्य तुमकों दे जातहों सो तुमबन-वाय दीजो तब कृष्णदासने कही जो आछौ तब वह वैष्णव तीनसौ रुपैया देकें अपने देशको गयौ तब कृष्णदासने उन रुपैयानमेंते एकसौ रुपैया एक कूल्हरामें धरिकें आमकें वृक्षके नीचे गाड

दीये कह्यौ जो दोयसे रुपैया लाचुकेंगे तब इनको काढेंगे सो आछौ मुहूर्त देखिकें रुद्रकुंड ऊपर कूआ खुदायौ तब कितनेक दिनमें वह कूआ मोहताई बनके तयार भयौ और दोयसे रुपैया लगे मठोठा-बाकी रह्यौ तब उत्थापनके दर्शन करिकें कृष्णदास कूआ देखनको गये सो हाथमें आसाहुतौ सो आ-साटेकके कूआके ऊपर ठाडे भये सो वह आसा सरक्यौ तब कृष्णदास कूआमें जाय परे तब तो मनुष्य दोय कूंआमें उतरे सो बहुतेरोढूंढे परिकृ-ष्णदासकौ शरीरहून पायौ तब सब मनुष्य उहांते फिर आये सो ता समय श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीको सेन भोग धरिकें मंजूषविराजेहुते और रामदास श्रीगुसांईजीके पास बैठे हुते तासमय काहूनें आ-यकें कह्यौ जो महाराज कृष्णदासने कूआ बनबा-योहो सो कृष्णदास देखन गये हुते सो आसाटे-किकें कूआके मोहडे ऊपर ठाडे हुते सो आसासर-क्योसोकूआमें गिरपरे और मनुष्य दोय कृष्णदा-सको ढूंढवेको उतरे सो बहुतेरो ढूंढे परिशरीरहून पायो कहा जानियें कहाभयो तब रामदासजी कहें॥ जो "अधो गच्छंतितामसाः" ॥

तब श्रीगुसांईजी कहें जो रामदास ऐसें नकहि अब जो कृष्णदासकूआमें गिरेसो शरीरन मिल्यो ताको कारन कहा सो ताको कारन यह जो कृष्ण-

दासमें कोई अलौकिक जीवहुतौ सो तो श्रीनाथ-
जीकी सेवामें प्राप्त भयौ और कृष्णदासने यासरी-
रसों श्रीगुसांईजीकी अवीज्ञा करी है जो यह शरीर
अलौकिक जीव भुगतनों हौ सो कूआमें गिरतमात्र
कृष्णदासको शरीरलौकिक सद्य होयकें पूछरीकी
ओर एककृष्ण है पीपरकौ तहां प्रेत होयकें रह्यौ
भोग भुगतनकों ताते कृष्णदासको शरीरकूं आमें
न मिल्यौ श्रीगुसांईजीकी अवीज्ञाते कृष्णदासकी
यह गति भई जो प्रेत होयकें पूछरीकी ओर पीप-
रके वृक्षऊपर बैठे रहत हैं ॥ प्रसंग ॥ ८ ॥

और एक समय श्रीनाथजीकी भैंसि खोयगई
हुती सो गोपीनाथ ग्वाल और चार पांच ग्वाल
पूछरीकी ओर ढूंढवेकों गये हुते सो गोपीनाथ
देखें तो पूछरीकी ओर श्रीनाथजी खेलत हैं और
एक पीपरऊपर कृष्णदास प्रेतहैके बैठे हैं तब कृष्ण
दासने गोपीनाथ ग्वालसों कही जो अरे भैया मेरी
बीनती श्रीगुसांईजीसों करियो और कहियो जो
कृष्णदासने कह्यो है जो हों तुम्हारो अपराधीहौं
ताते मेरी यह अवस्था है हूं श्रीनाथजीके पास हूंतौ
मेरी गति होत नाहीं ताते मेरो अपराध क्षमा करौ
तो मेरी गति होय और बागमें एक आमके वृक्षके
नीचे कूलहरामें एकसौ रुपैया गडे हैं सो काढिकें

वा कूआको मठोठा बाकी रह्यौ है सो बनवाओ तो मेरी गति होय सो गोपीनाथग्वालनें यह बात श्रीगुसांईजीके आगें कही जो महाराज कृष्णदास अधिकारीने यह वीनती करीहै तब श्रीगुसांईजीने आमके नीचेते रुपैया लायके मठोठा कूआको बनवायौ तब कृष्णदासकी गति भई कृष्णदासकों प्रेत-जोनमें श्रीनाथजी दर्शन देते ताकौ कारन यह जो श्रीनाथजीकें सन्निधान श्रीगुसांईजीने कृष्णदाससों कह्यौ जो कृष्णदास तुम अधिकार करों श्रीनाथजीकी सेवा नीकी भांतिसों करियो तब कृष्णदासने कह्यौ जो महाराज मेरौ अपराध क्षमा करौ तब श्रीगुसांईजीने कह्यौ जो तुम्हारौ अपराध श्रीनाथजी क्षमा करेंगे सो श्रीनाथजीकी कृपाते श्रीनाथजीने अपराध क्षमा कर्यौ सो प्रेत जोनमें दर्शन देते पारि स्पर्श न कीयौ जो स्पर्श होयतो उद्धार होय सो उद्धार तौ श्रीगुसांईजीके हाथ है कृष्णदास श्रीनाथजीसों कहते जो महाराज तुम मोकों दर्शन देत हौं मोसों बोलतहौ और में प्रेतहों ताते मेरौ उद्धार क्यों नाहीं करत तब श्रीनाथजीने कह्यौ जोहूं तोकों दर्शन देतहौं बोलत हौं सोतौ श्रीगुसांई-जीके वचनके लिये नाहीं तो प्रेतजोनमें दर्शन नाहीं देतौ और बोलतोहू नाहीं और उद्धारतौ श्रीगुसांई-

जाके हाथ है तेने श्रीगुसांईजीको अपराध कीयो है तातें श्रीगुसांईजी उद्धार करेंगे तब होयगो ता पाछें श्रीगुसांईजी आप परम कृपाल कृष्णदासके ऊपर दया आई जो अबतौ बहुत दिन भये हैं तातें अब उद्धार होयतौ भलौ तब श्रीगुसांईजी ध्रुवघाट ऊपर आयकें कृष्णदासको करम करवाय उद्धार कीयौ तब कृष्णदासको उद्धार भयौ और लीलामें प्राप्ति भयौ और श्रीगुसांईजी कहें जो कृष्णदासने तीन बात अछी करी एकतौ अधिकार कीयौ सो ऐसो कियौ जो फेरि ऐसो न करौ दूसरे कीर्तन किये सो अद्भुत कीये और तीसरे श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके सेवक होयकें सेवाहू ऐसी करी जो कोऊ न करेगौ तातें वे कृष्णदास श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं तातें इनकी वार्ताको पार नाहीं तातें इनकी वार्ता कहांतांई लिखिये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ९२ ॥

इति श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके सेवक परम कृपापात्र चौरासी मुख्य वैष्णवनकी वार्ता सम्पूर्ण ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
" लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर " स्टीम् प्रेस,
कल्याण-मुंबइ.

खेमराज श्रीकृष्णदास,
" श्रीवेङ्कटेश्वर " स्टीम् प्रेस,
मुंबई-खेतवाडी.